हज़रत मौलाना मुहम्मद साद साहब कांधल्वी (दामत बरकातुहुम)

मस्जिद की आबादी की मेहनत

हज़रत मौलाना मोहम्मद
साद साहब कांधलवी (दामत बरकातुहुम)

हिन्दी अनुवादक
अहमदुल्लाह क़ासमी (कुशीनगर)

रशीद पब्लिकेशन्स

नाम किताब	:	मस्जिद की आबादी की मेहनत
इफ़ादात	:	मौलाना मोहम्मद साद साहब कांधलवी
तर्तीब	:	मौलाना मोहम्मद अली
कम्पोजिंग	:	
प्रकाशक	:	रशीद पब्लिकेशन्स
पृष्ट	:	244
मुल्य	:	90.00

रशीद पब्लिकेशन्स

Head Off.: 4/203, Lalita Park, Laxmi Nagar New Delhi-92 (india)
Phones: 011-22507486, 22428786
Branch Off.: 419 matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6,
Telefax: 91-11-23289571

अपनी बात

मोहतरम अज़ीज़ो! मुसलमानों की एक चूक ने हम मुसलमानों को नाकाम बना रखा है। हम सबकी वह चूक ठीक हो जाए ये किताब इसीलिए लिखी गई है।

अब रही बात ये कि आख़िर मुसलमानों से क्या चूक हो गई? तो चूक ये हो गई कि हम मुसलमानों के अन्दर से ईमान के सीखने और ईमान के सीखलाने का रिवाज ख़त्म हो गया है? आज मुसलमानों ने सब कुछ सीखा, पर ईमान को न सीखा और सहाबा किराम रज़ि0 फ़रमाते हैं, कि हमने सबसे पहले ईमान सीखा, फिर कुरआन को सीखा? आज उम्मत ईमान को सीखे बगैर नमाज़ों से और दीगर आमाले मुहम्मदी से फायदा हासिल करना चाह रही है, जो नामुमकिन है। किताब में दर्ज वाक़ेयात और हदीस को मुसलमान, दावत में और अपने गौरो-फ़िक्र में लाकर अपने अन्दर अल्लाह से होने का गुमान पैदा कर लें, ताकि मुसलमानों के काम दुआओं के रास्ते से बनने लगे। इसलिए कि अल्लाह तआला से काम बनवाने का रास्ता गुमान है "عـنـد ظن عبدى بى" अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरा बन्दा मुझसे जैसा गुमान करेगा, मैं उसके साथ वैसा ही मामला करूंगा। अगर इन्सान के अन्दर माल से होने का गुमान है, तो उसका काम माल से होगा और अगर दुनिया में फैली हुई चीज़ों और सामान से काम होने का गुमान है, तो उस रास्ते से होगा। इस गुमान का नुक़सान ये है, कि आदमी के अन्दर जिस चीज़ से होने का गुमान होगा वह उसी चीज़ का मोहताज होगा।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने सहाबा किराम रज़ि0 के अन्दर सिर्फ़

और सिर्फ़ अल्लाह ही से होने का गुमान पैदा कराया था, जिसकी वजह से सहाबा रज़ि0 के अन्दर अल्लाह की मोहताजगी थी कि हर वक़्त, हर आन, हर लम्हे वो अपने आपको अल्लाह का मोहताज समझते थे।

वो सहाबा रज़ि0 वाली बात और सहाबा रज़ि0 वाला गुमान ,हम मुसलमानों के अन्दर पैदा हो जाए इसके लिए जिस तरह से हज़राते सहाबा किराम ने मस्जिद को आबाद करने वाली मेहनत की थी, हम मुसलमानों को भी "मस्जिद की आबादी की मेहनत" में सबसे पहले ईमान को सीखना पड़ेगा, वो भी इस तरह से जिस तरह से हज़रत मौलाना मोहम्मद सईद साहब दामत बरकातुहुम फरमाते हैं। इसलिए हज़रत मौलाना का बयान जो किताब में दर्ज किया जा रहा है, ये ईमान को सीखने में हमारी मदद करेगा, मस्जिद को आबाद करने वाली मेहनत के साथ हम सबको किताबों में दर्ज बातों को अपनी रोज़मर्रा की बात-चीत में लाना पड़ेगा, हर जगह नुसरत के वाकेआत और गैबी निज़ाम की बातें सुनानी है और इतनी सुनानी है कि ये चीज़ रिवाज़ में आ जाए।

इसलिए कि मेरे दोस्तो ईमान न सीखने की वजह से इन्सान इम्तेहान की चीज़ों से इत्मिनान हासिल करना चाहता है। जबकि इत्मिनान का हासिल होना अल्लाह तआ़ला ने जिस्म के सही इस्तेमाल पर रखा है। हमारे जिस्म के आज़ा अल्लाह तआ़ला की मरज़ी पर उनके हुक्मों पर इस्तेमाल होने लगें। कि आंख, कान, जबान, दिमाग, हाथ, पैर, और शर्मगाह हराम से बच जाए। इसके लिए मस्जिदों में ईमान के हलके लगाकर अल्लाह की ज़ात और उसकी सिफ़ात का यक़ीन पैदा करना पड़ेगा।

मेरे दोस्तो! आज मुसलमान हलाल कमाने के बावजूद हलाल

खाने के बावजूद और हलाल पहनने के बावजूद जो हराम बोल रहा है, हराम देख रहा है, हराम सुन रहा है और हराम सोच रहा है। ईमान को न सीखने ही की ये वजह है, कि आज हम अपने ईमान से बेपरवाह हैं, अगर हमें ईमान की परवाह होती तो हम हराम से बच रहे होते, इसलिए कि मुस्लिम शरीफ की हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्ला0 ने इरशाद फ़रमाया कि जब किसी मोमिन से गुनाह कबीरा हो जाता है, तो ईमान का नूर उसके दिल से निकल कर उसके सर पर साया कर लेता है, जब तक वो तौबा नहीं करता वो नूर उसके जिस्म में वापस नहीं आता है।

अब हमें ये कैसे पता चले कि गुनाहे कबीरा क्या है? इसलिए गुनाह कबीरा की फेहरिस्त किताब के आखि़र में दर्ज की जा रही है। आप हज़रात उसे देखकर अमल में लाएं।

रिजवान ज़हीर खां

बयान

"हज़रत मौलाना सअ़द साहब"

6 दिसम्बर 2009 बरोज इतवार सुबह 10 बजे

मुक़ाम एट खेड़ा, भोपाल (अमूमी बयान)

انـما يعمر مسا جد الله من امن با لله واليوم الا خر واقام الصلاة واتى

الزكوة ولم يخش الا الله فعسى اوٓلٓئك ان يكونوا من المهتدين (توبه ١٨

कहीं ऐसा न हो कि ये इज्तेमा मेला बनकर रह जाए

मेरे मोहतरम दोस्तो बुज़ुर्गो! हर साल के इज्तेमा का यहां (भोपाल में) एक मामूल बन गया है, ऐसा न हो कि कहीं हम रिवाज की तरफ जा रहे हों। मौलाना इल्यास साहब रह0 फ़रमाते थे कि इस काम में लगने वालों की अगर ज़ोहर और असर की नमाज़ों के दरमियान कोई फ़र्क नहीं है तो फिर काम करने वाला तनज्जुली पर है, तरक्की पर नहीं। अगर जुहर और असर के दरमियान फ़र्क है तो इस काम में चलने वाला तरक्क़ी कर रहा है। जुहर असर की नमाज़ का फ़र्क इस काम में सिर्फ नमाज़ में ही नहीं देखना है बल्कि पूरी जिन्दगी में देखना है कि जुहर के बाद असर पढ़ने के दरमियान ज़िन्दगी कैसे गुज़री? इसलिए ये गौर करो, कि

हमने इस काम से अब तक क्या कमाया? और

हमारे अन्दर क्या तब्दीली आई?

कहीं ऐसा न हो, कि ये इज्तेमा मेला बन कर रह जाए।

हमारा जमा होना नबूव्वत और दावत की निस्बत पर है

मेरे दोस्तो! हमारा जमा होना तो बड़ी आली निस्बत पर है,

कि दावत नबूव्वत की निस्बत है, इससे बड़ी कोई निस्बत अल्लाह ने पैदा ही नहीं की है। कि जिस काम के लिए नबियों का इन्तेखाब किया जाए, उस काम से बड़ा कोई काम नहीं हो सकता। तो हमारा जमा होना बड़ी ऊंची निस्बत पर है। जिस निस्बत पर हम हुए हैं इसी निस्बत पर हमारा बिखरना भी हो। अगर हमारा बिखरना इस निस्बत के अलावा है तो हमारा जुड़ना भी इस निस्बत पर नहीं होगा कि हमारा जमा होना नबूव्वत और दावत की निस्बत पर है। ये हमारे जुड़ने और जमा होने की वजह है। इसलिए ये बात सबके ख़्याल में रहे कि ये इबादत की और जिक्र की यो मज़लिस है जिसको फ़रिश्तों ने अपने परों से आसमान तक खुदा की क़सम घेरा हुआ है। हमें फ़रिश्ते नज़र नहीं आ रहे पर ये बात सच्ची और पक्की है इसलिए कि ये रसूलुल्लाह सल्लं0 की ख़बर है। बात सिर्फ़ इतनी है कि अल्लाह ने हमारे इम्तेहान के लिए उन फ़रिश्तों को हमारी नज़र से छुपाया हुआ है। वरना ये बात बिल्कुल हक़ है कि इस वक़्त फ़रिश्तों ने आसमान तक हम सबको अपने परों से ढका हुआ है। ये जिक्र की मज़लिस है इस मज़लिस में बैठने का वो एहतराम होना चाहिए जिस तरह नमाज़ में तशह्हुद में बैठने वालों की कैफ़ियत होती है।

दावत हो।

तब्लीग़ हो।

तालीम हो।

ये सब जिक्र की मज़लिस हैं और जिक्र की खासियत से है कि अगर जिक्र इज्तेमाइ किया जाए तो अल्लाह तआला अपने बन्दों का जिक्र फ़रिश्तों के इज्तेमाइ माहौल में करते हैं और अगर अल्लाह तआला का जिक्र तन्हाई में किया जाए तो अल्लाह तआला उस बन्दे को खुद याद फ़रमाते हैं।

बैठकर बात का सुनना किसी तब्दीली का ज़रिया बने, वरना तकरीरें और बयान, ये दावत का मिज़ाज ही नहीं है

इसलिए मेरे अजीजो दोस्तो! मुझे अर्ज करना है कि पूरा मजमा मुतवज्जेह हो कर यकसूई से और एहतेराम से अपने आपको इबादत में यकीन करते हुए बैठे। ताकि बैठकर बात का सुनना किसी तब्दीली का ज़रिया बने वरना तकरीरे और बयान ये दावत का मिज़ाज ही नहीं है। कि दावत का तकाज़ा ये है कि इस्लाम की निस्बत पर जमा होना और इस्लाम की निस्बत पर बिखरना। इस लिए बात को बहुत ध्यान के साथ सुनना जो बात सुनो वो अमल के इरादे से हो और फिर उसकी दावत दो। क्योंकि कोई शक नहीं है कि जो दावत और अमल दोनों काम बराबर करेगा, उससे अच्छा इस्लाम किसी का नहीं होगा।

(ومن احسن قولا ممن دعا الى الله وعمل صالحا وقال انني من المسلمين)

उलमा ने लिखा है कि दावत और अमल दोनों इकट्ठा ज़मा करना दीन को सबसे अच्छा बना देता है। मेरी बात समझना आप हज़रात के लिए थोड़ा मुश्किल काम होगा पर मुझे ये इसलिए कहना पड़ा है ताकि हमारे मजमे के अन्दर दावत के ऐतबार से क़ूव्वत आए पुख़्तगी आए। कि

क्यों दावत दी जाए?

क्यों तालीम की जाए?

क्यों नकल व हरकत को उम्मत में जिंदा किया जाए?

इसलिए मैं ये बात अर्ज कर रहा हूं कि इस्लाम में हुस्न लाने का रास्ता ही यही है। क्योंकि अल्लाह तआला खुद फ़रमाते हैं कि इससे अच्छा इस्लाम किसी का हो ही नहीं सकता जो दावत देते

हुए अमल करें। हमारे दावत देने की बुनियाद यही है, सिर्फ दूसरों की इस्लाह मकसूद नहीं है बल्कि दावत के ज़रिए अपना तअल्लुक़ अल्लाह के साथ बढ़ाना और अपनी इबादत में कमाल पैदा करना है, ये दावत देने की वजह है।

इसलिए मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो अजीजों! ये बुनियाद जितनी पुख़्ता और मजबूत होगी, उतना ही असबाबे तर्बीयत, अस्बाबे हिदायत, उम्मत में आम होगी। क्योंकि दीन पर इस्तेक़ामत और हर क़िस्म के बातिल से टकराकर दीन की हिफ़ाजत का सिर्फ यही रास्ता है कि उम्मते मुस्लिमा सौ फ़ीसद अपने दीन की दावत पर क़ायम हो जाए। अगर उम्मत ने दूसरों को दावत देनी छोड़ दी तो उम्मत बहुत करीब इस खतरे में है, इन्फ़िरादी तौर पर भी और इज्तेमाई तौर पर भी कि उम्मत दीन की दावत को छोड़ने से बातिल की मदऊ हो जाए।

उम्मत दावत छोड़ देगी तो फिर ये बातिल की मदऊ होने लगेगी

मैं आप हज़रात से हज़रत रह0 की बातें नक़ल कर रहा हूं। हज़रत रह0 फ़रमाते थे, कि जब ये उम्मत दावत छोड़ देगी तो फिर ये उम्मत बातिल की तरफ मदऊ होने लगेगी। क्योंकि उम्मत दो हाल में से एक को इख़्तेयार करेगी कि या तो ये दाई होगी या मदऊ होगी यानी या कोई हमें दावत दे रहा होगा या हम किसी को दावत दे रहे होंगे। अपने दीन पर इस्तेकामत का और अपने दीन की हिफ़ाजत का, इसकी इस्तेअ़दाद उम्मत में उस वक़्त तक रही जब तक ये अपने दीन की दावत पर मुजतमा थी।

इसलिए दिल की गहराईयों से इस बात को समझना होगा कि उम्मत के किसी भी जमाने में, किसी भी क़िस्म के ख़सारे से

निकलने का दावत के सिवा कोई रास्ता नहीं है कि उम्मत का आख़िर इस वक़्त तक नहीं सुधरेगा, जब तक उम्मत वो न करे जो उम्मत के पहलों ने किया था। अगर हम उम्मत के ख़सारे से निकलने और हालात के हाल के लिए इस काम से हटकर कोई भी रास्ता सोचें तो ये हमारी सोच नबूव्वत की सोच से मुख़्तिलफ़ होगी। और ये हमारी सोच मुख़्तिलफ ही नहीं होगी बल्कि हमारा रास्ता ही बदल देगी, हम ये समझेंगे कि सहाबा रज़ि0 ने जो काम अपने जमाने में किया था वो और काम था और हम जो ये काम कर रहे हैं, ये और काम है।

इसलिए बहुत ही ध्यान और तवज्जोह से मेरी बात सुनो! मेरा दिल ये चाहता है, अगर तीन दिन लगाने वाला भी इस काम के साथ हो तो इस काम के साथ इसके दिल का यक़ीन ये हो कि

तरबियत का

तवज्जोह का

हिदायत का

और अल्लाह की जात के साथ तअ़ल्लुक़ के पैदा करने का यही रास्ता है। अगर इस यकीन में ज़रा भी कमी आई तो आ़माले दावत की तासीर और आमाले दावत से फ़ायदा नहीं उठा सकेगा। हज़रत रह0 फ़रमाते थे, कि इस काम से मुनासबत की अलामत ये है कि जिस दिन कोई दावत का अमल छूट जाए, उस दिन उसको अपने इबादत में ऐसा ज़ोअफ़ महसूस हो, ऐसी कमजोरी महसूस हो जिस तरह दावत के गिज़ा न मिलने से जिस्मानी कमज़ोरी महसूस होती है। कि आ़माले दावत के लिए इस तरह ताकत का ज़रिया है, जिस तरह जिस्मानी गिज़ा जिस्म में कुव्वत पहुंचाने का ज़रिया हैं। ये हमारे दिल का यक़ीन होना चाहिए और यही बात हम अपने सारे बयान करने वालों से,

गश्त करने वालों से,

मश्विरा करने वालों से,

मुलाक़ातें करने वालों से,

मुज़ाकरे करने वालों से,

ये बात हम उन सबसे कहलवाना चाहते हैं कि हमारा इस काम के साथ यक़ीन क्या है?

हमारा गश्त किस यक़ीन पर हो रहा है?

मेरा तालीम में बैठना किस यक़ीन पर हो रहा है?

कि तब्लीग के प्रोग्राम की बुनियाद पर है या तरबियत और हिदायत के यक़ीन पर है?

"उम्मत" या तो "उम्मते इजाबत" होगी या "उम्मते दावत" होगी

जब ये उम्मत दावत छोड़ देगी तो फिर ये उम्मत बातिल की तरफ मदऊ होने लगेगी।

इसलिए मेरे अजीजों दोस्तो! मैं यहां बहुत ही बुनियादी बातें अर्ज करना चाहता हूं कि हमारे दिल की गहराईयों में ये बात उतरी हुई हो कि चाहे उम्मते इजाबत हो या उम्मते दावत हो (यानी मुसलमान हों या मुसलमान के अलावा सारी अक़वाम हो) इस सबके हर किस्म के ख़सारे से निकलने का सिवाए दावत इलल्लाह के कोई रास्ता नहीं है। अल्लाह रब्बुल इज्जत ने कुरआन में ये बात क़सम खाकर फरमा दी,

والعصر ان الانسان لفی خسر ، الا الذین آمنوا و عملوا الصالحات

وتواصو بالحق وتواصو بالصبر.

"कि सारी की सारी इन्सानियत खसारे में है खसारे से बचने और खसारे से निकलने के सिर्फ़ चार अस्बाब हैं। ये चार अस्बाब

आपस में बराबर की अहमियत रखते हैं, ये नहीं कहा जाएगा कि उन खसारे से निकलने के लिए कौनसा सबब ज़्यादा ज़रूरी है, कौनसा सबब कम ज़रूरी है। ये चार अस्बाब खसारे से निकलने के लिए बिल्कुल ऐसे हैं, जिस तरह इन्सान के लिए।

आग
हवा
पानी
और गिज़ा ज़रूरी हैं।

अस्बाबे निजात चार चीजें हैं

इससे कहीं ज़्यादा ज़रूरी है खसारे से निकलने के लिए ये चार अस्बाब हैं कि उनके बगैर जिन्दगी की कोई गाड़ी नहीं चलेगी। इस बात को अल्लाह ने क़सम खाकर फ़रमा दिया कि सारी की सारी इन्सानियत खसारे में है सिवाए उन लोगों के जो चार काम करें

الاالذين آمنوا وعملوا الصالحات وتواصو بالحق وتواصوا بالصبر

(1) ईमान लाए, ये पहला काम।
(2) आमाले सालेह करें।
(3) दूसरों को ईमान पर आमादा करें।
(4) दूसरों को आमाले सालेह पर भी आमादा करें।

ये चारो काम करने वाले ही नजात पाएंगे, कि ईमान लाएं आमाल सालेह करें और दूसरों को ईमान और आमाल सालेहा पर आमादा भी करें। अस्बाबे नजात सिर्फ दो नहीं है कि ईमान लाएं और आमाले सालेह करें, बल्कि अस्बाबे नजात चार चीजें हैं।

الا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وتواصوا بالحق وتواصوا

بالصبر

(1) ईमान।

(2) आमाले सालेहा।

(3) تو اصوابالحق हक़

(4) تو اصوابالصبر सब्र

ये चार चीजें मिलकर अस्बाबे नजात हैं।

तमाम शक्लों को लात मारी सिर्फ़ अपने दीन की हिफ़ाजत के लिए

मेरे अज़ीज़ो दोस्तो और बुजुर्गो! हम उम्मत के हर फ़र्द को दावत पर इसलिए लाना चाहते हैं, ताकि ये अपने दीन की दावत से अपने दीन पर क़ायम रहे। क्योंकि दीन पर इस्तेक़ामत, दीन की दावत से बाकी रहती है। हमें ये अन्दाजा हो कि सहाबा किराम को उस जमाने में जो चीजें पेश की गई वही चीजें आज पूरी दुनिया में मुसलमानों को पेश की जाती हैं। उन तमाम शक्लों को लात मारी सिर्फ अपने दीन की हिफ़ाजत के लिए और मोहम्मद सल्ल0 के किसी एक भी तरीके से हटने के लिए तैयार न हुए। अबदुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ि0 को क़ैद किया गया और रूम के बादशाह ने उन्हें नसरानियत की दावत दी कि आप ईसाई हो जाएं तो मैं अपनी आधी बादशाही आपको दे दूंगा। अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ि0 ने फ़रमाया कि तुम्हारी आधी बादशाहत नहीं तेरी पूरी बादशाहत और उसके अलावा की सारी बादशाहत भी अगर मुझे मिले तो मैं पलक झपकने के बराबर भी मोहम्मद सल्ल0 के किसी एक तरीके को भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं। तो रूम के बादशाह ने उन्हें गर्म पानी में डालने की तदबीर की, तो अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ि0 पानी देखकर रोए। बादशाह ने ये समझा कि ये घबरा गए, तो बादशाह ने फिर उनसे कहा कि तुम नसरानी हो जाओ, ये

सुनकर उन्होंने फिर इन्कार कर दिया और फ़रमाया कि मेरे रोने की वजह ये है कि मैं अल्लाह को एक जान क्या पेश करूं मैं तो अपनी जान की हिक़ारत पर रो रहा हूं न कि जान की मोहब्बत में रो रहा हूं। अगर मेरे पास मेरे जिस्म के बालों के बराबर जाने होतीं तो मैं एक-एक करके सब अल्लाह के लिए कुर्बान करता।

ये वाक़्यात तो हम सुनते हैं, लेकिन हमने कभी ये गौर नहीं किया सहाबा के अन्दर ये इस्तेअ़दाद कैसे पैदा हुई? आज उम्मत की ये सलाहियत क्यों हो गई? इसकी क्या वजह है?

मेरे अजीजों दोस्तो और बुजुर्गो!

ये वो दावत है जो इस उम्मत के जिम्मे फ़र्जे ऐन है

मैं मुग़ालते के तौर पर नहीं कर रहा हूं बल्कि तारीख़ इसकी गवाह है कि जब उम्मत दावत इलल्लाह छोड़ देगी तो सबसे पहली जो मुसलमानों को कमज़ोरी पैदा होगी, वो ये कि अपने दीन को हल्का समझने और अपने दीन को दुनिया के बदले बेच देगी ये सिर्फ़ दावत के छोड़ने का नतीजा होता है, कि जब उम्मत इज्तेमाई तौर पर दावत इलल्लाह को छोड़ देती है तो ऐसा होता है। इसलिए ये बात भी हमें समझनी चाहिए कि दावत इलल्लाह उम्मत का इज्तेमाई फ़रीज़ा है, जिस तरह नमाज़ इज्तेमाई फ़रीज़ा है, ये इन्फ़िरादी फ़रीज़ा नहीं है। ये वो दावत है जो इस उम्मत के जिम्मे फ़र्जे ऐन है, फ़र्जे कफ़ाया नहीं है। मेरा ये बात कहना आपको अजीबसा लग रहा होगा क्योंकि जेहनों में ये बात बैठी हुई है कि ये तब्लीगी जमात है, जो उम्मत की इस्लाह का काम कर रही है, पर ऐसा नहीं है। इस काम में लोगों का इज्तेमाई तौर पर शरीक न होना, और इस काम को न करना इसकी बुनियादी वजह ये है कि उम्मत इस काम को फ़र्जे किफ़ाया समझती है। कि भलाई का हुक्म करना और बुराई से रोकना, बेशक अच्छा काम है, अगर उसे एक

जमात कर ले तो बाकी की तरफ़ से जिम्मेदारी अदा हो जाती है। लेकिन ऐसा नहीं है, बल्कि दावत फ़र्जे ऐन है, फ़र्जे किफ़ाया नहीं है। फ़र्जे किफ़ाया वो दावत होती है, जो दूसरों के लिए की जाए जैसे।

जनाज़े की तक्फ़ीन,
उसकी तदफ़ीन,
उसकी नमाज़

ये फ़र्जे किफ़ाया है, कि मामला दूसरे का है। दूसरों की इस्लाह के लिए दावत देना भी फ़र्जे किफ़ाया है कि अगर कोई जमात ऐसी हो, जो लोगों को भलाई का हुक्म करे और बुराई से रोके तो ये फ़रीजा अदा हो जाएगा, ये मैं फ़र्जे किफ़ाया कर रहा हूं। लेकिन ये काम फ़र्जे किफ़ाया नहीं है, बल्कि फ़र्ज ऐन है, क्योंकि दावत खुद अपनी ज़ात के लिए है। हां दूसरों को भी इससे नफ़ा हो जाएगा, पर यहां हर एक मेहनत खुद उसकी अपनी जात के लिए है।

(ومن جاهد فانما يجاهد لنفسه ان الله لغني عن العلمين)

यक़ीन के बनने का रास्ता दावत ही है

कि हर एक की दीन की मेहनत खूद उसकी अपनी जात के लिए पहले है। ये ईमान का सीखना फ़र्जे किफ़ाया नहीं है बल्कि ईमान का सीखना फ़र्जे ऐन है, ईमान का सीखना फ़र्जे ऐन है तो उसकी दावत देना फ़र्जे ऐन है। हज़रत रह0 फ़रमाते **थे कि यक़ीन के बनने का रास्ता दावत ही है, इसके अलावा यक़ीन के बनने का कोई रास्ता नहीं है।** ये मैं हज़रत की बातें (अमानत) अर्ज़ कर रहा हूं क्योंकि मेरे दोस्तो अजीजो! हाए हाए! अब हमारे मजमे का हाल ये है कि वो चुन-चुन कर मौलाना यूसुफ़ रह0 के

बयानात को नहीं पढ़ता इसी के साथ हयाते अलसहाबा के पढ़ने का भी कोई जज्बा और शौक उसके अन्दर नहीं है, कि आख़िर मौलाना इल्यास साहब रह0 और मौलाना यूसुफ़ साहब रह0 अपने मजमे से क्या चाहते थे? ये हज़रात अपने मजमे को किस बुनियाद पर उठाना चाहते थे। अब हमारे मजमे का हाल ये है कि वो हर किस्म की किताबों का मुताला करते हैं, जिससे उनका जेहन और उनकी फ़िक्रें उनकी सोंच वो हज़रत मौलाना इल्यास रह0 और हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह0 की सोच से मुख़्तलिफ़ हुई जारही हैं। मैं तो सोंचता हूं कि सिवाए मसायल की किताबों के कि वो तो ज़रूर पढ़ा करो लेकिन बाकी उन हज़रात के बयानात का पढ़ना इन्तेहाई ज़रूरी है। ताकि हमें अन्दाजा हो कि ये हज़रात इस मेहनत को किस बुनियाद पर पेश कर रहे थे, कि आख़िर दावत है किस लिए? कि दावत अपनी जात के लिए असल है। हज़रत रह0 फ़रमाते थे कि **"जिस चीज़ को तुम अपने अन्दर पैदा करना चाहो, उसको बसिफ्ते तब्लीग करो"** कि अपने अन्दर उतारने की गर्ज़ से दूसरों को दावत दो, तो ये अल्लाह का जाब्ता है, उसका वायदा है कि जो हमारे वास्ते मेहनत करेंगे हम दूसरों से पहले उनको नवाज़ देंगे कि जो हमारे बन्दों को हमारी तरफ बुलाएंगे हम उनसे पहले उन्हें नवाजेंगे।

(والذين جاهدوا فينا لنهدينهم سبلنا وان الله لمع المحسنين)

इसलिए मेरे दोस्तो बुजुर्गो ! ईमान का सीखना फ़र्जे ऐन है, और इतना ईमान सीखना फ़र्जे ऐन है जो मोमिन को हराम से रोक दे, ये दावत की पहली चीज़ है। दावते ईमान तमाम नबियों को मुशतरक दी गई हैं, शरीअत तो मुख़्तलिफ़ हैं कि किसी नबी की इबादत को कोई तरीक़ा है और किसी का कोई तरीक़ा है। लेकिन दावत सारे नबियों की मुशतरक है।

وما أرسلنا من قبلك من رسول (الانبياء:25)

"दावते ईमान" खुद मोमिन के लिए है (ईमान का सीखना फ़र्ज़े ऐन है)

ये सारे नबियों की मुशतरक दावत है, मौलाना इल्यास साहब रह0 फरमाते थे कि अगर मैं इस काम को कोई नाम रखता तो इस काम का नाम "तहरीके ईमान" रखता कि ईमान का सीखना फ़र्ज़े ऐन है चूंकि उम्मत के अन्दर से ईमान के सीखने का रिवाज ख़त्म हो गया तो मुसलमानों के अन्दर ये बात आ गई कि ईमान की दावत तो गैरों के लिए है कि हम तो ईमान वाले हैं, हमको ईमान की दावत की ज़रूरत नहीं है। अब ये सोच हो गई है, हालांकि दावते ईमान खुद मोमिन के लिए है, अल्लाह का हुक्म भी है, कि :

(يا ايها الذين آمنوا آمنوا)

ईमान वालो! तुम ईमान लाओ अल्लाह हुक्म दे रहे हैं, ईमान वालों को ईमान लाने का। उलमा ने इसकी तफ़सीर की है कि ईमान वालो! मुसलमान बनकर रहो। इसलिए दावते ईमान खुद मोमिन के लिए है, एक ख़्याल ये पैदा हो गया है। इस जमाने में कि दावत तो गैरों के लिए है, हम तो हैं ही ईमान वाले हमें दावत की ज़रूरत नहीं है। हालांकि आप अन्दाजा करें तो सहाबा किराम जिनका ईमान उनके दिलों में पहाड़ों की तरह जमा हुआ था, उनको हुक्म है अपने ईमान की तजदीद करते रहा करो, वर्ना ईमान पुराने कपड़े की तरह पुराना हो जाएगा। सहाबा, जो

वह्य भी उतरती हुई देख रहे हैं।
फ़रिश्तों का नुजूल भी देख रहे हैं।,
गैबी मददें भी देख रहे हैं;
अल्लाह के वादे भी पूरे हो रहे हैं।

उनके ईमान में तरक्की भी हो रही है।

मेरे दोस्तो! सहाबा के सामने जितने भी ईमान को बढ़ाने के मनाज़िर थे, हमारे सामने उनमें से कोई भी मनाज़िर नहीं हैं।

और सहाबा,
जो गैबी मददें भी देख रहे है,
फ़रिश्तों को नजूल भी देख रहे है,
चीजों में बरकतें भी देख रहे,

फिर उनको ये हुक्म दिया जा रहा है कि अपने ईमान की तजदीद करते रहो, क्योंकि ईमान इस तरह पुराना हो जाता है, जिस तरह कपड़ा पुराना हो जाता है। इस बात पर बहुत गौर करना पड़ेगा, कि आज मुसलमानों का ये कहना कि हमें क्या जरूरत है ईमान की दावत की या हमें क्या जरूरत है ईमान की तजदीद करने की, तो ये बात कहना आसान नहीं है, तो मैं ने अर्ज किया कि वो सहाबा जिन का ईमान उम्मत के लिए नमूना है।

(बक्रह। 13) (آمنوا كما امن الناس)

"कि ईमान सीखो सहाबा की तरह" ईमान सहाबा नमूना है, उनके लिए हुक्म है अपने ईमान की तजदीद करने का कि अपने ईमान को नया किया करो।

सहाबा ने हुजूर सल्ल० से पूछा भी कि या रसूलुल्लाह! हम अपने ईमान को कैसे नया करें? आप सल्ल० ने फ़रमा कि لا الـــه الا الله। कि कसरत से अपने ईमान को नया किया करो।

जो अल्लाह के गैर से उम्मीद रखेगा
अल्लाह उसे गैर के हवाले कर देंगे

अब सवाल ये पैदा होता है कि क्या मतलब है कलमे की कसरत का?

कसरत का मतलब सिर्फ़ उसका ज़िक्र नहीं है, बल्कि कलमे की कसरत से ईमान नया होने का मतलब ये है कि जिस तरह बकसरत दुनिया में अल्लाह के गैर से होने को बोला जाता है, तुम बकसरत अल्लाह की जात से होने को बोलो, ये है कलमे की कसरत से ईमान के नया होने का मतलब।

मैं तो सोचता हूं कि पाँच मिनट तू ये तस्बीह लेकर कलमे का ज़िक्र करता है और सुबह से लेकर शाम तक उसकी जबान पर,

हुकूमत ये करेगी,

ताजिर ये करेंगे,

वज़ीर करेंगे,

सदर करेंगे,

फ़लां मुल्क ये करेगा ,फ़लां मुल्क ये करेगा,

उसने फ़लां हथियार बनाया हुआ है, वो ये करेगा,

कि सारा दिन शिर्क को बोला करते हैं, अख़बार को आँखें फाड़ फाड़ कर पढ़ते हैं और हैरत से दूसरों को सुनाते हैं, क्योंकि कुरआन की खबरों का तो यकीन है नहीं, और अखबार की खबरों का यकीन है, इसलिए इसे पढ़कर सुनाते हैं। अल्लाह तो इन्सानों के दिलों की तासीर देखते हैं। अल्लाह तआ़ला का निज़ाम ये है और उनका जाब्ता ये है कि जो हमारे गैर से मुतअस्सिर होते हैं हम उनपर अपने गैरों को मुसल्लत जरूर करते हैं। मुसलमान को अल्लाह के गैर से मुतअस्सिर होने की सजा में उनपर गैरों का तसल्लुत है। हां, ये मैं आपको हदीस की बात अर्ज़ कर रहा हूं रिवायत में है कि आप सल्ल0 ने फरमाया कि जो अल्लाह के गैर से उम्मीद रखेगा अल्लाह उसे गैर के हवाले कर देंगे।

लो कलमा "لا اله الا الله" कि कसरत से ईमान की ताजगी का मतलब क्या है?

इसपर गौर करना पड़ेगा सिर्फ़ उससे कलमा "لا إله إلا الله" का ज़िक्र मुराद नहीं है, बेशक! इसमें खुदा की क़सम! कि ज़िक्र के फ़ज़ायल, उसके अनवारात उसकी बरकात उसके फ़वायद अपनी जगह पर मुसल्लम हैं, कि बन्दा अपनी जबान से कलमे के अल्फ़ाज़ कहे तो

उसके क्या फ़ज़ायल हैं,?
उसके क्या अन्वारात हैं,?
उसके क्या बरक़ात हैं,?
उसपर क्या वायदे हैं,?

ये सब अपनी जगह पर मुसल्लम हैं लेकिन अल्लाह के गैर की तासीर दिलों से निकालने और अल्लाह की ज़ात और उसकी कुदरत उसकी अज़मत, उसकी बड़ाई को दिल में बिठाने के लिए, ये जरूरी है, कि जहां कलमे का ज़िक्र करो, वहां इस कलमे का मतलब और इसके मफ़हूम की दावत भी दो। क्योंकि हदीस में आता है कि तुम कलमा "لا إله إلا الله" का इतना ज़िक्र करो कि लोग पागल कहें मैंने इस हदीस पर गौर किया कि ज़िक्र करने वालों को पागल कहलाए जाने का मतलब क्या है? तो समझ में ये आया कि नबियों को इसलिए पागल कहा जाता था कि नबी इस कलमे को क़ौम के अक़ीदे और कौम के यक़ीनों के खिलाफ़ कहते थे। इसलिए कौम उन्हें पागल कहती थी।

कौमे शुऐब का ख़्याल ये था कि तिजारत से होता है।
कौमे सबा का गुमान ये था कि ज़राअ़त से होता है।
फ़िरऔन का ख़्याल ये था, कि मेरी बादशाहत से होता है।
नमरूद का का ख़्याल ये था, कि माल से होता है।

पर नबी उन सारे कलमों के ख़िलाफ़ अपना कलमा لا إله إلا الله लेकर आए तो उन सबने नबियों को पागल कहा, कि कोई

नबी ऐसा नहीं है जिसको कौम ने पागल न कहा हो। आप हज़रात को बात समझ में आ रही है? क्यों भाई! देखो! मैं ये तकरीर नहीं कर रहा हूं।

ईमान को नया करो

मैं तो ये सोचता हूं कि आख़िर मेरा मज़मा रोजाना अल्लाह की तौहीद को, उसकी कुदरत को बोलने की जरूरत क्यों नहीं महसूस कर रहा है? मुझे तो इसकी उलझन है कि ये उसे बोलने की जरूरत महसूस नहीं कर रहा है? असल में हमें ये नहीं मालूम कि सहाबा किराम रज़ि0 को ईमान की तजदीद का जो हुक्म दिया गया तो उसके लिए सहाबा किराम क्या करते थे? ये हमें मालूम नहीं है।

इमाम बुखारी रह0 ने तो ईमान के तकवियत के बाब में जो तर्जुमतुलबाब बांधा है, ईमान की तकवियत के लिए जो बाब मुतअय्यन किया है उसमे खुद ईमाम बुखारी रह0 ने मआज बिन जबल रज़ि0 का वाक्या नकल किया है कि मआज बिन जबल रज़ि0 लोगों को मस्जिद में लाकर उन्हें तौहीद सुनाते गैब के तजक्रे करते और लोगों से कहते कि आओ थोड़ी देर बैठो ईमान सीख लें। मगर हम तो दावत से इतने नाआशना हो चुके हैं कि वो काम जो सहाबा ने किया है, उसपर हमें इशकाल होने लगा। खूब गौर करो! कि कहा ईमाने सहाबा कि हज़रत उस्मान रज़ि0 के ईमान को अगर किसी एक लश्कर पर तक़्सीम कर दिया जाए तो उसके लिए इतना इतना काफ़ी हो, जितना जितना ईमान होना चाहिए। एक मर्तबा हज़रत उस्मान रज़ि0 के पास से हज़रत उमर रज़ि0 का गुज़र हुआ तो उनके साथ बैठे हुए लोगों से हज़रत उमर रज़ि0 ने फ़रमाया कि तुम्हारी मज़लिस में ये उस्मान रज़ि0 जो बैठे हैं ना ये वो शख़्स हैं, कि उनके ईमान को अगर एक बड़े लश्कर पर तक़्सीम किया जाए,

तो ये ईमान सबके लिए काफी हो जाए। ऐसा ईमान सहाबा का फिर उनको हुक्म ये कि अपने ईमान को नया करो।

तो मुझे ये अर्ज़ करना था मेरे अज़ीज़ो दोस्तो! कि हमारा रोजाना का काम ये है कि हम मस्जिदों में ईमान के हलके क़ायम करें, ये मस्जिद को आबाद रखने का पहला अमल है, ये सहाबा की सुन्नत है।

اجلس بنا نؤمن ساعة.

मस्जिद में ईमान का हलका

कि आओ भाई बैठो थोड़ी देर ईमान सीख लें। मआज बिन जबल रज़ि0 ,अब्दुर्रहमान बिन रवाहा रज़ि0 वगैरह बड़े जलीलुलकद्र सहाबी हैं। पर उनका रोजाना का मामूल था कि लोगों को लेकर मस्जिद में ईमान का हलका कायम करते थे। अब दावत ईमान उम्मत में ख़त्म हो गई, कि ईमान की तकवियत के असबाब ख़त्म हो गए तो उसका सारा असर पड़ा दीन पर। क्योंकि इस्लाम ईमान के बकद्र होगा, कि जितना ईमान उतना इस्लाम अल्लाह की इताअत ईमान के बकद्र होगी इसलिए हदीस में फ़रमाया है कि मोमिन अल्लाह की इताअत में नकील पड़े ऊंट की तरह है। मुसलमानों का यह सोचना कि हम तो हैं ही ईमान वाले, हमें क्या जरूरत है ईमान को सीखने की? ये बड़ी नासमझी की बात है। सुनो! जितनी देर बदन से कुरता उतारने में लगता है उससे कम देर में ईमान दिलों से निकल जाता है। हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया जब किसी मुसलमान से गुनाह कबीरा हो जाता है तो ईमान के अनवार उसके दिल से निकलकर उसके सर पर साया कर लेता है फिर जब तक वो तौबा नहीं करता, ईमान का नूर वापस नहीं आता। हमें तो गुनाहे कबीरा की भी खबर नहीं कि गुनाह कबीरा क्या क्या हैं।

एहकामात का इल्म अमल के लिए है

इसलिए मेरे दोस्तो अजीजो बुज़ुर्गो! पहला काम हमारा ये है कि कलमा لا الــه الا اللــه को दावत में लाओ, उसको दावत में लाने का सबसे पहला काम ये है कि रोजाना,

अल्लाह की तौहीद को

उसकी कुदरत को

उसके रब होने को

उसकी अज़्मत को और उसके गैर से कुछ नहीं हो रहा इसको बोला करो। हमारे गश्त का ये बुनियादी मक़्सद है, उलमा ने लिखा है एहकामात का इल्म अमल के लिए है, इससे अमल सीखना मक़्सूद है, कि इससे तो फ़रागत हो जायगी। कि नमाज़ का इल्म हासिल हो गया, तो नमाज़ के इल्म से फ़रागत हो गई कि नमाज़ ऐसे पढ़ी जाएगी।

ज़कात का इल्म हासिल हो गया, तो ज़कात के इल्म से फ़रागत हो गई कि ज़कात ऐसे दी जाएगी।

हज का इल्म हासिल हो गया, तो हज के इल्म से फ़रागत हो गई कि हज इस तरह किया जाएगा।

रोजे का इल्म हासिल हो गया तो रोजे के इल्म से फ़रागत हो गई कि रोजा ऐसे रखा जाएगा।

सारी नेकियों का मदार तौहीद पर है

उलमा ने लिखा है कि अहकामात का इल्म अमल के लिए है तो अमल के लिए इल्म से फ़रागत हो जाएगी लेकिन मोमिन को अल्लाह की तौहीद से फ़रागत नहीं है कि इतना कहना काफ़ी नहीं है कि हम जानते हैं अल्लाह एक है, बल्कि रोजाना अल्लाह की तौहीद को बयान करो, इसका हुक्म है।

"يا ايها الناس وحدوا!! لله فان التوحيد راس الطاعات"

कि अल्लाह की तौहीद को बोला करो क्योंकि सारी नेकियों का मदार तौहीद पर है। कि

आमाल में इख़्लास

आमाल पर इस्तेकामत

आमाल पर वायदों का पूरा होना

आमाल पर अज्र का मिलना

हर आमाल के साथ ये चार बुनियादी चीजें हैं, ये चारों ईमान के बगैर हासिल नहीं होती।

वादे यक़ीन से पूरे होंगे।

इस्तेकामत यक़ीन से होगी।

अज्र भी यक़ीन से मिलेगा।

इख़्लास भी ईमान के बक़द्र होगा।

ईमान की तक़वियत के चार अस्बाब

☆ इसलिए ईमान की तक़वियत का पहला सबब ये है कि अल्लाह की तौहीद को रोजाना बोला करो, कि करने वाली जात सिर्फ़ अल्लाह की है, अल्लाह के गैर से तो कुछ होता ही नहीं। कि कुदरत कहां है। कुदरत कायनात में नहीं है, कुदरत तो अल्लाह की ज़ात में है, कि जिबराईल में या नबियों में या वलियों में इन किसी में कुदरत नहीं है।

तो वो जब इन्सान अल्लाह के गैर में कुदरत तसव्वुर करता है तो ये ख़्याल ही उसे अल्लाह के गैर की तरफ ले जाता है।

वज़ीर से ये हो जाएगा

सदर से ये हो जाएगा।

अब मैं आपको कैसे समझाऊं, मैं तो हज़रत रह0 की बातें

अर्ज़ कर रहा हूं, हज़रत रह0 फ़रमाते थे कि उनका अपना यक़ीन अपने आमाल से हटकर दूसरों के अमल पर जाएगा, वो यूं कहेंगे की फलां बुजुर्ग से ये हो जाएगा। ये होंगे वो, जो अपने अमल से फ़ारिग हो जाएंगे अपनी हाजतों को अमल करने वालों के हवाले कर देंगे।

हालांकि करने वाली जात सिर्फ़ अल्लाह की है, अल्लाह के गैर से कुछ नहीं होता अगर नबी भी ये कहे कि ये कल करूंगा और इन्शाअल्लाह कहना भूल जाए ऐसा नहीं है कि नऊजुबिल्लाह आप सल्ल0 ने जान बूझकर ऐसा किया हो, कि जब आपसे पूछा गया क्रि असहाबे कहफ़ कौन थे? तो आप सल्ल0 ने फरमाया ये मैं कल बता दूंगा बल्कि आप ये बात फरमाते हुए इन्शाअल्लाह कहना भूल गए।

ولا تقولن لشيء انی فا عل ذلک غدا الا ان یشاء الله واذ کر ربک اذا نیست وقل عسی ان یهدین ربی لا قرب من هذا رشدا.(کهف ۲۳۔۲۴)

हम तो गौर करें कि सुबह से शाम तक हमारी जबान पर कितने दावे आते हैं। कि

हम ये करेंगे।

हुकूमत ये करेगी।

ताजिर ये करेंगे।

डॉक्टर ये करेंगे।

पर आप सल्ल0 ने एक मर्तबा फ़रमाया कि मैं कल बतलाऊंगा कि अस्हाबे कहफ कौन थे? और आप इन्शाअल्लाह कहना भूल गए तो उलमा ने लिखा है कि पन्द्रह दिन तक वह्य नहीं आई, इतना लम्बा वक्फ़ा वह्य के बन्द होने का कभी नहीं हुआ। आप सल्ल0 पर ताने कसे जाने लगे कि कहां हैं मोहम्मद (सल्ल0)

जो कहते थे कि आसमान से वह्य आती थी? कहां वो जिब्रील जो आसमान से वह्य लेकर आते थे? क्यों नहीं बोलते कि आपके पास गैब की खबर आती है। आप वह्य के बन्द हो जाने से बहुत परेशान हो गए, सिर्फ बात इतनी थी कि मैं कल बताऊंगा कि अस्हाबे कहफ़ कौन थे? ये नहीं कहा कि अल्लाह चाहेंगे तो मैं कल बताऊंगा। आप (सल्ल0) को इस पर तंबीह हुई कि आपने क्यों कहा मैं कल बताऊंगा। फिर पन्द्रह दिन के बाद वह्य आई कि

ولا تقولن لشیء انی فاعل ذلک غدا الا ان یشاء الله واذکر ربک

اذا نسیت وقل عسی ان یهدین ربی لا قرب من هذا رشدا (۲۴.۲۳)

नबी जी! आईन्दा कभी ये न कहियेगा कि ये काम मैं कल करदूंगा जब तक आप अपने कहने को हमारी जात पर मौकूफ न करें कि जब भी आप इन्शाअल्लाह कहना भूल जाया करें तो इन्शाअल्लाह जरूर कह लिया करें।

मैं अर्ज़ कर रहा था मेरे दोस्तो! कि कुदरत अल्लाह की जात में है, औलिया अम्बिया फरिश्ते जिबराईल सबके सब मोहताज हैं नबी भी जिस काम के लिए भेजे गए हैं ना, उसमें भी वो मोहताज हैं, मुख़्तार नहीं हैं कि किसी को वो हिदायत दे दें। कि नबियों को हिदायत के लिए ही भेजा गया है, लेकिन वो खुद किसी को हिदायत नहीं दे सकते। आप सल्ल0 ने सारा ज़ोर लगा दिया अपने चचा अबूतालिब पर कि उनको हिदायत मिल जाए और दूसरे चचा हज़रत हम्जा रज़ि0 के कातिल वहशी कि वहशी को कोई क़त्ल कर दे, पर अल्लाह वहशी को हिदायत दे रहे हैं और अबूतालिब बगैर हिदायत दुनिया से जा रहे हैं।

हज़रत रह0 फ़रमाते थे कि अम्बिया और इन्सान अपने इरादे में नाकाम किए जाते हैं, अल्लाह को पहचानने के लिए। हज़रत

अली रज़ि0 फ़रमाते थे कि मैंने अपने इरादे में नाकाम होकर ही अल्लाह को पहचाना है। जो लोग अस्बाब का यक़ीन रखते हैं ना, वो नाकामी में अस्बाब की कमी तलाश करते हैं और जो अल्लाह पर यक़ीन रखते हैं, वो अपनी नाकामियों में अल्लाह को पहचानते हैं कि चलो अल्लाह की तरफ़, इसलिए कि काम अल्लाह ने बिगाड़ा है, कि उनको अस्बाब की नाकामी अल्लाह की तरफ़ ले जाती है और जिनका यक़ीन अस्बाब पर होता है, कि वो तो बेचारे खुदकुशी कर बैठते हैं कि सारे अस्बाब होते हुए भी काम नहीं हुआ।

कुदरत, अल्लाह की जात में है, कायनात में कुदरत नहीं है

इसलिए मेरे अजीज दोस्तो और बुजुर्गो! कुदरत अल्लाह की जात में है, कायनात में कुदरत नहीं है। कायनात तो कुदरत से बनकर कुदरत के ताबे है, ये जितनी जमीन और आसमान के बीच खुले में जो चीजें हैं, ये सब अल्लाह की पहचान के लिए हैं, कि अल्लाह ने जाहरी निज़ाम को बनाया बन्दे के इम्तेहान के लिए कि देखना ये है कि निज़ामे आलम के तगैय्युरात तुम्हें हमारी तरफ़ लाते हैं या तुम्हें हमारे गैर की तरफ ले जाते हैं।

अब क्या बताऊं मैं आपको, हाए! इस जमाने में मुसलमान चलता है साइन्स वालों को देखकर, कि साईंस क्या कह रही है। सबसे बड़ा शिर्क जो मुसलमान के लिए है वो साइन्स का निजाम है, इसका इख़्तेताम होगा दज्जाल पर।

अल्लाह के गैर से दुनिया में कोई तग़य्युर होना ये साइन्स का खुलासा है। साइन्स में पढ़ाया ही ये जाता है कि इसकी वजह से ये हुआ और इसकी वजह से ये, खुदा की कसम! साइन्स में अल्लाह के गैर से होना ही पढ़ाया जाता है। ये बेचारे नहीं जानते कि

अल्लाह कौन है?

इस कायनात का निज़ाम क्या है?

खला का निज़ाम कैसे चल रहा है?

इसकी खबर ही नही, उन्होंने तो निज़ाम कायनात से जोड़ा है, यही साइन्स का खुलासा है और ये सबसे बड़ा शिर्क है।

निज़ामे कायनात को कायनात से जोड़ना शिर्क है

निज़ामे कायनात को कायनात से जोड़ना, इसको शिर्क कहते हैं। और

निज़ामे कायनात को खालिक़े कायनात से जोड़ना, इसको ईमान कहते हैं ये बात मेरी याद रखना! कि निज़ामे कायनात को कायनात से जोड़ना इसको शिर्क कहते हैं और निज़ामे कायनात को खालिक़े कायनात से जोड़ना इसको ईमान कहते हैं मैं कैसे अर्ज़ करू! कि हमें रहम नहीं आता अपने छोटे छोटे बच्चों पर कि सारी कुव्वत हम लगा देते हैं कि उन्हें अल्लाह के गैर को सिखलाने पर शिर्कियात सिखलाने पर, अब जब पूछोगे उन बच्चों से कि बारिश कब होती है, तो वो साइन्स में पढ़ा हुआ सबक बतलाएंगे कि बारिश ऐसे होती है।

हाए!!! मैं क्या अर्ज़ करूँ।

हमारा मजमा कहां जा रहा है?

हम कहां जा रहे हैं?

अगर रोजाना तौहीद को नहीं बोलोगे ना तो शिर्क ऐसी जड़ पकड़ लेगा कि तुम समझोगे कि हम तब्लीग का काम कर रहे हैं और अन्दर शिर्क का माद्दा पैदा हो रहा होगा। इसलिए अल्लाह के गैर से नहीं हो रहा, इसको बोलने की आदत डालो! क्योंकि अल्लाह से होने को तो गैर भी बोल रहे हैं कि ऊपर वाला करता है, ऊपर वाला करेगा और ऊपर वाले ने किया। सिर्फ़ इसे बोलने को तौहीद

नहीं कहते , बल्कि अल्लाह के गैर से नहीं हो रहा, इसे बोलने को तौहीद कहते हैं, ये नबियों की दावत है कि अल्लाह के गैर से तो कुछ हो ही नहीं रहा है, करने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह की है। हमें तो रोजाना इसकी चोट मारनी पड़ेगी अपने दिल पर, तब कहीं जाकर उसकी हकीक़त खुलेगी वर्ना सबके दिलों में चोर बैठा हुआ है, जितना ये कायनात से मुतअस्सिर होंगे ना, उतना ही उन नक़्शों में चलने वाले गैरों से मुतअस्सिर होंगें।

सहाबी के लिए जेल की कोठरी में बादल का टुकड़ा आकर बरसा

अब कौन सिखलाए ऐसे लोगों को, कि बादल का टुकड़ा सहाबी के लिए जेल की कोठरी में आकर बरसा। कि हज़रत हुज्र बिन अदी रज़ि०. को एक बार गुस्ल की हाज़त हुई। उस वक़्त वो एक कोठरी में कैद थे। जो आदमी उनकी निगरानी में लगाया गया था, उससे उन्होंने गुस्ल के लिए पानी मांगा, तो उसने पानी देने से इन्कार कर दिया, फिर उन्होंने आसमान की तरफ देखकर अल्लाह से पानी मांगा, उसी वक़्त एक बादल आया और कोठरी के अन्दर घुसकर बरसने लगा, उन्होंने उससे गुस्ल किया और जरूरत भर का पानी भी भर लिया।

कौन साइन्स वाला इसको कबूल कर लेगा? वो तो यूं कहते हैं कि बादल वहां से उठता है इतनी बुलन्दी पर जाता है वहां से बरसता है उनका सारा निज़ाम साइन्स का है, ये तो अल्लाह को जानते ही नहीं हैं बेचारे ये तो समझते हैं कि अल्लाह दुनिया बनाकर फ़ारिग हो चुके हैं, अब दुनिया का निज़ाम खूद चल रहा है। खुदा की क़सम! यही दहरित है, यही कहरित है। कहरियत इसी का नाम है कि जो कुछ कायनात में हो रहा है, खुद बखुद हो रहा

है, अपने बच्चे को भी यही पढ़ा रहे हैं और खुद यही पढ़ रहे हैं।

बाज की सुबह ईमान के साथ बाज की कुफ्र के साथ

हुजूर सल्ल0 ने इसलिए ये बात पहले ही साफ़ कर दी कि सुलह हुदैबिया की रात बारिश हुई, आप (सल्ल0) ने पहले ही सहाबा से फ़रमाया कि सुन लो कि जब सुबह को सोकर उठोगे तो तुम में से बाज मोमिन होंगे और बाज काफ़िर होंगे। ये बात सुनकर सहाबा दहल गए कि ये बात कोई मामूली बात नहीं थी। इसलिए कि वो लोग कुफ्र से ही निकलकर ईमान में आए फिर आख़िर सुबह कैसे काफ़िर हो जाएंगे? तो आप (सल्ल0) ने सहाबा से फ़रमाया कि जब सुबह सोकर उठोगे ना तो तुम में से बाज काफ़िर होंगे और बाज मोमिन। तो सहाबा ने कहा या रसूलुल्लाह! ऐसे कैसे हो जाएगा? तो आप (सल्ल0) ने फ़रमाया जो सुबह उठकर ये कहेगा कि फ़लां सितारे की वजह से बारिश हुई है तो वो अल्लाह का इन्कार करने वाला है और सितारों पर ईमान रखने वाला है और जो यूं कहेगा कि बारिश अल्लाह के करने से हुई है वो अल्लाह पर ईमान रखने वाला है। आप (सल्ल0) ने अपने सहाबा को इस तरह ईमान सिखाया है, ये बात जो सहाबा कहते हैं कि हमने सबसे पहले ईमान सीखा तो इस तरह आप (सल्ल0) ने अपने सहाबा को ईमान सिखाया है।

खूब गौर करो बात पर, ये जितना खला का निज़ाम है, ये तो मेरे दोस्तो सिर्फ़ इम्तेहान के लिए बनाया गया है, कि हम देखें तुम इस निज़ाम को देखकर क्या फ़ैसला करते हो जिनके और अल्लाह के दरमियान कायनात का निज़ाम हायल हो जाएगा वो किसी को माबूद समझ बैठेंगे। उसको माबूद समझने का क्या मतलब? कि

कायनात के निज़ाम को वो माबूद इस तरह समझें कि करने वाली ज़ात तो अल्लाह ही की है, मगर करने के लिए अल्लाह ने ये चीजों और शक्लों वाला रास्ता बनाया है। बस समझलो उन्होंने इतना कहते ही अल्लाह का इन्कार कर दिया क्योंकि अल्लाह रब्बुल इज्जत किसी निज़ाम के पाबन्द नहीं हैं। जैसे साइन्स वाले कहते हैं कि जब यूं होगा तो ये होगा।

जलजले, ज़िना की वजह से आते हैं

जब ज़लज़ले आते हैं ना ज़लज़ले, तो लोग साइन्स वालों से पूछते हैं कि ज़लज़ला क्यों आया? कि सौ साल से तो कभी ज़लज़ला नहीं आया अब यहां ज़लज़ला क्यों आया? तो वो तुम्हें लाखों पट्टियां पढ़ाएंगे। अगर तुम ये सोचो कि अल्लाह ने ज़मीन हिलाया है और अल्लाह तआला तब ही ज़मीन हिलाकर ज़लज़ले लाते हैं, जब उनकी ज़मीन पर ज़िना किया जाता है। हां ज़िना होने की वजह से ज़लज़ले आते हैं कि ज़मीन ज़िना को बरदाशत नहीं कर सकती है कि मैं भी अल्लाह की मख़्लूक और तू भी अल्लाह की मख़्लूक, मैं भी मामूर हूँ और तू भी मामूर है, तो तूने अल्लाह का हुक्म क्यों तोड़ा? पर लोगों को अन्दाज़ा नहीं है, क्योंकि जिन्होंने खला के निज़ाम को कायनात से जोड़ा हुआ है उन्हें तो कभी इसका ख़्याल भी न आएगा कि ज़लज़ले का तअल्लुक ज़िना से है। वो तो जो साइन्स वालों ने उन्हें पढ़ा दिया है, वही पढ़ा है, उनकी इसी एतबार से सोच बनी हुई है कि हमने साइन्स में ये पढ़ा था।

खूब ध्यान से सुनो! हम सबके सब (अल्लाह हमें माफ फ़रमाए कि) ज़ाहिर परस्ती पर चल रहे हैं हां सच्ची बात ये है कि हम बजाए खुद परस्ती के ज़ाहिर परस्ती पर चल रहे हैं। क्योंकि हम रोजाना अल्लाह की तौहीद को बोलने को काम नहीं समझते हैं,

हम सबके जेहनों में ये है कि तब्लीग के ज़रिए से कुछ आमाल हो जाते हैं।, उन अमलों को करने की कोशिश है, फिर हिदायत तो अल्लाह के हाथ में है। जबकि मौलाना इल्यास साहब रह0 फ़रमाते थे, कि अगर मैं इस काम का कोई नाम रखता तो इस काम का नाम "तहरीके ईमान" रखता, कि मुसलमानों के अन्दर ईमान के सीखने का शौक पैदा की जाए और हर मुसलमान अपने ईमान को लेकर फ़िक्रमन्द हो जाए। अब ज़रा खुद सोचो कि जो आदमी निज़ामे कायनात से मुतअस्सिर है, वो अहकामात पर कैसे चलेगा? खूब समझ लो मैंने आपको ईमान की तकवियत का पहला सबब अर्ज़ किया है, वो अहकामात पर कैसे चलेगा? खूब समझ लो मैंने आपको ईमान की तकवियत का पहला सबब अर्ज़ किया है कि अल्लाह की कुदरत को खूब बोला करो। कि कुदरत अल्लाह की ज़ात में है, कायनात में कुदरत नहीं है। ये कायनात अल्लाह की कुदरत से बनी है और हर लम्हे कुदरत ही के ताबे है, अल्लाह सूरज और चाँद को सिर्फ़ इसलिए बेनूर करते हैं कि वो बताना चाहते हैं कि उनकी रोशनी हमारे कब्ज़े में है, जो यकीन नहीं करते वही सूरज के पुजारी हैं। क्योंकि ये लोग बेचारे ये समझते हैं कि सूरज की रोशनी उसकी अपनी जाती है।

इसलिए मेरे दोस्तो आजीज़ो! हमारा रोजाना का पहला काम ये है देखो मैं बराबर बंगले वाली मस्जिद में अर्ज़ करता रहता हूं कि हमारे गश्तों का मक़सद मुसलमानों से मुलाकातें कर-कर के उन्हें मस्जिद के माहौल में लाना है। कि उनसे मुलाक़ातें करके ये कहना कि भाई मस्जिद में ईमान का हलका चल रहा है आप भी तशरीफ़ ले चलें चाहे आप दस मिनट के लिए चलें। खूब समझ लो कि हमारी मुलाकातों का मक़सद मस्जिद में नकद लाना है। ये सहाबा की पहली सुन्नत है, कि मुलाकातें करके उन्हें ईमान की

मजलिस में बिठाओ, मस्जिद में बैठकर अल्लाह की कुदरत को, उसकी अज़मत को, उसके रब होने को, उसकी एकताई को बैठकर सुनो और सुनाओ फिर यहां से उसी दावत को लेकर बाहर के तमाम कायनाती नक़्शों के ख़िलाफ़ सब निकलें कि सुनो करने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह की है, अल्लाह के गैर से तो कुछ नहीं हो रहा है।

मस्जिद की आबादी की बुनियाद, मस्जिद में ईमान के हलके का कायम होना है

मैं तो अपने यहां निज़ामुद्दीन में सूबे वालों से ये पूछता हूं कि बताओ भाई! तुम्हारे यहां कितनी मस्जिदें मस्जिदे नबवी की तर्तीब पर आबाद हैं? कि तुम्हारे यहां मस्जिद में ईमान का हलका लगा हुआ और तुम्हारे साथी मुलाकातें कर करके लोगों को मस्जिद के माहौल में ला रहे हों देखो मस्जिद की आबादी की बुनियाद है कि मस्जिद में ईमान के हलके कायम हों।

एक तरफ तालीम का हलका लगा हो।

एक तरफ ईमान का हलका हो और मुलाकातें कर-कर के लोगों को मस्जिद में लाया जा रहा हो।

पर किसी मस्जिद में ईमान का हलका कायम नहीं। अगर काम करने वालों ने रोज़ाना ईमान को न बोला, तो बाहर के माहौल का असर उनके दिलों पर पड़ कर रहेगा।

इसलिए रोज़ाना तौहीद को बोलना जरूरी समझो ताकि हमारा यक़ीन अल्लाह की ज़ात की तरफ़ फ़िरे वरना अल्लाह के गैर का तअस्सुर दिलों पर पड़ेगा और सारी बेदीनी की बुनियाद अल्लाह के गैर का तअस्सुर है।

कैसे अर्ज़ करूं मैं कि मुसलमान शरीअत के एक-एक हुक्म

के बारे में बैठा सोच रहा है ना कि अगर इस हुक्म के ख़िलाफ़ कानून आ गया तो क्या होगा? शरीअत के ख़िलाफ़ किसी कानून को ज़ेहन में सोचने की जगह देना भी उसके ईमान के ख़िलाफ़ है। शरीअ़त के किसी एक हुक्म के ख़िलाफ़ किसी कानून के सोचने को जेहन में जगह देना भी ईमान के ख़िलाफ़ है। अच्छा जी! तो अब मुसलमान क्या करेगा? एहतियात करेगा, स्ट्राइक से उनकी भूख हड़ताल से, दीन के इस अमल की हिफ़ाजत इसलिए नहीं होगी क्योंकि ये खुद पूरे दीन पर नहीं हैं क्योंकि गैर तो मुसलमानों के दीन को जब ही मिटाते हैं, जब मुसलमान अपने दीन को खुद बिगाड़ चुका होता है। गैर तो बिगड़े हुए दीन को मिटाते हैं, वर्ना किसी की क्या मजाल है कि दीन को मिटाए। हां, अगर मुसलमान खुद इस्लाम के अरकान का पाबन्द हो तो क्या मजाल है किसी की कि कोई मुसलमान के अरकान की तरफ़ नजर भी उठाकर देख ले।

मेरे दोस्तो अजीजो! उम्मत के दावत को छोड़ने ही की वजह है कि आज अज़ान तक पर मसायल खड़े हो रहे हैं। ये दावत के छोड़ने की वजह से हैं, खूब गौर से सुनो. वो तो जितना अल्लाह के गैर का तअस्सुर दिलों में होगा, उतना ही अल्लाह के गैर का तअस्सुर तसल्लुत होगा। मैं हज़रत रह0 की बात अर्ज़ कर रहा हूं, कि हमारा रोज़ाना का काम ये है कि हम लोगों को मस्जिद में लाकर अल्लाह की कुदरत को समझाएं, ये सहाबा की सुन्नत है।

☆ अब दूसरा सबब ईमान की तक़वियत का ये है कि अबिंया अलैहि0 के साथ जो गैबी मददें हुई हैं, उनको बोला करो। क्योंकि अबिंया की गैबी मददों को बोलना, ये ईमान की तक़वियत का दूसरा सबब है।

"कि नबी जी! हम आपके दिल को जमाने के लिए आपपर पिछले नबियों के वाकेआत वह्य करते हैं" (हूद-120) तो नबियों की

गैबी मददों के वाकेआत को बयान करना, दिलों के जमाओ का सबब है, एक ईमान की तक़वियत का सबब ये है।

☆ तीसरा सबब ईमान की तक़वियत का ये है कि जितना सहाबा किराम के साथ

गैबी मददें

बरकतें

नुसरतें

और ज़ाहिर के खिलाफ़ जो मददों के वाकेआत हुए हैं,।

उन्हें खूब बयान किया करो और बयान करने में कभी ये न सोचना कि ऐसा हो सकता है या नहीं? क्योंकि अबिंया और सहाबा के वाक़ेआत अल्लाह की मदद के जाबते बताने के लिए हैं। वरना लोग ये समझेंगे कि अल्लाह ने दुनिया को दारुल अस्बाब बनाया है, ताकि अल्लाह अस्बाब के ज़रिए हमारी मदद करते रहें।

अस्बाब पर निगाह रखकर अल्लाह से उम्मीद करना, ये कुफ्र का रास्ता है

देखो मेरे दोस्तो अजीजो! यही वजह है कि हम सब अल्लाह के सामने अपने अस्बाब रखकर दुआएं मांगते हैं। कहते भी हैं साथी, कि तुम ज़ाहरी अस्बाब में कोशिश करो फिर अल्लाह पर भरोसा करो, हाए!!! सोचो तो सही कि कितनी उलटी बात है।

नहीं मेरे दोस्तो! मुझे खूद ही एतराफ है कि मेरी बात आपको मुश्किल से समझ में आएगी। क्योंकि जो आदमी चल रहा हो मश्रिक की तरफ़, उसे मगरिब तरफ फिरना पड़ेगा। आज तो हम सबकी जबानों पर ये है कि ज़ाहरी अस्बाब में तुम कोशिश करो और उम्मीद अल्लाह से रखो। मेरे दोस्तो! ये रास्ता नाकामी का है। हाए!!! मैं कैसे समझाऊं कि तुमने अल्लाह के लिए किया ही क्या

है? जिससे तू अल्लाह से उम्मीद रखे। मेहनत करते हैं अस्बाब पर और उम्मीद रखते हैं अल्लाह से।

हज़रत रह0 फ़रमाते थे कि **"अस्बाब पर निगाह रखकर अल्लाह से उम्मीद करना ये कुफ्र का रास्ता है"**

कि अल्लाह से उम्मीद तो गैर मुस्लिम भी रखते हैं, वो भी सही कहते हैं कि ज़ाहरी अस्बाब हमारे जिम्मे है और करने वाली ज़ात अल्लाह की है। इतनी उम्मीद तो वो भी अल्लाह से रखते हैं। मैं हज़रत रह0 की बात अर्ज़ कर रहा हूं वो भी कहते हैं कि अल्लाह करेंगे मगर ज़ाहरी अस्बाब बनाना हमारे जिम्मे है और मुसलमान भी यही कहते हैं कि अल्लाह करेंगे मगर ज़ाहरी अस्बाब बनाना हमारे जिम्मे है। हज़रत रह0 फ़रमाते थे कि तुम ज़रा बैठकर गौर करो कि तुममें और उनमें क्या फर्क़ रह गया है?

हमारे एक साथी को औलाद नहीं होती थी, उसने एक गैर मुस्लिम डॉक्टर से अपना इलाज कराया। उस डॉक्टर ने सब देख भाल चेकअप वगैरह किए, फिर उसने कहा की कोई कमी नहीं है, मैंने तो अपना काम पूरा कर दिया है, सिर्फ़ ऊपर वाले के हुक्म की देर है। किसकी देर है? कि ऊपर वाले के हुक्म की देर है। जब उसने मुझे आकर ये बताया कि वो गैर मुस्लिम डॉक्टर तो ये कह रहा था कि मैंने अपना काम पूरा कर दिया है, अब ऊपर वाले के हुक्म की देर है। तो मैं सोच में पड़ गया कि हम में और उसमें क्या फ़र्क रह गया? वो भी यही कह रहे हैं कि अस्बाब मैंने बना दिए हैं अब ऊपर वाला करेगा और हम भी यही कह रहे हैं कि अस्बाब हम बना लेते हैं अब करने वाली ज़ात अल्लाह की है। तो मैंने कहा कि हममें और उनमें फ़र्क क्या रह गया?!!!

मेरे दोस्तो अज़ीज़ो बुजर्गो! देखो हममें और उनमें फ़र्क ये है कि जो अल्लाह को करने वाला नहीं मानते, तो उनके और अल्लाह

के दरमियान अस्बाब जाबता हैं और अल्लाह को करने वाला मानते हैं, उनके और अल्लाह के दरमियान अहकामात जाबता हैं, कि

ऐ अल्लाह! मैंने नमाज़ पढ़ ली।

ऐ अल्लाह! मैंने सदक़ा दे दिया।

ऐ अल्लाह! मैंने सच बोल दिया।

अब करने वाली ज़ात तेरी है, मोमिन हुक्म पूरा करके उम्मीद करेगा और काफ़िर अस्बाब पूरे करके उम्मीद करेगा। खूब समझ लो! उम्मीद दोनों अल्लाह से ही करते हैं, पर इतना फ़र्क है कि एक मर्तबा हुजूर अकरम सल्ल0 ने एक मुश्रिक को बुलाकर पूछा कि ये बताओ जब दुनिया में तुमको कोई नुक़्सान हो जाता है तो तुम उस नुक्सान की तलाफ़ी किससे कराते हो? उस मुश्रिक ने ये कहा कि जो अल्लाह आसमानों के ऊपर है, मैं उससे कहता हूं तो वो मेरे नुक्सान की तलाफ़ी करता है। तो आप (सल्ल0) ने फ़रमाया कि जब वो अल्लाह तुम्हारा काम बनाता है, तुम्हारे नुक्सान को दूर करता है, फिर भी तुम उसके साथ बुतों को शरीक करते हो।

नहीं मेरे दोस्तो अजीजो बुजुर्गो! हमारे और अल्लाह के दरमियान कायनात ज़रिया नहीं है। बल्कि हमारे और अल्लाह के दरमियान अहकामात ज़रिया हैं। अब रही बात कि अल्लाह ने फिर अस्बाब क्यों बनाया? तो अल्लाह तआला ने अस्बाब सिर्फ़ इम्तेहान के लिए बनाए हैं। अल्लाह तआला ये देखना चाहते हैं, कि अस्बाब से ज़ाहिर होने वाली हाजतों को तुम हमारी तरफ़ फेरते हुई अस्बाब की तरफ़ फेरते हो, इतना सा इम्तेहान है। इसलिए ये सारे अस्बाब इम्तेहान के लिए हैं। चाहे हमारी दुकान हो, या चाहे सुलैमान अलैहि0 की बादशाहत हो, ये सबका सब इम्तेहान के लिए है।

ऐसी बादशाही, कि सारी मख़्लूक ताबे

क्या बादशाहत थी सुलैमान अलैहि0 कि।

قال رب اغفرلی وحب لی ملکا لا ینبغی لا حد من بعدی انک انت الوھاب.

ऐ अल्लाह! मुझे ऐसी बादशाही चाहिए जो मेरे बाद किसी को मयस्सर न हो" ऐसी बादशाही कि सारी मख़्लूक ताबे जिससे चाहे जो काम ले। मगर काहें के लिए? कि सिर्फ़ आजमाईश के लिए। अस्बाब किसी के पास हों, नबी के पास हों, या चाहे उम्मती के पास हों, आजमाईश के लिए हैं। अस्बाब में सबकी दो आजमाईशें हैं।

एक आजमाईश इताअ़त की है।

और

एक आजमाईश गुमान की है।

कि तुमने अमल की निस्बत किधर की है। ये दो आजमाईशें हैं अस्बाब में, एक आजमाईश इताअत की है कि जो अस्बाब हम तुमको देते हैं, तुम उनमें हमें भूल तो नहीं जाते।

सूरज का वापस निकलना

सुलैमान अलैहि0 घोड़ों का मुआयना कर रहे थे, वैसे घोड़े इस वक़्त दुनिया में नहीं हैं, सारे ख़त्म हो गए। ऐसे घोड़े जो दौड़ते भी थे, उड़ते भी थे और समन्दर में तैरते भी थे, ऐसे उम्दा घोड़े। उन घोड़ों का सुलैमान अलैहि0 मुआयना कर रहे थे इसी में असर की नमाज़ कज़ा हो गई कि सूरज डूब गया। अस्बाब के देखने में ऐसा मशगूल हो गए कि असर की नमाज़ कज़ा हो गई। लेकिन बात ये है कि जिन्हें अमल के ज़ाय होने का ऐसा ग़म होता है, अल्लाह उनको जाय नहीं करते और फ़रमाया

ردوھا علی فطفق مسحا بالسوق والا عناق

ऐ अल्लाह सूरज को वापस कर दे कि मेरी नमाज़ कज़ा हो

गई है जिन्हें अमल के जाय होने का सच्चा ग़म होता है, अल्लाह उनके अमल को जाय नहीं करते इसीलिए फ़रमाया कि सारी नेकियों का मदार तक़्वा पर है, चुनाँनचे सूरज वापस निकला।

मैं आपको बता रहा था कि अस्बाब में एक इम्तेहान इताअत का भी होगा, कि ऐसा तो नहीं कि तुम नमाज़ को जाय कर दो। एक बात और दूसरी बात ये है कि तुम अस्बाब में मुद्दई हो, जिसकी वजह से तुम ये सोचो या ख़्याल करो कि इसके सबब से हम ये कर लेंगे या फिर तुम अस्बाब की निस्बत हमारी तरफ़ करते हो, कि सबसे नहीं अल्लाह करेंगे। ये अस्बाब तो हमारा इम्तेहान हैं, कि इसी बात पर उनकी आजमाईश हुई।

गोश्त का लोथड़ा, सुलैमान अलैहि0 की शाही कुर्सी पर?

कि सुलैमान अलैहि0 ने बड़ा नेक इरादा किया, तय किया कि आज मैं अपनी सौ (100) बीवियों पर चक्कर लगाऊंगा क्योंकि मुझे अल्लाह के रास्ते के लिए सौ मुजाहिद तैयार करने हैं। (सौ लड़के पैदा करूंगा) नेक इरादा किया कि अपनी सौ (बिवियों के पास चक्कर लगाऊंगा, कि मुझे सौ बेटे चाहिए, जो अल्लाह के रास्ते में मुजाहिदा करें, शैतान ने उनको भी यहां इन्शा अल्लाह कहना भुला दिया। रिवायत में है, हालांकि खैर का इरादा है, इसी लिए अल्लाह की मदद उसी काम में होगी, जो काम अल्लाह के हवाले किया गया है। इरादा चाहे दीन का हो या दुनिया का, तो सुलैमान अलैहि0 ने नेक इरादा किया कि सौ मुजाहिद अल्लाह के रास्ते के लिए चाहिए और इस इरादे के साथ अपनी सौ बीवियों से सोहबत की, पर सौ बीवियों में से सिर्फ़ एक बीवी को हमल ठहरा। और निन्नानवे (99) बीवियों को कोई हमल नहीं ठहरा सिर्फ़ एक बीवी को हमल ठहरा और निन्नानवे (99) बीवियों को कोई हमल नहीं ठहरा, सिर्फ़ एक बीबी को हमल ठहरा और इस बीवी से भी

एक गोश्त का लोयड़ा पैदा हुआ, कि इस गोश्त के लोथड़े पर न कान, न हाथ, न पैर, न आंख, और प मुँह, सिर्फ़ गोश्त का लोथड़ा और नियत सुलैमान अलैहि0 की थी मुजाहिद की। तो दाया ने उनकी बीवी से पैदा हुए इस गोश्त के लोथड़े को शाही कुर्सी पर लाकर रख दिया। कि ये पैदा हुआ है, क़ुरआन में इसी तरह है कि

(ولقد فتنا سليمان على كرسيه جسدا ثم اناب)

दाया ने उस जने हुए गोश्त के लोथड़े को सुलैमान अलैहि0 की शाही कुर्सी पर क्यों डाला? क्योंकि वो कुर्सी पर डालने वाली चीज़ तो नहीं थी, फिर क्यों डाला कुर्सी पर? कि कुर्सी पर इसलिए डाला गया है कि सुलैमान अलैहि0 को ये पता चले कि तुम अपनी बादशाहत से ये न समझो कि कुछ कर लेंगे।

अस्बाब पर अल्लाह का कोई वायदा नहीं

गौर करो इसपर कि जिनके ताबे सारी मख़्लूक, लेकिन सौ (100) बच्चो को पैदा करने के इरादे को अल्लाह के सामने न रखा कि जब बन्दा किसी काम के इरादे पर अल्लाह को भूल जाता है तो फिर अल्लाह रब्बुल इज्जत अपनी याद दिलाने के लिए उसको उसके काम में नाकाम करते हैं। जिन्हें अल्लाह तआला याद आजाए ऐसे हालात में, तो फिर अल्लाह उनके लिए रास्ते खोल देते हैं और जिन्हें अल्लाह याद नहीं आते उन हालात में, तो फिर वो आगे बेबरकती का परेशानी और मुसीबतों के शिकार हो जाते हैं।

इसलिए मेरे दोस्तो अजीजो! अस्बाब की हैसियत इससे ज्यादा नहीं है। इसलिए कहते हैं कि अबिंया और सहाबा के गैबी मददों के वाक़यात खूब बोला करो, कि अल्लाह ने उनके साथ जो भी किया है वो अपने जाब्ते बताने के लिए और उनके दिलों में जमाने के लिए किया है। ये तीसरा सबब है ईमान की तकवियत का, कि

सहाबा के साथ अल्लाह की गैबी ताईद के वाक़्यात को खूब बोला करो। इसलिए हज़रत रह0 ने सारी "हयातुस्सहाबा" मर्तब करके आख़िर में गैबी ताईदों के वाक़्यात को जमा किया है कि अल्लाह ने सहाबा की ताईद किस तरह और किन आमाल पर की है। तो मैं अर्ज़ कर रहा था, कि अस्बाब की हैसियत ये है, अब चाहे वो अस्बाब नबी के पास हों, चाहे वो अस्बाब वली के पास हों और चाहे वो अस्बाब उम्मती के पास हों, अस्बाब की हैसियत ये है। अल्लाह का अस्बाब पर कोई वायदा नहीं है, ये पक्की बात है।

अल्लाह की कुदरत वायदों के साथ है। और
अल्लाह के वायदे उसके हुक्मों के साथ हैं।

ایاک نعبد وایاک نستعین

ये सीधा और सही रास्ता है। अस्बाब के साथ वायदे भी नहीं और कुदरत भी नहीं, लोगों पर तअजजुब है कि वो अल्लाह के सामने अपने अस्बाब रखकर दूआएं मांगते हैं। मेरे दोस्तो! अल्लाह के सामने आमाल रखकर दुआएं मांगो, कि

ऐ अल्लाह! ये सदक़ा मैंने दिया है, इसपर तेरा ये वायदा है।
ऐ अल्लाह! मैंने ये नमाज़ पढ़ी है, इसपर तेरा ये वाय़दा है।
ऐ अल्लाह! मैंने ये सच बोला है, इसपर तेरा ये वायदा है।

मशहूर वाक़या है कि तीन आदमियों का जो गार में फंसे थे और चट्टान ने रास्ता बन्द कर दिया था। यहां उनके लिए सिवाए मौत के और कोई रास्ता नहीं था, तो यहां हर एक ने अल्लाह के सामने अपना अपना अमल पेश किया। हां सबब नहीं बल्कि अमल पेश किया।

एक ने मुआशरे का अमल पेश किया एहसान का।
एक ने मामलात का अमल पेश किया एहसान का।
एक ने अख़्लाक़ का अमल पेश किया एहसान का।

किसी ने बैठकर ये दुआ नहीं मांगी कि ऐ अल्लाह! कोई ऐसी क्रेन भेज दीजिए जो इस चट्टान को हटा दे, या कोई ऐसा सैलाब हो जो चट्टान को बहादे या कोई जलजले का ऐसा झटका हो जो चट्टान को यहां से सरका दे। जी हां, यहां पर उन तीनों ने अल्लाह के सामने अपना अपना अमल पेश किया।

एक ने अपना अमल पेश किया कि ऐ अल्लाह! मैं अपने वालदैन से पहले अपने बच्चों को कभी खुराक नहीं देता था, कभी दूध नहीं पिलाया था। जब भी मैं जंगल से आता तो सबसे पहले मैं बकरी से दूध निकालकर अपने वालदैन को पिलाता था। एक दिन मुझे वापसी में देर हो गई जिसकी वजह से मेरे वालिदैन सो चुके थे, तो मैं सारी रात दूध का प्याला लेकर वालिदैन के सरहाने खड़ा रहा। इधर मेरे बच्चे भूख की वजह से रोते बिलकते रहे, पर मैंने उनको दूध नहीं दिया। बल्कि दूध का प्याला लिए हुए मैं वालिदैन के सरहाने खड़ा रहा। कि उनको नीद से उठाना मैंने मुनासिब नहीं समझा और बच्चों को उनसे पहले दूध पिलाना ठीक नहीं समझा।

वालिदैन के साथ औलाद का मामला, जानवरों जैसा

अब तो अल्लाह माफ़ फ़रमाए कि अब तो मुसलमानों का मामला अपने वालिदैन के साथ ऐसा है, जिस तरह जानवरों के बच्चों का मामला होता है। कि किसी जानवर का बच्चा बड़ा हो कर अपने वालिदैन को नहीं पहचानता, हालांकि इन्सान को इसकी वसीयत की गई है कि तेरी पैदाईश के वक़्त तुझे पेट में रखने की उन्होंने तकलीफ़ उठाई। तुझे दूध पिलाने की उन्होंने तकलीफ़ उठाई, पर अब वालिदैन बोझ हो गए। वालिदैन की ख़िदमत न करना आज मुसलमानों में सबसे बड़ी बेबरकती की वजह है। लोग बरकतों के तावीज लेते हैं, हालांकि वालिदैन की ख़िद्मत से बढ़कर कोई चीज बरकत का सबब नहीं है, सारे आमाल एक तरफ़।

इसलिए कि औलाद वालिदैन की मकरूज़ है, कि इसपर हमल का कर्ज़ इसपर दूध पिलाने का कर्ज़ और इसको जनने का कर्ज़, ये सारे कर्ज़ हैं औलाद पर अपने वालिदैन के और अब अल्लाह मांफ़ फ़रमाए कि आज औलाद का अपने वालिदैन से मामला जानवरों के जैसा है। कि बड़े हुए और वालिदैन को छोड़ा।

तो वहां गार में उन्होंने अमल पेश किया तो चट्टान सरक गई अपनी जगह से। लेकिन किसी के निकलने भर का रास्ता न बना, ऐसा नहीं है कि तुम अमल करो तो तुम्हारी निजात, और वो अमल करें तो उनकी निजात कि उम्मत का मामला इज्तेमाई है और दीन भी इज्तेमाई है। ऐसा नहीं है कि जो अमल करले उसकी निजात हो जाए बल्कि दीन मुजतमा है और उम्मत मजमूआ है।

मैं तुझसे मजाक नहीं कर रहा हूं

तो दूसरे ने अमल पेश किया मामलात में एहसान का, कि मैंने एक मजदूर से काम लिया पर वो अपनी मजदूरी छोड़कर चला गया और मैंने इसकी मजदूरी से बहुतसा माल तैयार किया। फिर एक अर्से के बाद जब वो मेरे पास अपनी मंजदूरी लेने के लिए आया तो उस वक़्त सारी वादी जानवरों से भरी हुई थी। तो मैंने उससे कहा कि ये सब तेरी मजदूरी है, तू उन्हें ले जा। क्योंकि उसने उसकी मजदूरी से ही ये सारा माल बनाया था और जितना माल उसकी मजदूरी से बना, उसने उसको बचाकर रखा। फिर उसके आने पर मैंने उसको सारा सामान ले जाने के लिए पेश किया, तो उस मजदूर ने कहा कि ऐ अल्लाह के बन्दे! मुझसे मज़ाक न कर बल्कि मेरी मजदूरी दे दे। उसने कहा कि मैं तुझसे मजाक नहीं कर रहा हूं, ये सारा का सारा तेरा ही है, तू इसे ले जा। मामले में एहसान का अमल। जी हैं अमल पेश करके कहा कि ऐ अल्लाह! अगर ये मैंने तेरे लिए किया है तो तू हमें यहां से

निकाल दे। चट्टान फिर सरकी, लेकिन एक के भी निकलने का रास्ता न हुआ कि दीन मुजलमा है और उम्मत मजमूआ है।

मामलात की वजह से आने वाले हालात, इबादत से ठीक नहीं होंगे

अब मैं कैसे समझाऊं दोस्तो! लोग लम्बी-लम्बी नमाज़ें, बड़ी बड़ी इबादतें, हज पर हज करते हैं, जिक्र बहुत लम्बा-लम्बा ,लेकिन मामलात मुआशरत और अखलाक उन तीनों लाइनों में ये फ़ेल हैं। हज़रत रह0 फ़रमाते थे कि जो हालात मामलात की वजह से आएगा वो इबादत से ठीक नहीं होंगे। अगर ये चाहे कि हमारी इबादत से तंगी दूर हो जाए, तो ये तंगीयों से नहीं निकल पाएंगे। मेरे दोस्तो! मामलात बहुत अहम चीज है, अल्लाह मुझे माफ़ फ़रमाए कि हमारे माहौल में इसका एहतमाम नहीं है। क्योंकि जिनकी नजर अपनी इबादत पर होती है, उनके अन्दर इतना फ़ख्र पैदा हो जाता है कि वो मामलात की परवाह नहीं करते। हालांकि खुदा की क़सम! मामलात को बिगाड़ कर दुनिया में इबादतें करने वाले अपनी सारी इबादतें सिर्फ़ दोस्तों के लिए कर रहे हैं कि ये अपनी इबादत से क़यामत में ऐसा खाली हो जाएंगे कि शायद उन्हों ने दुनिया में कोई अमल किया ही नहीं है कि क़यामत में हक वालों को उनकी इबादतें दी जाएंगी और जब इबादतों से ये खाली हो जाएंगे तो उन आबिदों पर हक़ वालों के गुनाह डाले जाएंगे फिर उन आबिदों को जहन्नम में डाल दिया जाएगा। कि ये गए वो आ़बिद जिसने मामलात की परवाह न करके इबादतें की हैं मामलात के हुक्म तोड़ कर।

ये बड़ी फ़िक्र की बात है कि कहीं हमारे मामलात की वजह से हमारी इबादत पर दूसरों का कब्जा न हो जाए कि हमारे

मामलात पर इबादत का पर्दा न पड़ जाए, कि क़यामत में अल्लाह इस परदे को उठाएंगे और मुतालबा करने वालों के मुतालबे को, उसकी इबादत से पूरा करेंगे। क्योंकि आख़िरत की कुर्सी आमाल है। ये वहां की जरूरत है, इसलिए अपनी इबादत को महफ़ूज करो। वरना हक़ वाले सारी इबादतें ऐसी ले उड़ेंगे कि गोया इबादत में आपका कोई हिस्सा ही नहीं है।

मक़बूल नमाज़ें
मक़बूल हज
मक़बूल अज़्कार
मक़बूल रोज़े
सब नेकियां दूसरे ले उड़ेंगे।

फ़ाका तो कुफ्र तक पहुंचा देता है

मैं अर्ज़ कर रहा था कि फिर तीसरे ने अमल पेश किया कि ऐ अल्लाह! मेरे चचा की लड़की जो मुझे महबूब थी, मैं उसके साथ ख़लवत चाहता था क्योंकि दुनिया में अगर मुझे किसी औरत से मोहब्बत थी तो उसी से थी, मैं उसके साथ ख़लवत चाहता था, मगर वो ख़लवत का मौका नहीं देती थी, फिर कहत साली की वजह से उसपर तंगी आई, तो वो मोहताज होकर मेरे पास आई। मैंने कहा कि मैं तुझे एक सौ बीस (120) दीनार दूंगा मगर शर्त ये है कि तू मेरे साथ ख़लवत इख़्तेयार कर ले। वो इस बात पर राज़ी हो गई। क्योंकि फ़ाका तो कुफ्र तक पहुंचा देता है, तो उसको इसके फ़ाका ने बदकारी के लिए तैयार कर दिया। फिर ऐ अल्लाह! जब बदकारी के इरादे से मैं उसकी टांगों के दरमियान बैठ गया, तो वो मुझसे बोली कि अल्लाह से डर! ऐ अल्लाह! मैंने सिर्फ़ तुझसे डरकर ये काम नहीं किया कि ऐ अल्लाह! मैंने तेरे डर से उससे ज़िना नहीं किया और वो एक सौ बीस (120) दीनार भी उसको दे

दिए। ऐ अल्लाह! तू मेरे निकलने का यहां से इन्तेज़ाम कर दे।

मदद के जाब्ते

देखो भाई मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! ये वाक़यात कुदरत के जाब्ते बताने के लिए हैं। लोग ऐसे वाक़यात सुनकर कहते हैं "سبحان الله، سبحان الله" पर जिन्दगी वहीं की वहीं। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि जितने पिछलों के वाक़यात हैं उनसे पिछलों को नहीं बतलाना है बल्कि उनके वाक़यात से क़यामत तक अल्लाह की मदद के जाब्ते बतलाना है कि ये मदद के जाब्ते हैं। वो ऐसे थे बल्कि ये वाक़यात तो ये बताने के लिए थे कि अगर तुमने ऐसा किया तो तुम्हारे साथ भी ऐसा ही होगा। बल्कि जितना उसके साथ हुआ है, उससे दस गुना ज्यादा एक मोमिन के साथ होगा। हदीस में आता है, कि एक मोमिन की मदद दस (10) सहाबा के बकद्र होगी और एक मोमिन को अमल पर अज्र पचास (50) सहाबा के बराबर मिलेगा। देखो ये बहुत बड़ी बात है, सही रिवायत में है। "मुन्तख़ब अहादीस" में हज़रत रह० ने ये बात नक्ल की है। ऐसी हदीसें हज़रत रह० ने "मुन्तख़ब अहादीस" में चुन-चुन कर जमा की हैं। गौर किया करो उन हदीसों पर तो ईमान के सीखने का ये तीसरा सबब है कि सहाबा के साथ जो गैबी मददें हुई हैं गौर किया करो हदीसों पर तो ईमान के सीखने का ये तीसरा सबब है कि सहाबा के साथ जो ग़ैबी मददें हुई हैं, उन्हें ख़ूब बोला करो।

☆ और चौथा ईमान की तक़वियत का सबब ये है कि ईमान की अलामतों को खूब बोला करो ताकि ईमान की कमज़ोरी का हमारे अन्दर एहसास हो जाए कि कितनी बेपरवाही है ईमान से। कि जब तुम्हें नेकी खुश करे और गुनाह गमगीन करे तो जान ले कि तू मोमिन है ईमान तो अपनी अलामतों के साथ है। नेकियों से ख़ूश होना कि अल्लाह का हुक्म पूरा करके खुश हो रहा हो और

गुनाह से गमगीन होना कि एक अदना सी सुन्नत के छूटने पर हमें गम हो रहा है, इसी को तौबा कहते हैं। जो गुनाह करके गमगीन नहीं होगा वो तौबा नहीं करेगा, ये है ईमान की तक़वियत के अस्बाब।

ईमान की सबसे अहम अलामत "तक़्वा"

कि ईमान की सबसे अहम अलामत तक़्वा है, कि कुरआन में कलमा لا الــه الا الـلـه को तक़्वा का कलमा फ़रमाया है और मोमिन को इसका हक़दार बतलाया।

اذ جـعـل الذين كفروا فى قلوبهم الحمية حمية الجاهلية فأنزل الله سـكينته على رسوله وعلى المؤمنين والزمهم كلمة التقوى وكانوا احق بها واهلها وكان الله بكل شىء عليما۔ (فتح ٢٦)

कि अल्लाह ने जमाया ईमान वालों को तकवा के कलमे पर क्योंकि ईमान की अलामत तक़्वा है। इसलिए मेरे दोस्तो बुजुर्गो अजीजो! सबसे पहले हमें जिन्दगी में तक़्वा लाना होगा। तक़्वा कहते हैं हराम से बचने को ये तक़्वा सबसे पहले मामलात में चाहिए मामलात में सबसे पहले तक़्वा लाना इसलिए जरूरी है कि जिस तरह बगैर वजू के नमाज़ नहीं होती इसी तरह बगैर मामलात के इबादत नहीं होगी पहले तहारत फिर ईबादत इसपर बहुत गौर करना होगा कि ज़िस्म में दौड़ने वाला खून अगर

सूद से
गबन से
झूठ से
ख़यानत से
रिश्वत से

पाक नहीं है तो उसने अपने ज़िस्म को ईबादत के लिए

बनाया ही नहीं है, कि जिस्म में खून दौड़ रहा है हराम और ये कर रहा है ईबादत।

मामलात के गुनाह ईबादत से कैसे माफ़ हो जाएंगे

लोग बेचारे ये समझते हैं कि मामलात के गुनाह ईबादत से पाक हो जाएंगे लेकिन ऐसा नहीं होगा मामलात के गुनाह ईबादत से कैसे माफ़ हो जाएंगे। कि उसने ईबादत की जो पहली शर्त तहारत है उसी को पूरा नहीं किया, कि तहारत के बगैर तो ईबादत नहीं है। उलमा ने लिखा है कि जिस तरह मसलन कपड़े और बदन का ज़ाहिर पाक है इसी तरह बदन का बातिन भी पाक हो, ये भी ज़ाहरी तक्वा है कि अपने खून को पाक रखो। काहे के लिए? ईबादत के लिए, अल्लाह मुझे माफ़ फरमाए कि गैर तो खूब जानते हैं इस बात को उन्हें सूद खिलाओ फिर उनकी बद दुआओं से डरने की जरूरत नहीं, क्योंकि उनकी दुआओं से खुद उनको कुछ मिलने वाला नहीं। क्योंकि अल्लाह की तरफ़ से हराम खाने वाले के लिए दुआ के जवाब में यही जुमला है।

"انی لک الاجابۃ؟"

मैं तेरी दुआ काहे को कुबूल कर लूं।

खाना हराम का

पीना हराम का

पहनना हराम का

और फिर ये बड़ी लजाजत के साथ अल्लाह को पुकारें कि ऐ मेरे रब! मेरे रब! रो रोकर दुआएं मांगे। अपनी हाजत अल्लाह के सामने रखें और अल्लाह कहे "انی لک الاجابۃ؟" कि मैं तेरी दूआ क्यों कुबूल करूं।

इसलिए मेरे दोस्तो अजीजो बुजुर्गो! कि सबसे पहले मामलात

में दीन लाना होगा, ये ऐसा है जैसे नमाज़ के लिए तहारत की, पहले तक़्वा मामलात में लाओ, इसलिए कि सारी नेकियों का मदार तक़्वा पर है, और अल्लाह का तक़्वा पर वायदा है कि जो हराम से बचना चाहेगा हम उसे बचाकर निकाल लेंगे।

हम तो मुत्तकी के लिए रास्ता जरूर निकालेंगे

कि यूसुफ़ अलैहि० निकलते चले गए और उनके लिए दरवाज़े खुलते चले गए एक आदमी अगर हराम से बचना चाहे और अल्लाह उसके लिए रास्ता न बनाएं ऐसा कैसे हो सकता है, कि यूसुफ़ अलैहि० निकलते चले गए और दरवाज़े खुलते चले गए हां देखो एक बात याद रखो कि जो आदमी तक़्वा की लाईन इख़्तेयार करेगा तो अल्लाह रब्बुल इज्जत उसके तक़्वा का इम्तेहान जरूर लेंगे, कि ये अपने तक़्वा में मुख़्लिस है या नहीं। तो यूसुफ़ अलैहि० बचकर निकले तक़्वा की वजह से लेकिन उन्हें जेल हो गई, देखो इसकी वजह ये है कि जब आदमी गुनाह से बचता है तो अल्लाह ये देखना चाहते हैं कि ये कहीं गुनाह की तरफ़ वापिस तो नहीं जाता, क्योंकि आपने देखा होगा कि बहुतसे लोग आपको एसे मिलेंगे कि जिन्होंने तक़्वा इख़्तेयार किया हराम कारोबार छोड़ दिया फिर अल्लाह ने उनपर हालात डाले कि कर्ज आया और तंगी आई तो अल्लाह हमें माफ़ फ़रमाए और अल्लाह हिफ़ाजत फ़रमाए कि बाज लोग उन हालात से तंग आकर हराम की तरफ़ फिर वापस चले जाते हैं, जबकि अल्लाह तआला खूद फ़रमाते हैं कि हम हलका सा तुम्हें आजमाएंगे कि।

ولنبلونكم بشيء من الخوف والجوع نقص من الاموال والانفس والثمرات وبشر الصابرين. (البقرہ ۱۵۵، پارہ ۲)

थोड़ी सी भूख

थोड़ा सा नुक़सान

थोड़ा सा खौफ़

अगर इसपर जमे रहे, तो फिर इसके बाद रास्ते खोल देंगे, ये आजमाईश के लिए होता है पर लोग इन हालात के आने पर हराम की तरफ़ फिर वापस हो जाते हैं। जी हां कि अल्लाह सच बोलने वालों को आजमाएंगे सच्चाई में कि कअ़ब बिन मालिक रज़ि० की तरह कि वो गजवा तबूक से पीछे रह गए थे तो सच बोल दिया कि मेरे पास कोई उज़्र नहीं था। क्योंकि मेरे पास माल भी था, सवारी भी थी पर मैं अल्लाह के रास्ते में निकलने से पीछे रहा हूं। उज्र कोई नहीं था मुझसे गलती हो गई है, साफ़-साफ़ बात। तो अल्लाह के नबी नाराज़ हो गए क्योंकि कअ़ब बिन मालिक रज़ि० ने सच बात कह दी थी। जब आपके पास से वो बाहर निकले तो लोगों ने कहा कि ऐ कअ़ब! तुमने ये क्या किया? अगर तुम झूठा उज्र कर देते तो जान भी बच जाती और अल्लाह के नबी तुम्हारे लिए इस्तेगफ़ार भी करते, फिर उस इस्तेगफ़ार से तुम्हारा झूठ बोलने का गुनाह माफ़ हो जाता। उन लोगों ने उनको ये मशिवरा दिया, तो उनको ख़्याल आया कि मैं वापस जाऊं और अल्लाह के नबी से कहूं कि मैंने आपसे जो कुछ बतलाया है वो झूठ है और बात ये है। फिर मुझे ख़्याल आया कि अल्लाह के नबी से ऊपर अल्लाह मौजूद है और वो देख रहा है, अगर मैंने झूठ बोलकर अल्लाह के नबी को राज़ी कर भी लिया तो अल्लाह अपने नबी को मुझसे नाराज कर देंगे इसलिए सब्र करो।

दोस्तो! मुझे तो ये अर्ज़ करना था कि जब कोई आदमी हराम से हुक्म की तरफ़ आता है तो अल्लाह उसको आजमाते हैं। कि तंगी में ये जमता है या नहीं जमता।

इसलिए मेरे दोस्तो अजीजो! यूसुफ़ अलैहि० तक़्वा इख़्तेयार

करके निकलकर भागे लेकिन वहां से निकलने के बाद जेल हो गई। लेकिन जेल के अन्दर भी दो काम करते रहे, कि जेल में आने वालों को दावत भी देते रहे और इबादत भी करते रहे। ये नहीं कि अब हमारे हालात दावत देने के नहीं हैं।

हालात में काम न करना, काम को छोड़कर, उससे बड़े हालात को दावत देना है

कि ऐसे भी लोग हैं कि जो ये कहते मिल जाएंगे कि अभी हमारे हालात जरा ठीक नहीं हैं।

नए साल का जलसा

नए महीने के तीन दिन

नए हफ्ते के दो गश्त

कि कुछ मुकदमा वगैरह हो गया था हम पर झूठा इल्जाम लगा दिया गया था तो जरा इससे निपट जाएं फिर इन्शा अल्लाह काम करेंगे। हज़रत मौलाना यूसुफ़ रह० फ़रमाते थे कि **"जो हालात में काम नहीं करेंगे उन्होंने काम को छोड़कर, उससे बड़े हालात को दावत दे दी है"**। अब आगे उनपर इससे बड़े हालात आएंगे जिसे ये बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे। क्योंकि जो अपने मौजूदा हाल में दावत नहीं देगा, वो इससे बड़े हाल में मुब्तला होगा। यूसुफ अलैहि० जेल में दावत देते रहे और अल्लाह ने उसी दावत के ज़रिए उन्हें जेल से निकाला।

इसलिए मेरे दोस्तो बुजुर्गो अजीजो! देखो याद रखो कि अल्लाह रब्बुल इज्जत तक़वा इख़्तेयार करने वाले को आजमाएंगे। अगर तक़वा पर जमे रहे तो हमेशा के लिए बरकतों के दरवाजे खोल देते हैं। लेकिन एक जरूरी बात जो मुझे अर्ज़ करनी है वो ये है कि तक़वा और सब्र ये दोनों चीजें यूसुफ अलैहि० ने बराबर

इख़्तेयार की हैं। हमारी मुश्किल ये है हम सब्र को तो इख़्तेयार करते हैं, पर तक़्वा इख़्तेयार नहीं करते। कुरआन में जहां भी मिलेगा सब्र तक़्वा साथ मिलेगा।

कहीं सब्र आगे, कहीं तक़्वा आगे कि कुरआन में दोनों साथ साथ मिलेगा, पर मुसलमान की मुश्किल ये है कि इस जमाने में सब्र कर रहा है तक़्वा के बगैर आज जितनी उनकी पिटाई हो रही है, धमाके हो रहे हैं, कत्ल हो रहे हैं। सारे मुसलमान इस इन्तेज़ार में बैठे हैं, कि अब अल्लाह की मदद आने वाली है और अब अल्लाह की मदद आने वाली है।

मेरी बात ध्यान से सुनो, दोस्तो! सब ये कह रहे हैं कि सब्र करो, ये खून बेकार नहीं जाएगा, अल्लाह की मदद जरूर आएगी। एक बात याद रखो कि जब मुसलमान अल्लाह के हुक्मों को तोड़कर सब्र करता है, तो फिर अल्लाह रब्बुल इज्जत बातिल को उनपर मुसल्लत करता है और अगर मुसलमान तक़्वा के साथ सब्र करता है तो अल्लाह अहले बातिल पर गालिब करते हैं। सहाबा के और नबियों के वाक़यात का ये खुलासा है। इसलिए कि जो हालत गुनाहों की वजह से आते हैं वो सब्र कर लेने से ठीक नहीं होते, कि आज मुसलमान सब्र तो कर रहा है, पर तक़्वा नहीं है। ये सब्र करना अल्लाह ने कुरआन में फ़रमा दिया।

اصبروا اولا تصبروا سواء عليكم انما تجزون कि तुम सब्र करो या ना करो हमारे लिए दोनों बराबर हैं, इसलिए कि तुम्हें सब्र से कोई फ़ायदा नहीं होगा।

जहन्नमियों से कहा जाएगा اصبروا اولا تصبروا سواء عليكم انما تجزون कि तुम सब्र करो या ना करो, कि तुम्हें ये जो अजाब दिया जा रहा है अहानत का, ये तुम्हारे गुनाहों का है।

याद रखो! ये जितने हालात दुनिया में मुसलमानों पर इस

वक़्त हैं, ये सिर्फ़ सब्र से ख़त्म नहीं होंगे। क्योंकि इन हालात के आने का जो सबब है, वो मुसलमानों का गैरों के तरीके पर जिन्दगी गुजारना है। तुम उन तरीको से अलग हो जाओ तो फिर तुम्हारे लिए दो चीजें होंगी।

☆ पहली अमन

☆ दूसरी हिदायत

ये कुरआन की बात है हिदायत का मतलब ये है कि जन्नत का रास्ता आख़िरत्त में और अमन का मतलब ये है कि सुकून की जिन्दगी दुनिया में। ये वायदा उनसे है जो गैरों के तरीकों से पूरी तरह अलग हो जाएं, ये जो मैं अर्ज़ कर रहा हूं कि कुरआन की आयत का मफ़हूम है।,

الذین آمنو ولم یلبسو ایمانھم بظلم (انعام ۸۲)

कि रास्ते वो पाने वाले हैं और अमन उन्हें मिलेगा, जिनके ईमान में गैरों के तरीक़ों की आमेजश न हो। इसलिए मेरे दोस्तो बुजुर्गों अजीजो! मुसलमान तक़्वा के बगैर गैरों से मुमताज़ नहीं हो सकता, कि मुसलमान की इम्तेयाज़ी शान तक़्वा से है।

ان تتقو االلہ یجعل لکم فرقانا (انفال ۲۹)

अगर तुम में तक़्वा होगा तो तुम गैरों से छांटे जाओगे और अगर तक़्वा नहीं है तो तुम में और गैरों में कोई फ़र्क़ नहीं होगा।

इस्लाम सिर्फ़ इस्लामी झण्डे का नाम नहीं

इसलिए मेरे दोस्तो अजीजो! इस्लाम सिर्फ़ इस्लामी झण्डे का नाम नहीं है या इस्लाम इस्लामी हुकुमत का नाम नहीं है, बल्कि इस्लाम तो मुकम्मल तरीक़-ए-जिन्दगी का नाम है। इस तरीके पर चलने वाला मुसलमान है, इस्लाम की बुनियाद पाँच चीजें हैं। तो जब पाँच चीजें इस्लाम की बुनियाद हैं, फिर इस्लाम क्या है? जिस

तरह मकान की बुनियाद होती है या मस्जिद की बुनियाद होटल की बुनियाद, कि ज़मीन के नीचे होती है, फिर इस बुनियाद पर मकान की तामीर की जाती है। तो जब इस्लाम की बुनियाद पाँच चीजें हैं, फिर इस्लाम क्या है? कि।

मामलात,
अख़्लाक,
मुआशरत,
ये इस्लाम की इमारत हैं,
और सात चीजें ईमान की बुनियाद हैं।
अल्लाह पर ईमान रखना।
उसके फ़रिश्तों पर।,
उसकी किताबों पर।
उसके रसूलों पर।
मरने के बाद दोबारा उठाए जाने पर।
अच्छी बुरी तक्दीर पर।
आख़िरत के दिन पर।

ये ईमान की बुन्यिाद है, यानी अकायद हैं, कि अकायद के बगैर इमारत न क़ायम होगी और इमारत के बगैर बुनियाद काफ़ी न होगी दोनों बातें बराबर हैं, कि अगर कोई अकायद के बगैर चाहे इमारत कायम हो जाए तो इमारत कायम न होगी।

इसी तरह पाँच चीजें इस्लाम की बुनियाद हैं।
कलमा का इक्रार।
नमाज़।
रोज़ा।
हज।
ज़कात।

और मामलात अख़्लाक़ और मुआ़शरत ये इस्लाम की इमारत हैं। सिर्फ़ बुनियाद ही काफ़ी नहीं है जरूरत पूरी करने के लिए और इमारत बनाना काफ़ी नहीं है बुनियाद के बगैर। इसलिए कि वो इमारत कायम नहीं रहेगी जिसके नीचे बुनियाद ही न हो, कि लोग कहें कि हां, मियां नमाज़, रोज़ा अपनी जगह मगर मामलात ठीक होना चाहिए, कि मामलात अख़्लाक़ और मुआ़शरत की इमारत कायम नहीं होगी,. जब तक बुनियाद न हो और सिर्फ़ बुनियाद भी काफ़ी न होगी जब तक उसपर इमारत न हो।

सुन्नत के बगैर कोई विलायत और कोई बुजुर्गी नहीं है

इसलिए मेरे अजीजो दोस्तो! एक तो सुन्नतों का एहतराम ज़्यादा किया करो, कि सुन्नत के बगैर कोई विलायत और कोई बुजुर्गी नहीं है। मौलाना इल्यास साहब रह० फ़रमाते थे कि **"मेरे काम का मक़्सद अहयाए सुन्नत है"** कि मुसलमानों के अन्दर हुजूर सल्ल० के तरीके पर अपनी जरूरियाते ज़िन्दगी को हासिल करने का रिवाज पड़ जाए। क्योंकि अल्लाह ने अपनी मददें और बरकतें हुजूर सल्ल० की सुन्नतों के साथ लाज़िम कर दी हैं। मुसलमानों की शान ही सुन्नतों के साथ है, वरना भाई साफ़ साफ़ बात ये है कि मुसलमान सुन्नतों को हलका समझकर छोड़ दे तो ये सबसे पहले मुआ़शरती इरतिदाद में पड़ेगा, कि सबसे पहले इसका मुआ़शरा मुरतद होगा।

कि उसने सुन्नत को हलका समझकर छोड़ दिया। मुसलमान का अपना इम्तेयाज सुन्नतों के एहतराम में है। वरना आप खुद देख लें कि कहीं ट्रेन टकरा जाए या कहीं ज़लज़ला आजाए तो लोगों में देखना पड़ता है कि उनमें मुसलमान कौन है?

हज़रत रह० फ़रमाते थे कि वो सारी अलामतें आज मुसलमानों के अन्दर से ख़त्म हो गई जिसकी वजह मुसलमान को

दूर से देखकर ही अल्लाह की याद आती थी। अब तो खतना देखकर मुसलमान की पहचान की जाती है। कहां मुसलमान सर से लेकर पैर तक इस्लाम की अलामतों से भरा हुआ था कि दूर से पता चल जाए। आप (सल्ल0) के सहाबा ऐसे थे आप (सल्ल0) के साथ।

मुसलमान के अलावा को सलाम करना जायज नहीं

जैसे काले रंग के बाल में चन्द बाल सफेद हों कि वो सफेदी अलग ही नज़र आएगी। आज तो सलाम करने के लिए पहले नाम पूछना पड़ता है, इसलिए कि चेहरे से लगता भी नहीं है कि कौन मुसलमान है, जिसको सलाम किया जाए। क्योंकि मुसलमान के अलावा को सलाम करना जायज नहीं है। इसको कभी पता ही नहीं किया कि इस्लाम में दाढ़ी का क्या मुकाम है? बस इतना जानते हैं दाढ़ी सुन्नत है, मुसलमान हलका समझते हैं दाढ़ी को। बस हम में और सहाबा में यही फ़र्क है कि वो सुन्नत पर अमल करते थे, सुन्नत की वजह से हम सुन्नत को छोड़ते हैं, सुन्नत होने की वजह से। हम में और सहाबा में ये फर्क है।

इसलिए मोहतरम दोस्तो बुजुर्गो अजीजो! इस काम से हमें अपने अन्दर तब्दीलियां लानी है, क्योंकि

दावत तो हिदायत के लिए है।

दावत तो तर्बीयत के लिए है।

दावत तो अपने आपको बदलने के लिए है।

इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह रब्बुल इज्जत ने इस मेहनत में माहौल और यकीन को बदलने की खासियत रखी है।

एक कश्ती चलाने वाले की दावत पर हिदायत

आप सल्ल0 ने हर फर्द को दावत वाला बनाया था कि अबू

जेहल के बेटे इकरिमा को एक कशती चलाने वाले की दावत पर हिदायत हुई है। हज़रत इकरिमा रज़ि0 इस्लाम से भागे, ये यमन की तरफ़ जा रही कश्ती में सवार हुए तो तूफ़ान आ गया, कश्ती पलटने लगी।

हज़रत इकरमा रज़ि0 ने कश्ती वाले से कहा कि मेरे बचने का कोई सामान हो सक्ता है?

कश्ती वाले ने कहा कि हाँ बचने का एक रास्ता है और वो ये कि तुम कलम-ए-इख़्लास कह लो।

हज़रत इकरिमा रज़ि0 ने पूछा कि ये कलम-ए-इख़्लास क्या है?

कश्ती वाले ने कहा! कि कहो 'لا اله الا الله

हज़रत इकरिमा रज़ि0 ने कहा! कि मैं इससे बचकर ही यमन भाग रहा हूं, अगर ये कलमा ही कहना होता तो यमन क्यों भागता? इधर कश्ती वाले ने दावत दी और उधर किनारे से उनकी बीवी ने कपड़ा हिलाकर उन्हें इशारा किया। फिर ये वापस आकर हुजूर सल्ल0 की ख़िद्मत में गए।

मुझे इसमें अर्ज़ ये करना था, कि आप (सल्ल0) ने हर फ़र्द को दाई बनाया था, सौ फ़ीसद सहाबा दावत्त वाले, तो इस दावत की अमूमीयत ने लोगों के इस्लाम में आने का रास्ता खोला हुआ था, इस्लाम से निकलने का कोई रास्ता नहीं था।

इसलिए मेरे दोस्तो बुजुर्गो अजीजो! ये इरादा करो और नीयतें करो कि हमें इन्शा अल्लाह इस काम को मक़सद बनाकर करना है और सारी उम्मत को इस पर जमा करना है। ये भी हमारी जिम्मेदारी है, क्योंकि हर उम्मती सारी उम्मत का जिम्मेदार है। हां इतना जरूर है कि अल्लाह रब्बुल इज्जत ये काम उन्ही लोगों से लेंगे, जो दीन के नुक़्सान को बर्दाश्त न करें। अबूबक्र रज़ि0 मदीने

को खाली कराना चाहते थे, कि दीन का नुक़्सान न हो, कि लोग ज़कात में रस्सी देने से इन्कार करें और तुम मदीने में रहो। कि चाहे मदीने में अज़्वाजे मुतह्हरात को कोई दफ़्न करने वाला न हो, पर तुम सब चले जाओ और मुझे यहां अकेला छोड़ दो, मुझे यहां चाहे ख़त्म किया जाए और कोई मुझे भी दफ़्न करने वाला न हो, तब भी मैं मदीने को दीन के तकाज़े पर ख़ाली करूंगा। ये जज़्बा था दीन के साथ सहाबा का, अब ये जज़्बा ख़त्म हो गया, कि अल्लाह के दीन का नुक़्सान हो और हम घर बैठें। कि सारे मदीने को ख़ाली किया कि निकलो! या रखो! जब तक उम्मत में नक़्ल व हरकत रहेगी, दीन की हयात बाक़ी रहेगी।

उम्मत दावत के बगैर निजात नहीं पा सकती

मैंने इसलिए शुरू में ही अर्ज़ करदिया था कि उम्मत दावत के बगैर निजात नहीं पा सकती, ये बिल्कुल पक्की बात है, इसमें कोई शक नहीं है। इसलिए ये अल्लाह तआला खुद ये फ़रमा रहे हैं।

والعصر ان الا نسان لفی خسر الا الذین آمنوا و عملو االصالحات وتواصوابالحق وتواصوابالصبر.

हर फ़र्द के जिम्मे ये काम है, चाहे वो अमल करता हो या अमल न करता हो। ये भी सुनो! कि अमल करना शर्त नहीं है दावत के लिए। हां ये बात सही है कि दावत देंने वाले को अमल भी करना चाहिए, लेकिन ये बात सही नहीं है कि जो अमल न करे वो दावत न दे। अमल न करने वाला दावत ज़्यादा दे। हज़रत थानवी रह0 फ़रमाते थे "कि मैं जिस चीज को अपने अन्दर पैदा करना चाहता था, तो उसकी दावत दूसरों को देता था और जिस बुराई को अपने अन्दर से निकालना चाहता था, उससे दूसरों को रोकता था" ये दोनो काम, खुद अपनी ज़ात के लिए हैं, इसलिए

अमल शर्त नहीं है दावत देने के लिए। हां! दावत देने वाले को चाहिए कि वो अमल भी करे कि कहीं उसकी दावत अमल से ख़ाली न हो जाए।

इसलिए ये याद रखो! कि दावत देना तो हर एक के जिम्मे है, वो अमल करता हो या अमल न करता हो, जब तक दावत की निस्बत पर नक़्ल व हरकत बाक़ी रहेगी, उस वक़्त तक दीन जिन्दा रहेगा और उम्मत पाक होती रहेगी कि ये रास्ता पाक होने का है। इस लिए कि हिज़रत पिछले सारे गुनाहों से पाक करा देता है।

सौ क़त्ल करने वाले कातिल के लिए ज़मीन के सारे निज़ाम का बदलना

हदीस में है कि हिजरत पिछले सारे गुनाहों से पाक कर देती है। एक आदमी सौ क़त्ल करके तौबा के लिए चला तो अल्लाह ने ज़मीन के सारे निज़ाम को बदल दिया कि मेरा बन्दा इस्लाह के लिए चल रहा है। कि सौ क़त्ल के इस्लाह के लिए चला तो मौत आ गई। कोई अमल नहीं किया।

न नमाज़ का।

न ज़िक्र का।

न तिलावत का।

न सच्चाई का।

न अमानतदारी का।

कि कोई अमल नहीं किया है, सिर्फ़ इस्लाह के लिए कदम उठाया है कि बहुत गुनाह कर लिए हैं, अब चलो अल्लाह की तरफ़। कि अल्लाह का अपने बन्दे की तरफ़ दौड़कर आने का मतलब ही यही है कि अल्लाह ने सौ क़त्ल करने वाले कातिल के लिए ज़मीन के सारे निज़ाम को बदल दिया।

जी हां! इस ज़मीन से कहा कि तू फैल जा और उस ज़मीन से कहा कि तू सिकुड़ जा। ज़मीन की फ़रिश्तों ने नपाई कराई वर्ना इसका सफ़र अभी शुरू ही हुआ था, इसलिए मेरे दोस्तो याद रखो! कि इस रास्ते की नक्ल व हरकत इस्लाम को फैलाएगी और मुसलमान को मुसलमान बाक़ी रखेगी, गैरों के इस्लाम में आमद का और मुसलमान के मुसलमान बाक़ी रखने का यही एक रास्ता है। जब हज़रत उसामा रज़ि0 की जमात रवाना हुई मदीना मुनव्वरा से तो जहां जहां से हज़रत उसामा रज़ि0 की जमात गुजरी, वहां के मुरतदीन इस्लाम में दाख़िल हो गए कि अगर मदीने से इस्लाम ख़त्म हो गया होता तो मदीने से मुसलमानों की इतनी बड़ी जमात न आती।

तशकील

मेरे बुजुर्गो दोस्तो! इसके लिए इरादे फ़रमाओ और नियतें फरमाओ कि इन्शा अल्लाह हमें अपनी ज़ात से करना है और सारी उम्मत तक ये मेहनत और जिम्मेदारी पहुंचानी है। इसके लिए हिम्मत करके चार चार महीने के लिए खड़े हो एक दूसरे को आमादा भी करो, तैयार भी करो कि ये सारे मजमे से मतलूब हैं, ये जितने पुराने मजमे के अन्दर आए हुए हैं, ये सब यहीं से जमातें बना बना कर कुर्बानियों के साथ निकल जाएं। असल कुर्बानियां मक्सूद हैं और पुरानों को बुलाया ही इसीलिए जाता है कि ये तकाज़ों पर कुर्बानियां दे डालें। इसके लिए अफ़राद भी लिखाएं और जमाते भी लिखाएं अब खड़े होकर अपने नामों का इज़हार करो।

बयान

हज़रत मौलाना सअ़द साहब

6 दिसम्बर 2009 बरोज इतवार सुबह 10 बजे
मुकाम एट खेड़ा, भोपाल (रवानगी की हिदायत)

मेरे मोहतरम बुजुर्गो, अजीजो! इस वक़्त की बुनियादी बात ये है कि उम्मत ईमान और इस्लाम को बगैर मेहनत और कोशिश के हासिल करना चाहती है पर दुनिया को मेहनत के बगैर हासिल करना खिलाफ़े अक़्ल और खिलाफ़े क़यास समझते हैं। हां लोग कहते भी हैं कि दुनिया बगैर मेहनत के हासिल नहीं होती। तो जब दुनिया बगैर मेहनत के हासिल नहीं हो सकती तो दीन सिर्फ़ दुआ़ओं और अन्दर की तलब से कैसे हासिल हो जाएगा? ये कायदा दुनिया का हर शख़्स जानता है, कि दुनिया बगैर मेहनत के हासिल नहीं होती। इसलिए इन्सान इसी चीज पर मेहनत करता है जिस चीज से उसे अपने मसायल के हल होने का यक़ीन होता है, जिस चीज से उसे अपने मसायल के हल होने का यक़ीन नहीं होता, वो उस लाईन की मेहनत ही नहीं करता मेरे दोस्तो! जिस लाईन की मेहनत की जाती है, उसी लाईन का यक़ीन दिल के अन्दर पैदा होता है और जिस लाईन की मेहनत छूट जाती है तो उस लाईन का यक़ीन भी दिल से निकल जाता है।

मेरे दोस्तो! ये दुनिया, जो अल्लाह की नज़र में
कमीनी है,
रज़ील है,
ख़त्म होने के लिए है,
जिसपर कोई वायदा नहीं,
जब ये मेहनत के बगैर नहीं हासिल होती, फिर वो दीन, वो

तरीका जो अल्लाह को महबूब व मतलूब है और हमेशा के लिए कामयाबी दिलाने वाला है, उसी पर सारे वायदे हैं, तो वो दीन बगैर मेहनत और बगैर कोशिश के कैसे हासिल हो जाएगा? अल्लाह रब्बुल इज्जत ने ताकीद दर ताकीद वायदा किया है, कि हम अपने रास्ते में मेहनत करने वालों को हिदायत जरूर देंगे लेकिन जब तक मेहनत नहीं मुतअय्यन होगी और रास्ते नहीं मुतअय्यन होंगे, उस वक्त तक हिदायत हासिल नहीं होगी। इसलिए अबिंया अलैहि0 के ज़रिए सबसे पहले मेहनत का रूख कायम किया गया है, कि पहले का रूख़ तै करो इसके बाद इस मेहनत के नतायज की मेहनत तो बाद मे होगी, पहले मेहनत का रूख करो कि किस लाईन की मेहनत से हिदायत आती है, सलाहियत दुनिया पर लगती हो और हिदायत दीन की हो जाए, ऐसा मुम्किन नहीं है। अल्लाह रब्बुल इज्जत ने अबिंयाए अलैहि0 की मेहनत को क़यामत तक के लिए हिदायत हासिल होने का रास्ता मुतअय्यन कर दिया है इसलिए फ़रमाया है कि:

قل هذه سبيلى ادعوالى الله على بصيرة اناومن اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين. (يوسف ١٠٨)

फिर हुजूर सल्ल0 की दावत में जो रुकावटें और इन्कार और आपको जो तकलीफें पहुंचाई गई हैं, उसके साथ-साथ अल्लाह की तरफ़ से भी फ़रमाया गया है कि।

فاصبر ان وعد الله حق ولا يستخفنك الذين لا يوقنون. (روم ٦٠)

नबी जी! इस रास्ते की रूकावटें और लोगों को आपकी दावत का क़बूल न करना। ये कहीं आपको अपने रास्ते से हटा न दें।

मेरे अजीजो दोस्तो, बुजुर्गो! हज़रत फ़रमाते थे कि शैतान की

सबसे ज़्यादा ताक़त दावत से रोकने पर लगती है। कि अगर उम्मत दावत पर आगई तो फिर इस उम्मत को निजात से कोई और ताक़त नहीं रोक सकती। लेहाजा शैतान सबसे पहली कोशिश दावत से रोकने पर करता है। आपने सुना होगा, कि जब अज़ान दी जाती है, तो शैतान पीठ फेरकर भागता है। हदीस में है कि भागते हुए उसकी इतनी बुरी हालत होती है, कि डर की वजह से रेह खारिज करते हुए पूरी कूव्वत लगाकर दाई से दूर भागता है। पर जैसे ही दाई दावत ख़त्म करता है, अज़ान ख़त्म होती है, वैसे ही शैतान वापस आ जाता है, जब अक़ामत ख़त्म हो जाती है, तो शैत़ान फिर आ जाता है। फिर इबादत में खलल डालता है, भूली हुई बातें नमाज़ में याद दिलाता है, कि अगर मेरे डालने वाले ख़्याल से उसकी नमाज़ बिगड़ गई तो उसके सारे दीन को बिगाड़ने के लिए फिर मुझे किसी मेहनत की जरूरत नहीं है, क्योंकि इसका सारा दीन खूद बखूद बिगड़ेगा। हदीस में आता है, कि जो नमाज़ को बिगाड़ लेगा वो अपने सारे दीन को बिगाड़ लेगा, शैतान इस कोशिश में नहीं रहता कि उनके मामलात मुआशरत और अख़्लाक बिगाड़ूँ, शैतान की कोशिश ये होती है, कि उसकी नमाज़ बिगाड़ दूं ताकि ये दीन के किसी शोबे में हुक्म पर न चल सके, क्योंकि सही रिवायतों में है कि जो नमाज़ को बिगाड़ लेगा वो सारे दीन को ढा लेगा। सारे आमाल सही निकलेंगे अगर नमाज़ सही निकल जाए।

मैं अर्ज़ कर रहा था, मेरे अजीजो दोस्तो! कि यहां शैतान की सबसे पहली कोशिश दावत से रोकने पर होती है, कि अगर उम्मत दावत पर जमा हो गई तो यक़ीन की तब्दीली से उनके आमाल ऐसे कायम होंगे कि फिर ये मेरे फन्दे में नहीं फंस सकेंगे। इसलिए मेरे दोस्तो! इस बात को खूब अच्छी तरह जान लो, कि दावत इलल्लाह, ये इबादत में कमाल पैदा करने के लिए है और सबसे ज़्यादा शैतान

से जो मोर्चाबन्दी का अमल है वो दावत इलल्लाह का अमल है। इबादत में ख़लल डालने के लिए शैतान फिर हाज़िर हो जाता है, इसलिए दावत में तसलसुल रखा है, कि दावत और अमल को यानी दावत और इबादत को मुसलसल जमा रखो ताकि तुम शैतान के मक्र व फ़रेब से बहक न जाओ

मेरे बुजुर्गो, अजीजो! असल में दावत देने कि वजह ये है कि इससे अपने दीन पर इस्तेकामत और अपने दीन पर हिदायत अल्लाह की तरफ़ से मिलती है, अल्लाह रब्बुल इज्जत ने दावत को हिदायत के लिए मुतअय्यन किया है।

انک علی صراط مستقیم. (زخرف ۴۳)

आप सीधे रास्ते पर हैं,

आप सीधे रास्ते की तरफ़ रहबरी करने वाले हैं।

मेरा रब भी सीधे रास्ते पर है।

जो सीधे रास्ते पर चलेगा, वो रब तक पहुंच जाएगा।

(ان ربی علی صراط مستقیم) कि उलमा ने यही तफ़सीर की है, कि जो सीधे रास्ते पर चलेगा वो रब को पा लेगा।

इसलिए मुझे शुरू ही में ये अर्ज़ करना पड़ेगा, कि सारा मजमा और सारी उम्मत दिल की गहराईयों से ये तय करे, कि जो मेहनत नबियों से मुन्तक़िल होते होते उम्मत तक पहुंची है। यही मेहनत क़यामत तक उम्मत की हिदायत का ज़रिया है। जितनी काम पर बसीरत होगी, उतनी ही इस्तेक़ामत होगी।

इसलिए मेरे अज़ीज़ो दोस्तो और बुजुर्गो! इस मेहनत को पहले अपनी ज़ात से करने के लिए तय करो! क्योंकि अल्लाह की जात से तअल्लुक और उसके दीन का जिन्दगी में आना इसी मेहनत से होगा। इसलिए जिन्दगी को मक़सद बनाकर इस मेहनत को अपने जात से करना तय करो।

ये पहली शर्त है कि अगर इस मेहनत से हमें

अपने तजकिया का।

अपनी इस्लाह का।

अपनी तर्बियत का।

अल्लाह की जात के साथ तअल्लुक का।

दिल से यकीन नहीं है, तो आमाले दावत को [illegible]। समझकर छोड़ दिया जाएगा।

हालांकि आमाले दावत, आमाले नबूवत है। जो हिदायत के लिए तर्बियत के लिए अल्लाह की तरफ़ से दिए गए हैं। इसलिए हज़रत रह0 फ़रमाते थे, कि जिस चीज़ को अपने अन्दर पैदा करना चाहते हो, उसको अल्लाह के रास्ते में निकलकर ज़्यादा करो। क्योंकि दावत खुद अपनी ही ज़ात के लिए है, दाई के लिए तो दावत हर हाल में मुफ़ीद है। इसलिए याद रखो! कि अल्लाह के अज़ाब से उसकी पकड़ से, डरना और अल्लाह की तरफ़ से सवाब की और उसके इनाम की उम्मीद लाना, दोनों का फ़ायदा दावत देने वाले को जरूर होता है। अल्लाह के अजाब से डरना अपने अन्दर डर पैदा करने के लिए है। दावत दाई की खुद अपनी जात के लिए है अगर हमारा इस रास्ते में फिरना दूसरों की इस्लाह के लिए है तो हमें काम छोड़कर बैठना पड़ेगा कि काम छोड़कर बैठने वाले यूं कहेंगे कि हम बात पहुंचा चुके हैं अब जरूरत नहीं है क्योंकि बहुत कोशिश की पर ये लोग मानते ही नहीं हैं।

"दावत" खुद दाई के लिए है

मेरे बुजुर्गो दोस्तो, अजीजो! दावत देना तो खुद अपनी जात के लिए है। आप देखते होंगे, कि जितने ताजिर हैं चाहे फेरी लगाने वाले हों, या दूकान पर बैठने वाले हों, ये सब अपनी चीज़ को सिर्फ़ अपने नफ़े के लिए बेचते हैं। अपनी चीज़ की दावत अपने नफ़े के

लिए देते हैं लोग उनकी दावत पर उनकी चीज को ख़रीदते हैं, जिससे उनको नफ़ा हासिल होता है। कोई तिजारत करने वाला दूसरों के लिए तिजारत नहीं करता। हर ताजिर, अपने नफ़े के लिए तिजारत करता है।

बिल्कुल इसी तरह समझ लो कि ये दावत खुद अपनी ज़ात के लिए है, अपने अन्दर उतारने की गर्ज़ से दूसरों को दावत दो, क्योंकि दावत का ख़ासा उसकी तासीर यक़ीन पैदा करना है।

मेरे दोस्तो, बुजुर्गो, अजीजो! सबसे पहले इस मेहनत में कलमा कि दावत है ऐसी मेहनत इस कलमे पर करो, कि हमें इसका इख़्लास हासिल हो जाए। इसलिए मेरे दोस्तो, अजीजो, बुजुर्गो! सबसे पहले इस मेहनत में कलमे की दावत है। ऐसी मेहनत इस कलमे पर करो कि हमें इसका इख़्लास हासिल हो जाए। इसका इख़्लास ये है कि कलमा لا الـه الا الله अपने कहने वाले को हराम से रोक दे। पूछा गया हुजूर अकरम सल्ल0 से कि या रसूलुल्लाह सल्ल0 कलमे का इख़्लास क्या है। आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि इसका इख़्लास ये है कि कलमा अपने कहने वाले को हराम से रोक दे। इसलिए हमें कलमे की दावत से कलमे का इख़्लास हासिल करना है, इसके लिए कलमे की दावत का एक माहोल बनाना पड़ेगा, वो ये है कि मस्जिद में ईमान के हलके कायम करो। जिसमें गैब के तजकिरे हों। अल्लाह की मेहनत करो। और उन आने वालों को ईमान के हलके में बैठाओ, एक-एक के पास जाकर मुलाकात करो और उससे कहो, कि भाई मस्जिद में ईमान का हलक़ा क़ायम है, आप भी तशरीफ़ ले चलें।

मेरे बुजुर्गो, दोस्तो, अजीजो! असल में ईमान की बातें समझ में आती हैं, जब आदमी अस्बाब के कायनात के और अल्लाह के गैर से होने के माहौल से निकल कर बाहर आता है। ये कलमा لا

لا الہ الا اللہ के इख़्लास के हासिल करने का जो पहला सबब है, वो मैं आपसे अर्ज़ कर रहा हूं। क्योंकि हमारा हदफ़ और हमारा निशाना ये है कि सारे आलम की सारी मस्जिदों को मस्जिद नबवी सल्ल0 के मामूल पर लाना है। क्योंकि मस्जिद नबवी सल्ल0 में सुबह से शाम तक और शाम से सुबह तक चौबीस (24) घन्टे ऐसे रूहानी आमाल मुसलसल चलते रहते थे। कि जिस वक़्त भी कोई मस्जिद में दाख़िल होता, उसको मस्जिद के अन्दर कोई न कोई मिल जाया करता था। सहाबा रज़ि0 खुद फ़रमाते हैं, कि मैं इस्लाम क़बूल करने के लिए आया, हुजूर सल्ल0 खुद सहाबा रज़ि0 के दर्मियान बैठे हुए अल्लाह के वायदे सुना रहे थे।

वासला बिन अस्क़ा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि जब मैं हिजरत करके इस्लाम में दाख़िल होने के इरादे से आया तो सीधे आकर नमाज़ में ही शरीक हो गया। मैं आख़री सफ़ में था, जब हुजूर सल्ल0 ने सलाम फेर कर हमको देखा तो आप खुद मेरे पास तशरीफ़ ले आए। देखो मेरी बात को ध्यान से सुनो! असल में हमारा मुजाकरा ही उन पुरानों से है जो अब तक ये समझ रहे हैं, कि मस्जिद को ख़ाली छोड़कर बस मुलाकातें कर लें और दीन की बात बाजारों में करके अपने कारोबार में चले जाएं या दीन की बात बाजारों में करें और अपने दफ़्तरों को चले जाएं।

मस्जिद की जमात को चाहिए कि मस्जिद वाला बनकर मस्जिद से निकलें और एक एक मस्जिद वाला बनाने की गर्ज़ से मुलाकातें करें, ताकि मस्जिद में आमाल दावत जिन्दा हों और मुलाकातों के ज़रिए हर ईमान वाले को मस्जिद में लाया जाए। इससे मुलाकातें करके ये कहो कि मस्जिद में ईमान का यक़ीन का हलक़ा चल रहा है, आप भी तशरीफ़ ले चलें। अगर वो दस मिनट के लिए भी तैयार हो, तो उसे मस्जिद के माहौल में ले आओ,

बाजार के माहौल से मस्जिद का माहौल लाखों गुना बेहतर है, क्योंकि चन्द कदम उसका मस्जिद की तरफ़ उठा लेना, ये अल्लाह की तरफ़ कदम उठाना है, उसका अपने माहौल में बैठकर बात सुनना, जहां अस्बाब का और गफ़लत का माहौल है, वहां से मस्जिद के माहौल में लाना कि मस्जिद में ईमान का हलका कायम करने वाला और तालीम का हलका कायम करने वाला हो,

उन हलकों को चलाने वाले साथी तय करके बाकी साथी मुलाकातों के ज़रिए सबको मस्जिद में लेकर आएं कि मस्जिद में ईमान का हलका चल रहा है और तालीम का हलका चल रहा है, चाहे दस मिनट ही के लिए तशरीफ़ ले चलें। ये जो मस्जिद की तरफ़ इसके चन्द कदम उठे तो उन चन्द कदमों के उठाने पर अल्लाह रब्बुल इज्जत की रहमतें बरकतें और मगफ़िरत उसकी तरफ़ दौड़कर आ रही हैं।

हदीस में आता है कि जो मेरी तरफ चल कर आता है, मैं उसकी तरफ़ दौड़कर आता हूं अगर हमने मुलाकातों के ज़रिए ईमान वालों को मस्जिद की तरफ बुलाया तो समझ लो कि इसके लिए हिदायत का दरवाजा खुल गया। अल्लाह रब्बुल इज्जत जिसकी तरफ़ दौड़कर आ रहे हों अल्लाह रब्बुल इज्जत उसको हिदायत क्यों न देंगे।

ईमानवालों को मस्जिद में लाकर मस्जिद आबाद करना है

देखो! मैं बहुत जरूरी बात अर्ज़ कर रहा हूं, कि ये पहले नम्बर का पहला अमल है। वो लोग जो दूसरे सूबों से यहां (भोपाल) आए हुए हैं। वो भी अच्छी तरह समझ लें कि हमारी मुलाकातों का मक़सद ईमान वालों को मस्जिद में लाकर मस्जिद को आबाद करना है। क्योंकि ये मस्जिद की आबादी की मेहनत है, अब तो आम तौर से साथियों का ये जेहन होता जा रहा है, कि वो

घरों पर मुलाकातें करते हैं और पूरी बात घर के माहौल में ही कर लेते हैं। मस्जिद में लाने का दाईया और मस्जिद में लाने की कोशिश का जज़्बा उनमें नहीं है। एक घन्टा आधा घन्टा लोगों को घरों में जमा करके बात करते हैं, अब तो लोगों का भी ये जेहन बन गया है कि हमसे हमारे माहौल में बात कर लो।

हज़रत रह0 फ़रमाते थे कि जो अपने माहौल से निकलकर बाहर नहीं आया, वो ईमान के और यक़ीन के माहौल से कैसे मुतअस्सिर हो जाएगा। इसलिए उसको उसके माहौल से बाहर निकालो और हर एक से मुलाकात करो। ये नहीं कि तुम मुलाकातों में ये देखो! हमारे मोहल्ले में जमात के साथी कौन कौन हैं, जिनसे मुलाकातें करनी हैं कि हुज़ूर सल्ल0 की बअ़सत इन्सानियत की तरफ़ है अगर ये काम नबूव्वत का है, तो फिर ये काम उम्मत का है, अगर तुमने ये सोचकर मुलाकात की कि ये हमारी जमात का आदमी है, तो इससे फ़िर्क़ा बनेगा उम्मत नहीं बनेगी, इसलिए ये बात याद रखो कि ये मस्जिद की आबादी की मेहनत है कि ईमान वालों के ज़रिये मस्जिद को आबाद करो, कि हर ईमान वाले से मुलाकातें करो। क्योंकि मस्जिद को आबाद रखना हर मोमिन का काम है, अल्लाह ने ये नहीं फ़रमाया की सिर्फ़ तब्लीगी जमात के लोग ही मस्जिद को आबाद करेंगे।

انما يعمر مسا جد الله من امن با لله واليوم الا خرو اقام الصلاة اتى الزكوة ولم يخش الا الله فعسى اولئک ان يكو نوا من المهتدين.(توبه ۱۸)

हर वो शख़्स जो अल्लाह पर ईमान रखता है वो मस्जिद को आबाद करने वाला है कि सौ फ़ीसदी ईमानवाले मस्जिद को आबाद करने वाले हैं। कभी ये ख़्याल न रहे कि मस्जिद की जमात तब्लीग़ी जमात को कहते हैं। नहीं ......बल्कि सौ फ़ीसद ईमान वाले मस्जिद

को आबाद करने वाले हैं।

इसलिए मेरे मोहतरम दोस्तो, बुजुर्गो, हर ईमान वाला हमें मतलूब है, कि मुलाक़ात करके उसको मस्जिद के माहौल में ले आओ क्योंकि मस्जिद का माहौल

तर्बीयत के लिए

हिदायत के लिए और

दिल में बात उतारने के लिए है।

इसलिए हर एक से मुलाकातें करो, हर एक को मस्जिद में लाकर दावत दो, मस्जिद वाले माहौल में मुलाकातें करो, उनसे ये कहो कि मस्जिद में ईमान का हलका चल रहा है, आप तशरीफ़ ले चलें। ये पहली सिफ़त कलमा لا الہ الا اللہ कि इसके साथ मस्जिद की आबादी का जो अमल है, वो ईमान का हलका है और मुलाकातें इसलिए हैं ताकि मुलाकातों के ज़रिए उन्हें मस्जिद के माहौल में लाया जाए। अब मस्जिद के माहौल में लाकर दावत दो जेहन बनाओ मैंने तफ़सील से कल रात अर्ज़ कर दिया था कि हमें ईमान के हलके में ईमान किस तरह सीखना है? क्या बातें करनी हैं? ईमान की अलामतें बतलाएं जिससे उम्मत के अन्दर ईमान की कमज़ोरी का एहसास पैदा हो ये है मस्जिद की आबादी का पहला काम। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है "कि मस्जिद के आबाद करने वालों के दिलों से, मैं अपने गैर का खौफ़ निकाल दूंगा" हदीस में आता है कि मस्जिद को आबाद करने वालों से अल्लाह का अजाब उठा लिया जाता है।

मस्जिद को आबाद करने वालों से पाँच वायदे

हदीस में आता है कि मस्जिद के आबाद करने वालों से अल्लाह के पाँच वायदे हैं।

1- उनपर रहमत नाज़िल करते हैं।

2- अल्लाह राहत देते हैं।

3- अल्लाह राज़ी रहते हैं।

4- उनको पुलसिरात से बिजली की तरह गुजार देंगे।

5- जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे।

ये पाँच वायदे अल्लाह तआ़ला ने मस्जिद को आबाद करने वालों से किए हैं।

इसलिए मेरे दोस्तो, बुजुर्गो, अजीजो! उन सारी ख़ैरों को हासिल करने के लिए हम में से हर एक ये तय करे कि रोजाना कम से कम ढाई घन्टे तो कोई बात ही नहीं है, वरना चार चार और छः छः और आठ घन्टे मस्जिद की आबादी के लिए फारिग़ करेंगे। देखो मैं सारे मसायल का हल आपको बतला रहा हूं कि अगर उम्मत पर आने वाले अजाब को टालना चाहते हो इसका यही रास्ता है, कि अल्लाह रब्बुल इज्जत मस्जिद के आबाद करने वालों से अपने अजाब को उठा लेते हैं और अगर मस्जिद को आबाद करने वाले अपनी दुनिया की किसी हाजत को पूरा करने के लिए मस्जिद से बाहर निकलते तो फ़रिश्ते उनके दुनियावी कामों में मदद करते हैं, पर हम तो ये सोचते हैं कि अगर हम मस्जिद को वक़्त देंगे तो हमारी दूकान का क्या होगा?

अगर मस्जिद को वक़्त देंगे तो दफ़्तर का क्या होगा?

अगर मस्जिद को वक़्त देंगे तो कारखाने का क्या होगा?

और अल्लाह तआ़ला ये फ़रमा रहे हैं कि अगर मस्जिद को आबाद करने वाले दुनियावी किसी काम के लिए मस्जिद से निकलेंगे तो फ़रिश्ते दुनियावी कामों में उनकी मदद करेंगे, दुनियावी कामों में उनका साथ देंगे, कितनी बड़ी मदद होगी कि दुनियावी काम हो और अल्लाह के फ़रिश्ते हमारे मददगार हों। बस इस तरह मस्जिद के अन्दर ईमान का हलका हमें कायम करना है, कि

अल्लाह की कुदरत को, गैब के तजकिरे को खूब करना है ताकि हमारा यक़ीन,

तमाम मुशाहदात से,

तजुर्बात से,

दुनिया की चीजों से,

आमाल की तरफ़ फिरे।

इस तरह मेरे मोहतरम दोस्तो, बुजुर्गो,! ये मस्जिद की आबादी का पहला अमल है। जब ये मस्जिद से निकलकर अल्लाह की तरफ़ दावत देंगे, तो खुद दावत देने वाले का यक़ीन भी शक्लों से और चीजों से अल्लाह की तरफ़ फेरेगा। क्योंकि जब तक हम अस्बाब के मुकाबले में नमाज़ को नहीं पेश करेंगे, उस वक़्त तक वो नमाज़ नहीं आवेगी। इसलिए कि जो धन्धा लिए बैठा है वो इसके नजदीक नमाज़ से ज़्यादा यक़ीनी है। वो यक़ीनी चीज को, बग़ैर यक़ीनी के लिए कैसे छोड़ देगा।

आमाल से काम बनने की दावत

इसलिए मेरे बुजुर्गो, दोस्तो, अजीजो! हमारे यहां मुतअल्लिक़ आमाल की तरफ़ बुलाना नहीं है, बल्कि अमल की तरफ़ बुलाना अस्बाब के मुकाबले में है अगर वो अमल पर आया गया तो हमें उसके अमल का अज्र मिलेगा और अगर वो अमल पर न आया, तो हमारा अपने अमल पर यक़ीन आ जाएगा। हम आमाल की तरफ़ बुला रहे हैं, अपने अन्दर आमाल से कामयाबी का यक़ीन पैदा करने के लिए।

इसलिए मेरे दोस्तो, बुजुर्गो, अज़ीज़ो! नमाज़ की तरफ़ बुलाओ तमाम कायनात के मुकाबले में, नमाज़ से कामयाबी के यक़ीन की रोज़ाना दावत दो। हज़रत रह0 फ़रमाते थे, दो नमाज़ों के दरमियान मुलाकातों के लिए वक़्त फ़ारिग करना, अगली नमाज़ में कमाल

पैदा करने के लिए है, कि मेरी नमाज़ में कमाल पैदा हो। इसलिए खूब समझ लो! कि हमें मुलाकातों में नमाज़ की तरफ़ दावत देनी है और अपनी नमाज़ से कामयाबी के यक़ीन के बुनियाद पर दावत देनी है।

मेरे बुजुर्गो, दोस्तो! देखो दावत पर इस्तेक़ामत जब होती है, जब अपनी नमाज़ को यक़ीनी बनाने के लिए नमाज़ की तरफ़ बुलाया जाएगा, इसमें कोई शक नहीं कि दूसरे बेनमाज़ियों को नमाज़ पर लाना है, लेकिन इस काम पर इस मेहनत पर इस्तेक़ामत जब हो सकती है जब ये नमाज़ की तरफ़ बुला रहा हो अपनी नमाज़ को यक़ीनी बनाने के लिए। इसलिए इतना जरूर करो, कि जब नमाज़ कि दावत दो, तो नमाज़ से कामयाबी के यक़ीन की दावत दो। अगर वो नमाज़ पर आ गया तो हमें उसकी नमाज़ का भी अज्र मिलेगा। अगर वो नमाज़ पर न आया, तो हम खुद अपनी नमाज़ में तरक्क़ी करेंगे। ये है नमाज़ की तरफ़ दावत देने का मक़सद कि नमाज़ को यक़ीनी बनाने के लिए नमाज़ की तरफ़ बुलाओ।

दूसरा काम ये करो कि अपनी नमाज़ों पर खूब मश्क करो। अल्लाह माफ़ फ़रमाए कि नमाज़ में उजलत करने का आम मिज़ाज़ है, कि लोग नमाज़ में जल्दी करते हैं।

रूकू में,
सज्दे में,
क़ोमा में,
कायदे में,

जल्दी करने का आम रिवाज और आम मिज़ाज है। हमने अच्छे अच्छे नमाज़ियों को पुराने नमाज़ियों को देखा है, कि जिनमें क़ोमा और जलसा का एहतमाम नहीं है। हालांकि सख़्त वईद है कि

"अल्लाह तआला ऐसे आदमी की नमाज़ की तरफ़ देखते ही नहीं। जो रूकू और सज्दे के दरमियान, यानी कोमा में अपनी कमर को सीधा न करे"

لا ينظر الله الى صلاة رجل لا يقيم صلبه بين ركوعه وسجوده

"कि अल्लाह तआला ऐसे आदमी की नमाज़ की तरफ़ देखते ही नहीं, जो रूकू और सज्दे के दरमियान यानी कोमा में अपनी कमर को सीधा न करे"।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तो, अजीजो! हमें इसपर मश्क करनी पड़ेगी।

अगर इसी नमाज़ पर मर गए तो क़यामत में मोहम्मद सल्ल० के दीन पर नहीं उठाए जाओगे

हुजैफ़ा रज़ि० ने दमिश्क की जामा मस्जिद में एक आदमी को नमाज़ पढ़ते हुए देखा उसकी नमाज़ में ज़ल्दी थी। देखकर फ़रमाया कि नमाज़ कब से पढ़ते हो?

उसने कहा कि चालीस साल से नमाज़ पढ़ता हूं।

हुजैफ़ा रज़ि० ने देखकर फ़रमाया कि अगर तुम इसी नमाज़ पर मर गए और तुमने अपनी नमाज़ के अन्दर इत्मीनान पैदा न किया, तो तुम क़यामत में मोहम्मद सल्ल० के लाए हुए दीन पर नहीं उठाए जाओगे, क्योंकि आपका दीन है,

"कि नमाज़ इस तरह पढ़ो जिस तरह मुझे पढ़ता हुआ देख रहे हो"

ये फ़रमाया हुजैफ़ा रज़ि० ने, किससे फ़रमाया ह? उससे जो चालीस साल से नमाज़ पढ़ता था, ज़ाहिर बात है कि जिसकी नमाज़ को एक सहाबी देख रहे हैं। यकीनन वो कम से कम ताबई तो होगा। उसको देखकर फ़रमाया। इतनी बात तो यक़ीनी है कि वो

ताबई होगा उस जमाने की बात है। ये देखकर फ़रमाया कि अगर तुम इस नमाज़ पर मर गए तो तुम क़यामत में मोहम्मद सल्ल० के लाए हुए दीन पर नहीं उठाए जाओगे।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तो, अजीजो! हदीस में नमाज़ में उजलत करने और नमाज़ को बिगाड़ने की वईद देखा करो, हमें नहीं अन्दाज़ा है, कि हमारे दुनिया में कितने मसायल हैं।

नमाज़ को बिगाड़ने की वजह से बिगड़े हुए हैं।

कितनी बीमारियां हैं,

नमाज़ को बिगाड़ने की वजह से पैदा होती हैं।

क्योंकि जो जिस्म इबादत के लिए बना है, अगर इस जिस्म से इबादत को बिगाड़ा जाएगा, तो जिस्म के अन्दर बीमारियों की लाईन से बिगाड़ पैदा होगा। हज़रत रह० फ़रमाते थे, हर अज़्व की बीमारी का पहला सबब उस अज़्व का गलत इस्तेमाल है, कि आँख, जबान, कान, हाथ, पैर, दिमाग, और शर्मगाह, वगैरह का इस्तेमाल जब अल्लाह की मर्जी के ख़िलाफ़ होता है, उन्हीं अज़्व पर बीमारियां भेजी जाती हैं।

हां मेरे दोस्तो! बीमारियों का तअल्लुक अमल से है, सबब से नहीं। ये जिस्म इबादत के लिए बना है। इस जिस्म को इबादत से सवांरो।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तो, अज़ीज़ो! हम अपनी नमाज़ों पर सबसे पहले मश्क करें, लम्बे लम्बे रूकू की,

अल्लाह के रास्ते में निकलकर खूब मौका मिलेगा, क्योंकि अल्लाह के रास्ते में उसका कारोबार, दूकान, बीवी, बच्चे, दफ़्तर और कारखाना साथ नहीं हैं। हम सारी दुनिया के मशागिल से निकलकर अल्लाह के रास्ते में निकल रहे हैं। इसलिए बेहतरीन मौक़ा है अपनी नमाज़ों पर मश्क करने का, जैसी नमाज़ अल्लाह के

रसूलुल्लाह की तरफ़ मतलूब है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया नमाज़ इस तरह पढ़ो जिस तरह मुझे पढ़ता हुआ देख रहे हो, बस ये एक ही नमाज़ है।

नमाज़ की तक़्सीम

लोगों ने इस जमाने में नमाज़ को तक़्सीम कर लिया है।

ये मशायख की नमाज़ है,

ये उलमा की नमाज़ है,

ये अवाम की नमाज़ है,

ये एक ताजिर दूकानदार की नमाज़ है,

चलो मियां ये जैसी पढ़ रहा है इसके लिए ठीक है। वो शौख़े आलम, मुहद्दिस, बड़े बुज़ुर्ग, पीर साहब जैसे पढ़ रहे हैं, उनके ऐतबार से वो नमाज़ मुनासिब है। नहीं ख़ुदा की क़सम! अल्लाह के नबी सल्ल0 ने नमाज़ को तक़्सीम नहीं किया, मैं कैसे नमाज़ को तक़्सीम कर दूं। मैं कैसे अर्ज़ करूं कैसे समझूं मैंने एक दिन नमाज़ पढ़ाई तो अगले दिन एक साहब कहने लगे कि हमें ज़रा जल्दी है इसलिए आज मुत्तक़ियों वाली नमाज़ ना पढ़ाएं। मैंने कहा कि क्या मैं तुम्हें फ़ाजिरों वाली नमाज़ पढ़ाऊं!! वो नमाज़ कौनसी होती है, तुम मुझे बता दो, अक्सर पढ़े लिखे लोग भी बेचारे इसमें मुब्तला हैं, कि वो नमाज़ में जल्दी करते हैं, सख़्त वईद है कि नमाज़ अल्लाह के यहां बद्दुआ करती हुई जाती है। कि ऐ अल्लाह! तू उसको इस तरह बर्बाद कर, जिस तरह उसने मुझे ज़ाय किया है।

नमाज़ी, नमाज़ के बाद दुआ करे और नमाज़ नमाज़ी को बद्दुआ करे, कि नमाज़ की बद्दुआ उसकी दुआओं से पहले मक़बूल होती हैं। क्योंकि नमाज़ मज़लूम है और नमाज़ी ज़ालिम, तो मज़लूम की बद्दुआ और अल्लाह के दर्मियान कोई पर्दा नहीं है। और ज़ुल्म के और अल्लाह के दर्मियान दुआओं में रूकावट है,

कि दुआ की कबूलियत के लिए सबसे बड़ा जुल्म ये है कि उसने अल्लाह के हक़ को बिगाड़ा है।

दोबारा नमाज़ पढ़! तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी

इसलिए मेरे बुजुर्गो, दोस्तो, अजीजो! आज से ये तय कर लो, कि इन्शाह अल्लाह अपनी नमाज़ों को कायम करेंगे हां ये नहीं कि कौन सी नमाज़ पढ़ेंगे। नमाज़ तो एक ही है। जब हुज़ूर सल्ल० अपने सामने अपनी मस्जिद में जल्दी जल्दी नमाज़ पढ़ने वाले को देखकर बार बार ये फ़रमा रहे हैं कि दोबारा नमाज़ पढ़ तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी।

तो मेरे अजीजों! इस जमाने में कोई ये कैसे कह सकता है, कि हां तुमने ठीक पढ़ ली है, जब तक वो नमाज़ मोहम्मद सल्ल० के बतलाए हुए तरीके के मुताबिक न हो। जब आप सल्ल० खुद सहाबी रज़ि० को देख रहे हैं और बार बार फ़रमा रहे हैं, जा नमाज़ पढ़ तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी इस हदीस की वजह से हज़रत आयशा रज़ि० मआज़ बिन जबल रज़ि० और बहुत से सहाबा का और बाज़ अइम्मा का मज़हब ये है कि जो नमाज़ जल्दी जल्दी पढ़ेगा उसकी नमाज़ अदा नहीं होगी। उसको अपनी नमाज़ दोबारा पढ़नी पड़ेगी, बाज़ अइम्मा के नज़दीक तो अगर एक दफ़ा भी जलसा में इस्तिग़फ़ार नहीं किया तो नमाज़ दोबारा पढ़नी पड़ेगी, नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी और कोई उसका एहतमाम नहीं है, कि दो सज्दों के दर्मियान जलसा में बैठ कर इत्मिनान का एहतमाम हो। रूकू से उठने के बाद

ربنا لک الحمد حمدا کثیرا طیبا مبارکا فیہ

इन कलमात के कहने का लोगों को ख़बर भी नहीं है, कि ये क्या कलमात हैं।

मेरे दोस्तो, अजीजो! सिर्फ़ साल का एक चिल्ला लग जाना, महीने के तीन दिन लग जाना ये कोई चीज नहीं है, जब तक हम इस मेहनत के ज़रिए नमाज़ के एक एक जुज़ पर और नमाज़ के एक एक ज़िक्र पर क़ायम न हों। उस वक़्त तक हमें इस मेहनत से वो चीज हासिल नहीं होगी, जो अल्लाह ने इस मेहनत में रखी है, अब तो लोगों की आम आदत है, कि वो उन अज़कार को पढ़ते भी नहीं और दूसरों को पढ़ने के लिए कहते भी नहीं हैं। हालांकि खुद हुज़ूर सल्ल० से उन अज़कार का नमाज़ में पढ़ना साबित है। उन अजकार के एहतमाम करने की इसलिए जरूरत है, कि नमाज़ के जिस हिस्से में नमाज़ के जिस अमल में, उस अमल का ज़िक्र नहीं होगा, इस अमल की दुआ नहीं होगी, तो वो अमल कायम नहीं होगा।

जल्सा कायम होगा, जल्सा के ज़िक्र से,

क़ौमा क़ायम होगा, कौमा के ज़िक्र से,

जिस तरह सज्दे के ज़िक्र से सज्दा हो रहा है, कि कम से कम तीन बार "سبحان ربی الاعلی" की कम से कम तीन मर्तबा अल्लाह की पाकी को यक़ीन करते हुए,

उसको रब यक़ीन करते हुए,

उसको बाला व बरतर और आला यक़ीन करते हुए,

कम से कम तीन मर्तबा सज्दे में "سبحان ربی الاعلی" कहे इस तरह सज्दे का अमल हो। मुझे ये अर्ज़ करना है, कि नमाज़ के जिस हैअत का भी ज़िक्र छोड़ दिया जाएगा, नमाज़ का वो रुकन ख़त्म हो जाएगा। इसलिए याद रखो! कि उन अज़कार का एहतमाम करना नमाज़ के क़ायम होने के लिए ज़रूरी है। लोग कहते हैं, ये अज़कार जरूरी नहीं हैं। देखो! नमाज़ का क़ायम करना ज़रूरी है, नमाज़ कायम नहीं होगी जब तक अरकान के अन्दर उन

अज़कार का एहतमाम न किया जाएगा। इसलिए जब सहाबी ने पीछे से ये कलमात कहे।

"ربنا لک الحمد حمدا کثیرا طیبا مبارکا فیہ"

तो आप सल्ल0 ने नमाज़ से सलाम फेरकर पूछा ये कलमात किसने कहे थे। एक सहाबी ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्ल0 मैंने कहे थे। आप सल्ल0 ने फ़रमाया तुम्हारे उन कलमात के अजर को लिखने के लिए तीस (30) फ़रिश्ते दौड़े हर फ़रिश्ता ये चाहता था कि उन कलमात के अजर को मैं भी लिखूं इस तरह हुज़ूर सल्ल0 ने जो अज़्कार नमाज़ से बतलाए हैं, नमाज़ को क़ायम करने के लिए वो अज़्कार जरूरी हैं।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो! उन अज़्कार के एहतमाम से ही नमाज़ क़ायम होगी। पहली मेहनत अल्लाह के रास्ते में निकलकर हमें ये करनी है कि नमाज़ क़ायम हो अगर नमाज़ क़ायम हो गई तो सारा दीन नमाज़ से क़ायम हो जाएगा। इसलिए पहली मश्क़ नमाज़ पर ये करो, दूसरी मश्क नमाज़ पर ये करो कि नमाज़ में अल्लाह को देखते हुए नमाज़ पढ़ने की कोशिश करो। कि अल्लाह को देखते हुए सिफ़त एहसान पैदा करना मतलूब है, कि अल्लाह को देखते हुए नमाज़ पढ़ने की कोशिश करो, इस तरह नमाज़ पढ़ो, कि मैं अल्लाह को देख रहा हूं, अगर इतना नहीं होता है, तो इतनी बात तो यक़ीनी है कि अल्लाह मुझे देख रहा है। इससे नीचे कोई दर्जा नहीं है। ये नमाज़ पर दूसरी मश्क करनी है।

पहली मश्क़ नमाज़ का ज़ाहिर दुरूस्त हो,

दूसरी मश्क़ नमाज़ में अल्लाह के ध्यान की हो। और

तीसरी मश्क़ ये करो कि नमाज़ से ही मसायल को हल करवाओ।

गुब्बारे बिके तो मसायल हल

मेरे बुजुर्गो, अज़ीज़ो! दावत की मेहनत का मक़्सद ही है कि यक़ीन शक्लों से हुक्म की तरफ़ आवे, जब कोई ह़ाजत पेश आए सबसे पहले हमारा ख़्याल नमाज़ की तरफ़ जावे, इसी तरह इन्शाह अल्लाह करोगे। क्यों भाई। देखो एक सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0 मैं तिजारत के लिए बहरीन जाना चाहता हूं आप सल्ल0 ने फ़रमाया पहले दो रकात नमाज़ पढ़ लो। तिजारत से नहीं रोका, फ़रमाया, पहले दो रकात नमाज़ पढ़ लो, फिर करो तिजारत, लेकिन पहले दो रकात नमाज़ पढ़लो, जब तक नमाज़ पर जो वायदे हैं उन वादों का दिल से यक़ीन होगा, कि यक़ीन के बगैर कोई अमल क़ायम नहीं होगा। देखो तो सही एक गुब्बारे बेचने वाला भी ये यक़ीन रखता है कि अगर मेरे गुब्बारे बिके, बच्चों ने खरीदे, तो मेरे मसायल इससे हल हो जाएंगे, इसलिए अपने गुब्बारों को वो लिए फिरता है, गली-गली बच्चो में बेचने के लिए मामूली चीज़ दो रुपए का, पाँच रुपए का, कि बच्चे खरीद लेंगे। वो उन गुब्बारों को लिए लिए फिर रहा है। इसे यक़ीन है, कि मेरी ये चीज मामूली नहीं है, कोई बच्चा हाथ लगाएगा, तो गुस्सा आएगा कोई गुब्बारा फूट जावेगा तो अपना नुक़्सान समझेगा, क्योंकि इससे अपने मसायल के हल होने का यक़ीन है। नहीं है?

इसलिए मेरे बुजुर्गो दोस्तो, अज़ीजो! नमाज़ को इस यक़ीन पर लाओ, कि नमाज़ के साथ जो वायदे अल्लाह ने लगाए हैं उन वायदों का यक़ीन पैदा करने के लिए तालीम है, कि खूब समझ लो, तालीम का क्या मक़्सद है?। तालीम का मक़्सद है आमाल में एहतेसाब पैदा करना, कि अल्लाह रब्बुल इज्जत मुझे इस अमल पर क्या देने वाले हैं। ये फ़ज़ायल ही अल्लाह के वायदे हैं कि तालीम का मक़्सद आमाल के अन्दर एहतेसाब पैदा करना है। अल्लाह

रब्बुल इज्जत इस अमल पर क्या देने वाले हैं। एक एक अमल को वायदे के यक़ीन पर लाने के लिए तालीम है। ये तालीम का मक़सद है, कि आमाल अल्लाह के वायदों के यक़ीन पर आवे।

तालीम कराने का तरीक़ा

अब तालीम का तरीक़ा क्या है?

तालीम का तरीक़ा ये है, कि फ़ज़ायले आमाल मुन्तखब हदीस इन दोनों किताबो से बराबर तालीम होगी और जिस मस्जिद में दो वक़्त तालीम होती हो, तो वहां एक वक़्त फ़ज़ायले आमाल और एक वक़्त मुन्तख़ब अहादीस की तालीम हो। दूसरे सूबों से आए हुए लोग भी इस बात को नोट कर लें। जिस मस्जिद में मस्जिद की जमात बनी हुई है और कम से कम आठ साथी मस्जिद की जमात में हैं तो मैं शुरू में ही अर्ज़ कर चुका कि मस्जिद की जमात मुलाकातें कर के लोगों को मस्जिद में लाएंगी।

अल्लाह के रास्ते में निकलकर दो वक़्त तालीम होगी, सुबह और शाम। एक वक़्त फ़ज़ायले आमाल एक वक़्त मुन्तख़ब अहादीस दोनों किताबों की अल्लाह के रास्ते में निकलकर तालीम का एहतेमाम किया जाए। एक किताब में से सुबह पढ़ लिया जाए, एक किताब में से शाम को पढ़ लिया जाए। एक हदीस को पढ़ने वाला तीन तीन बार पढ़े ये तालीम का मसनून तरीका है।

हुजूर सल्ल0 जब कोई बात फ़रमाते थे, तो आप सल्ल0 उस बात को तीन मर्तबा दोहराते ताकि बात अच्छी तरह समझ में आजाए। इसलिए याद रखें! कि तालीम में एक एक हदीस को तीन तीन मर्तबा पढ़ा जाए और तालीम के दौरान मजमा की तरफ़ देखते रहो, तालीम में बावजू बैठने की कोशिश करो तालीम में ऐसे बैठो जैसे नमाज़ में "अत्तहिय्यात" में बैठते हो, क्योंकि जितना अदब होगा, उतना ही हदीस का नूर आएगा। हदीस के नूर से ही अमल

के करने की इस्तेदाद पैदा होगी।

तालीम में बैठने का तरीक़ा

बावज़ू बैठो!
टेक न लगाओ!
मुतवज्जेह होकर बैठो!
आपस में बातें न करो!

इस तरह अगर हम तालीम का अमल करेंगे तो ये तालीम का अमल हुज़ूर सल्ल0 की मस्जिद का अमल है। इससे हमारे अन्दर वही आमाल की रग़बत और शौक पैदा होगा, जो हुज़ूर सल्ल0 के वायदे सुनाने से आप-सल्ल0 के सहाबा रज़ि0 के दिलों में पैदा होता था। सिर्फ़ इतनी बात है, कि अल्लाह के नबी सल्ल0 मौजूद नहीं हैं। वरना,

वही हलक़ा है,
वही उम्मत है,
वही हदीसें हैं,
वही अल्लाह के वायदे हैं,

जो आप सल्ल0 अपने सहाबा कराम रज़ि0 को सुनाया करते थे। इस तरह हमें जमकर तालीम के हलकों में बैठना है। सुबह शाम ढाई घन्टे तीन घन्टे जमकर तालीम होगी। लोग पूछते हैं तालीम कितनी देर हो? हज़रत फ़रमाते थे, कि मुकाम पर भी तालीम कम से कम डेढ़ घन्टे होनी चाहिए। हमारी मस्जिद की तालीम का हाल ये है, कि पाँच मिनट दस मिनट तालीम हो जाती है। देखो! मैं इसकी आसान शक्ल व तर्तीब बताता हूं, कि तालीम कराने वाला तालीम कराए अगर लोग कुछ देर के बाद उठकर जाना चाहें तो तालीम करने वाला ये कह दे, कि आप अगर जाना चाहें तो जा सकते हैं, तालीम का अमल तो जारी रहेगा। ये कह

कर तालीम शुरू कर दे। इतना सब तय कर लो, तो इन्शा अल्लाह कम से कम हर मस्जिद में आधा घन्टे तालीम का अमल यकीनन होगा। एक दिन फ़ज़ायले आमाल एक दिन मुन्तख़ब अहादीस अगर एक वक़्त तालीम होती है।

अगर दो वक़्त तालीम होती है, तो एक वक़्त फ़ज़ायले आमाल और एक वक़्त मुन्तख़ब अहादीस की तालीम होगी। तालीम के साथ तालीमी गश्त भी होगा, जिस मस्जिद में दावत तालीम और इस्तकबाल का अमल है, वहां मुलाकातें करके मस्जिद के माहौल में लोगों को लाओ। तालीम में जो जमात अल्लाह के रास्ते में निकल रही है, वो जमात में निकलकर भी तालीमी गश्त करें।

हज़रत अबूहरीरा रज़ि0 जो सारे मुहद्दिसीन के ईमाम हैं, वो मदीना के बाजार में गश्त कर रहे थे लोगों को तालीम के हलके में जोड़ने के लिए। इस तरह मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तो, अज़ीज़ो! हमें भी मुलाकातों के ज़रिए लोगों को तालीम के हलकों में लाना है। बाजार में लोगों को एक-एक को जाकर दावत दो कि मस्जिद में अल्लाह के रसूल सल्ल0 की हदीसें सुनाई जा रही हैं, अल्लाह के वायदे सुनाए जा रहे हैं, अल्लाह के नबी की मीरास तक़्सीम हो रही है। यानी इल्म सिखलाया जा रहा है। आप भी तशरीफ़ ले चलें। इस तरह मुलाक़ातें करके लोगों को मस्जिद के माहौल में ले आओ चाहे आप अपने मुकाम पर हों या अल्लाह के रास्ते में हों। हमें हर जगह का हलका क़ायम करना है। और उसके लिए तालीमी गश्त करना है, चाहे अपने मुकाम पर हो चाहे अल्लाह के रास्ते में निकल कर हो, हर जगह तालीमी गश्त के ज़रिए लोगों को मुलाक़ात कर के मस्जिद लाना है। ये है तालीम के साथ मेहनत और ये है तालीम का तरीक़ा।

इसी तरह मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तो, अज़ीज़ो! मैंने अर्ज़ किया है कि तालीम के दौरान एक एक हदीस को तीन तीन बार पढ़ो, अगर पढ़ने वाला आलिम है, मौलवी है, अरबी ईबारत पढ़ सकता है तो जरूर एक दो हदीस अरबी ईबारत की पढ़ लिया करे। जिससे बराहे रास्त हुज़ूर सल्ल0 की जबान मुबारक से निकले हुए अल्फ़ाज कानों में पड़ें। उनकी रूहानियत अलग ही है। वो रूहानियत मुतर्जिम की ज़बान में नहीं आ सकती जो आप सल्ल0 की ज़बाने मुबारक से निकले हुए अल्फ़ाज़ में है। इसलिए ऐसा शख़्स जो आलिम हो अरबी इबारत पढ़ सकता हो, उसको चाहिए कि वो हदीस की इबारत अरबी में एक मर्तबा पढ़ लिया करे। जो इबारत का तर्जुमा है उसको तीन मर्तबा पढ़े। इसकी कोशिश न करो, कि किताब ख़त्म हो जाए इसकी कोशिश करो, जो बात कही जा रही है हदीस की वो लोगों के दिलों में उतर जाए। तालीम के दौरान मुतवज्जेह करते रहो और पूछते रहो, मजमा से कहो भाई! बात समझ में आ रही है? देखो नमाज़ छोड़ने पर कितना बड़ा अज़ाब है, भाई आपको बात समझ में आ रही है, देखो नमाज़ पर कितना बड़ा वायदा है, इस तरह तालीम के दौरान मजमे से पूछते रहो, मुतवज्जेह करते रहो, इस तरह हमें इन्शा अल्लाह तालीम के ज़रिए अल्लाह के वायदों का यक़ीन सीखना है।

एक फ़ज़ायल का ईल्म है और एक मसायल का ईल्म है, मसायल का ईल्म उल्मा से हासिल करो। जहां जाओ, वहां भी और अपने मुक़ाम पर रहते हुए भी उलमा की जियारत को इबादत यक़ीन करो। हर हर क़दम पर मसायल उल्मा से पूछो! हज़रत रह0 फ़रमाते थे, कि उल्मा से पूछ-कर चलना ये उसके ईमान की दलील है, वरना जिसके पास ईमान न होगा उसको इल्म से कोई रंगबत नहीं होगी। जी हां! हदीस में इल्म और ईमान को साथ जोड़ा गया

है। एक हदीस में आता है, कि जो इल्म और ईमान चाहेगा, अल्लाह तआला उसको देंगे। ईमान की अलामत है उलमा से मोहब्बत और उलमा की सोहबत से इल्म का हासिल करना।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तो, अज़ीज़ो! उलमा से पूछ-पूछ कर चलो, हज़रत फ़रमाते थे कि उलमा की ज़्यारत को इबादत यक़ीन करो। अपने बच्चो को इल्मे इलाही पढ़ाओ। आज सारी मेहनत और कोशिश बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाने पर है देखो! इसका तअल्लुक एक ज़रूरत से है। हम इससे इन्कार नहीं करते पर ये ज़रूरत है मक़्सद नहीं है। जो इल्म मक़्सूद है, वो इल्मे ईलाही है।

सबसे बड़ी जिहालत हर चीज को इल्म समझ लेना

मेरे बुज़ुर्गो दोस्तो, अज़ीज़ो! इस जमाने की सबसे बड़ी जेहालत ये है, कि लोगों ने हर चीज़ को इल्म समझ लिया है। कि लोगों से पूछो कि क्या पढ़ रहे हो? जी,

साइन्स का ईल्म,
अंग्रेजी का ईल्म,
डॉक्ट्री का ईल्म,
इन्जीनियरींग का ईल्म,

तौबा……तौबा…… कितनी बड़ी जेहालत है। हर चीज को इल्म क़रार देना, कितनी बड़ी जेहालत है। आज सारी दुनिया के पढ़े लिखे मुसलमान भी इस फितने में मुबतला हो गए हैं, कि उन्होंनें हर चीज को इल्म करार दे दिया। नहीं मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तो, अज़ीज़ो! आज दिल की गहराईयों से इस बात को निकाल दो, कि हर चीज इल्म है "इल्म" सिर्फ़ वो है, जो मोहम्मद सल्ल0 के तरीक़े पर अल्लाह हमसे चाहते हैं, वरना अब ये जेहन बन गया है, कि हर

चीज सीखना इल्म है, बिल्कुल ये बात नहीं है। इल्म सिर्फ़ वो है, जो हमसे हमारा रब मोहम्मद सल्ल0 के तरीके पर चाहता है।

मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तो, अज़ीज़ो! असल में ख़ालिक की तहक़ीक़ करना "इल्म" है और मख़्लूक की तहक़ीक़ करना "फ़न" है। क़बर में जाते ही जब सवाल होगा "مــن ربک" तो जो रब से पलने का यक़ीन ले गया है, वो कहेगा "ربـی اللـه" कि मेरा रब अल्लाह है, यहां से कामयाबी के दरवाजे खुल जाएंगे। इसलिए खूब समझ लो! कि हर चीज को इल्म क़रार देना जमाने की सबसे बड़ी जेहालत हैं इल्म सिर्फ़ वो जो हमसे हमारा रब चाहता है। इन्तेहाई नादान और इन्तेहाई नासमझ हैं वो लोग जो ये समझते हैं, कि दुनिया में हर सीखे जानी वाली चीज़ इल्म है और इससे बड़ी हिमाक़त ये करते हैं, कि वो हदीस जो इल्म से मुतअल्लिक़ है, उन हदीसों को ये लोग ईमान वालों के अन्दर दुनिया की अहमियत और दुनिया की रग़बत पैदा कराने के लिए दुनियावी फ़नून के लिए इस्तेमाल करते हैं। मेरी बात बहुत ध्यान से सुननी पड़ेगी कि वो हदीसे जिनमें इल्मे इलाही के सीखने का हुक्म दिया गया है, उन हदीसों को दुनियावी फ़नून को सीखने के लिए इस्तेमाल करते हैं, ये शैतान का सबसे बड़ा धोखा है। ये उस वक़्त खुलेगा जब क़ब्र में जाकर सवाल होगा, सारे फ़नून एक तरफ़ होंगे, वहां इल्म के बारे में सवाल होगा कि बताओ किससे पलने का यकीन लाए हो।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तो, अज़ीज़ो! आज की मजलिस में ये फ़ैसला करलो कि इल्म किसे कहते हैं। मोहम्मद सल्ल0 अल्लाह के यहां से जो शरीअ़त का इल्म लेकर आए हैं। सिर्फ़ उसे ही इल्म कहते हैं, इस शरीअ़त के इल्म पर अ़मल करना, उसको हासिल करना यही इल्म है। कुरआन हदीस, के सिवा जो कुछ है वो सब दुनिया के फ़नून हैं याद रखो! अब रही बात ये कि जिसका

तअल्लुक ज़रूरत से है हम उससे नहीं रोकते सीखो लेकिन उसको इल्म समझना और उसपर सलाहियतें खपाना और इतनाही नहीं बल्कि उसपर अज्र की उम्मीद करना ये धोखा है। मेरे बुजुर्गो, अज़ीज़ो, दोस्तो! अगर जरा सा अक़्ल का इस्तेमाल करो तो ये बात समझ में आ सकती है, कि इल्म किसे कहते हैं। "इल्म" कहते हैं मोहम्मद सल्ल0 की तरफ़ से वो कामयाबी का तरीक़ा लेकर आए हैं। इस तरीक़े की तहक़ीक़ करना, इसको इल्म कहते हैं इसलिए सारा इल्म क़ब्र के तीन सवालात में महदूद हैं।

☆ रब को जानना। यानी ईमान।

☆ नबी के तरीक़े को जानना। यानी शरीअ़त को जानना।

☆ मोहम्मद सल्ल0 को जानना। यानी सुन्नतों को जानना।

इन तीनों चीजों की तहक़ीक़ करना ही इल्म है, इसके अलावा जो है, वो जहल है, इसलिए ये सारे इल्म का खुलासा, क़ब्र के तीन सवाल हैं। क़ब्र में ये कोई सवाल नहीं होगा कि।

आपने डॉक्टरी कितनी पढ़ी है?

साइन्स कहां तक पढ़ा है?

इन्जीनियरिंग में क्या पास किया है?

क़ब्र में उनके मुतअल्लिक़ कोई सवाल नहीं होगा।

मेरे दोस्तो, बुजुर्गों अजीज़ो! हज़रत उमर रज़ि0 एक दिन तौरात की कुछ बातें सीखकर आए और रसूलल्लाह सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह मैं तौरात सीखकर आया हूं ताकि मेरे इल्म में और इज़ाफ़ा हो, ये सुनकर आप सल्ल0 को उमर रज़ि0 पर इतना गुस्सा आया कि आप सल्ल0 मेम्बर पर बैठ गए और सारे सहाबा जमा हो गए, अन्सार आप सल्ल0 के गुस्से को देखकर तलवार लेकर आ गए कि किसने अल्लाह के नबी को सताया है? सारा गुस्सा था हज़रत उमर रज़ि0

पर, कि उमर रज़ि0 ने तौरात क्यों पढ़ी है? आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि उमर अगर मूसा अलैहि0 आज ज़िन्दा होकर आ जाएं तो उनके लिए भी निजात का कोई रास्ता नहीं है सिवाए मेरे तरीक़े के और अगर तुमने मूसा अलैहि0 के तरीक़े पर अमल किया तो तुम गुमराह हो जाओगे हिदायत नहीं पाओगे।

क्योंकि आप सल्ल0 की आमद ने सारे नबियों की आमद का दरवाजा बन्द कर दिया और आप सल्ल0 की शरीअ़त ने सारी शरीअ़तों को ऐसा मन्सूख़ कर दिया जिस तरह हर जमाने में बच्चा बड़ा होता रहता है और उसके पिछले कपड़े बेकार और नाकारा होते रहते हैं। अगर वो उन कपड़ों को इस्तेमाल करेगा तो,

तंगी में पड़ेगा,

कपड़े फटेंगे,

जिस्म पर सही न आएंगे,

यहां तक कि इन्सान अपने क़द व क़ामत से एक ऐसी उमर में पहुंच जाता है, कि अब मरने तक उसके लिए ये लिबास मुतअय्यन हो जाता है इसी तरह मोहम्मद सल्ल0 की शरीअत ने पिछली सारी शरीअतों को सारे तरीकों को ऐसा मन्सूख़ कर दिया। जिसे बड़े होने वाले नौजवान के पीछले सारे बचपन के कपड़े बेकार हो जाते हैं इस बात को आप सामने रखकर सोचिए और अन्दाज़ा करें कि जो चीज इल्म थी और मूसा अलैहि0 की नबुव्वत पर नाज़िल की गई थी उसको उमर रज़ि0 जैसे आलिम ने सीखा जो सारे उलूम के माहिर और इतना ही नहीं बल्कि इस उम्मत के मुलहम जिसको अल्लाह की तरफ़ से सही बात इलहाम की जाती थी, वो उमर रज़ि0 जिनके बारे में आप सल्ल0 ने फ़रमाया अगर मेरे बाद कोई नबी हो सकते थे तो उमर हो सकते थे। इस दर्जे के आदमी कि सारा कुरआन व हदीस का इल्म हासिल करने के बाद

उन्होंने मूसा अलैहि0 पर नाज़िल होने वाला इल्म हासिल किया, इस पर अल्लाह के नबी को इतना गुस्सा आया, तो जो चीज़ सिरे से इल्म ही नहीं है। उसको सीखना और अल्लाह के इल्म से जाहिल रहना। इसपर अल्लाह के नबी सल्ल0 को क़यामत में कितना गुस्सा आएगा! इस बात को जरा सा तन्हाई में बैठकर गौर करना! सर पकड़ कर सोचना! कि जब उमर रज़ि0 जैसे आलिम को तौरेत में पढ़ने पर जो इल्म था, उसपर अल्लाह के नबी को कितना गुस्सा आया तो हम इल्मे दीन से जाहिल रहकर दुनियावी फुनून को सीखें और इसको इल्म समझें ऐसे लोगों पर क़यामत में अल्लाह के नबी को कितना गुस्सा आएगा?

इसलिए आप हज़रात से मेरी ये दरख़्वास्त है, कि अपने बच्चों को आप बेशक दुनियावी किसी लाईन का फन सिखलाते हैं लेकिन अपने बच्चों को कुरआन और दीन के बुनियादी अहकामात सिखलाने का पूरा पूरा एहतमाम करें। वर्ना खुदा की क़सम! क़यामत में कोई शख़्स जाहिल होने की वजह से बख़्शा नहीं जाएगा, कि ऐ अल्लाह मुझे खबर नहीं थी। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि हमने तुम्हें उमर दी थी सीखने के लिए और नबी भेजे थे, सिखलाने के लिए तो इसका कोई अज्र अल्लाह के यहां कबूल नहीं होगा। तुम्हारे पास बतलाने वाले भी आए और तुम्हें हमने उमर भी दी सीखने के लिए। इसलिए मेरे बुजुर्गों दोस्तो अजीजों कोई मस्जिद ऐसी बाकी नहीं छोड़नी है, जिसमें सुबह या शाम किसी भी वक़्त कुरआन क़े मक़तब में मोहल्ले के बच्चों को कुरआन सिखलाने का एहतमाम न किया जा रहा हो, हर मस्जिद में कुरआन की तालीम का और दीन की बुनियादी चीजों के सिखलाने का एहतमाम हर मोहल्ले वालों का काम है। ये हर मस्जिद के मुसल्ली की ज़िम्मेदारी है। लोग कहते हैं कि सर्दी आ गई है हमारे

मस्जिद में गर्म पानी का इन्तेज़ाम होना चाहिए गर्मी आ गई है पंखे का इन्तेज़ाम होना चाहिए और सफ़ों का इन्तेज़ाम होना चाहिए। जब मस्जिद इसकी अपनी जिस्मानी जरूरतों के सामान से भर रही है, तो क्या जो मस्जिद के तकाज़े हैं, जो मस्जिद इबादत के लिए बनी है, क्या उसकी जिम्मेदारी नहीं है, कि ये अपनी जिम्मेदारी पर अपने खर्च पर मस्जिद के अन्दर मक्तब का इन्तेज़ाम कर लें? ये सारा मजमा निय्यत करके जावे कि अपनी मस्जिद में मक्तब का एहतमाम करेंगे और अपने बच्चों को अगर ये सुबह दुनियावी कोई फ़न हासिल करने के लिए जाते हैं तो उससे इस्तेगफ़ार भी किया करो, कि ऐ अल्लाह! तू हमें माफ़ कर दे, कि हमने इस इल्म से हटकर उन चीजों को पढ़ाया, जिसके लिए तूने हमें पैदा नहीं किया था।

हाए......अल्लाह ने तो हमें अपनी इबादत के लिए पैदा किया था तुम बताओ तो सही! जब अल्लाह ने इबादत के लिए पैदा किया था तो हमने इस इबादत के लिए अपने जिस्म को कितना इस्तेमाल किया? बस मेरे बुजुर्गो, दोस्तो, अज़ीज़ो! एक बात याद रखो कि दुनियावी कानून पर फ़ख्र करना कुफ़्र का मिज़ाज है, मुसलमान फ़ख्र करे तो,

कुरआन पर करे,

हदीस पर करे,

फुक्हा पर करे,

ये डॉक्टर के मुकाबले में फ़ख्र करेगा, कि मेरे पास अल्लाह का इल्म है, अगर तुमने ऐसा न किया तो ये दुनियावी फ़नून हासिल करेगा और फ़ख्र का मिज़ाज है। अम्बिया अलैहि० जब अल्लाह का इल्म लेकर आए तो कौमों ने अपने फ़न के मुकाबले में नबियों के इल्म का मज़ाक उडाया, तो अल्लाह ने नबियों के इल्म

का मज़ाक उड़ाने की वजह से सबको हलाक कर दिया। बस आज से हम सब ये तय कर लें कि इल्म सिर्फ़ वही है, जो हमारा रब चाहता है।

अपने बच्चों को कुरआन पढ़ाएं दीनी मदरसों में दाखिला कराएं मैं कैसे समझाऊं कि आज मुसलमान को अल्लाह वाले इल्म से पलने का यक़ीन नहीं है, अल्लाह जो सबका रब है, जिसकी ज़ात से इल्म निकलता है, उससे पलने का यक़ीन नहीं है। आज गैरों के फ़नून से पलने का यक़ीन है। हदीस में आता है "कि जो कुरआन को पढ़कर गनी न हो, वो हम में से नहीं है" कि कुरआन तो यकीनन गनी कर देगा।

मेरे दोस्तो, बुजुर्गो, अज़ीज़ो! इल्म दो क़िस्म का है।

फज़ायल का,

और मसायल का,

फज़ायल का इल्म तालीम के हलकों में बैठ बैठकर हासिल किया जाएगा और मसायल का इल्म, उलमा से पूछो, क़दम क़दम पर पूछकर चलो, कि मैं शादी कैसे करूं,

मैं तिजारत कैसे करूं

मैं फ़लां मुलाज़मत करता हूं

हलाल है या हराम है?

जायज़ है, या नाजायज़?

हराम गिज़ाओं का असर

अगर ऐसा न करोगे तो इतने रास्ते गैरों ने हराम के खोल दिए हैं, कि वो किसी भी तरफ़ से मुसलमानों को हलाल खाने की फ़ुरसत नहीं देना चाहते हैं। वो ये जानते हैं कि उनकी गिज़ाओं को हराम कर दो वर्ना उनकी बद्दुआ हमें हलाक कर देगी। हां अगर उनकी अपनी दुआ से कोई फ़ायदा नहीं होगा तो हमारा क्या

नुक़्सान कर सकतें हैं। इसलिए कि तब उनको अपनी दुआओं
और बद्दुआओं से कोई उम्मीद बाक़ी नहीं रहेगी, क्योंकि हरा
खाने वाले की दुआएं अल्लाह की तरफ़ से मरदूद की जाती हैं।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तो, अज़ीज़ो! उलमा से मोहब्बा
किया करो और उलमा की जियारत को इबादत यक़ीन किया का
और क़दम-क़दम पर उनसे पूछना ये फ़र्ज है, हर मोमिन के जिम्
है, कि वो उलमा से पूछ-पूछ कर चलें कि उलमा से हर चीज पूछन
जरूरी समझो, इसकी कोशिश करो।

मौलाना इल्यास साहब रह० फ़रमाते थे, "अल्लाह के ध्या
के बग़ैर ज़िक्र करना बिद्अ़त है" बाज़ उलमा के नजदीक अल्ला
के ध्यान के बग़ैर ज़िक्र करना हराम है, अल्लाह के ध्यान के बग़
ज़िक्र करना बदन में सुस्ती पैदा करता है और अल्लाह के ध्यान के
बग़ैर ज़िक्र करना अल्लाह की तौहीन है। अब तो इधर साथी हा
में तसबीह लेकर बैठता है, तो उसे नींद आने लगती है। हालांकि
ज़िक्र गफ़लत को तोड़ने के लिए है लेकिन देखने में ये आरहा है
कि गफ़लत के साथ अल्लाह का ज़िक्र कर रहा है। इसलिए हज़र
ईसा अलैहि० फ़रमाते थे, कि जब ज़िक्र करो तो जबान को दिल के
ताबे करो क्योंकि अल्लाह के ज़िक्र से अल्लाह का ध्यान पैदा करन
मक़्सूद है।

मेरे दोस्तो! ज़बान की हरकत या तस्बीह के दोनों का शुमा
असल नहीं है। बल्कि असल ज़िक्र अल्लाह का ध्यान है, ज़बान तो
दिल की तर्जुमान है। देखो! अगर कोई आदमी डॉक्टर के पास गया
तो ज़बान से अपने हाल बयान करता है, ये ज़बान ही तर्जुमान है
कि आपके अन्दर क्या है? आप डॉक्टर से अपने अन्दर की बा
को ज़बान से कहते हैं। इसलिए दोस्तो, अज़ीज़ो! अल्लाह के ध्या
के साथ ज़िक्र करने की मश्क किया करो। ज़िक्र के लिए वजू करो

लोग तो आपसे ये कहेंगे कि बगैर वजू के भी ज़िक्र हो जाता है। नहीं मेरे दोस्तो! मैं जो कह रहा हूं उसे ध्यान से सुनो कि मैं आपसे सारी की सारी हज़रत रह0 की बातें नक़ल कर रहा हूं, हज़रत फ़रमाते थे, ज़िक्र के लिए वजू करो और तन्हाई का कोना तलाश करो, अल्लाह का ज़िक्र तन्हाई में करो, कि अल्लाह का ज़िक्र अल्लाह के गैर से कटकर होता है, कि अल्लाह के गैर से कटकर अल्लाह के होकर अल्लाह को याद करो तवस्सुल इसी को कहते हैं। इसलिए तन्हाई का कोना तलाश करो, एक तस्बीह तीसरे कलमें की एक तस्बीह दरूद शरीफ़ की, एक तस्बीह इस्तेगफ़ार की, एहतमाम के साथ इन तीनों तस्बीहात को सुबह-शाम अल्लाह के ध्यान के साथ करो।

अल्लाह का क़ुर्ब पाने का तेज़ रफ़्तार रास्ता

एक बात ये है, कि अल्लाह तौफ़ीक़ दे तो सुबह सादिक़ से पहले कुरआन देख कर पढ़ लिया करो, चाहे तीन आयतें ही क्यों न पढ़ो। मौलाना इल्यास साहब रह0 फरमाते थे, कि मैंने सारे बुजुर्गों को और औराद व वज़ाइफ़ करते देखा मगर जितना तेज रफ़्तारी से अल्लाह का कुर्ब सुबहे सादिक से पहले कुरआन देखकर पढ़ने का महसूस किया, इतना किसी वजीफ़े में और किसी विर्द में और किसी अमल में नहीं किया। अब तो लोगों की ये आदत है, कि वो चाहते हैं लम्बे लम्बे ज़िक्र करें हालांकि हुजूर सल्ल0 ने मुख़्तसर और मुअतदिल अज़कार अपनी उम्मत को फ़रमाए हैं। देखो भाई! सुन्नत में जो एतदाल है, वो सुन्नत की वजह से है, बाज हमारे साथी जमातों में निकलते हैं, वो बीमार होकर आते हैं होता ये है कि कोई हफ़्तों सोता नहीं है और पागलपने की बातें करता है, दिमाग में खुशकी हो गई, कि अल्लाह के रास्ते से बड़े-बड़े बीमार होकर आते हैं। लोग पूछते हैं, क्या पढ़ा? तो पता ये चलता है, कि

जमातों में निकलकर किसी किताब में किसी बुजुर्ग का वजीफ़ा पढ़ लिया, किसी से किसी बुज़ुर्ग का वजीफ़ा सुन लिया और खूद से पढ़ने लगे। मेरे दोस्तो! ये हैरत कि बात है, कि सुन्नत के अमल में इसको वो बुज़ुर्गी नज़र नहीं आती, जो एक बुजर्ग की नक़ल उतारने में आती है। कोई कहता है, मैंने इतना कलमा पढ़लिया और कोई कहता है, कि मैंने इतना कलमा पढ़लिया है कोई कहेगा, फ़लां वज़ीफ़ा मैंने इतना पढ़ लिया आम आदत है हमारे साथियों की कि वो ये समझते हैं, कि अज़्कार मसनून आम चीज़ है। हालांकि जो चीज़ जो ज़िक्र, जो विर्द, जो अमल, हुज़ूर सल्ल0 से साबित है, उसके अलावा कुछ और तुम सारी ज़िन्दगी भी अगर ज़िक्र करते रहो, तो ना वो अनवारात और न वो अज्र हासिल कर सकते हो, जो अज्र और जो अनवारात सुन्नत की इक़तेदा में हासिल होगा। एक मर्तबा कुछ सहाबा रज़ि0 ने आपस में बात की कि अल्लाह के नबी के तो अगले पीछले सारे गुनाह माफ़ हो चुके हैं और अल्लाह के आप सल्ल0 पसन्दीदा हैं। अल्लाह आप सल्ल0 को तो यूं ही नवाज़ देंगे। पर हम तो कुफ़्र से इस्लाम में आए हैं हमारे लिए तो ये आमाल बहुत ही थोड़े हैं, चुनानचे सबने बैठकर ये तय किया,

एक ने कहा मैं तो हमेशा रोज़ा रखूंगा, इफ़्तार नहीं करूंगा।

एक ने कहा, मैं तो रात को जागूंगा, कभी नहीं सोऊंगा।

एक ने ये तय किया, कि मैं शादी नहीं करूंगा।

ताकि इबादत के लिए फ़ारिग रहूं, न बीवी हो, न बच्चे हों। हुज़ूर सल्ल0 को जब उनके इस इरादे का इल्म हुआ, तो आप सल्ल0 को इस बात पर शदीद गुस्सा आया। आप सल्ल0 ने सबको जमा किया और उन्हें ख़ास तौर पर बुलाया जिन सहाबा ने ये फैसला किया था, कि मैं रोज़ा रखूंगा मुसलसल और मैं जागूंगा मुसलसल और मैं शादी नहीं करूंगा, उनको जमा किया और जमा

कर के फ़रमाया من رغب عن سنتي فليس مني जो मेरे तरीके से फिरेगा वो मेरी जमात में नहीं है "लोग इस हदीस को पढ़ते हैं और अक्सर को ये मालूम नहीं है कि "من رغب عن سنتي فليس مني" ये बात आप सल्ल0 ने कब फ़रमाई थी? ये बात आप सल्ल0 ने उस वक़्त फ़रमाई थी, जब आप सल्ल0 ने सहाबा को एतेदाल से और सुन्नत तरीक़े से हटता हुआ पाया था क्योंकि उन्होंने हुजूर सल्ल0 के मामूलात को कम समझा और आप सल्ल0 से बढ़कर अमल करने का इरादा किया। मेरी बात समझ में आरही है, आप लोगों को! क्यों भाई! इसलिए मैं अर्ज़ कर रहा हूं, कि सबके सब मसनून दुआओं का एहतमाम किया करो! मसनून दुआओं की किताब ले लो! सब मसनून दुआएं ही पढ़ा करो! उन्हें याद किया करो और उन्हीं को मांगा करो।

हज़रत रह0 फ़रमाते थे, कि मसनून दुआओं में कबूलियत के रास्ते देखे हुए हैं। बस मुझे मुख़्तसर अर्ज़ करना है, कि आप हज़रात उन अजकार का एहतमाम करो, जो अजकार हुजूर सल्ल0 से साबित हैं, इसमें ऐतदाल है। एक मर्तबा हज़रत जुबैरिया रज़ि0 बहुत सारी गुठलियां जमा किए हुए बैठी पढ़ रही थीं, आप सल्ल0 घर में दाख़िल हुए तो आप सल्ल0 ने देखा कि वो गुठलियां पढ़ रही हैं और गुठलियों का ढेर लगा हुआ था, आप सल्ल0 ने पूछा की ये क्या कर रही हो? कहा अल्लाह का ज़िक्र कर रही हूं। आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि मैंने यहां तेरे पास आकर खड़े होते ही ज़बान से ऐसे कलमात कहे हैं कि अगर उन कलमात का वज़न किया जाए तो ये सारी गुठलिया ज़बान से जिन्हें तुम पढ़े जा रही हो उसके मुकाबले में जो मैंने पढ़ा, कोई वज़न नहीं है। जी हां! ज़िक्र मसनून अपने अन्दर अल्लाह के सारे वायदे लिए हुए है।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गो दोस्तो अज़ीज़ो! जरा अपने आप पर रहम

करो, कि नबूव्वत की इक़तिदा एतेदाल का रास्ता है, ये नहीं कि मैं भी वो कर रहा हूं, जो फ़लां बुज़ुर्ग ने किया, वो पढ़ रहा हूं, जो फ़लां बुज़ुर्ग ने पढ़ा। मेरे दोस्तो! ज़िक्र में भी अल्लाह के नबी सल्ल0 की इक़तिदा करो, एक मजलिस में हुज़ूर सल्ल0 ने सौ (100) मर्तबा इस्तेग़फ़ार किया, फिर आप सल्ल0 ने सहाबा रज़ि0 से फ़रमाया कि तुम लोग भी इस्तेग़फ़ार करो, कि अज़्कार मसनून के अन्दर एतेदाल है। हमारे साथी इसका एहतमाम नहीं करते और ये चाहते हैं, कि मुझे कोई वज़ीफ़ा मिल जाए। हां मुख़्तसर सा वज़ीफ़ा सुन्नत का वज़ीफ़ा है। इस तरह हमें अल्लाह के रास्ते में निकलकर ज़िक्र का एहतमाम करना है, बावज़ू होकर, अल्लाह के ध्यान के साथ अल्लाह का ज़िक्र करना है।

मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तो, अज़ीज़ो! अगर दुआओं के ज़रीए अल्लाह की ज़ात के साथ तअल्लुक़ पैदा हो गया, तो यक़ीनी बात है, कि अल्लाह हमारे और बन्दों के दर्मियान के हालात को ठीक कर देंगे। जो अपने और अल्लाह के दर्मियान के मामलात को ठीक कर लेगा, तो अल्लाह उसके और बन्दे के दर्मियान के मामलात को ठीक कर देगा। अल्लाह से मामलात ठीक करना ये है कि दुआओं के रास्ते से अपने मसायल को अल्लाह से हल कराया जा रहा हो। इसलिए कि जो शख़्स अल्लाह से अपने मसायल का हल न करा पाएगा, वो बन्दों के हक़ मारेगा, उनके हुक़ूक़ दबाएगा। इसलिए कि बन्दो के हुक़ूक़ वो मारता है जो अल्लाह के हुक़ूक़ मार रहा हो और दुआ अल्लाह का हक़ है जिसको अल्लाह के हक़ की परवाह नहीं है वो बन्दों के हुक़ूक़ की परवाह क्या करेगा, इसके लिए इकरामे मुसलिम है कि अल्लाह के रास्ते में निकलकर हमें इकराम की मश्क़ करनी है। अपने अन्दर इकराम की सिफ़त पैदा करने के लिए है ख़िद्मत का हर एक मोहताज होगा, जिस तरह तर्बियत का हर एक

मोहताज है, अल्लाह के रास्ते में निकलकर ख़िद्मत में अपने आपको खुद पेश करो, कि

लाओ खाना मैं बनाऊंगा,

लाओ लकड़ी मैं जलाऊंगा,

जंगल से लकड़ियां चुनकर मैं लाऊंगा,

जब अल्लाह के नबी सल्ल0 जंगल से लकड़ियां चुनकर ला सकते हैं, तो मेरी और आपकी क्या हैसियत है एक मर्तबा ये सारे काम सहाबा किराम रज़ि0 पर तक़्सीम हो गए कि

बकरी कौन काटेगा,

गोश्त कौन बनाएगा,

खाना कौन पकाएगा,

आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि मैं क्या करूंगा? सहाबा ने अर्ज़ किया, कि आप तो अल्लाह के नबी हैं तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि मैं जंगल से लकड़ियां चुनकर लाऊंगा, फिर आप सल्ल0 खुद तशरीफ़ ले गए और जंगल से लकड़ियां चुनकर उठा लाए। ख़िद्मत में आप सल्ल0 सहाबा के साथ इस तरह लगे रहते थे, कि बाहर से नए आने वालों को पूछना पड़ता था "ایکم محمد!" कि तुममें से मोहम्मद कौन है? बाहर से आने वाला पूछता था कि तुम में मोहम्मद कौन हैं? कोई इमतेयाज़ी शान नहीं थी कि अमीर साहब हैं। अमीर साहब सबसे आगे ख़िद्मत में लगे हुए हैं।

इसलिए मेरे दोस्तो! ख़िद्मत में लगना अपनी तर्बियत के लिए है, वर्ना ये तो मुमकिन ही नहीं है, कि इन्सान हो और ख़िद्मत करने से उसकी तर्बियत न हो? और ईमान वाला हो, उसके अन्दर तवाज़ो न हो। इसलिए हमें अल्लाह के रास्ते में निकलकर खूब मश्क़ करनी है। ख़िद्मत के ज़रिए अपने अन्दर तवाज़ो पैदा करने के लिए ख़िद्मत में खूब लगो और देखो ये सारे

काम अल्लाह की रज़ा के लिए हों। इसके अलावा हमारी कोई गर्ज़ न हो, ये सब काम अल्लाह के लिए हों क्योंकि हदीस में आता है, कि अदना रिया भी शिर्क है। अल्लाह के गैर का अदना ख़्याल भी शिर्क है। ये सब काम महज अल्लाह की रज़ा के लिए हो। इसके अलावा हमारी कोई गर्ज़ न हो। एक सहाबी रज़ि0 ने आकर अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह एक आदमी नेक अमल करता है और उसका दिल ये चाहता है कि उसके अमल को कोई देख ले, आप उसके बारे में क्या फ़रमाते हैं? आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि उसको कुछ नहीं मिलेगा। जी हां एक सहाबी रज़ि0 न आकर अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह एक आदमी कोई नेक अमल करता है और ये बात उसे खुश करती है कि उसके अमल को कोई देख ले, आप उसके बारे में क्या फरमाते हैं? आप सल्ल0 खामोश रहे, आप सल्ल0 पर अल्लाह की तरफ़ से आयत नाज़िल हुई कि जो शख़्स अपने अमल के ज़रिए अल्लाह से मिलना चाहता हो उसको चाहिए कि अपनें अमल को अल्लाह के लिए खालिस करले, अल्लाह की इबादत में दूसरों को शरीक न करे, कि अल्लाह की इबादत का शिर्क ये है कि बन्दा अपने अमल से अल्लाह के गैर को खुश करना चाहे।

देखो मेरे दोस्तो! ये बहुत अहम मसला है कि यहां से आप जमात में निकलेंगे, तो वहां जब आप तहज्जुद पढ़ रहे होंगे, तो दिल में ख़्याल पैदा होगा कि काश अमीर साहब देख लेते, कि सब सो रहे हैं और मैं तहज्जुद पढ़ रहा हूं गश्त में अल्लाह आपसे अच्छी बात करवा देगा, तो मस्जिद में आते ही अन्दर जज़्बा ये होगा, कि काश मेरे साथियों में से कोई मेरी बात अमीर साहब को बतला दे कि अमीर साहब उसने गश्त में बहुत अच्छी बात की है। हज़रत रह0 फ़रमाते थे कि ये निरा शिर्क है, निरा शिर्क है, कि

दुनिया में तो अल्लाह उसको उम्दा जगह देंगे, पर आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं होगा, हां ये अन्दर का जज़्बा होता है, कि शैतान अन्दर ये ख़्याल पैदा करेगा कि तुमने गश्त में बात बहुत अच्छी की थी, अगर अमीर साहब को मालूम हो जाएगा, तो फिर अमीर साहब तुमसे बात करवाएंगे, ऐसे आदमी के साथ अल्लाह की कोई मदद नहीं होगी।

मेरे दोस्तो, अजीजो! जिस तरह हमें बुतों के शिर्क से पनाह मांगनी है, इसी तरह अमल के शिर्क से भी अल्लाह की पनाह मांगनी है। क्योंकि एक बुतों का शिर्क है और एक अमल का शिर्क है, बुतों का शिर्क ये है कि अल्लाह के ग़ैर की इबादत की जावे और अमल का शिर्क ये है कि अमल को अल्लाह के गैर के लिए किया जावे, ये दोनों शिर्क जहन्नम में ले जाएंगे। इसलिए अल्लाह से रो कर इख़्लास करले वरना शैतान क़दम-कदम पर निय्यत के अन्दर फ़तूर पैदा करेगा और निय्यत को बिगाड़ने की कोशिश करेगा, इस तरह हमें अल्लाह के रास्ते में निकलकर उन छः सिफ़ात की मश्क करनी है। हमारा निकलना इसलिए हो रहा है ताकि ये बातें अपनी हकीक़त के साथ दिलों में उतर जावे तो पूरे दीन पर चलने की इस्तेदाद यक़ीनन पैदा हो जाएगी।

इसलिए मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो! पहली बात ये है निकलने में कि हमारे दिलों में इस काम की अजमत हो, इस काम की अजमत और इस रास्ते में निकलने का एहतमाम सहाबा किराम रज़ि० के दिलों में था क्योंकि इसमें कोई शक नहीं कि काम वही है, जो सहाबा किराम रज़ि० का था। अल्लाह के रास्ते में निकलते हुए हमारे वो जज़्बात हों, जो जज़्बात सहाबा किराम रज़ि० के थे इस बात का दिल से यक़ीन करो कि अल्लाह के रास्ते की एक सुबह् एक शाम दुनिया और दुनिया में जो कुछ है उस सबसे बेहतर है,

हमारा अगर ख़्याल ये है, कि करने के काम और भी हैं ख़ैर के, क्या ज़रूरी है कि तब्लीग़ ही में निकला जाए, तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि0 जब अपनी जमात से पीछे रह गए तो क्यों पीछे रह गए।

दुकान के लिए।

भाई की शादी के लिए।

कारोबार के लिए।

बीवी बच्चों की ज़रूरियात और उनकी बीमारियों के लिए? नहीं बल्कि हुजूर सल्ल0 के साथ जुमा की नमाज़ पढ़ने के लिए आपका खुत्बा सुनने के लिए और आपकी मस्जिद की फ़जीलत हासिल करने के लिए। कि मस्जिद नबवी की फ़जीलत सारी मस्जिदों से ऊंची है, सिर्फ़ इस फ़जीलत को हासिल करने के लिए रूके अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि0 को ख़्याल हुआ कि जमात तो सुबह को रवाना हुई है, जुमा की नमाज़ पढ़ के चला जाऊंगा मेरी बात ध्यान से सुनो! कि आप सल्ल0 ने उन्हें देखकर फ़रमाया कि अब्दुल्लाह तुम गए नहीं? अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मुझे तो ये ख़्याल हुआ कि मुझे ये फ़जीलतें हासिल हों,

आप के पीछे नमाज़ पढ़ने की,

आपका खुत्बा सुनने की,

कि मैं आप सल्ल0 की मस्जिद में ये फ़जीलत हासिल कर लूं फिर जमात में जाकर मिल जाऊंगा। आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि ऐ अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि0 अगर सारी दुनिया का माल तुम गैर की राह में खर्च कर दो तो तुम सुबह निकलने वाली जमात की फ़जीलत हासिल नहीं कर सकते। देखो मेरी बात ध्यान से सुनो! अगर हमारा ख़्याल ये है, कि खैर के काम दुनिया में बहुत से हो रहे हैं, क्या यही काम जरूरी है? कि जमात ही में निकला जाए तो

आप सल्ल0 ने अब्दुल्लाह बिन रवाहा को ये बतलाकर ये ख़्याल साफ़ कर दिया कि अल्लाह के रास्ते की नक़ल व हरकत का कोई अमल इसका किसी अमल से मुक़ाबला नहीं हो सकता कि शबे क़दर में हज्रे अस्वद और मुलतज़िम के सामने कोई सारी रात इबादत करे और कोई एक आदमी कुछ देर के लिए अल्लाह के रास्ते में हो, तो उसकी फ़ज़ीलत उसका दरजा उसका मुक़ाम उसके लिए सवाब अल्लाह के यहां कहीं ज्यादा बढ़ा हुआ है। यहां सब ही माशाअल्लाह पुराने हैं इस मजमा में उनसे अर्ज़ कर रहा हूं कि इन फ़ज़ायल को हदीस में देखकर बार बार बयान किया करो, वरना मजमा के अन्दर से और उम्मत के अन्दर से इस रास्ते के नक़ल व हरकत के फजायल खत्म होते चले जाएंगे। फिर ये काम तन्जीम बन जाएगा, तन्ज़ीम होती है ना, तन्जीम! कि ये काम कोई तन्ज़ीम नहीं है। जो सहाबा रज़ि0 की नक़ल व हरकत के फ़ज़ायल है, वो हमारी नक़ल व हरकत के फ़ज़ायल हैं। मौलाना यूसुफ रह0 इसे बार बार फरमाते थे कि काम वही है, जो नबियों का काम था, काम वह ही है जो सहाबा का काम था। इसलिए सहाबा किराम की नक़ल व हरकत के ख़ूब फ़जायल बयान करो! अब मैं कैसे अर्ज़ करूँ आपसे कि सबसे बड़ी चूक हमसे ये हुई कि हमने सहाबा रज़ि0 की नक़ल व हरकत को महज क़ेताल पर महमूल करके छोड़ दिया है। हालांकि वो जिहाद के फ़जायल हैं क़िताल तो एक आरज़ी है, जो कभी पेश न आया। कितने गज़वात ऐसे हैं, जहां से बग़ैर क़िताल किए हुए सहाबा वापस आगए, क्योंकि हिदायत मतलूब है, हलाकत मतलूब नहीं है। जितने सहाबा के नक़ल व हरकत के फ़जायल हैं, वो तमाम के तमाम इस रास्ते की नक़ल व हरकत के हैं।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तो, अज़ीज़ो! एक बार सहाबा रज़ि0

ने ये तय किया, कि सिर्फ छः महीने की छुट्टी ले लें।

जिसमें हम मुकामी काम के साथ अपना कारोबार देख लें,
बीवी बच्चों को देख लें,
टूटे हुए मकान ठीक कर लें,
उजड़े हुए खेत दुरूस्त कर लें,

तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि अगर तुम ने ये इरादा कर लिया है, तो अल्लाह की तरफ़ से आयत नाज़िल हो गई है। ولا تلقوا بايديكم الى التهلكة कि "अपने हाथ अपने को हलाकत में न डालो"

अगर तुमने छः (6) महीने के लिए भी ये तय कर लिया है, कि छः महीने तक निकलना नहीं है। हज़रत रह0 फ़रमाते थे, कि सहाबा ने छः महीने मदीना में ठहरना, मुकामी काम के साथ तय किया था, फ़ौरन अल्लाह ने आयत नाज़िल कर दी, कि "अपने हाथ अपने को हलाकत में न डालो" जैसे ही बाद वालों ने इस आयत का इस्तेमाल इस काम के अलावा में किया, तो फ़ौरन अबू अय्यूब रज़ि0 बोल पड़े, कि तुम गलत कहते हो ये आयत हमारे बारे में नाज़िल हुई है, कि हम अन्सार ने एक बार ये सोचा था, कि छः महीने मदीने में क़याम कर लें तो ये आयत नाज़िल हो गई

कि "अपने हाथों अपने को हलाकत में न डालो"

हाए! हमें इस नक़ल व हरकत का अन्दाजा नहीं है, इसलिए हम सहाबा रज़ि0 की नक़ल व हरकत को अपने इस काम की नक़ल व हरकत से कम समझते हैं।

हयातुस्सहाबा खूब पढ़ा करो

इसलिए मेरे दोस्तो, अजीजो! हयातुस्सहाबा खूब पढ़ा करो, कोई शब गुजारी ऐसी बाकी न रहे जिसमें "हयातुस्सहाबा" न पढ़ी जाती हो, बशर्ते कि साल लगाया हो आलिम हो। अमूमी तौर पर मैं

सारे मजमे से कह रहा हूं। जितने जमात में जाने वाले और वापस जाने वाले वे सब ये तय करें कि "हयातुस्सहाबा" हममें से हर एक के इन्फ़िरादी मुताले में रहेगी, हमें पता तो चले कि हम क्या कर रहे हैं और सहाबा ने क्या किया है? अगर ऐसा न किया तो हमारा रास्ता अलग होगा, उनका रास्ता अलग होगा। ये तो सहाबा किराम रज़ि0 खूद डरते थे, कि हमने अगर ऐसा न किया, तो हम पिछलों के रास्ते पर नहीं जा सकते हम उनसे नहीं मिल सकते। जी हां! इसलिए मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो, अजीजो! इस रास्ते की नक़ल व हरकत के वही फ़जायल हैं, जो सहाबा रज़ि0 की नक़ल व हरकत के फ़जायल हैं, इस रास्ते की एक सुबह एक शाम दुनिया व मा फ़ीहा से बेहतर है।

आधा दिन अल्लाह के रास्ते का पांच सौ (500) साल के बराबर है।

कि अल्लाह ने फिरने वालों को मुकाम पर बैठने वालों के मुकाबले में बड़ी फ़जीलत दी है, वो सारे फ़ज़ायल इस रास्ते में फिरने वालों के लिए हैं, जो सहाबा किराम रज़ि0 के लिए थे। अल्लाह के रास्ते में पैदल चलना सबसे ज्यादा अल्लाह के गुस्से को ठन्डा करने वाला अमल है, क्योंकि इसमें कोई शक नहीं, कि अल्लाह के गजब का सबसे बड़ा मज़हर जहन्नम है और ये बात हदीस से साबित है, सही रिवायतों से, कि अल्लाह के रास्ते का गुबार और जहन्नम की आग, ये कभी जमा नहीं हो सकती। अल्लाह के रास्ते में जागना या पहरा देना। खूब समझलो, ऐसी आंख जहन्नम की आग को देखेगी नहीं, जो अल्लाह के रास्ते में जागी हो।

इसलिए मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो, अजीजो!......मैं कैसे अर्ज़ करूं...... जितने भी यहां बैठे हुए हैं, जो इस वक़्त नहीं जा रहे हैं

जमात में वो सोच रहे होंगे, कि भाई ठीक है अल्लाह के रास्ते में निकलना चाहिए पर अभी हमारा मौका नहीं है जाने का। हाए! अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि0 आधे दिन पीछे रह गए, तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया तुम पांच सौ (500) साल पीछे रह गए हो। जो अभी नहीं जा रहे हैं, वो जरा अब बैठकर सोचें उन्हें अन्दाजा नहीं है, कि ये काम कितनी तेज़ रफ़्तारी से अल्लाह के करीब होने को है। मौलाना इल्यास साहब रह0 फ़रमाते थे, कि इस काम से बढ़कर अल्लाह के करीब का, तेज रफ़्तारी का कोई अमल नहीं है। ये जज़्बात हमारे अल्लाह के रास्ते में निकलने के हैं और जहां तक हो सके पैदल चलो जितने अल्लाह के रास्ते में निकल रहे हैं और वो जो इस वक़्त नहीं जा रहे हैं। वापस घरों को जा रहे हैं और आस पास के इलाकों से आए हुए लोग भी, उन सबसे मेरी दरख़्वास्त है, कि यहां से पैदल काम करते हुए जाओ,

तालीम का,
गश्त का,
नमाज़ों का,
ज़िक्र का,
तिलावत का,
घर घर मुलाकातों का,
दावत का,

माहौल कायम करते हुए जाओ और जितने लोग यहां से अल्लाह के रास्ते में निकल रहे हैं इस सूबे में या सूबे से बाहर, अगर यहां से दुनिया की बातें करते हुए गए, तो वो सारे अनवारात जाय करके जाओगे, जो यहां इन तीन (3) दिन के माहौल में हासिल हुए हैं, आपस में यही बात करते हुए जाओ, जो बातें यहां अर्ज़ की गई हैं, आमाल करते हुए जाओ। जो अल्लाह के रास्ते में

निकलने वाले हैं, वो अपनी जमात में मुजतमे होकर चलें, अमीर की इताअत के साथ चलें ट्रेन में या बस में जिस गाड़ी में भी सफ़र करें, सफ़र में हर एक को दावत दें, हर एक से मुलाक़ात करें, ये न देखें कि हमारी जमात का आदमी है, या कौन है?

सबसे बड़ी दावत और हिकमत इकराम है

देखो मेरे दोस्तो, अजीजो! हर एक को सलाम करो, हर एक को दावत दो, वरना हदीस में आता है, कि जान पहचान की वजह से सलाम करना, क़यामत की निशानियों में से है। लोग सलाम करते हैं ना! वो भी उन्हें सलाम करते हैं, जिनसे जान पहचान है, वरना कितने मुसलमानों से इनका सुबह शाम मिलना होता है, पर कोई सलाम का एहतमाम नहीं करता, इसलिए हर एक को सलाम करो, हर एक को दावत दो, दावत अल्लाह की तरफ़ है और देखो! सबसे बड़ी दावत और हिकमत इकराम है। तुम ट्रेन में बैठोगे, या बस में बैठोगे, अमीर साहब कहेंगे जाओ, दस आदमी की जमात है दस चाय ले आओ तौबा......तौबा......ये बखीलियों की जमात है। हज़रत रह0 फ़रमाते थे, कि तुम्हारी नकल व हरकत इस्लाम को फैलाने के लिए है। इस्लाम इक्राम से फैला है, खूब ख़र्च करो, तुमसे कहेंगे ये तशकील वाले कि हां तुम्हारा रूख़ हमने फ़लां इलाके का बना दिया है, यहां से तुम्हारी जमात फ़लां जगह जाएगी, पांच सौ (500) रुपए काफ़ी है खर्च के लिए। नहीं बल्कि उनसे कहो! कि हम अल्लाह के रास्ते में निकल रहे हैं, ज्यादा लेकर जाएंगे। सबका इक्राम करेंगे, खिलाएंगे पिलाएंगे। वो तो हज़रत रह0 फ़रमाते थे, कि हुजूर सल्ल0 ने गैर को भी इस्लाम की तरफ़ राग़िब किया है, अपनी ज़ात से खूब ख़र्च करके किया है। भरी हुई वादी बकरियों की एक मुश्रिक को दे दी, कि वो आखें घुमा घुमा कर देख रहा था, वादी में जो बकरियों से भरी हुई थी। वो वहीं

इस्लाम में दाख़िल हुए, लेकिन मजेदार बात ये थी, कि जैसे ही वो इस्लाम में दाख़िल होते थे, उसके साथ साथ दिल में माल की नफ़रत भी दाख़िल हो जाती थी।

इसलिए मैं अर्ज़ कर रहा था, कि अल्लाह के रास्ते में शौक से ख़र्च किया करो। दूसरों पर ख़र्च करना खुद एक अमल है, अल्लाह के रास्ते में खूब ख़र्च करो, अमीर साहब से कहो, आप सबके लिए चाय मंगा लो, सबके लिए बिस्किट मंगा लो, पैसा मैं देता हूं। गैर बैठे होंगे ट्रेनों में, बसों में, उनका भी इक्राम करो, उनसे भी मुलाक़ात करो, आपस में खूब अल्लाह की बड़ाई को बोलो, वो भी सुन रहे होंगे, अल्लाह की अजमत को, उसकी कुदरत को, अल्लाह का तआरुफ़ उन्हें भी कराओ।

देखो मेरे दोस्तो, अजीजो! बात साफ़ साफ़ ये है, कि हम तो अल्लाह की तरफ़ बुला रहे हैं, हमारा बुलाना किसी ख़ास तरीक़े की तरफ़, किसी ख़ास जमात की तरफ़, या किसी की जात की तरफ़ बुलाना नहीं है, और न ही हमें लोगों को तब्लीगी जमात में दाख़िल होने की दावत देनी है, बल्कि हम तो अल्लाह की तरफ़ बुला रहे हैं, बस यही उम्मत के बनने का रास्ता है, कि तुम उम्मती बनकर दावत दो।

"जमात" खूद तफ़रीक का लफ़्ज़ है

हज़रत मौलाना इल्यास साहब रह0 फ़रमाते थे, कि "जमात तो खुद तफ़रीक" का लफ़्ज है, अगर हम लोगों से ये कहें, कि हमारी जमात में आजाओ तो ये कहकर हमने मुक़ाबला खड़ा कर दिया, हम जमात बन गए। देखो! जमात से जमात बनती है, फ़िर्के से फ़िर्के बनते हैं। उम्मत का सबसे बड़ा नुक़्सान यही है, कि जमात से जमात बनाई जाए और फ़िर्के से फ़िर्के बनाए जाएं बल्कि हम तो बुला रहे हैं अल्लाह की तरफ़, इसलिए हर एक को

दावत दो, हम किसी फ़िर्के किसी जमात ग्रुप की तरफ़ नहीं बुला रहे हैं।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तो, अज़ीज़ो! ट्रेनों में, बसों में बैठे हुए लोगों को दावत देते हुए मुलाक़ातें करते हुए जाओ, जिसको दावत दो, उसे भी दाई बनाकर छोड़ो, कि देखिए भाई! आपसे हमारी बात हो रही है, माशा अल्लाह आपने इरादा कर लिया है, अब आप भी दूसरों तक ये बात पहुंचा देना। जिससे दीन की बात करो, उसे दाई बनाकर छोड़ो।

इस तरह हमें इन्शा अल्लाह दावत देते हुए इबादत करते हुए चलना है, अगर ट्रेन में बैठे हों तो तालीम का हलका ट्रेन में न करो, तालीम के हलके में यकसूई होनी चाहिए। ट्रेन में साथी मुख़्तलिफ़ जगह बैठते हैं, इधर उधर वहां तालीम का हलक़ा मुशकिल है। मेरी बात याद रखो! कि तालीम के लिए किताब हर साथी के पास अपनी अलग अलग किताब होनी जरूरी है। दस आदमी हैं जमात में, दस के दस साथी की किताब अलग अलग होनी चाहिए। ये नहीं कि एक किताब सारी जमात के पास हो, बल्कि हर एक अपनी किताब खरीद ले, जब किताब लेकर बैठेगा बस में ट्रेन में तो बराबर में कोई आदमी आकर बैठेगा, उससे नाम पूछो, उससे सलाम करो, कि भाई देखो! मेरे पास एक किताब है, मगर मैं पढ़ा नहीं हूं आप जरा पढ़कर सुना दीजिए कि इसमें क्या लिखा हुआ है? होगई तालीम, वो खुद भी सुनेगा, उसके लिए तब्लीग हो रही है, उसके लिए भी तालीम हो रही है, वो भी पढ़ रहा है, कोई कहेगा "اللہ اکبر" हमें तो खबर ही नहीं थी कि इस किताब में ये लिखा हुआ है। नमाज़ छोड़ने पर ये अज़ाब है, नमाज़ पढ़ने पर ये सवाब है। इस तरह ट्रेन में बस में हर एक के पास अपनी अलग अलग किताब होनी जरूरी है, ताकि तन्हाईयों में हम

इसका मुताला करते रहें।

"जमात" दिए गए रुख़ पर पहुंचकर क्या करे?

जहां का हमारा रुख़ बना है, हमारे साथी इज्तेमाई तौर पर ट्रेन, बस या जो भी सवारी हो, उससे उतरकर, अपना सामान खुद उठावें, अपना सामान देख लें, अपने साथियों को भी देख लें कि सारे साथी हैं, या नहीं, फिर बस्ती में दाख़िल होने से पहले दुआ मांग लें। मसनून दुआ है, इसको याद कर लें, अल्लाह से उस बस्ती वालों की मोहब्बत को भी मांग लें और उस बस्ती की ख़ैर को भी मांग लें। अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम दोनों की मोहब्बत अल्लाह से मांगते थे कि ऐ अल्लाह! उनकी मोहब्बत हमारे दिलों में और हमारी मोहब्बत उनके दिलों में डाल दे, क्योंकि वो बात सुनेंगे नहीं, जब तक कि मोहब्बत नहीं होगी, इस तरह दुआ मांगकर बस्ती में दाख़िल हों।

हमारी इब्तेदा मस्जिद से होगी, सबसे पहले जमात मस्जिद में पहुंचे। ये न हो, कि बाज़ार से गुजर रहे हैं, क्यों न सामान खरीदते हुए चलें, कि चावल की जरूरत पड़ेगी ही, यहीं से ले लें। नहीं! देखो सबसे पहले मस्जिद की तरफ़ जाओ, जिस चीज़ पर तुम क़दम रखोगे वही तुम्हारा मक़्सद है, अगर, खाने पीने में सबसे पहले लग गए तो यही मक़्सद बन जाएगा। सबसे पहले मस्जिद में जाओ, सुन्नत तरीक़े से मस्जिद में दाख़िल हो, सामान एक तरफ़ करीने से लगा दो। मस्जिद में सामान न बिखेरना, इस्टू या कोई बदबूदार चीज मस्जिद में न रखना। मस्जिद में लहसन, प्याज वग़ैरह खाकर न जाओ। हदीस में आता है कि जो प्याज लहसन खाये वो हमारी मस्जिद के करीब न आए इसलिए सामान अपना मस्जिद के बाहर के हिस्से में रखो, ऐसे करीने से रखो कि आने वाले लोगों को तक्लीफ़ न हो। मस्जिद का एहतराम करो, मकरूह वक़्त न हो तो

दो दो रकात "तहिय्यतुल मस्जिद, पढ़लो, कि मस्जिद में दाख़िल होकर अल्लाह घर में दाख़िल होने का मुंह बनालो, फिर सबको मशवरे की तरफ़ मुतवज्जेह करो, अगर मकामी साथी मश्विरे में हों, तो अच्छी बात है, वो न हों, तो उनका इन्तेजार न करो, अपना मश्विरा करलो। चौबीस घन्टे का नज़्म बना लो, कि हमें यहां काम किस तरह करना है, मुकामी लोगों को साथ ले लो, मुकामी से इसका मश्विरा करो, घर-घर की मुलाकातों का नज़्म बना लो, हमें सबसे ज्यादा उमूमी गश्त को, अमूमी काम को मक़द्दम रखना होगा, थोड़ी सी मुलाकातें, ये भी एक ज़रूरी काम है। कि यहां उलमा हैं, यहां मालदार क़िस्म के बड़े लोग हैं, उनकी मुलाकात के लिए भी जाना है, मालदारों के माल से अगर मुतअस्सिर होकर दावत दी, तो वो तुम्हारी बात से हरगिज़ मुतअस्सिर न होंगे, जितना तअस्सुर उनकी दुनिया का तुम्हारे दिलों में होगा, उतनी ही हिक़ारत से वो तुम्हारे दीन की बात को सुनेंगे और जितनी नफ़रत तुम्हारे दिल में दुनिया की होगी, उतनी ही मोहब्बत से वो तुम्हारी बात को सुनेंगे। मगर उनकी चीज़ को बुरा मत कहना, उनकी चीजों की नफ़रत दिल में तो हो पर ज़बान तक न आए।

याद रखो अगर तुम्हारे दिल में उनकी चीजों की मोहब्बत हो, तो तुम ये बात उनके सामने कह नहीं सकोगे, तुम्हारी ज़बान नहीं उठेगी, क्योंकि तुम मदऊ की दुनिया से मुतअस्सिर हो के दावत दे रहे हो, इस तरह हमें दोस्तो! हर एक से मुलाक़ात करनी है। ऊमूमी गश्त में एक-एक के पास जाओ मस्जिद के लिए नक़द निकालकर मस्जिद के माहौल में ले आओ। यहां लाकर तैयार करो, चार-चार महीने की तश्कील करो, जो तैयार हो जाएं उनसे कहो, कि आप तैयारी करके यहां आजाएं, देखो! उन्हें छोड़ न देना, वरना ये हाथ नहीं आने के। इसलिए उन्हें फिर वसूल करना है, इसके

लिए हमें वसूली गश्त भी करना है। मैं तालीमी गश्त बतला चुका हूं, कि वो तालीम के दरमियान होगा, इस तरह हमें पांच तरह के गश्त करना है। तालीमी गश्त, अमूमी गश्त, खसूसी गश्त, तशकीली गश्त, सूली गश्त, वसूली गश्त में उन्हें वसूल करके लाना है। यहां उनको वसूल करके लाना है।

मस्जिद के माहौल में लाना ही असल है

देखो मैंने शुरू में ही अर्ज़ किया था कि मस्जिद के माहौल में लाना ही असल है। इस तरह दावत देकर हर जगह नक्द जमातें बनाकर अल्लाह के रास्ते में निकालनी है। जहां से जमात बनाओ चार-चार महीने की, चिल्ले की, वहीं के मुकामी वक्त लगाए साथियों के मश्विरे से उनका जिम्मेदार बना दो और हर जगह से नक्द जमातें निकालना है, हर मस्जिद में जब तक पांच काम उस मस्जिद का गश्त, मस्जिद की तालीम और घर की तालीम सह रोज़ा जमात का निकलना और मस्जिद का मश्विरा और कम से कम ढाई घन्टे मस्जिद में फारिग करके मस्जिद की आबादी की मेहनत, ये जब तक शुरू न हो जाए उस वक़्त तक कोई जमात उस मस्जिद से आगे न बढ़े। देखो मेरी बात नोट कर लो! असल में हमारी जमातें इलाकों का सर्वे करके आ जाती हैं। फिरना असल नहीं है। हर मस्जिद में पांच काम कायम करते हुए जमात को आगे ले जाओ, जमात की नक्ल व हरकत से तो हर ईलाके का माहौल बदलना है, जहां आप ये देखेंगे कि आमाल ज़िन्दा हो गए तो अब वहां से आगे बढ़ जाओ। चाहे आपको इस इलाके में ही चार महीने लगाने पड़ जाएं, चाहे एक इलाके में ही चिल्ला लगाना पड़ जाए। मेरे नज़दीक जमात का अपनी जगह से आगे बढ़ना उस वक़्त तक मुनासिब नहीं है जब तक वहां काम नज़र न आने लगे। इसी तरह करेंगे इन्शा अल्लाह! कि इस तरह हमें हर जगह से नक्द जमातें

निकालनी है।

यहां ये सारा जितना मजमा इस वक़्त जमा है। ये तय कर के जाए कि हम इन्शा अल्लाह इस काम को मक़्सद बनाकर करेंगे। इस तरह इन्शा अल्लाह हमको दावत देते हुए चलना है, हर जगह से नक्द जमातें निकालनी हैं। और ये जितना मजमा है, ये तो सारा तय करके जाए कि इन्शा अल्लाह किसी हालत में नमाज़ नहीं छोड़ेंगे, देखो मेरे दोस्तो, अजीजो! मुसलमान से ये कहना कि नमाज़ नहीं छोड़ोगे बड़ी गैरत की बात है, बड़ी शर्म की बात है कि मुसलमान से कहना कि नमाज़ न छोड़ना। इसका तो कोई तसव्वुर ही नहीं कर सकता कि मुसलमान ज़िना कर ले ये हो सकता है? मुसलमान जुवा खेल ले ये हो सकता है, मुसलमान सूद खाले ये भी हो सकता है, लेकिन मुसलमान नमाज़ छोड़ दे? इसका तो तसव्वुर ही नहीं कर सकता, पिछले ज़माने में मुसलमान की पहचान नाम से या उसकी नस्ल से नहीं होती थी, बल्कि मुसलमान की पहचान जो होती थी वो नमाज़ से होती थी कि वो नमाज़ी जी, यानी मुसलमान है। इसलिए मेरे दोस्तो, बुजुर्गो, अज़ीज़ो! ये पूरा मजमा तय कर ले कि इन्शा अल्लाह किसी हालत में नमाज़ नहीं छोड़ेंगे। अब दुआ का वक़्त है सारा मजमा अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाए। कोई अज्र न हो तो ऐसे बैठे जैसे "अत्तहियात" में बैठते हैं सारा मजमा इस तरह बैठ जाए जिस तरह "अत्तहियात" में बैठते हैं। अल्लाह की तरफ़ पूरी तरह मुतवज्जेह होकर सारी उम्मत के लिए और सारी इन्सानियत के लिए अल्लाह से मांगना है।

ईमान की तक़वियत के चार अस्बाब

कुदरत

ومن الناس والدواب والانعام مختلف الوانه كذلك انما يخشى الله من عبادة العلماء ان الله عزيز غفور

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि अल्लाह तआ़ला से उसके वही बन्दे डरते हैं, जो उसकी कुदरत का इल्म रखते हैं। (अलफ़ातिर 28)

قل ارئيتم ان جعل الله عليكم النهار سرمدا الى يوم القيامة من اله غير الله ياتيكم بالليل تسكنون فيه افلا تبصرون ومن رحمته جعل لكم الليل والنهار لتسكنوا فيه ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون.

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि ऐ नबी आप उनसे पूछिए कि ज़रा बताओ कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम पर हमेशा क़यामत के दिन तक रात ही रहने दे, तो अल्लाह तआ़ला के सिवा वो कौनसा माबूद है, जो तुम्हारे लिए रोशनी ले आए? क्या तुम लोग सुनते नहीं हो? आप उनसे ये भी पूछिए कि ये बताओ अगर अल्लाह तआ़ला तुम पर हमेशा क़यामत के दिन तक दिन ही रहने

दे तो अल्लाह तआ़ला के सिवा वो कौन सा माबूद है, जो तुम्हारे लिए रात ले आए? ताकि उसमें आराम करो, क्या तुम देखते नहीं?! (क़सस 62-63)

कुदरत चार चीजों के मजमूए को कहते हैं।

1- जब चाहे।

2- जहां चाहे।

3- जैसे चाहे।

4- जो चाहे।

जिसके अन्दर चारों सिफ़ात हों, वो कुदरत वाला कहलाने का हक़दार है और इसीको कुदरत वाला कहा जाएगा। जब इसबात पर गौर किया जाएगा तो पता चलेगा कि ये चारो सिफ़ात सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की ज़ात के साथ ही वाबस्ता हैं इसलिए हमें सबसे पहले इसी बात को समझना है, कि

1- कुदरत वाला कौन है?

2- किसके अन्दर ये चारो सिफ़ात हैं?

3- कौन हर चीज के करने पर कादिर है?

4- किसने ऐसा करके दिखलाया है और कौन ऐसा कर सकता है?

तो पता चलेगा कि हर चीज के करने पर सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की ज़ात ही क़ादिर है ये बात नीचे लिखे जा रहे है चन्द वाक़्यात से समझ में आती है, कि अल्लाह तआ़ला ने

बगैर मां और बाप के आदम अलैहि0 को बना दिया।

बगैर मां की कोख के हव्वा अलैहि0 को बना दिया।

बगैर ज़मीन के सात जमीनों को बना दिया।

बगैर सूरज के सूरज और बगैर चांद के चांद बना दिया।

बगैर तारों के तारे बना दिए।

इसी तरह इस जमीन पर शुरूआत के वक़्त यानी पहली बार बगैर अन्डों के परिन्दों को बना दिया।

बगैर जानवर के इस जमीन पर जानवर बना दिया। हमें अपनी पहचान कराने के लिए, अपनी मार्फ़त देने के लिए, अब जानवरों के पेट में जानवरों को और अन्डे के अन्दर परिन्दे बनाकर दिखाते हैं, पर ईमान न सीखने की वजह से लोगों का ये यक़ीन बन गया कि चीजों से निकलने वाली चीजें चीजों से बनती है। जबकि अल्लाह तआ़ला ने खुद ये बात साफ़ करदी है कि किसी मख़्लूक में किसी चीज़ के बनाने की कुदरत नहीं है।

والذين يدعون من دون الله لا يخلقون شيئا وهم يخلقون

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि इन्सान जिन चीजों को अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, ये सब मिलकर भी कोई चीज नहीं बना सकते, बल्कि उन सबको खुद अल्लाह तआ़ला ही ने बनाया है। (नहल)

(قل من بيده ملكوت كل شيء وهو يجير ولا يجار عليه ان كنتم تعلمون فسيقولون الله فاني تسحرون

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है ऐ नबी आप उनसे पूछिए कि ऐसा कौन है, जिसके हाथ में हर चीज का तसर्रुफ़ व इख़्तेयार है और वो पनाह देने वाला है? अगर तुम (लोग) जानते हो तो बताओ, (जबान से) यही कहेंगे, कि अल्लाह है। तो आप उनसे कहिए कि फिर (अल्लाह के गैर के) क्यों दीवाने बने फिर रहे हो। (मोमिन 88-89)

इसी बात को बतलाने और समझने के लिए कुरआन ने वाक़आत बयान किए हैं, कि सालेह अलैहि0 की क़ौम के लिए पहाड़ से ऊंटनी निकाल दी।

मूसा अलैहि0 के हाथ के अंगूठे से दूध और शहद निकाल दिया।

हुज़ूर सल्ल0 और ईसा अलैहि0 के लिए पका हुआ खाना मय बरतन के आसमान से उतार दिया।

कुंवारी मरियम अलैहि0 की कोख से ईसा अलैहि0 को पैदा कर दिया।

बनी इस्राईल के लिए चालीस साल तक आसमान से हलवा और बुटेर उतार कर खिला दिया।

उम्मे अयमन रज़ि0 के लिए आसमान से रस्सी में बंधा पानी से भरा हुआ डोल उतार दिया।

हज़रत खुबैब रज़ि0 के लिए बन्द कमरे में आसमान से अंगूर का खूशा उतार दिया।

जिस तरह मरियम अलैहि0 के लिए उनके कमरे में आसमान से फल उतारा करते थे।

मेरे दोस्तो! ये सारा का सारा निज़ाम अल्लाह रब्बुल इज्जत ने अपनी कुदरत से चलाया है और अल्लाह की ये कुदरत अल्लाह की ज़ात में है, कि कायनात की किसी भी शक्ल में चाहे वो शक्ल

चींटी की हो या जिबराईल की,
जमीन की हो या आसमान की,
जर्रे की हो या पहाड़ की,
क़तरे की हो या समन्दर की,

यानी अर्श से लेकर फर्श (जमीन) के दर्मियान की किसी शक्ल में अल्लाह की कुदरत नहीं है, अल्लाह की कुदरत सिर्फ अल्लाह की जात में है। हां! ये सारी शक्लें बनी तो हैं, उनकी कुदरत से लेकिन किसी शक्ल में कुछ बनाने और कुछ करने की कुदरत नहीं है, कुदरत तो अल्लाह की ज़ात में है।

सूरज में रोशनी बनाने की कुदरत नहीं है, वरना कयामत के दिन सूरज बेनूर क्यों हो जाएगा?

खेत मे गल्ला और सब्जियां बनाने की कुदरत नहीं है, वरना जमीनें बन्जर क्यों पड़ी रहती?

दरख्तों में फल और मेवे बनाने की कुदरत नहीं है, वरना हमेशा फल क्यों नहीं देते?

बादलों में पानी बनाने की कुदरत नहीं है। वरना हर बादल पानी बरसाता?

जानवरों और औरतों में दूध बाने की कुदरत नहीं है, वरना हर औरत और हर जानवर से हमेशा दूध आता?

शहद की मक्खी में शहद बनाने की कुदरत नहीं है, वरना हर छत्ते से हमेशा शहद निकलता?

पहाड़ों के अन्दर सोना, चांदी बनाने की कुदरत नहीं है, वरना हर पहाड़ से सोना चांदी निकलता?

जमीनों में कोयला शीशा तांबा, पीतल, लोहा, पेट्रोल, गैस और पानी बनाने की कुदरत नहीं है, वरना हर जगह की जमीन से ये चीजें निकलतीं?

ये जो कुछ भी उन शक्लों के अन्दर से निकलकर हमें मिल रहा है। जैसे

जानवर की शक्लों से दूध,
पेड़ों की शक्लों से गल्लाह और सब्जियां,
शहद की मक्खियों के छत्तों से शहद,
बादल की शक्ल से पानी
और सूरज की शक्ल से रोशनी वगैरह,

ये सारी चीजें आसमानों के ऊपर मौजूद, अल्लाह के गैबी खजानों से, फ़रिशतों के ज़रिए उन शक्लों में भेजी जा रही हैं, जो

हमें आते हुए तो नजर नहीं आतें पर निकलते हुए नजर आ रही हैं।

ये बात नीचे लिखी हुई कुरआन की आयतों और हदीसों से समझी जा सकती है।

وفی السماء رزقکم وما توعدون فورب السماء والارض انه لحق مثل ما انکم تنطقون

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि तुम्हारी रोजी और जिस चीज का तुम से वादा किया जाता है, वो सारा आसमान में है। तो आसमानों और जमीन के मालिक की क़सम! ये बात इसी तरह यकीन के क़ाबिल है, जिस तरह तुम्हारा एक दूसरे से बात करना यकीनी है। (ज़ारयात 22-23)

یا ایها الناس اذکروا نعمت الله علیکم من خالق غیر الله یرزقکم من السماء والارض لا اله الا هو فانی تو فکون.

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है लोगो! अल्लाह तआ़ला के उन एहसानात को याद करो, जो अल्लाह तआ़ला ने तुमपर किए हैं।

जरा सोचो तो सही, कि अल्लाह तआ़ला के अलावा कोई और है? जिसने तुम्हें बनाया हो और जो तुम्हें आसमान व जमीन से रोजी पहुंचाता हो? सच्ची बात ये है, कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई और जरूरतों को पूरा करने वाला है ही नहीं, फिर अल्लाह तआ़ला को छोड़कर किसपर भरोसा कर रहे हो। (फ़ातिर 3)

وان من شیء الا عندنا خزائنه وما ننزله الا بقدر معلوم.

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है हमारे पास हर चीज के खजाने भरे पड़े हैं लेकिन हम हिक्मत के तहत हर चीज़ को तय शुदा मिक्दार से (आसमानों के ऊपर से) उतारते रहते हैं। (हजर 29)

افرائتم الماء الذی تشربون ء انتم انزلتموه من المزن ام نحن المنزلون لو نشاء جعلناه اجا جا فلو لا تشكرون

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है अच्छा फिर ये तो बताओ! कि जो पानी तुम पीते हो, इसको बादलों से तुमने बरसाया या हम इसको बरसाने वाले हैं? अगर हम चाहें तो इस पानी को कड़वा कर दें इसपर तुम शुक्र क्यों नहीं करते?!!! (वाक़िआ़ 69-70)

وهو الذی انزل من السماء ماء فاخرجنا به نبات كل شيء فاخرجنا منه خضر.

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है और वही अल्लाह तआ़ला है जिन्होंने आसमान से पानी उतारा। (इन्आ़म)

والسماء ذات الحبک.

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है आसमान की क़सम! जिसमें रास्ते हैं। (ज़ारयात 7)

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से हुज़ूर सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ ज़ुबैर! अल्लाह जल्ल शानहू ने जब अपने अर्श पर जलवा फ़रमाया तो अपने बन्दों की तरफ़ (करम की) नज़र डाली और इरशाद फ़रमाया कि मेरे बन्दो! तुम मेरी मख़्लूक़ हो और मैं ही तुम्हारा परवरदिगार (ज़रूरत को पूरा करने वाला) हूं तुम्हारी रोज़ियां हमारे क़ब्ज़े में हैं। लेहाज़ा तुम अपने आपको ऐसी मेहनतों में न फंसाओ जिसका जिम्मा मैंने ले रखा है। तुम लोग अपनी रोजियां मुझसे मांगो! क्योंकि रिज़्क़ का दरवाज़ा सातों आसमानों के ऊपर से खुला हुआ है, जो ख़ज़ाना अर्श से मिला हुआ है, उसका दरवाज़ा न रात में बन्द होता है न दिन में। अल्लाह जल्ल शानहू उस दरवाज़े से हर शख़्स पर रोज़ी उतारता रहता है, लोगों के गुमान के बक़द्र उनकी अ़ता के बक़दर उनके सदक़े के बक़दर और उनके ख़र्च के

बक़दर, जो शख़्स कम खर्च करता है उसके लिए कम उतारा जाता है और जो शख़्स ज़्यादा खर्च करता है उसके लिए ज्यादा उतारा जाता है। (दुर्रे मनसूर)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया। इन्सान तक उसकी रोज़ी पहुंचाने के लिए फ़रिशते मुतअय्यन हैं। अल्लाह तआ़ला ने उनको हुक्म फ़रमा रखा कि जिस आदमी को तुम इस हालत में पाओ जिसने (इस्लाम) को ही अपना ओढ़ना बिछौना बना रखा है, तो तुम उसको आसमानों और जमीन से रिज़्क मुहैय्या कर दो और दीगर इन्सानों को भी रोज़ी पहुंचा दो। ये दीगर लोग अपने मुक़द्दर से ज्यादा रोज़ी न पा सकेंगे।(अबू अवाना)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया। अल्लाह की मख़्लूक में फ़रिशतों से ज्यादा कोई मख़्लूक नहीं है और जमीन पर कोई भी ऐसी चीज नहीं उगती जिसके साथ एक मुवक्किल फ़रिशता न होता हो। (अबू शेख- हदीस 327)

हज़रत हकम बिन अ़तिया रज़ि0 फ़रमाते हैं, कि बारिश के साथ औलादे आदम और औलादे इबलीस से ज्यादा फ़रिशते उतरते हैं, जो हर क़तरे को शुमार करते हैं, कि वो पानी का क़तरा कहां गिरेगा और इस फल से किसे रिज़्क़ दिया जाएगा।

(अबू शेख हदीस 493)

हज़रत अली रज़ि0 ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने पानी के खजाने पर एक फ़रिश्ता मुकर्रर कर रखा है। उस फ़रिशते के हाथ में एक पैमाना है, उस पैमाने से गुजर कर ही पानी की हर बून्द जमीन पर आती है लेकिन हज़रत नूह अलैहि0 के तूफ़ान वाले दिन ऐसा न हुआ, बल्कि अल्लाह ने सीधे पानी को हुक्म दिया और

पानी को संभालने वाले फ़रिशतों को हुक्म न दिया, जिसपर वो फ़रिशते पानी को रोकते रह गए लेकिन पानी न रूका।

(कन्जुल आमाल273)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं कि (एक मर्तबा हम लोगों पर) बादल ने साया किया, तो हमने उससे (बारिश की) उम्मीद की, जिसपर हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया। जो फ़रिशता बादलों को चलाता है, वो अभी हाज़िर हुआ था, उसने मुझे सलाम किया और बतलाया कि वो इस बादल को वादिये यमन की तरफ़ ले जा रहा है, जहां "जर्रा" नाम की जगह पर इसका पानी बरसेगा।

(अबू अवाना)

हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया। कि हर आसमान पर हर इन्सान के लिए दो (2) दरवाजे हैं, एक दरवाजे से उसके आमाल ऊपर जाते हैं और दूसरे दरवाजे से उसकी रोजी उतरती है। (किताबुलजनायज)

अबू हुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया कि इन्सानों तक रोज़ी पहुंचाने के लिए अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को मुतअय्यन कर रखा है। (इब्ने अबीशेबा)

इस हदीस से बात और साफ़ हो जाती है कि मलकुलमौत जब किसी ईमान वाले बन्दे की रूह निकालने के लिए पांच सौ (500) फ़रिश्तों के साथ आते हैं, तो उस वक़्त उनके हाथ में रेहान के फूलों का गुलदस्ता होता है। जिसकी हर टहनी में बीस रंग के फूल होते हैं और हर फूल में नई खूशबू होती है। इसी के साथ एक सफेद रंग का रूमाल जिसमें मुश्क बंधी होती है, उसे मरने वाले की ठोड़ी के नीचे रखते हैं। फिर जन्नत का वो कपड़ा जिसे कफ़न में इस्तेमाल करते हैं, वो भी साथ होता है। इतनी सारी चीजों को मरने वाले के सिवा पास में बैठा हुआ कोई इन्सान भी नहीं देख पाता। अब अगर यही सारी चीजें कायनात में फैली हुई शक्लों से

निकलकर आतीं तो हर इन्सान को ये चीजें नज़र आ जातीं लेकिन आसमानों के ऊपर से उन चीजों को लाने वाले फ़रिश्ते इन्सान को कभी भी नज़र नहीं आते। इसी तरह जब हज़रत हंज़ला रज़ि0 को फ़रिश्तों ने गुस्ल दिया, तो गुस्ल से पहले फ़रिश्तों का लाया हुआ पानी किसी को नज़र न आया, पर जब हंज़ला रज़ि के जिस्म पर वो पानी गुस्ल के लिए डाला गया तो हंज़ला रज़ि0 के जिस्म के बालों से पानी टपकना सहाबा रज़ि0 को नज़र आया।

इसलिए मेरे मोहतरम दोस्तो और बुजुर्गो! किसी शक्ल में अपने अन्दर कुछ बनाने की क़ुदरत नहीं है कायनात में फैली हुई शक्लों के अन्दर मुख़्तलिफ़ चीजों को निकालकर अल्लाह रब्बुल इज्जत हम इन्सानों को अपनी पहचान कराना चाहते हैं कि अल्लाह रब्बुल इज्जत ने कायनात की सारी शक्लों को सिर्फ़ अपनी पहचान कराने के लिए बनाया है कि

जानवरों से दूध
खेत से गल्ला और सब्जियों
दरख़्तों से फल और मेवे
शहद की मक्खी से शहद
सूरज से रोशनी और
बादल से पानी

ये सारी की सारी शक्लों से निकलने वाली चीजें, आसमानों के ऊपर मौजूद अल्लाह के खजानों से भेजी जा रही हैं। जिस तरह टेलीवीजन डब्बों के अन्दर से, मोबाईल से, इन्टरनेट वगैरह से कभी हमें खबरें, कभी हाकी या क्रिकेट का मैच या दीगर प्रोग्राम निकलते नज़र आते हैं ये नज़र आने वाले प्रोग्राम उन चीजों में बनते नहीं हैं, बल्कि ये प्रोग्राम उन चीजों के मरकज (स्टूडियो) से उनमें भेजे जा रहे हैं। पर किसी इन्सान को ये प्रोग्राम हवा में आते हुए दिखाई

नहीं देते हैं। देखो! आपने अपने मोबाईल से या इन्टरनेट से किसी को मैसेज या मेल (E-mail) भेजा आपने जिसके पास भेजा है, उसके मोबाईल या इन्टरनेट को ढूंढकर उसमें दाखिल हो जाता है। चाहे वो आदमी आपसे एक हजार (1000) किलो मीटर दूर रह रहा हो, पर सेकेन्डों में वहां पहुंच जाता है और जो मैसेज या ई मेल आपने भेजा है उसका एक हरूफ़ भी उसमें से कम नहीं होता। ज़रा बैठकर गौर करो! कि हर वक़्त हवा मैं कितने मैसेज या ईमेल आते जाते रहते हैं कितनी तस्वीरें मैसेज या ईमेल से लोग भेजते रहते हैं पर जिसके पास जो भेजा जाता है, वही उसे मिलता है, किसी दूसरे का मैसेज या किसी दूसरे का ईमेल बदलता नहीं है ठीक इसी तरह हमारी रोजियों का भी मामला है।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया। कि कोई इन्सान चाहे कलई और चूने के पहाडों मे बन्द हो जाए मगर दो चीजें उसके पास पहुंच कर रहेंगी। (1) उसकी रोज़ी (2) मलकुलमौत। यानी अगर कोई इन्सान अपने आपको लोहे के सन्दूक में बन्द करके अन्दर से ताला लगाले फिर भी उसकी रोज़ी और उसके जिस्म से रूह निकालने वाला फ़रिश्ता उस सन्दूक़ के अन्दर पहुंच जाएगा, जिस तरह अंडे के छिलके के अन्दर रंग बिरंगे पर, खून, गोश्त और रूह पहुंच जाती है।

मेरे दोस्तो! अल्लाह रब्बुल इज्जत इस ज़ाहरी निज़ाम से हमें अपना गैबी निज़ाम समझाना चाह रहे हैं, अपनी ताकत और अपनी कुदरत को समझाना चाह रहे हैं, कि हर मख़्लूक की रोज़ी आसमानों के ऊपर से भेजी जा रही है, पर हमारे इम्तेहान के लिए वो चीजें हमें आसमानों से आती हुई नजर नहीं आ रही हैं। अल्लाह रब्बुल इज्जत ने ज़ाहरी निज़ाम अपने बन्दों को इम्तेहान के लिए बनाया है और गैबी निज़ाम को बन्दों के इतमीनान के लिए बनाया

है लेकिन गैबी निज़ाम से फायदा वो उठा पाएगा जिसने अपने अन्दर गैब का यकीन पैदा किया होगा। जो इन्सान अपने अन्दर गैब का यकीन पैदा कर लेता है, तो फिर फ़रिश्तों के ज़रिए से चलाया जा रहा गैबी निज़ाम उसके ताबे कर दिया जाता है। अब ये गैबी निज़ाम किसी के ताबे हो जाए तो सबसे पहले अहादीस की रोशनी में उसके निज़ाम को समझा जाए।

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया मोमिन के साथ तीन सौ साठ फ़रिश्ते होते हैं जो मुसीबत उसपर पड़नी नहीं लिखी होती उसको उससे दूर करते रहते हैं।

सिर्फ़ आंख के लिए सात फ़रिश्ते हैं ये फ़रिश्ते बलाओं को इससे इस तरह हटाते रहते हैं, जिस तरह गर्मी के दिनों में शहद के प्याले से मक्खियों को हटाया जाता है। अगर उन फ़रिशतों को तुम्हारे सामने ज़ाहिर कर दिया जाए तो तुम उनको मैदान और पहाड़ पर हाथों को खोले हुए देखोगे। (तिब्रानी)

जबकि आम इन्सान के साथ सिर्फ़ दस फरिशते होते हैं, पर औरतों के साथ ग्यारह फरिशते होते हैं।

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैं एक मरतबा रसूलुल्लाह सल्ल0 से पूछा! कि या रसूलुल्लाह! हर इन्सान के साथ कितने फ़रिश्ते होते हैं? तो आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया। कि एक फ़रिश्ता मेरे दाएं में है जो मेरी नेकियों पर मामूर है और एक फ़रिश्ता बाएं मेरे गुनाह लिखता है, ये दाएं वाला फ़रिश्ता बाएं वाले फ़रिशते का सरदार है।

दो फ़रिश्ते तेरे सामने और पीछे हैं, ये दोनों बलाओं और मुसीबतों से हिफ़ाजत करते हैं।

एक फ़रिश्ते ने तेरी पेशानी को थामा हुआ है, जो तवाज़ो

करने पर तेरे सर को बुलन्द कर देता है और तकब्बुर करने पर पस्त कर देता है।

दो फ़रिश्ते तेरे होंठों पर हैं जो दरूदो सलाम को पहुंचाते हैं।

एक फ़रिश्ता तेरे मुंह पर है जो साँप और दूसरे कीड़ों को तेरे मुंह में घुसने नहीं देता और दो फ़रिश्ते तेरी आंखों पर हैं।

देखो! नीचे लिखी जा रही हदीस पर गौर करो! कि किस तरह से फ़रिशतों के ज़रिए से चलाया जा रहा गैबी निज़ाम मोमिन की हिमायत में आ जाता है।

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि० से रिवायत है, कि आप सल्ल० ने फ़रमाया। जो लोग कसरत से मस्जिदों में जमा रहते हैं, यही लोग मस्जिद के खूंटे हैं, उन लोगों के साथ फ़रिश्ते भी बैठे रहते हैं, अगर वो लोग मस्जिदों में किसी वजह से मौजूद नहीं हों, तो फ़रिश्ते उन लोगों को ढूंढते हैं जब कभी वो बीमार हो जाते हैं, तो फ़रिश्ते उनके घर जाकर उनकी बीमार पुर्सी करते हैं और जब वो लोग अपनी किसी जरूरत के लिए घर से बाहर आते हैं तो फ़रिश्ते उनकी मदद करते हैं। (मस्नद अहमद)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि से रिवायत है, कि आप सल्ल० ने फ़रमाया। जुमा के दिन फ़रिशते मस्जिद के दरवाजे पर खड़े होकर, मस्जिद में आने वाले लोगों का नाम लिखते रहते हैं लेकिन जब खुतबा शुरू होता है, तब, फ़रिशते लिखना बन्द करके खुतबा सुनने में मशगूल हो जाते हैं। (बुखारी)

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया। जब कोई मुसलमान जंगल में इक़ामत कह कर नमाज़ पढ़ता है, तो दोनों फ़रिश्ते (किरामन कातबीन) उसके साथ नमाज़ पढ़ते हैं। अगर कोई मुसलमान जंगल में अज़ान दे और फिर एक़ामत कहकर नमाज़ शुरू करे तो उसके पीछे फ़रिशतो की इतनी

बड़ी तादाद पढ़ती है, जिनके दोनों किनारे देखे नहीं जा सकते। (मुसन्निफ़ अबदुल रज़्ज़ाक़)

हज़रत ओस अन्सारी रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया। ईद की सुबह अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों को दुनिया के तमाम शहरों में भेजते हैं। वो जमीन पर उतर कर तमाम गलियों और रास्तों में खड़े हो जाते हैं और आवाज देकर कहते हैं, जिसे इन्सान और जिन्नात के सिवा सारी मख़्लूक सुनती है कि ऐ मोहम्मद सल्ल० की उम्मत! इस करीम रब की बारगाह की तरफ़ चलो, जो ज्यादा अ़ता करने वाला है फिर लोग ईदगाह की तरफ़ जाने लगते हैं। (तब्रानी)

हज़रत शद्दाद बिन ओस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया। जो मुसलमान कुरआन की कोई सूरत बिस्तर पर जाकर पढ़ लेता है, तो अल्लाह पाक उसकी हिफ़ाजत के लिए एक फ़रिश्ता मुकर्रर फ़रमा देते हैं जो उसके जागने तक उसकी हिफ़ाज़त करता रहता है। (तिर्मिजी)

हज़रत मअ़कल बिन यसार रज़ि० से रिवायत है कि हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया। सूरह बक़र की तिलावत करने पर उसकी हर आयत के साथ अस्सी (80) फ़रिश्ते आसमान से उतरते हैं। (मसनद अहमद)

हज़रत इब्न उमर रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया। जो मुसलमान रात को बावजू सोता है, तो एक फ़रिश्ता उसके जिस्म के साथ लगकर रात गुजारता है। रात में जब नीद से वो बेदार होता है, तो वो फ़रिश्ता उसे दुआ देता है कि ऐ अल्लाह अपने इस बन्दे की मग़फ़िरत फ़रमादे, क्योंकि बावजू सोया था। (इब्ने हबान)

हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि हुजूर सल्ल० ने

फ़रमाया। रहमत के फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते, जिस घर में कुत्ता या तस्वीरें हो। (इब्ने माजा)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया कि रहमत के फ़रिश्ते उन लोगों के पास भी नहीं रहते, जिनके पास कुत्ता या घन्टी हो। (मुसलिम शरीफ़)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया। दुश्मन के ख़िलाफ़ मुक़ाबला करते वक़्त फ़रिश्ते घोड़ दौड़ और तीर अन्दाजी में तुम्हारे साथ होते हैं। (तबरानी)

हज़रत आयशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया। जो हाजी सवारी से हज करने जाते हैं, फ़रिश्ते उनसे मुसाफ़ा करते हैं और जो लोग पैदल हज करने जाते हैं, फ़रिश्ते उनसे गले मिलते हैं। (बैहक़ी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 फ़रमाते हैं। फ़रिश्ते जुमा के दिन पगड़ियां बांध कर (जुमा की नमाज़ में) हाज़िर होते हैं और पगड़ी वालों को सूरज के छिपने तक सलाम करते हैं। (तारीख़ इब्न असाकर)

देखो मेरे दोस्तो! एक है, गैब का इल्म होना और एक है गैब का यक़ीन होना, गैब का इल्म किताबों के ज़रिए से या किसी से सुनकर हासिल हो जाता है, पर गैब का यक़ीन कि उसे सीख कर अपने दिल में पैदा करना पड़ता है। इसलिए सहाबा रज़ि0 कहते थे कि हमने पहले ईमान सीखा, फिर कुरआन सीखा, यानी पहले गैब का यक़ीन दिल में पैदा किया।

हज़रत अबूबकर रज़ि0 जब बैतुल ख़ला में दाख़िल होने का इरादा करते, तो अपनी चादर बिछा देते और फ़रमाते, ऐ मुहाफ़िज फ़रिश्तो! तुम लोग यहां इस चादर पर तशरीफ़ रखो, क्योंकि मैंने अल्लाह तआला से अहद किया है, कि मैं बैतुल ख़ला में कोई बात

नहीं करूंगा। (मुकद्दमा अबूल्लैस)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 ने फ़रमाया, गुनाह करने के बाद कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो गुनाह से भी बड़ी होती हैं, कि अगर गुनाह करते हुए तुम्हें अपने दाएं बाएं के फरिश्तों से शर्म न आई तो ये इस किए हुए गुनाह से भी बड़ा गुनाह है। (कनजुल अमाल 8'224)

गैब का यक़ीन

(1) एक ईमान (امن بالله) बिल्लाह यानी इस हकीकत का पूरा यक़ीन कि सब कुछ अल्लाह की जात से बनता और होता है, अल्लाह के सिवा किसी से कुछ नहीं बनता और होता है, इसलिए बस उसी को राजी करने की फ़िक्र करनी चाहिए और उसी के लिए मरना मिटना चाहिए।

(2) दूसरे ईमान (واليوم الاخر) बिलयोमिल आख़िर यानी इस हकीकत का पूरा यकीन कि ये जिन्दगी असल ज़िन्दगी नहीं है, बल्कि इस ज़िन्दगी को पूरा होने के बाद एक दूसरी ज़िन्दगी और दूसरा आलम है और असल ज़िन्दगी वही है, ये चंद रोजा ज़िन्दगी बस इसकी तैयारी के लिए है और इन्सानों की कामयाबी और नाकामी का दारोमदार इसी हमेशा वाली ज़िन्दगी की कामयाबी और नाकामी पर है।

(3) तीसरा ईमान (وملئكته) बिलमलयकह यानी इस बात का यक़ीन कि ये आलम जिन ज़ाहरी अस्बाब से चलता हुआ नज़र आ रहा है, दर असल उन अस्बाब से नहीं चल रहा है, बल्कि अल्लाह पाक फ़रिश्तों के बातनी निज़ाम के ज़रिए से सारे ज़ाहरी निज़ाम को चला रहे हैं। मसलन हमें नज़र आता है, कि बारिश बादलों से और हवाओं से होती है और जमीन की चीजें बारिश के

पानी से उगती हैं। फ़रिश्तों पर ईमान का मतलब ये है, कि हम इस बात का यक़ीन करें, कि अल्लाह पाक ये सारे काम दर असल फ़रिश्तों से करा रहे हैं। गोया उन ज़ाहिरी अस्बाब के पीछे फ़रिश्तों का नज़र न आने वाला निज़ाम है और इसके पीछे अल्लाह की ज़ात और उसका हुक्म और उसकी मशिय्यत है।

(4) (चौथा ईमान (وكتبه ورسله) बिलकिताब वन्नबिय्यीन यानी अल्लाह की नाज़िल की हुई किताबों और उसके भेजे हुए नबियों के ज़रिए इन्सानों को मिला है इसके सिवा जो कुछ है, वो गैर हक़ीक़ी और नाक़िस है। मसलन इन्सानों की फ़लाह और कामयाबी का रास्ता वही है जो अल्लाह के नबियों ने और अल्लाह की नाज़िल की हुई किताबों ने बताया है। अगर दुनिया भर के फ़लास्फ़र, दानिश्मन्द, अक़लमन्द लोग और लीडर इसके ख़िलाफ़ कहते हैं और सोचते हैं तो गलत है और उनका जहल है।

हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह0 फ़रमाते थे, कि सारे अहकामात बाद में आए, सबसे पहला हुक्म, अल्लाह की ज़ात पर यकीन क़ायम करने का आया। कि "امن بالله अल्लाह की ज़ात का अपने अपने दिलों में यकीन क़ायम करना, ये ईमान की जड़ और बुनियाद है क्योंकि अल्लाह की ज़ात तो गैब में है हुज़ूर अकरम सल्ल0 के सिवा अल्लाह की ज़ात को किसी मख़्लूक़ ने नहीं देखा, ख़ूद जिबराईल अमीन ने भी नहीं। इसलिए कि जिबराईल बतलाते हैं, कि मेरे और अल्लाह के दर्मियान नूर के सत्तर (70) परदों की आड़ है। अगर उनमें से एक परदा भी हटा दिया जाए, तो अल्लाह के नूर की तजल्ली से मैं जलकर राख हो जाऊंगा। तो अल्लाह की जात को लेकर कहीं शक में न पड़ जाएं और अल्लाह की ज़ात का ही इन्कार न कर बैठें कि पता नहीं अल्लाह की ज़ात का वजूद है भी या नहीं। इसलिए कि अब क़यामत तक कोई नबी

नहीं आने वाला। (हां ईसा अलैहि0 का दूसरे आसमान से उतर कर आना बहैसियत हुजूर सल्ल0 के उम्मती के होगा) और ये एक मुस्तकिल सवाल इन्सान के बीच रहता है कि अल्लाह की ज़ात है या नहीं? बस इसी सवाल को ख़त्म करने के लिए ही अल्लाह रब्बुल इज्जत ने हुजूर सल्ल0 को अर्श पर बुलाकर अपना दीदार कराया, कि अल्लाह की ज़ात हक है। अल्लाह ने अपने बन्दों को खुद ये दावत दी है कि वो अल्लाह पर ईमान लाएं ताकि अल्लाह तआला उन्हें अपनी हिमायत और हिफ़ाजत में ले लें।

(हैसमी 5-232)

मेरे दोस्तो! जो ज़ात हमेशा से थी और हमेशा रहेगी, उसने सबसे पहला हुक्म अपने बन्दो के मुतअल्लिक जो नाज़िल फ़रमाया, वो ये कि "امن با لله" अल्लाह की ज़ात का यकीन, अपने दिल में पैदा करो, अब सवाल ये पैदा होता है कि किस तरह से अल्लाह की ज़ात का यकीन पैदा हो? तो अल्लाह की ज़ात का यकीन तभी पैदा होगा, जब हम अपनी ज़ात में गौरो फ़िक्र करेंगे।

हज़रत अली रज़ि0 ने फ़रमाया। कि कोई शख़्स उस वक़्त तक अल्लाह तआला को नहीं जान सकता, जब तक कि वो अपने आप को न पहचान ले, कि

(1) हम पांच सौ (500) साल पहले कहां थे?
(2) इस दुनिया में हम कहां से आए?
(3) हमारे जिस्म को किसने बनाया?
(4) कैसे बना?
(5) सौ (100) साल बाद हम कहां होंगे, वगैरह वगैरह

इसके लिए अब हमें कुरआन और हदीस की रोशनी में अपने आपको पहचानना है, कि हमें किसने बनाया? कहां बनाया? और कैसे बनाया?

इन्सान की पैदाईश

واذاخذربک من بنی ادم من ظهورهم ذريتهم واشهدهم على انفسهم الست بربكم قالو ابلى شهدنا ان تقولو ايوم القيامة انا كنا عن هذا غافلين.

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है। जब आपके रब ने आदम अलैहि0 की पीठ से उनकी औलाद को पैदा किया, फिर उनसे सवाल किया, कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? सबने जवाब दिया बेशक! फिर हमने गवाह बनाया (फ़रिशतों को) हमने ये इकरार (इन्सानों से) इसलिए कराया, कि क़यामत के दिन ये न कहने लगें कि हमें पता नहीं था। (कि आप हमारे रब हैं) (आ़राफ़ 172)

हज़रत उबै बिन कअ़ब रज़ि0 इस आयत की तफ़सीर में बयान फ़रमाते हैं, कि अल्लाह तआ़ला ने जब आदम अलैहि0 की पीठ से इन्सानों की रूह को निकाला और उन्हें एक जगह जमा किया, फिर

उन्हें जोड़ा जोड़ा बनाया,
उसकी शक्लें बनाईं,
उन्हें बोलने की ताक़त दी,
फिर सबसे सवाल किया, कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं?
सबने जवाब दिया, बेशक! आप ही हमारे रब हैं।

फिर इस इकरार पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रिशतों को गवाह बनाया, ताकि क़यामत के दिन इसमें से कोई ये न कहे कि:

हमें पता नहीं था।

यक़ीन मानो "मेरे सिवा कोई माबूद और रब नहीं है" इसलिए मेरी रबूबियत में किसी चीज़ को शरीक न करना। मैं तुम्हारे पास नबी और रसूल भेजता रहूंगा, जो तुम्हें ये अहद और

पैमान याद दिलाएंगे और तुम पर अपनी किताबें उतारूंगा।

तो सब ने जवाब दिया कि हम इकरार कर चुके हैं, कि आप ही हमारे रब हैं, आपके सिवा हमारा कोई रब नहीं है।

(मसनद अहमद)

هل اتى على الا نسان حين من الدهر لم يكن شيئا مذ كورا انا خلقنا الانسان من نطفة امشاج نبتليه فجعلناه سميعا بصيرا.

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है बेशक इन्सान पर जमाने में ऐसा वक़्त आ चुका है कि वो भी काबिले ज़िक्र न था कि उससे पहले मनी था और उससे पहले वो भी न था। हमने उसको मख़्लूत नुत्फ़े से पैदा किया, ताकि हम उसका इम्तेहान लें, फिर हमने उसे सुनता, देख़ता बनाया। (अलदहर 1-2)

मेरे दोस्तो! अल्लाह तआ़ला जब किसी इन्सान को इम्तेहान के लिए आलमे अरवाह से इस दुनिया में मुन्तक़िल करना चाहते हैं, तो मुन्तक़िल करने से चार महीने पहले, एक मख़्सूस तरीके पर उसकी माँ के पेट में उसका ज़िस्म बनाना शुरू करते हैं।

من اى شيء خلقه من نطفة خلقه فقدره ثم السبيل يسره ثم اماته فاقبره

हमने इन्सान के जिस्म को किस चीज़ से बनाया? मनी की एक बून्द से एक ख़ास अन्दाज में। फिर उसके लिए रास्ता आसान कर दिया। फिर उसे मौत देकर बर्जख़ में पहुंचा दिया।

(अबस 21-18)

لقد خلقنا الا نسان فى احسن تقويم.

हमने इन्सान को बेहतरीन अन्दाज में ज़ाहिर किया है।

(अत्तीन 4)

منها خلقنا كم وفيها نعيد كم ومنها نخرجكم تارة اخرى

इसी मिट्टी से जिस्म बनाकर हमने तुम्हें (दुनिया) में ज़ाहिर किया और फिर उसी में लौटाएंगे और उसी से दूसरी बार ज़ाहिर करेंगे। (ताहा 55)

अल्लाह तआ़ला जिस मिटटी से उसका जिस्म बनाते हैं, उस मिटटी के जर्रात जमीन से लेकर आसमान तक फैले हुए होते हैं। अल्लाह तआ़ला अपनी कुदरत से उन जर्रात को इकट्ठा करके माँ बाप की गिज़ा के साथ उनके पेट में पहुंचाते हैं। माँ बाप के जिस्म में पहुंच चुके उन जर्रात को फिर खून में पहुंचाते हैं, खून से मनी में मुन्तकिल करते हैं, फिर मनी के इस बून्द को माँ के पेट में मौजूद बच्चेदानी में पहुंचाते हैं।

فالينظر الا نسان مم خلق خلق من ماء دافق يخرج من بين الصلب والترائب.

इन्सान को देखना (सोचना) चाहिए कि उसका जिस्म किस चीज से बना है? उसका जिस्म उछलते हुए पानी से बना है, जो पीठ और सीने के बीच से निकलता है। (तारिक़ 7-5)

افرئيتم ما تمنون ء انتم تخلقونه ام نحن الخالقون

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है। अच्छा ये तो बताओ! कि जो मनी तुम औरतों के रहम में पहुंचाते हो, क्या उस मनी से तुम इन्सान का जिस्म बनाते हो, या हम उस जिस्म को बनाने वाले हैं? (वाक़्या 59-58)

हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया नुत्फ़ा (मनी की बून्द) चालीस (40) दिन तक रहम में अपनी हालत पर रहता है जब चालीस दिन पूरे हो जाते हैं तो वो जमा हुआ खून बन जाता है, फिर इसी तरह चालीस दिन के बाद गोश्त की बोटी में तब्दील हो जाता है, फिर इसमें

हड्डियां पैदा होती हैं, फिर अल्लाह तआ़ला जिस्म के सारे अज़ा बना देते हैं। (मसनद अहमद)

الم نجعل له عينين ولسانا و شفتين

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि कोई इन्सानी जिस्म ऐसा नहीं है, जिसपर हमने निगरानी करने वाला (फ़रिश्ता) मुकर्रर न कर रखा हो। (तारिक़ 4)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने औरत की बच्चेदानी पर एक फरिशता मुकर्रर कर रखा है, जो बच्चे के जिस्म के बनने की मख़्लूक़ शक्लें अल्लाह तआ़ला से बताता रहता है। कि

ऐ अल्लाह! अब ये नुत्फ़ा है।

ऐ अल्लाह! अब ये जमा हुआ खून है।

ऐ अल्लाह! अब ये गोश्त का लोथड़ा है।

फिर जब अल्लाह तआ़ला उस बच्चे को पैदा करना चाहते हैं, तो फ़रिश्ता पूछता है कि ऐ अल्लाह! इसके बारे में क्या लिखूं

लड़का या लड़की

बदबख़्त या नेक बख्त

रोजी कितनी

और उमर कितनी।

यानी ये रूह इस तरह जिस्म में कितने दिन रहेगी।

(बुख़ारी 65 95)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं कि औरत की बच्चे दानी पर मुकर्रर फरिश्ते का ये काम होता है, कि जब बच्चे की मां सोती है, या लेटती है, तो ये फरिश्ता उस बच्चे का सर ऊपर उठा देता है। अगर वो ऐसा न करे, तो बच्चा खून में गर्क हो जाए। (अबूश्शेख़)

हज़रत अनस रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया। जब लड़की पैदा होती है, तो अल्लाह तआला उस लड़की के पास एक फ़रिश्ता भेजता है, जो उसपर बहुत ज्यादा बरकत उतारता है और कहता है, तू कमजोर है क्योंकि कमज़ोर से पैदा हुई है, उस लड़की की किफ़ालत करने वाले की क़यामत तक मदद की जाती है और जब लड़का पैदा होता है, तो अल्लाह तआला उसके पास भी एक फ़रिश्ता भेजते हैं, जो उसकी आँख के बीच बोसा लेता है और कहता है कि अल्लाह तआला तुझे सलाम कहते हैं।

तिबरानी

मेरे दोस्तो! नुत्फ़ा जब बच्चेदानी के अन्दर पहुंच जाता है, तो बच्चेदानी का मुंह बन्द हो जाता है, जिस तरह गुब्बारे के अन्दर किसी चीज को डालकर फिर उसमें हवा भरकर गुब्बारे का मुंह बन्द कर दिया जाता है, पर बच्चेदानी में सिर्फ़ नुत्फ़ा डाला जाता है, हवा नहीं भरी जाती। जैसे जैसे बच्चे का जिस्म बनकर बढ़ता जाता है बच्चेदानी बगैर हवा के गुब्बारे की तरह फूलती जाती है, जिसकी वजह से माँ का पेट फूलकर बड़ा होता रहता है। चालीस (40) दिन के बाद सफेद रंग का नुत्फ़ा सुर्ख़ रंग का जमा हुआ खून बन जाता है। जिस तरह फ़िरऔन के पीते हुए पानी को खून में बदल दिया था।

फिर चालीस (40) दिन के बाद इस जमा हुए खून को अल्लाह तआला गोश्त के लोथड़े में बदल देते हैं। जिस तरह फ़िरऔन के हाथ में पकड़े हुए रोटी के टुकड़े को मेंढक में बदल दिया था।

या जिस तरह उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 के यहां प्याले में रखे हुए गोश्त को पत्थर में बदल दिया था और मूसा अलैहि0 का मशहूर वाक़्या जिसे अल्लाह तआला ने क़ुरआन में

बयान फ़रमा है कि मूसा अलैहि० की लाठी को सांप बना दिया और साँप को फिर लाठी बना दिया। कि नज़र तो वो लाठी आ रही थी पर न वो लाठी थी और न ही साँप कि असल के एतबार से न वो लाठी थी और न सांप। इसलिए कि न लाठी सांप बन सकती है और न सांप लाठी बन सकता है पर ऐसा हुआ। तो इससे पता चलता है कि चाहे लाठी हो या साँप या कोई भी नज़र आने या नज़र न आने वाली मख़्लूक। वो मख़्लूक चाहे,

चींटी की हो या जिबराईल की,
ज़मीन की हो या आसमान की,
ज़र्रे की हो या समन्दर की,

यानी अर्श से लेकर फ़र्श (जमीन) के दरमियान की कोई भी मख़्लूक हो उन सबकी हैसियत एक कटपुतली से ज्यादा नहीं है। उन सबके अन्दर अल्लाह का जो अम्र काम कर रहा है, वो असल चीज़ है अल्लाह तआला उन शक्लों से जब चाहेंगे जहां चाहेंगे जैसे चाहेंगे और जो चाहेंगे वो होगा।

जैसे माँ के पेट में नुत्फ़े का जमा हुआ खून, जमे हुए खून को गोश्त का लोथड़ा और उस गोश्त के लोथड़े पर जिस्म के आज़ा का बनना कि आधा ढांचे के गोश्त के लोथड़े के अन्दर हड्डियों का ढांचा बनाकर दिल, गुर्दा तिल्ली फेफड़ा वगैरह बनाकर नसों का जाल बिछा देते हैं। फिर गोश्त के लोथड़े के ऊपर आँख, नाक, मुंह, हाथ, पैर वगैरह अपनी क़ुदरत से बनाते हैं। इन्सानों के जिस्म बनाने की ये तर्तीब अल्लाह तआला ने मुकर्रर की है। हां तीन इन्सान इस तर्तीब से बाहर हैं।

(1) आदम अलैहि0
(2) हव्वा अलैहि0
(3) ईसा अलैहि0

जिस्म से खून का आना जाना

हम सब अपने अपने बारे में भी जान लें, कि हम सबका जिस्म भी अल्लाह तआ़ला ने इसी तर्तीब से बनाया है, जिस जिस्म को हम अपनी मिलकियत समझ कर अपनी मर्ज़ी पर इस्तेमाल कर रहे हैं। हांलाकि अल्लाह तआ़ला ने ये जिस्म अपनी मर्जी पर इस्तेमाल होने के लिए दिया था। तो जब इस अन्दाज में अल्लाह तआ़ला इन्सान का जिस्म बना देते हैं, तो जिस्म को सबसे पहले खून की ज़रूरत पड़ती है। अल्लाह तआ़ला ने गैबी खज़ाने से इस जिस्म में बराहेरास्त खून भेजते हैं पर इन्सानों को आसमानों के ऊपर से खून का आना नज़र नहीं आता। जिस तरह बुख़ार का इन्सान के जिस्म से खून का ले जाना नज़र नहीं आता। कि हज़रत सलमान रज़ि० फ़रमाते हैं, कि एक दिन बुख़ार ने हुजूर सल्ल० के घर के अन्दर आने की इजाज़त चाही। हुजूर सल्ल० ने उससे पूछा, तुम कौन हो?

उसने कहा कि मैं बुखार हूं, मैं गोश्त को काटता हूं और खून चूसता हूं।

हुजूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया तुम "कबा" वालों के पास चले जाओ! चुनांचे बुखार, कबा वालों के पास चला गया और उन सबका इतना खून चूसा और गोश्त काटा कि उनके चेहरे पीले हो गए। तो उन्होंने आकर हुजूर सल्ल० से बुख़ार की शिकायत की।

हुजूर सल्ल० ने उन लोगों से फ़रमाया कि तुम लोग क्या चाहते हो? अगर तुम चाहो, तो मैं अल्लाह से दुआ कर दूं तो अल्लाह तआ़ला बुखार को वापस बुलालें और अगर तुम लोग चाहो तो बुखार को रहने दो, जिससे तुम लोगों के सारे गुनाह माफ़ हो जाएंगे।

कबा वालों ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आप बुख़ार को

रहने दें। (बिदाया वन्निहाया 160-6)

इस रिवायत से ये पता चलता है कि जिस तरह बुखार का इन्सान के जिस्म से खून का ले जाना नज़र नहीं आता, इसी तरह अल्लाह तआला अपने गैबी खजाने से जब जिस्म में खून भेजते हैं, तो उस खून का आना भी किसी को नज़र नहीं आता। इस जमाने में ये बात मोबाईल और कम्पयूटर वगैरह से समझी जा सकती है, कि आपके मोबाईल पर मैसेज का आना या रिचार्ज कराने पर पैसे का आना किसी को नज़र नहीं आता। इसी तरह कम्पयूटर पर किसी किताब या किसी और चीज का डाउन लोड करना किसी को नज़र नहीं आता। इस बात को खुद अल्लाह तआला ने परिन्दों के अन्दर से अन्डों को निकाल कर समझाया है कि

وتخرج الحي من الميت وتخرج الميت من الحي وترزق من تشاء بغير حساب

तू ही बेजान से जानदार पैदा करे और तू ही जानदार से बेजान पैदा करे, तू ही जिसे चाहे बेशुमार रोज़ी दे। (आले इमरान 27)

इमाम अहमद बिन हंबल रह0 फ़रमाते थे कि हमने तो अपने रब को मुर्गी के अन्डे से पहचाना है, कि रब अल्लाह हैं।

मेरे दोस्तो! हमें ये धोखा लगा है, कि हम
पैसे से पलते हैं।
दुकान से पलते हैं।
मेहनत से पलते हैं।
खेती से पलते हैं।
नौकरी से पलते हैं।
इससे बड़ा दुनिया में कोई झूठ नहीं कि हम चीजों से पलते हैं

या अपनी मेहनत से पलते हैं।

हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते थे कि जो इन्सान इनमें से किसी भी चीज़ से पलने का यक़ीन लेकर मरेगा, तो ख़ुदा की क़सम! वो क़ब्र के किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे पाएगा।

हज़रत जी की यादगार तक़रीरें

इसलिए हज़रत सुफ़ियान सौरी रह० और अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० हमेशा ये बात एलानिया कहा करते थे, कि अगर जमीन तांबे की हो जाए और आसमान लोहे का हो जाए, दुनिया में कोई सामान और इन्सान भी न हो, तब भी मुझे ये ख़्याल न आएगा कि मेरे ख़ाने पीने का क्या होगा।

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते थे कि अगर जमीन तांबे की हो जाए और आसमान लोहे का हो जाए दुनिया में कोई सामान और इन्सान भी न हों फिर अगर किसी इन्सान के दिल में ये ख़्याल आ जाए कि मेरे खाने पीने का क्या होगा? तो ये ख़्याल उसके अन्दर के शिर्क की वजह से आया है उसके अन्दर ईमान नहीं है।

मेरे दोस्तो! हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया। कि ईमान सिर्फ़ ईमानी सूरत बना लेने से नहीं मिलता। (कनज़ुल आ़माल 210-8)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया कोई बन्दा उस वक़्त तक ईमान की हकीकत तक नहीं पहुंच सकता, जब तक वो ईमान की चोटी तक न पहुंच जाए और ईमान की चोटी पर उस वक़्त तक नहीं पहुंच सकता, जब तक उसके नज़दीक फ़कीरी मालदारी से और छोटा बनना बड़ा बनने से ज़्यादा महबूब न हो जाए और उसकी तारीफ़ करने वाला और उसकी बुराई करने वाला बराबर न हो जाए।

हुलिया 132-1

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया ऐ लोगो! अपने बातिन की इस्लाह कर लो, तुम्हारा ज़ाहिर ख़ुद ठीक हो जाएगा। तुम अपनी

आख़िरत के लिए अमल करो, तुम्हारे दुनिया के काम अल्लाह तआला की तरफ़ से ख़ूद बख़ूद हो जाएंगे। (अलबिदाया वन्निहाया 56-7)

बग़ैर कमाए कैसे पलेंगे

एक साथी ने एक साथी की चार महीने की तश्कील की कि ईमान को सीखने के लिए, आप भी अल्लाह के रास्ते में चलो! तो उसने कहा, कि मुझे भी इसका यक़ीन है कि अल्लाह पालते हैं, पर अगर मैं चार महीने के लिए जमात में चला गया, तो मेरे बूढ़े माँ-बाप और मेरे बीवी बच्चों का क्या होगा? अकेला मैं ही कमाने वाला हूं मैं अगर कमा के नहीं लाऊंगा तो ख़ुद क्या खाऊंगा और अपने बीवी बच्चों और माँ बाप को क्या खिलाऊंगा? कि बेशक पालने वाले तो अल्लाह ही हैं पर बग़ैर कमाए हम लोग कैसे पलेंगे?!!!

उस साथी ने कहा कि भाई! यही चीज तो सीखने के लिए निकलना है कि आप दुकान से नहीं पल रहे हो, बल्कि आपको और आपके घर वालों को अल्लाह तआला बराहे रास्त अपनी क़ुदरत से पाल रहे हैं। हां चूंकि इन्सान को दुनिया में इत्तेहान के लिए भेजा गया है इसलिए चीज़ों से पलना नज़र आ रहा है पर सारी मख़्लूक को अल्लाह तआला बराहे रास्त अपनी क़ुदरत से ही पाल रहे हैं लेकिन वो इस बात को मानने पर राज़ी न हुआ कि अल्लाह अपनी क़ुदरत से पाल रहे हैं और उसके एतबार से उसकी बात भी ठीक है। क्योंकि बीस (20) साल से वो कमा के ही पल रहा है। यही हाल सबका है कि बेशक पालने वाले तो अल्लाह ही है पर बग़ैर कमाए हम लोग कैसे पलेंगे? चूंकि कमा रहे हैं तब ही पल रहे हैं तो इस साथी की तश्कील करने वाले ने कहा कि जो तुम कह रहे हो, ये तुम्हारा ग़लत यक़ीन है और ये बिल्कुल झूठी

बात है कि कोई किसी सबब से पलता है, बल्कि हर एक को अल्लाह तआला अपनी कुदरत से पाल रहे हैं। अब रही बात कि कैसे पाल रहे हैं? तो मेरी बात सुनो, मैं तुम्हें बताता हूं कि तुम दुकान से नहीं पल रहे हो, बल्कि अल्लाह पाल रहे हैं।

देखो! मिसाल के तौर पर जब तुम कभी दुकान जा रहे होगे, तो रास्ते में तुम्हारा एक कार से एक्सीडेन्ट हो जाए, लोग तुम्हें वहां से उठाकर क़रीब के एक नर्सिंग होम ले जाएंगे, पर वहां के डॉक्टर तुम्हें मेडीकल कालेज भेज देंगे, मेडीकल कालेज पहुंचने पर वहां के डॉक्टर तुम्हारी हालत देखकर तुम्हारे घर वालों से कहेंगे कि उनके हाथ पैर नीले पड़ गए हैं और उनके सारे जिस्म में जहर फैल रहा है लेहाज़ा उनके दोनों हाथ और दोनों पैर आप्रेशन करके काटने पड़ेंगे तभी उनकी जान बचा पाएंगे तो अब बताओ तुमहारे घर वाले डॉक्टर से क्या जवाब देंगे।

क्या ये जवाब देंगे, कि उनके हाथ, पैर न काटें। हम लोग उनको इसी हाल में घर वापस ले जा रहे हैं।

तो उसने जवाब दिया कि नहीं, बल्कि मेरे घर वाले कहेंगे, कि डॉक्टर साहब! उनका आप्रेशन कर दीजिए।

तश्कील करने वाले ने कहा, फिर आप्रेशन हो जाने के बाद जब आप्रेशन थियेटर से तुम्हें बाहर लाया गया, तो तुम्हारा पांच फिट का जिस्म अब ढाई फिट बचा। फिर तीन महीने तुम्हें अस्पताल में ही रहना पड़ा, जब तुम्हारे ज़ख़्म वगैरह सूख गए तो तुम्हारे घर वाले तुम्हें अस्पताल से घर वापस ले आए, तो घर आने पर तुम दुकान के क़ाबिल रहे और न दुकान तुम्हारे काबिल रही। चूंकि तुम दुकान से पल रहे थे और अपनी मेहनत से पल रहे थे, दो चार दिन के बाद ही तुम्हारी मौत हो जाएगी, कि अब दुकान पर कमाने तो जा नहीं पाओगे और तुम्हारी मौत के दो चार दिन के

बाद तुम्हारे घर वाले भी मर जाएंगे, क्योंकि उन सबको तुम पालते थे!!!

ये सुनकर वो बोला, नहीं मैं मरूंगा नहीं।

तश्कील करने वाले ने पूछा, क्यों नहीं मरोगे? क्योंकि तुम तो दुकान से पलते थे? उसने कहा, कि अल्लाह कोई और रास्ता खोल देंगे।

तश्कील करने वाले ने कहा, कि इसका मतलब ये हुआ कि तुम दुकान से नहीं पल रहे थे? पर तुम तो ये कह रहे थे कि पालने वाले तो अल्लाह हैं, पर अगर मैं दुकान नहीं जाऊंगा तो कैसे पलूंगा? इसका मतलब ये हुआ कि तुम्हारे अन्दर दुकान से पलने का जो यकीन था, वो गलत था? अच्छा अब बताओ, कि अल्लाह तआला तुम्हें कैसे पालेंगे?

उसने तश्कील करने वाले के इस सवाल का जब कोई जवाब न दिया। तो तश्कील करने वाले ने उससे कहा, कि मैं बताऊं तुम कैसे पलोगे?!

उसने कहा कि हां बताओ।

तश्कील करने वाले ने कहा कि अब तुम्हारे सुसर दुबई से तुम्हें हर महीने पाँच हजार (5000) रुपए भेजेंगे कि अब तुम तो अपाहिज़ हो गए तो अपनी बेटी और नवासे की मुहब्बत में वो पैसे भेजेंगे अब जब वहां से पैसे आएंगे, तो तुम्हारे अन्दर सुसर से पलने का यकीन बनेगा और दुकान से पलने का यक़ीन निकलेगा। पर अब तुम ये कहोगे, कि पालने वाला तो अल्लाह है, मगर सुसर के बग़ैर कैसे पलेंगे? जबकि बीस (20) साल से तुम अपने अन्दर दुकान से पलने के यक़ीन के साथ जिन्दगी गुज़ार रहे थे, अगर इसी हाल पर तुम्हारी मौत आजाती तो अल्लाह की रबूबियत में दुकान को शरीक कर के मरते, कि जिस तरह पहले तुम दुकान से नहीं

पल रहे थे जो बात आज खुद तुम्हारे सामने है। इसी तरह ये बात भी सच्ची है कि तुम सुसर से नहीं पलोगे, बल्कि अल्लाह पालेंगे। चूंकि इन्सान का, हर पल इस दुनिया में इम्तेहान लिया जा रहा है। इसलिए दुनिया में इन्सान को चीजों से, सामान से, माल से और लोगों से अपना पलना नज़र आएगा। पर खुदा की कसम! सच्ची बात ये है, कि हर एक को अल्लाह तआला अपनी कुदरत से पाल रहे हैं। अब सुसर के पैसे से पलोगे, तो दुकान से पलने का यकीन निकलकर सुसर से पलने का यकीन पैदा होगा।

तश्कील करने वाले ने उससे फिर पूछा! कि अच्छा अब ये बताओ अगर तुम्हारे सुसर का दुबई में इन्तेकाल हो जाए और वहां से पैसे आना बन्द हो जाए, फिर तुम लोग कैसे पलोगे?

इस बार उसने जवाब दिया कि अल्लाह तआला किसी और रास्ते से पालेंगे।

तश्कील करने वाले ने फिर उससे सवाल किया कि अच्छा ये बताओ अगर ज़मीन तांबे की हो जाए आसमान लोहे का हो जाए, दुनिया में कोई सामान और इन्सान भी न हों, ज़मीन पर सिर्फ तुम तुम्हारे बीवी बच्चे और तुम्हारे माँ-बाप यानी कुल पांच (5) लोग रह जाओ तुम सब की मौत हो जाएगी?!!! इसलिए कि

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया इन्सान के दिल में एक ख़्याल फ़रिश्ता डालता है और एक ख़्याल शैतान डालता है। शैतान की तरफ़ से आने वाला ख़्याल ये होता है, कि वो अल्लाह के गैर से होने को और अल्लाह के करने से जो सब कुछ हो रहा है, उसको झुठलाने पर उभारता है।

फ़रिश्ते की तरफ़ से आने वाला ख़्याल ये है, कि वो अल्लाह का कहना मान लेने और अल्लाह ही करेंगे की तस्दीक़ पर उभारता है। लेहाज़ा जो शख़्स अपने अन्दर फ़रिश्ते का ख़्याल पाए, तो उसे

अल्लाह का शुक्र करते हुए इस ख़्याल पर जमना चाहिए और अगर अपने अन्दर शैतान का लाया हुआ ख़्याल पाए तो उसको शैतान से अल्लाह की पनाह मांगना चाहिए। (तिर्मिज़ी)

मुर्गी के अण्डे से रब की पहचान

इसलिए उस वक़्त जब शैतान तुम्हारे दिल में ये ख़्याल डाले, तो मुर्गी के अण्डे को सोचकर अपने आपको समझाना, कि अल्लाह तआ़ला किस तरह से उस छिलके के अन्दर बच्चे को बनाते और उसकी परवरिश करते हैं कि मुर्गी का अण्डा चारो तरफ़ से बन्द होता है और छिलके के नीचे एक वाटर प्रूफ़ झिल्ली होती है जो छिलका फोड़ने पर हमें नज़र आती है। मुर्गी का अण्डा जिसे पानी में उबाल कर या फिर उसे फोड़कर, फेंटकर जिसका आमलेट बनाकर खाया जाता है कि उसे उबालकर, या आमलेंट बनाकर खाने में, न तो मुर्गी के रंग बिरंगे पर नज़र आते हैं और न ही आंख पैर, खून वगैरह ही नज़र आते हैं लेकिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपनी कुदरत से उस छिलके के अन्दर मुर्गी की शक्ल बनाते हैं और शक्ल बनाकर फिर उसके अन्दर वहां रूह और रिज़्क पहुंचाते हैं तो जब ये मुर्गी का बच्चा अल्लाह से मिली ताक़त का इस्तेमाल करके छिलके को फोड़कर बाहर आता है, अगर उसी वक़्त उस बच्चे को चाकू से ज़िबह करके देखा जाए तो उसके जिस्म से खून टपकता हुआ नज़र आएगा।

ये बात यहां पर इस वज़ह से लिख रहा हूं क्योंकि आज सारी दुनिया के अन्दर इस बात को बोला जा रहा है कि फल और मेवों से गल्लों और सब्ज़ियों के खाने और पीने से जिस्म के अन्दर खून बनता और बढ़ता है और उससे भी दो क़दम आगे ये बात चल रही है कि इन्जेक्शन टेबलेट, सीरप या टॉनिक और हकीम के मजमून या वेद की फंकी और जड़ी बूटियों और भस्म से भी इन्सान

के जिस्म के अन्दर खून बनता भी है और बढ़ता भी है तो भला अण्ड़े से निकलने वाले मुर्गी के बच्चे के अन्दर ये खून कहां से आ गया जबकि छिलका तो चारो तरफ़ से बन्द था फिर ये खाने पीने की चीजें भला इसके अन्दर कैसे पहुंच गई तो ये लोग जवाब देते हैं, कि अण्डे के अन्दर अल्लाह पाक अपनी कुदरत से खून बनाते और बढ़ाते हैं, लेकिन इन्सान के ज़िस्म में उन खाने पीने की चीजों से भी खून बनता और बढ़ता है और अल्लाह रब्बुल इज्ज़त अपनी कुदरत से भी खून बनाते और बढ़ाते हैं।

मेरे दोस्तो! ये बोल ज़बान से निकालना ये तो दूर की बात है, बल्कि ऐसा सोचना भी शिर्क है, कि अल्लाह पाक की कुदरत में हमने उन चीजों को शरीक बनाया हुआ है। ईमान को न सीखने की वजह से इस तरह के बोल आज दुनिया में बोले जा रहे हैं। इसी बे बुनियाद बोलों की वजह से उम्मत का कमाया हुआ माल उन चीजों के ख़रीदने पर खर्च हो रहा है। जबकि गोश्त और खून से तअ़ल्लुक रखने वाली हदीस कुदसी पर भी ज़रा गौर कर लिया जाए जिसमें अल्लाह पाक का ये इरशाद है कि "जब मैं अपने मोमिन बन्दे को किसी बीमारी में मुब्तला करता हूं फिर ये अपनी अयादत करने वालों से मेरी शिकायत नहीं करता, तो मैं उसे अपनी कैद से आज़ाद कर देता हूं, यानी उसके गुनाहों को माफ़ कर देता हूं, फिर उसे उसके गोश्त से बेहतर गोश्त देता हूं और उसे उसके खून से बेहतर खून देता हूं"

नाफ़ के गन्दे खून से परवरिश

इसी तरह मेरे दोस्तो! आज दुनिया में ये बोला जा रहा है, कि मां के पेट के अन्दर रह रहे बच्चे की परवरिश अल्लाह पाक नाफ़ के गन्दे खून से करते हैं। अब यहां ज़रा इस बात पर भी गौर कर लिया जाए कि इन्सान जो सारी मख़्लूक में सबसे ज़्यादा

अशरफ़ है और फ़रिश्तों से भी जिस इन्सान को सज्दा कराया जा चुका हो, तो उस इन्सान की परवरिश नाफ़ के गन्दे खून से की जाए और जिस मुर्गी को हमें पकाकर खाने की इजाज़त है उस मुर्गी के बच्चे को अण्डे के छिलके में बगैर नाफ़ के परवरिश की जाए कि इन्सान को तो नऊजुबिल्लाह मां के पेट में गन्दे खून से गिज़ा पहुंचाई जाए और मुर्गी के बच्चे को अण्डे के छिलकों के अन्दर बगैर नाफ़ के बराहे रास्त अल्लाह की आने वाली रोज़ी हासिल हो। तो इस तरह रोज़ी के हासिल करने में मुर्गी का बच्चा इन्सान से अफ़ज़ल हो गया। असल बात ये है कि मां के पेट में जब चार महीने में बच्चे का जिस्म बन जाता है, तो अल्लाह तआ़ला आलिमे अरवाह से उस जिस्म में रूह भेजते हैं। जिस्म के अन्दर रूह आने के बाद जिस्म को गिज़ा की ज़रूरत पड़ती है। देखो! जब किसी के जिस्म से रूह निकल जाती है तो फिर उस जिस्म को किसी चीज की ज़रूरत नहीं पड़ती है लेकिन जब ज़िस्म में रूह होती है, तो जिस्म को गिज़ा की ज़रूरत पड़ती है। मां के पेट में अल्लाह तआ़ला अपनी कुदरत से बच्चे को गिज़ा पहुंचाते हैं, जिस्म को गिज़ा मिल जाने के बाद उसे पेशाब पाखाने के मुकाम से, पेशाब पाखाना करता है यहां पर ये बात बिल्कुल साफ़ हो गई कि बच्चे को मां के पेट में गिज़ा पहुंचाई जाती है वर्ना इन्सान अगर कुछ खाए पीएगा नहीं तो उसे पेशाब पाखाना नहीं होगा।

मेरे दोस्तो! रोज़ी का तअल्लुक बराहे रास्त अल्लाह की ज़ात से है। हज़रत उमर रज़ि0 ने फ़रमाया। कि बन्दे के और उसकी रोज़ी के दर्मियान एक परदा पड़ा हुआ है अगर बन्दा सब्र से काम लेता है, तो उसकी रोज़ी खुद उसके पास आ जाती है और अगर वो बेसोचे समझे रोज़ी कमाने में घुस जाता है, तो वो उस परदे को फ़ाड़ लेता है लेकिन अपने मुकद्दर से ज़्यादा नहीं पाता है।

(कनजुल आमाल 210 8)

अल्लाह तआला ने इस दुनिया में, इन्सान को रोज़ी का हासिल होना, ये इन्सान के गुमान पर रखा है। खुद अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि "मेरा बन्दा मुझसे जैसा गुमान करेगा मैं उसके साथ वैसा ही मामला करूंगा" अब अगर इन्सान के अन्दर माल से होने का गुमान है, तो उसका काम माल से होगा और अगर दुनिया में फैली हुई चीजों और सामान से काम होने का गुमान है, तो उस रास्ते से होगा। इस गुमान का नुक़्सान ये है कि आदमी के अन्दर जिस चीजों से होने का गुमान होगा, वो उसी चीज़ का मोहताज होगा।

शेर का कान मरोड़ दिया

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 एक मरतबा कहीं जा रहे थे, रास्ते में उन्होंने एक जगह पर कुछ लोग खड़े हुए मिले, उन्होंने उन लोगों से पूछा कि तुम लोग रास्ते में क्यों खड़े हो? लोगों ने बताया कि आगे रास्ते में एक शेर खड़ा है, जिसके डर की वजह से हम लोग यहां रूके हुए हैं, ये सुनकर हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 अपनी सवारी से नीचे उतरे और चलकर शेर के पास पहुंचे और उसके कान को पकड़कर मरोड़ा, फिर उसकी गर्दन पर एक थप्पड़ मारकर उसे वहां से भगा दिया, फिर वापस आते हुए अपने आपसे फ़रमाया, ऐ इब्ने उमर!

"हुजूर सल्ल0 ने सच कहा था, कि इब्ने आदम पर वही चीज़ मूसल्लत होती है इब्ने आदम जिस चीज़ से डरता है। अगर इब्ने आदम अल्लाह के सिवा किसी और चीज़ से न डरता है, तो अल्लाह तआला उसपर कोई चीज़ मूसल्लत न होने दें इब्ने आदम उसी चीज़ के हवाले कर दिया जाता है जिस चीज़ से उसे नफ़ा या नुक़्सान होने का यकीन होता है अगर इब्ने आदम अल्लाह के सिवा

किसी और चीज़ से नफ़ा या नुक़्सान का यक़ीन न रखे तो अल्लाह तआला उसे किसी और चीज़ के हवाले न करें।

(कनज़ुल आमाल 59-7)

इस तरह रसूलुल्लाह ने सहाबा किराम रज़ि0 के अन्दर सिर्फ़ अल्लाह ही से होने का गुमान पैदा कराया था, जिसकी वजह से सहाबा रज़ि0 के अन्दर अल्लाह की मोहताजगी थी, हर वक़्त हर आन हर लम्हे वो अपने आपको अल्लाह का मोहताज समझते थे और जब किसी के साथ कोई मामला हो जाता था, तो वो अल्लाह ही से कहता था। अपनी हर ज़रूरत को वो लोग अल्लाह ही के सामने पेश करते थे। वो अपनी रोज़ियां इस रास्ते से हासिल करते थे, जिस रास्ते को हुज़ूर ने उन्हें बतलाया था। आज तो हम सिर्फ़ खाने पीने को ही रोज़ी समझते हैं किसी से अगर पूछो कि रोज़ी किसे कहते हैं? तो वो उन्हीं चीजों को गिना देगा। हालांकि इन्सान के जिस्म की हर ज़रूरत को रोज़ी कहते हैं। देखो! इस जिस्म के खालिक़ और मालिक अल्लाह है, इस वक़्त दुनिया में रह रहे हम सात (7) अरब इन्सानों में से दो सौ (200) साल पहले किसी का भी जिस्म इस दुनिया में नहीं था। इस जिस्म को अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से इस दुनिया में उसका इम्तेहान लेने के लिए बनाया है। कैसे बनाया? इसकी खबर क़ुरआन और हदीस के ज़रिए हमें दे दी गई है। कि मां के पेट में बगैर किसी ज़रिए के हमारे जिस्म की ज़रूरतों को पूरा किया। बच्चेदानी के अन्दर खून, हवा और गिज़ा का इन्तेज़ाम किया फिर जैसे ही हम माँ के पेट से बाहर आए, तो जिस्म में ताक़त आंखो को रोशनी मुंह को बोल; कानों को आवाज, दिमाग़ को सोचने की क़ुव्वत वगैरह, इन तमाम ज़रूरतों को पूरा किया और आज भी उन ज़रूरतों को अल्लाह ही पूरी कर रहे हैं। अगर इन तमाम ज़रूरतों को पैसे लेकर देते कि

एक पैसा सेकेन्ड लेकर आंखों की रोशनी देते,
एक पैसा सेकेन्ड लेकर ज़बान की बोल देते,
एक पैसा सेकेन्ड लेकर कानों में आवाज़ देते,

जैसे मोबाईल पर एक पैसा सेकेन्ड हमारे बोलने और सुनने का लेते हैं। अगर अल्लाह भी अपने बन्दों से इसका चार्ज लेते तो इन्सान क्या करता?!!! आँखों की रोशनी ज़बान के बोल, कानों में आवाज़ जिस्म में ताक़त वगैरह ये वो चीजें हैं, जिसे इन्सान कोई क़ीमत देकर हासिल करना चाहेगा, पर अल्लाह रब्बुलइज्ज़त हैं उन्होंने सारी मख़्लूक़ की रोज़ी का ज़िम्मा खुद ले रखा है इसलिए हर एक की रोज़ी वो खुद पहुंचा रहे हैं। हम ज़रा इस बात पर गौर करें कि हमारे जिस्म की वो ज़रूरतें कि आंखों की रोशनी, ज़बान के बोल, कानों में आवाज़, जिस्म में ताक़त, जिन्हें अल्लाह रब्बुल इज्ज़त के सिवा कोई नहीं दे सकता, वो बगैर पैसे और बगैर हमारी किसी मेहनत के हमें मिल रही हैं, तो रोटी, दाल, या बोटी, कपड़े वगैरह क्या ये हमें पैसे से या हमारी मेहनत से हासिल हो रहे हैं?!!!

नहीं मेरे दोस्तो! ये चीजें भी अल्लाह रब्बुलइज्ज़त ही हमें दे रहे हैं, पर देख रहा है चीजों से मिलते हुए क्योंकि यही इन्सान का इम्तेहान है, कि अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने इस दुनिया के अन्दर इन्सान की रोज़ी का दारोमदार इन्सान के गुमान पर रखा है। अगर इन्सान के अन्दर माल से होने का गुमान है, तो इसका काम माल से होगा और अगर दुनिया में फैली हुई चीजों और सामान से काम होने का गुमान है, तो उस रास्ते से होगा। इस गुमान का नुक़सान ये है कि आदमी के अन्दर जिस चीज़ से होने का गुमान होगा उसी चीज़ का मोहताज होगा।

सहाबा वाली बात और सहाबा वाला गुमान, हम मुसलमानों

के अन्दर पैदा हो जाए, इसके लिए हम मुसलमानों को सबसे पहले ईमान सीखना पड़ेगा। इसलिए कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़यामत तक आने वाले इन्सानों के लिए सहाबा वाला ईमान और सहाबा वाले आमाल को नमूना बनाया है।

मेरे दोस्तो! आज ईमान को न सीखने की वजह से इन्सान इस्तेहान की चीज़ों से इत्मीनान हासिल करना चाहता है जबकि इतमीनान हासिल होना अल्लाह तआला ने जिस्म के सही इस्तेमाल पर रखा है। हमारे जिस्म के अज़ा अल्लाह तआला की मर्ज़ी पर उनके हुक्मों पर इस्तेमाल होने लगे, कि आँख, कान, ज़बान, दिमाग, हाथ, पैर, और शर्मगाह, हराम से बच जाएं। इसके लिए मस्जिदों में ईमान के हलके लगाकर, ईमान को सीखना है और इतना ईमान सीखना है, कि हमारे जिस्म के अजा हराम से बच जाएं। वर्ना आज मुसलमान हलाल कमाने के बावजूद हलाल खाने के बावजूद और हलाल पहनने के बावजूद।

हराम बोल रहा है।

हराम देख रहा है।

हराम सुन रहा है, और।

हराम सोच रहा है,।

ईमान को न सीखने की वजह से ही आज मुसलमान अपने ईमान से बेपरवाह है। अगर उसे अपने ईमान की परवाह होती तो ये हराम से बच रहा होता।

ईमान का नूर दिल से निकलकर सर पर

मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है "कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया। जब किसी मोमिन से गुनाहे कबीरा हो जाता है तो ईमान का नूर उसके दिल से निकलकर सर पर साया कर लेता है, जब तक वो तौबा नहीं करता वो नूर उसके ज़िस्म में वापस नहीं आता,

सोचो ज़रा! हमें अपने ईमान की कितनी फ़िक्र है?!! कि क्या हमने कभी उल्मा किराम से ये जानने की ज़रूरत महसूस की है कि गुनाह कबीरा क्या क्या हैं?!! और उनकी तादाद कितनी है? मेरे दोस्तो! ईमान को न सीखने की वजह से आज उम्मत ने इल्म को ईमान समझ लिया है और नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात को इस्लाम समझ लिया है। हालांकि ये इस्लाम की बुनियाद हैं, इस्लाम नहीं हैं। दावत की इस मुबारक मेहनत से यही बात चाही जा रही है कि मुसलमान अपने ईमान को लेकर फ़िक्रमन्द हो जाएं। इसी के लिए हज़रत मौलाना सईद साहब दामत बरकातहुम अपनी अपनी मस्जिदो में ईमान के हलके क़ायम करने के लिए, बार बार कह रहे हैं।

अब ईमान के सीखने में सबसे पहले अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ज़ात का यक़ीन अपने दिल में पैदा करना है, वो अल्लाह जिसके नाम के बोल से ये सारी कायनात क़ायम है। हदीस में आता है, कि जब तक इस दुनिया में अल्लाह के नाम का बोल ज़बान से बोलने वाला रहेगा, उस वक़्त तक ये दुनिया इसी तरह क़ायम रहेगी और जिस दिन किसी के मुंह से लफ़्ज "अल्लाह" नहीं निकलेगा उस वक़्त चाहे ज़मीन पर दस अरब इन्सान आबाद हों।

उनमें से एक अरब इन्सान उस वक़्त इन्जीनियर हों।
एक अरब इन्सान डॉक्टर हों।
एक अरब इन्सान, प्रोफ़ेसर हों।
एक अरब इन्सान, साइन्टिस्ट हों।
हर इन्सान, अरबपती हो।
हर इन्सान के पास दस दस किलो सोना हो।
गर्ज़ ये कि इस दुनिया में इतना सब कुछ होने के बावजूद

जिस दिन इस ज़मीन पर किसी एक इन्सान के भी मुंह से अगर लफ़्ज़ अल्लाह नहीं निकलेगा, तो उसी दिन ये आसमान फट जाएगा, ज़मीन रेज़ा-रेज़ा हो जाएगी, सब कुछ ख़त्म कर दिया जाएगा। अब बैठकर सोचो! इस दुनिया के बारे में जिसको पाने के लिए हम क्या कुछ नहीं कर रहे हैं, जबकि हर इन्सान के लिए ये दुनिया मुक़द्दर हो चुकी है, इन्सान अपने मुक़द्दर से लड़कर क्या हासिल कर लेगा?!!

जो दुनिया अल्लाह के नाम के बोल की वजह से क़ायम है, जी हां! मुंह से निकले हुए बोल, कि आपने अमरीका में रहने वाले अपने भाई को फ़ोन किया, उसने आपके फ़ोन को रिसीव किया, तो आप यहां से बोले "हैलो" तो आपके मुंह से निकले हुए बोल "हैलो" यहां से तेरह हज़ार पांच सौ चौव्वन (13554) किलो मीटर दूर एक सेकेन्ड में हवा मैं होते हुए हिन्दुस्तान से अमेरीका पहुंच गया, अगर मुंह से निकले हुए उन बोलों को कोई आदमी पकड़ना चाहे, तो टेपरिकाडर में कैसेट लगाकर पकड़ सकता है, या मोबाईल से टेप करके पकड़ सकता है।

लफ़्ज़ अल्लाह की ताक़त

मेरे दोस्तो! ईमान को न सीखने की वजह से हमें लफ़्ज़ "अल्लाह" की ताक़त का अन्दाज़ा नहीं है। एक चोर से लफ़्ज़ "पुलिस" की ताक़त के बारे में पूछो, कि कोई चोर के सामने "पुलिस" कह दे, तो उसका क्या हाल होता है, कि उसका जिस्म कांप उठता है। ज़रा सोचो! कि जिस अल्लाह के बोल पर सारी कायनात क़ायम है। अगर उस अल्लाह का यक़ीन कोई अपने दिल में पैदा करले तो आप खुद ये बतलाओ कि ये तमाम कायनात क्या उसके पीछे पीछे न चलेगी! देखो चोर के दिल में पुलिस की ज़ात और उसकी ताक़त का यक़ीन होता है, इसी तरह मुसलमान के

अन्दर अल्लाह की ज़ात और उसकी ताक़त का यक़ीन होना चाहिए, जिसको हम मुसलमानों ने अपने अन्दर पैदा नहीं किया, अगर पैदा किया होता अल्लाह का नाम सुनकर हमारा भी जिस्म कांप उठता, अल्लाह का नाम सुनकर अगर हमारा दिल न डरे, ये तो हमारे लिए रोने वाली बात है कि ईमान हो और दिल न डरे ऐसे कैसे हो सकता है। हां! ये कुरआन की बात है अल्लाह तआ़ला ने कुरआन में ईमान की निशानी बयान फ़रमाई,

انما المومنون الذين اذا ذكر الله وجلت قلوبهم واذا تليت عليهم اياته زادتهم ايمانا وعلى ربهم يتوكلون.

"कि ईमान वाले तो वही हैं कि जब उनके सामने अल्लाह का नाम लिया जाता है, तो उनके दिल डर जाते हैं और जब अल्लाह तआ़ला की ख़बरें उन्हें सुनाई जाती हैं तो उन ख़बरों को सुनकर उनके यक़ीन बढ़ जाते हैं और वो लोग सिर्फ़ अपने रब पर ही तवक्कुल करते हैं। (अनफ़ाल 2)

अब अगर किसी शख़्स ने अपने दिल के अन्दर अल्लाह की ज़ात का, सिफ़ात का रबूबियत के साथ यक़ीन पैदा कर लिया है। तो जैसे ही उस शख़्स की ज़बान से कोई बोल निकलेंगे वो बोल, बराहे रास्त आसमानों को पार करते हुए अर्श पर पहुंच जाएंगे। फिर बराहे रास्त अल्लाह रब्बुल इज्ज़त अपनी कुदरत से उसका काम बनाएंगे, जिसतरह आज मोबाईल के सामने बोलकर काम बनाए जा रहे हैं, सहाबा रज़ि0 ने इससे बड़े-बड़े काम अल्लाह रब्बुल इज्ज़त से आसमानों के ऊपर से बनवाए हैं।

एक मर्तबा अबूरेहान रज़ि0 नाव पर जा रहे थे, उसपर बैठे हुए वो सूई से अपनी कॉपी को सिल रहे थे, अचानक हवा के झोंके से उनके हाथ से सूई छूटकर समुन्दर में गिर गई, उन्होंने आसमान

की तरफ़ देखकर दुआ की, ऐ अल्लाह! तुझे तेरी क़सम मेरी सूई वापस करदे! इतना कहकर उन्होंने पानी में देखा तो उनकी सूई पानी के ऊपर पड़ी हुई थी, उन्होंने अपनी सुई उठा ली और कापी सिलने लगे। (असाबा 157 2)

हज़रत अबूबक्र रज़ि0 ने अपनी बांदी ज़नीरा रज़ि0 को आज़ाद किया, तो उनकी आंखों की रोशनी चली गई, इसपर कुरैश के सरदार ने कहा तुम्हें लात व उज्ज़ा ने अंधा कर दिया, ये सुन कर हज़रत ज़नीरा रज़ि0 ने कहाः कि तुम लोग ग़लत कहते हो, बैतुल्लाह की क़सम! लात व उज़्ज़ा किसी के क़ाम नहीं आ सकते न ही ये किसी को नफ़ा पहुंचा सकते हैं और न ही किसी को नुक़्सान पहुंचा सकते हैं, इतना कहना था, कि अल्लाह ने उनकी आंखों की रोशनी वापस कर दी। (असाबा 314-4)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत उमर रज़ि0 ने हम लोगों से कहा कि चलो हम लोग अपनी कौम की ज़मीन पर चलते हैं, चुनांचे हम लोग चल पड़े मैं और उबय बिन काब रज़ि0 जमात से कुछ पीछे रह गए थे इतने में एक बादल तेज़ी से आया और बरसने लगा तो उबय बिन काब रज़ि0 ने कहा ऐ अल्लाह! इस बारिश की तक्लीफ़ को हमसे दूर कर दे। चुनांचे हम बारिश में चलते रहे लेकिन हमारी कोई चीज बारिश से न भीगी। जब हम दोनों हज़रत उमर रज़ि0 और उनके साथियों के पास पहुंचे तो उन लोगों के ज़ानवर कजावे और सारा सामान भीगा हुआ था। हम लोगो को भीगा न देखकर हज़रत उमर रज़ि0 ने हमसे पूछा कि क्या तुम लोग किसी दूसरे रास्ते से आए हो? जिसकी वजह से बारिश से नहीं भीगे। मैंने उनसे बतलाया कि उबय बिन काब रज़ि0 ने ये दुआ कर दी थी, कि ऐ अल्लाह! हमसे इस बारिश की तक्लीफ़ को दूर कर दे। ये सुनकर हज़रत उमर

रज़ि0 ने फ़रमाया कि तुम लोगों ने अपने साथ हमारे लिए भी दुआ क्यों न की? (मुन्तख़बुल कंज़ 132-4)

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 के पास से एक आदमी मश्क लेकर गुज़रा उन्होंने उससे पूछा कि इस मश्क में क्या है? उसने कहा, शहद है। हज़रत ख़ालिद रज़ि0 ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! उसे सिर्का बना दे, जब वो आदमी अपने साथ वालों के पास पहूंचा तो उन लोगों से कहा कि आज मैं जो शराब लाया हूं, वैसी शराब अरब वालों ने कभी पी न होगी, ये कहकर उसने मश्क का मुंह खोलकर शराब उडेली तो शराब की जगह उसमे सिरका निकलता देखकर उसने कहा कि अल्लाह की क़सम ख़ालिद की दुआ लग गई। (बिदाया वन्निहाया 114-7)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 को ये ख़बर मिली कि ज़याद हे जो मुक़्दस का भी वाली बनना चाहता है, उन्होंने उसकी बादशाहत में रहना पसन्द आया, तो उन्होंने ये दुआ की, ऐ अल्लाह! तू अपनी मख़्लूक़ में से जिसके बारे में चाहता है उसे क़त्ल करवा कर उसके गुनाहों के कफ़ारे की सूरत बना देता है। (ज़याद) इब्ने सुमईया अपनी मौत मरे, क़त्ल न हो, चुनांचे ज़याद के अगूंठे में उसी वक़्त ताऊन की गिलटी निकल आई और जुमा आने से पहले ही मर गया। (इब्ने असाकर मुन्तख़बुल कन्ज़ 231-5)

(कर्बला में) एक आदमी ने खड़े होकर पूछा, क्या आप लोगों में हुसैन (रज़ि0) हैं? लोगों ने कहा हां हैं उस आदमी ने हज़रत हुसैन रज़ि0 को गुस्ताख़ी के अन्दाज़ में कहा, आपको जहन्नम की बशारत हो! हज़रत हुसैन रज़ि0 ने फ़रमाया मुझे बशारतें हासिल हैं, एक तो निहायत मेहरबान रब वहां होंगे दूसरे वो नबी सल्ल0 वहां होंगे जो सिफ़ारिश करेंगे और उनकी सिफ़ारिश क़बूल की जाएगी, लोगों से पूछा तू कौन है? उसने कहा, मैं इब्ने जवैरिया या इब्ने

जवेज़ह हूं हज़रत हुसैन रज़ि0 ने ये दुआ की "ऐ अल्लाह! उसके टुकड़े टुकड़े करके उसे जहन्नम में डाल दे। चुनांचे उसकी सवारी ज़ोर से बिदकी जिससे वो सवारी से इस तरह नीचे गिरा कि उसका पाँव रिकाब में फंसा रह गया और वह सवारी तेज़ भागती रही और उसका जिस्म और सर ज़मीन पर घिसटता रहा, जिससे उसके जिस्म के टुकड़े गिरते रहे। अल्लाह की क़सम! आख़िर में सिर्फ़ उसकी टांग रकाब में लटकी रह गई। (हैशमी 193-9)

आसमान से अंगूर के टोकरे के साथ दो चादरें भी

हज़रत लैस बिन सईद रह0 कहते हैं कि मैं हज को गया, मक्का पहुंचकर मैं अस्र की नमाज़ के वक़्त जबले अबू क़बीस पर चढ़ गया। वहां मैं ने एक साहब को दुआ मांगते हुए देखा कि वो

"يا رب يا رب" या रब या रब फिर

"يارباه يا رباه" या रब्बा या रब्बा फिर

"يا الله يا الله" या अल्लाह या अल्लाह फिर

"يا حی يا حی" या क़य्यूम या क़य्यूम फिर

"يا قيوم يا قيوم" कहते रहे फिर

फिर सात मर्तबा "يا ارحم الراحمين" कहा और कहने लगे, अल्लाह! अंगूर खाने को जी चाह रहा है, अंगूर दे दे और मेरी चादरें पुरानी हो गई हैं वो भी दे दे।

लैस रह0 कहते हैं, खुदा की क़सम! उनकी ज़बान से ये लफ़्ज़ पूरे निकले भी नहीं थे कि एक टोकरा अंगूरों से भरा हुआ उनके सामने आसमान से उतरा उसमे दो चादरें भी रखी हुई थी। हालांकि उस वक़्त सारे अरब में कही अंगूर का नाम व निशान नहीं था। उन्होंने अंगूर का एक गुच्छा टोकरे से खाने के लिए निकाला तो मैं ने आवाज़ दे कर कहा कि उन अंगूरों में मेरा भी हिस्सा है। उन्होंने पीछे पलटकर देखा तो उनकी नजर मुझपर पड़ी, मुझसे कहा

कि इसमें तुम्हारा कैसे है? मैंने कहा कि जब आप दुआ कर रहे थे तो मैं आपकी दुआ पर आमीन कह रहा था। ये सुनकर उन्होंने वो गुच्छा मुझे पकड़ा दिया और कहने लगे कि इसे यहीं बैठकर खाओ, मैंने उसे यहीं पर खाने के लिए मांगा है। घर ले जाने के लिए नहीं। मैंने वो अंगूर लेकर खाए तो बगैर बीज के उन अंगूरों का मैं उमर भर मज़ा न भूला। (रोज़ुरियाहीन)

एक मर्तबा इबराहीम ख्वास रह0 जंगल से होकर जा रहे थे उन्हें रास्ते में एक ईसाई मिला, उसने उनसे कहा कि ऐ मोहम्मदी! मुझे भी अपने साथ लेते चलो, उन्होंने उसे अपने साथ चलने की इजाज़त दे दी, कि ठीक है, चलो सात दिन तक हम दोनों भूखे प्यासे चलते रहे, सातवें दिन इस ईसाई ने मुझसे कहा कि ऐ मोहम्मदी! आज कुछ खाने पीने का इन्तेज़ाम करो, तो मैंने अल्लाह तआ़ला से दुआ क़ी, कि ऐ अल्लाह! इस काफ़िर के सामने आज मुझे ज़लील न कीज़िएगा, हम लोगों के खाने पीने का इन्तेज़ाम कर दीज़िए उसी वक्त आसमान से एक ख़्वान उतरा जिसमें रोटियां भुना हुआ गोश्त ताज़ी खजूरें और साथ में पानी भरा हुआ लोटा भी रखा था। हम दोनों ने उसे खाया पिया और चल दिए।

सात दिन तक हम लोग फिर भूखे प्यासे चलते रहे। सातवें दिन मैंने उस ईसाई से कहा कि आज तुम खाने पीने का इन्तेज़ाम करो। ये सुनकर वो लकड़ी का सहारा लगाकर आसमान की तरफ़ देखने लगा। फिर उसने अपनी ज़बान से कुछ कहा, बस उसी वक्त आसमान से दो खवान उतरे, जिस में हर चीज़ मेरे ख्वान से दूगनी थी। ये देखकर मैं हैरान हो गया और रंज की वजह से मैंने खाना खाने से इन्कार कर दिया। उस ईसाई ने मुझसे कहा क़ि आप खाना खा लीज़िए फिर मैं आपको दो खुशख़बरियां सुनाऊंगा मैंने उससे कहा कि पहले खुशख़बरी सुनाओ फिर मैं खाना खाऊंगा,

उसने मुझे बताया कि तुम्हारे लिए पहली खुशख़बरी ये है, कि मैं मुसलमान हो गया हूं और दूसरी खूशख़बरी ये है कि ये जो आसमान से खाना आया है, ये मैंने अल्लाह तआ़ला से तुम्हारे सदके तफ़ैल में मांगा है। (फ़ज़ायल सदक़ात)

हज़रत अबदुल्लाह रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैं काफ़िले के साथ जा रहा था रास्ते में मैंने एक औरत को देखा कि काफ़िले से आगे आगे जा रही थी मैंने ख़्याल किया कि ये ज़ईफ़ा इसलिए आगे आगे जा रही है, कि कही काफ़िले से छूट न जाए, मेरे पास चन्द दरहम थे, जिन्हें मैं अपने जेब से निकालकर उसको देने लगा और मैंने कहा कि जब काफ़िला मन्ज़िल पर ठहरे, तो मुझे तलाश करके मिल लेना मैं काफ़िले वालों से कुछ चन्दा करके तुझको दे दूंगा, जिससे तुम अपने लिए किराए पर सवारी ले लेना। उसने मेरी बात सुनकर अपना हाथ ऊपर को उठाया तो उसकी मुट्ठी किसी चीज़ से भर गई, जब उसने अपना हाथ खोला तो वो दिरहम से भरा हुआ था। वो दिरहम उसने मुझे दिए और मुझसे बोली कि तूने जेब से निकाले और मैंने गैब से लिए। (फ़ज़ायल सदक़ात)

जिस्म के सात आ़ज़ा की हरकतों का नाम "अमल"

मेरे दोस्तो! अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने दुनिया का निज़ाम इन्सान के अमल के साथ जोड़ा है कि इन्सान जिस्म से जैसा अमल होगा, अल्लाह की तरफ़ से उसके साथ वैसा ही मामला होगा। क्योंकि गैबी निज़ाम का तअल्लुक़ अमल से है सबब से नहीं है अब यहां पर सवाल ये पैदा होता है कि अमल किसे क़हते हैं?

जिस्म से निकलने वाली हरकत को अमल कहते हैं।

लोग तो बेचारे रोज़ा नमाज़, हज और ज़कात वगैरह को ही अमल समझते हैं। देखो! जिस्म के सात आ़ज़ा (आंख, कान, ज़बान, दिमाग़, हाथ, पैर और शर्मगाह) से जो भी हरकत होगी, उस

हरकत का नाम अमल है। इन्सान के जिस्म के ये आज़ा अगर अल्लाह के हुक्म पर उसकी मर्ज़ी पर इस्तेमाल होंगे तो आसमानों के ऊपर से उसे कामयाबी दिलाने वाले फ़ैसले नाज़िल होंगे और गैबी नज़ाम उसकी हिमायत में आजाएंगे और अगर हमने अपने जिस्म का इस्तेमाल अपनी मर्ज़ी पर किया तो ज़िल्लत, तकलीफ़ परेशानियों और बीमारियों से हमें कोई बचा नहीं पाएगा। ये अल्लाह रब्बुल इज्ज़त की तरफ़ से तय शुदा बात है, दुनिया की चीज़ें और माल व सामान हमारे पास चाहिए जितना हो, फ़रिश्तों के ज़रिए चलाया जा रहा गैबी निज़ाम हमारे ख़िलाफ़ हो जाएगा, देखो एक आदमी ने अपनी ज़बान से सिर्फ़ दो बोल झूठ के बोले कि उसके घर पर एक आदमी ने आकर उसके बेटे को पूछा, उसका बेटा घर पर ही था लेकिन उसने अपनी ज़बान से सिर्फ़ दो बोल निकाले कि वो घर पर नहीं है, तो उसकी ज़बान से निकले हुए उन बोल की वजह से वो फ़रिश्ता जो उसकी तरफ़ आने वाली बलाओं और मुसीबतों को उसके जिस्म से दूर करता था उसके इस अमल की वजह से उसके जिस्म से एक मील दूर चला जाता है, हज़रत अली रज़ि0 ने फ़रमाया हर इन्सान पर दो ऐसे फ़रिश्ते मुकर्रर किए जाते हैं जो बलाओं और मुसीबतों को उसकी तरफ़ आने से रोकते हैं लेकिन जब मुक़द्दर में लिखा हुआ फ़ैसला सामने आ जाता है तो ये दोनों फ़रिश्ते उसके पास से हट जाते हैं।

(अबूदाऊद)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया कि जब इन्सान झूठ बोलता है तो उसके झूठ की बदबू की वजह से फरिश्ते एक मील दूर चले जाते हैं। (तिर्मिज़ी)

इस तरह हज़रत बिलाल मुज़नी रज़ि0 से रिवायत है कि

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया तुम में से कोई शख़्स अल्लाह तआ़ला को खुश करने लिए ज़बान से कोई ऐसा बोल निकाल देता है जिन बोलों को वो ज़्यादा अहम नहीं समझता लेकिन उन बोलों की वजह से अल्लाह तआ़ला क़यामत के लिए उससे राज़ी होने का फ़ैसला फ़रमा देते हैं। (तिर्मिजी)

अल्लाह करे हम सबको अपनी ज़बान से निकलने वाले बोलों की हक़ीक़त का इल्म हो जाए जी! सिर्फ़ ज़बान से निकलने वाले बोलों की ताक़त का पता हो जाए कि हज़रत हिशाम बिन आस उमवी रज़ि0 फ़रमाते हैं कि जब हम रुम के बादशाह हिरक़्ल के महल में पहुंचे और वहां पहुंच कर अपने मुंह से "لا الہ الا اللہ اللہ اکبر" के बोल निकाले तो अल्लाह ही जानता है कि उसके महल का बालाखाना ऐसे हिलने लगा जिस तरह पेड़ की टेहनी को हवा हिलाती है। (अलबिदाया वन्निहाया)

अगर अपनी ज़बान से निकलने वाले बोलों की ताक़त की बात अभी न समझ में आरही हो तो इस हदीस से समझने की कोशिश करो कि हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया कि कोई शख़्स ऐसा नहीं है कि वो अपनी ज़बान से لا الہ الا اللہ के बोल निकाले और उन बोलों के लिए आसमानो के दरवाज़े न खुल जाएं यहां तक कि ये बोल सीधा अर्श पर पहुंचता है बशर्ते कि वो गुनाहे कबीरा से बचता हो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया कि अगर तमाम आसमान व ज़मीन का एक घेरा हो जाए तो भी لا الہ الا اللہ के बोल उस घेरे को तोड़कर अल्लाह तआ़ला तक पहुंचकर रहेगा। (बज़्ज़ाज़)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया कि जब कोई शख़्स لا الہ الا اللہ बोल बोलता है तो उन

बोलों के लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, कि ये बोल सीधे अर्श तक पहुंचते हैं, अर्श के ऊपर नूर का एक सुतून है जो उन बोलों की वजह से हिलने लगता है, अल्लाह तआला सब कुछ जानने के बावजूद सुतून से पूछते हैं, कि तू क्यों हिल रहा है? सुतून अर्ज़ करता है कि उन बोलों के बोलने वाले की अभी मग़फ़िरत नहीं हुई है, अल्लाह तआला सुतून से कहते हैं तू ठहर जा! मैंने उसकी मग़फ़िरत कर दी।

देखो! इस बात को यूं समझा जा सकता है कि आपने यहां हिन्दुस्तान से अमरीका में रहने वाले किसी आदमी को फोन मिलाया, उसका फोन वायब्रेट पर लगा हुआ मेज़ पर रखा है वो सौ (100) ग्राम का मोबाईल आप के फ़ोन मिलाने पर वहां अमरीका में मेज़ पर हिलने लगता है, अगर उसके मोबाईल पर आपका नाम फ़ीट है, तो उसे ये मालूम हो जाता है कि इस शख़्स को मेरी ज़रूरत है, कौन मुझे फ़ोन कर रहा है।

मेरे दोस्तो! ये तो सिर्फ़ ज़बान से निकले हुए बोल की बात है, आंख, कान, दिमाग़, हाथ, पैर और शर्मगाह से होने वाली हरकतों की ताक़त का भी अभी हमें अन्दाज़ा नहीं है। इसी के लिए फ़ज़ायल की तालीम है, कि हमें पता तो चले कि हमारे जिस्म के सही इस्तेमाल पर आसमानों के ऊपर से क्या फ़ैसला आएगा और अगर हमने अपने जिस्म को अपनी मर्ज़ी पर इस्तेमाल किया तो आसमानों के ऊपर से क्या फ़ैसला आएगा। इस ज़माने में इस बात को मोबाईल या कमप्यूटर से समझा जा सकता है कि मोबाईल या कमप्यूटर का "की बोर्ड" कि उसके जिस बटन पर हाथ रखा जाएगा उसका नतीज़ा स्क्रीन पर ज़ाहिर हो जाएगा ऐसा नहीं है कि कोई अमीर आदमी इस बटन को दबाए तो कुछ और नज़र आए और ग़रीब दबाए तो कुछ और, मोबाईल या कमप्यूटर के किस

बटन से स्क्रीन पर क्या ज़ाहिर होगा ये बात मोबाईल या कमप्यूटर बनाने वाले ने पहले ही बता दी थी, अगर उस तरीके से हटकर कोई आदमी मोबाईल या कमप्यूटर का इस्तेमाल अपनी मर्ज़ी से करेगा, तो परेशानी में फंसेगा। हां ये पक्की बात है, अब इसका इस्तेमाल करने वाला चाहे।

अमीर हो या ग़रीब
पढ़ा लिखा हो या अनपढ़
शहरी हो या देहाती
मर्द हो या औरत

ठीक इसी तरह अल्लाह तआला ने भी इन्सान के जिस्म को बनाकर नबियों के ज़रिए से इस्तेमाल करने का तरीक़ा बताया है, जो इस तरीके पर इस्तेमाल होगा, दुनिया व आख़िरत में वही कामयाब होगा।

इन्सान की रोज़ी रोटी
कपड़ा और मकान
सेहत और बीमारी
इज्ज़त और ज़िल्लत
कामयाबी और नाकामी

इन सारी चीज़ों का तअल्लुक़ अल्लाह तआला ने इन्सान के जिस्म से ज़ाहिर होने वाली हरकतों से जोड़ा है, जिस्म की इन्हीं हरकतों को अमल कहते हैं, इन्सान जब ईमान को नहीं सीखता है, तो ये अपनी हाजतों और ज़रूरतों को कायनात में फैली हुई चीज़ों से जोड़ लेता है, हालांकि जिब्राईल से लेकर चींटी तक की सारी मख़्लूक़ की हर हाजत और हर ज़रूरत को अल्लाह तआला ही अपनी क़ुदरत से पैदा करते हैं और वही पूरी करते हैं।

او كالذى مر على قرية وهى خاوية على عروشها قال انى يحى هذه

الله بعدموتها فا ماته الله مأة عام ثم بعثه قال كم لبثت قال لبثت يوما اوبعض يوم قال بل لبثت ماة عام فانظر الى طعامك وشرابك لم يتسنه وانظر الى حمارك ولنجعلك اية للناس وانظر الى العظام كيف ننشزها ثم نكسوها لحما فلما تبين له قال اعلم ان الله على كل شيء قدير. (البقرة ٢٥:٩)

देखो! उज़ैर अलैहि० की रूह को उनके जिस्म से सौ (100) साल तक निकाले रखा उज़ैर अलैहि० को सौ (100) साल तक न खाने पीने की ज़रूरत पड़ी और न ही पेशाब पाख़ाने की हाजत हुई, क्यों? क्योंकि जिस्म से रूह निकाल ली है।

فضربنا على اذانهم في الكهف سنين عددا ثم بعثنا هم لنعلم اى الحزبين احصى لما لبثوا امدا. (الكهف: ١٢. ١٣)

इसी तरह अस्हाबे कहफ़ के चन्द लोग जिन्होंने एक ग़ार में पनाह ली थी, अल्लाह तआ़ला ने तीन सौ नौ (309) साल तक उनकी रूह को उनके जिस्म से निकाले रखा उन्हें भी न खाने पीने की ज़रूरत पड़ी और न ही पेशाब पाख़ाने की हाजत हुई।

मेरे दोस्तो! अल्लाह तआ़ला हर रोज़ इन्सान के जिस्म से उसकी रूह को निकालते हैं और मुक़द्दर में लिखी जा चुकी ज़िन्दगी पूरी करने के लिए फिर वापस भेज देते हैं। हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया। जब इन्सान गहरी नींद में सो जाता है तो उसकी रूह को अर्श पर चढ़ाया जाता है जो रूह अर्श पर पहुंच कर जागती है, उसका ख़्वाब सच्चा होता है और जो पहले ही जाग जाती है उसका ख़्वाब झूठा होता है। (हैसमी)

कायनात वाला रास्ता, इम्तेहान वाला रास्ता है

इन्सान की रूह जब उसके जिस्म में रहती है तो अल्लाह

तआला इम्तेहान के लिए उसके जिस्म में हाजतें भेजते रहते हैं और देखना ये चाहते हैं कि मेरा बन्दा उन हाजतों को किस रास्ते से पूरी करता है। शिर्क वाले रास्ते से, या तौहीद वाले रास्ते से। शिर्क वाला रास्ता ये है कि इन्सान अपने पलने में चीजों को शरीक कर लेता है कि पालने वाले तो अल्लाह हैं मगर बगैर सबब के कैसे पालेगा? तौहीद वाला रास्ता ये है कि अल्लाह तआला ही अपनी कुदरत से पाल रहे हैं और वही अपनी कुदरत से पालेंगे हां उनकी कुदरत से पलने के लिए उनके अहकामात हैं और नमूने के तौर पर रसूलुल्लाह सल्ल0 की ज़िन्दगी और आप सल्ल0 का तरीक़ा है। देखो अल्लाह तआला ने दुनिया के अन्दर इन्सान के पलने के लिए दो रास्ते अ़ता फ़रमाए हैं एक रास्ता कायनात वाला और एक रास्ता अहकामात वाला। कायनात वाला रास्ता इम्तेहान वाला रास्ता है और अहकामात वाला रास्ता इन्आ़मात दिलाने वाला रास्ता है। इस ज़माने में अगर कोई इन्सान चाहे तो मोबाईल या कमप्यूटर से समझ सकता है। देखो अगर आपको अपने कमप्यूटर पर उर्दू में कुछ लिखना है तो उसके लिए आपको अपने कमप्यूटर में उर्दू का सॉफ्टवेयर डालना पड़ेगा अब उस साफ़्टवेयर को हासिल करने के लिए दो रास्ते हैं, एक रास्ता ये है कि आप उसे बाज़ार से ख़रीद कर लाओ यानी अपनी जान, माल और वक़्त लगाओ, दूसरा रास्ता ये है कि आप इन्टरनेट के ज़रिए बराहे रास्त अपने कमप्यूटर में डाउन लोड करो, तो बराहे रास्त फ़ायदा हासिल करने के लिए शर्त ये है कि आपने कमप्यूटर का इस्तेमाल करना सीखा हो। तो एक तरफ़ दुकान से ख़रीद कर लाना और दूसरी तरफ़ हवा के रास्ते से आना। सहाबा किराम रज़ि0 ने अल्लाह के हुक्मों पर अपने जिस्म को इस्तेमाल करना सीखा था। जिसकी वजह से वो बराहेरास्त आसमानों के ऊपर से अपनी ज़रूरतों को पूरा कराते थे जैसे जुबैर

बिन अबी इहाब की बांदी हज़रत माविया रज़ि0 फ़रमाती हैं कि हज़रत खुबैब रज़ि0 को मेरे घर की एक कोठरी में कैद करके रखा गया था, एक बार मैंने दरवाज़े के दराज़ से झांका तो उनके हाथ में इन्सान के सर के बराबर अंगूर का एक खोशा था, जिसमें से वो अंगूर तोड़कर खा रहे थे जबकि उस वक़्त पूरे अरब में कहीं अंगूर नहीं था। ये देखकर मैंने अपना जन्नार काट डाला और मुसलमान हो गया। कि बेशक अल्लाह तआला ज़रूरतों के पूरा करने में किसी के मोहताज नहीं हैं। (असाबा 419-1)

मौलाना यूसुफ़ साहब रह0 का आख़री ख़िताब

इन रास्तों और इन बातों को हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह0 ने अपने इन्तेक़ाल से बीस दिन पहले पाकिस्तान के सफ़र में बयान फ़रमाया था जिसे नीचे लिखा जा रहा है।

हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह0 ने फ़रमाया। भाईयों दोस्तो! अपनी जिन्दगी में हुजूर सल्ल0 के वो तरीक़े लाओ जो अल्लाह रब्बुलइज्ज़त ने अपनी ज़ात से पलने के लिए दिए हैं क्योंकि नबूव्वत मिलने के बाद हुजूर सल्ल0 ने इन्सानों से लेने का कोई रास्ता इख़्तेयार नहीं फ़रमाया, अपने तायफ़ तबूक, यमन, हज़रमूत और नजद वालों को नमाज़ बतलाई कि जो कलमा पढ़े नमाज़ बनाने की मेहनत करे जब ये यक़ीन बने की अल्लाह रब है और रास्ता नमाज़ है और इसी बात की दावत भी दी जा रही हो तो दुनिया की तर्तीब बदलेगी। इसलिए नमाज़ को अन्दर से बनाओ क्योंकि मसले का तअल्लुक़ अन्दर से है, जब ये बना लो, तो नमाज़ की बुनियाद पर तीन लाईन ठीक करो,

घर,

कारोबार,

और मुआशरत,

हुज़ूर सल्ल0 ने रास्ते में भी कमाई और घर है और इन्सानों के रास्ते में भी कमाई और घर के नक़्शे हैं कमाई परवरिश नहीं होती, बल्कि अल्लाह से परवरिश तो अल्लाह का हुक्म मानकर लेंगे। जब ये बात है कि कमाई से परवरिश नहीं हो रही है, तो फिर क्यों कमाया जाए, तो पहले नमाज़ से परवरिश लो लेकिन नमाज़ के बाद दो रास्ते हैं

कमाना

और न कमाना

अगर कोई न कमाए और सिर्फ़ नमाज़ पढ़कर अल्लाह से ले, तो भी ठीक है। पर उसमें शर्त सिर्फ़ ये है, कि अगर न कमाओ, तो

किसी मख़्लूक़ का माल न दबाना,

किसी के सामने अपने हाल का इज़हार न करना,

किसी से सवाल न करना,

इस्राफ़ न करना,

तकलीफ़ पहुंचे तो जज़ा-फ़ज़ा न करना,

हर हाल में अल्लाह से राज़ी रहना,

अगर ये बातें अन्दर पैदा हो जाएं तो कमाई की ज़रूरत नहीं है। इसकी मिसाल के लिए चारों सिलसिले के औलिया अल्लाह हैं,

हुज़ूर सल्ल0 हैं,

हज़रत ईसा अलैहि0 हैं,

अस्हाबे सुफ्फ़ा हैं

और इसी तरह लाखों मिसालें हैं जिन्होंने सिर्फ़ नमाज़ से अपनी परवरिश का काम चलाया है इसलिए अगर न कमाना हो तो गसब, इशराफ़, सवाल, जज़ा-फ़ज़ा और घबराहट न हो हां अगर कमाते हो तो इसकी बुनियाद ये है कि कमाई से परवरिश नहीं

होगी। अल्लाह सब कुछ नमाज़ से देंगे। मैं परवरिश के लिए नहीं कमाऊंगा बल्कि हुज़ूर सल्ल0 का तरीक़ा कमाई में चलना है। हम कमाई के शोबों में अल्लाह के हुक्मों को पूरा करने जा रहे हैं, हमें ये यक़ीन सीखना है कि अल्लाह पाल रहे हैं इसलिए अल्लाह के हुक्मों को तोड़कर नहीं कमाना है, अब जो चीज़ें हलाल हैं उनसे कमाने के दो तरीक़े हैं उनमें एक तरीक़ा हलाल है और एक तरीक़ा हराम है। कि सूवर, कुत्ता, बिल्ली वग़ैरह का खाना हराम है और बकरी, गाय, मुर्गी और हरन हलाल है इन हलाल में भी हलाल और हराम बनेगा। अगर "بسم الله الله اكبر" कह कर ज़िबह किया है, तो ये हलाल है और अगर "بسم الله الله اكبر" नहीं कहा है तो फिर ये हराम है, अगर "بسم الله الله اكبر" कहा पर बजाए गर्दन पर छुरी फेरने के पेट से काटा तो हराम, क्योंकि तरीक़ा ग़लत था, इसलिए अगर कमाना है तो मसायल की पाबन्दी के साथ कमाओ इसलिए कि जो बात नमाज़ में कही वही कमाई में कहूं कि "الحمد لله رب العلمين" कि जब इस तरह से हमारी कमाई होगी, तो दुनिया में चमकना और फैलना और फूलना होगा। सैलाब या बमबारी हो, पर हमारी दुकान और घर का बाल बाका न होगा क्योंकि अल्लाह के महबूब का तरीक़ा है चाहे दूकान मिट्टी की हो, अगर हुज़ूर सल्ल0 का तरीक़ा है तो एटमबम से ज़्यादा ताक़तवर है। (हज़रत जी की यादगार तक़रीरें)

"बिलाल पार्क लाहौर" से सदाए ईमान

इसी तरह अपने इन्तेक़ाल से अट्ठारह घन्टे पहले यानी 1- अप्रेल 1965 बिलाल पार्क लाहौर में मग़रिब की नमाज़ के बाद हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह0 ने जो बयान फ़रमाया, उसे भी नीचे लिखा जा रहा ताकि किसी तरह ये बातें हमारी समझ में आजाएं। हज़रत ने

फ़रमायाः

ان الذين قالو اربنا الله ثم استقامو اتتنزل عليهم الملئكة الا تخا فوا و لا تحزنوا و ابشروا بالجنة التى تو عدون نحن اولياء كم فى الحيوة الدنيا وفى الا خرة ولكم فيها ما تشتهى انفسكم ولكم فيها ماتدعون نزلا من غفور رحيم. (حم سجده ٣٠،٣٢)

अल्लाह रब है ये लफ़्ज़ नहीं बल्कि एक मेहनत है, जिस तरह कोई शख़्स अगर ये कहे कि मैं दुकान से पलता हूं या खेती से या मुलाज़मत या हुकूमत से पलता हूं तो ये कहना लफ़्ज़ नहीं है बल्कि मेहनत है इतना कहने के बाद मेहनत शुरू हो जाती है कि ज़मीन ख़रीदता है हल चलाता है, बीज डालता है, पानी लगाता है गर्ज़ इस लफ़्ज़ के पीछे एक लम्बी चौड़ी मेहनत की ज़िन्दगी है ठीक इसी तरह जब कोई ये कहे कि हमारे रब अल्लाह हैं, तो सिर्फ़ ये कह कर बात ख़त्म नहीं हुई, बल्कि शुरू हुई कि जब अल्लाह पालने वाले हैं तो ग़ैरों से पलने का यक़ीन दिल से निकाले ये पहली मेहनत हुई कि मैं ज़मीन व आसमान और उसके अन्दर की चीज़ों से नहीं पलता बल्कि अल्लाह से पलता हूं उनको मेहनत करके दिल का यक़ीन बनाओ। इस यक़ीन को रग व रेशा में उतारने के लिए मोहम्मद सल्ल० की ज़िन्दगी और अपना तरीक़ा है।

"अल्लाह से पलता हूं" इस बोल की हक़ीक़त दिल में उतारने के लिए मुल्क व माल तिजारत व खेती की मेहनत नहीं है, बल्कि इस लफ़्ज़ पर नबियों वाली मेहनत और हुज़ूर सल्ल० वाली मेहनत करनी होगी, यानी मेहनत करके इस हक़ीक़त तक पहुंचो कि हमें सीधे-सीधे अल्लाह से पलना है, अल्लाह को पालने में खेती और दुकान की ज़रूरत नहीं है, वो अपने हुक्मों से पालते हैं। अगर ये हक़ीक़त दिल में पैदा हो जाए, तो अमेरीका और रूस भी तुम्हें

जूतियों में होगा बस शर्त इतनी है कि ये सिर्फ़ ज़बान के बोल न हों, बल्कि दिल के अन्दर की हक़ीक़त हों, इसके लिए हुज़ूर सल्ल0 के तरीक़े पर मेहनत करो। अल्लाह तर्बियत करने वाले हैं अल्लाह को माबूद बनाकर अल्लाह की इबादत करके पलना है अगर इबादत से पलने पर मेहनत करोगे तब दिल में उतरेगा, इबादत नमाज़ है नमाज़ तुम्हारे इस्तेमाल का अपना तरीक़ा है। ज़मीन या मोटर या जानवरों के तरीक़े का नाम नमाज़ नहीं है। बल्कि अपनी आंख ज़बान, कान, हाथ, पैर और दिमाग को इस तरह इस्तेमाल करना सीखो, जिस तरह हुज़ूर सल्ल0 ने इस्तेमाल किया है। नमाज़ क्या है? नमाज़ कायनात से नहीं बल्कि अल्लाह तआला से दोनों दुनिया में लेने के वास्ते हमारे अपने जिस्म के इस्तेमाल का तरीक़ा है। ये नमाज़ है हमको सिर्फ़ अल्लाह पालेगा, बस हमारे अपने जिस्म का इस्तेमाल हुज़ूर सल्ल0 के तरीक़े पर हो जाए। (हज़रत जी की यादगार तक़रीरें)

एक मौक़े पर हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह0 ने ये भी फ़रमाया कि लोगों को ये धोखा लगा है कि मैं चीज़ों से पलता हूं, अल्लाह रब्बुलइज्ज़त चीज़ों से नहीं पालते बल्कि हर एक को अपनी क़ुदरत से पाल रहे हैं। अल्लाह की क़ुदरत से फ़ायदा उठाने के लिए इबादत है। हुज़ूर सल्ल0 ने अपने सहाबा रज़ि0 को ज़ाहिर के ख़िलाफ़, अमल करके दुआ मांगकर अल्लाह की क़ुदरत के ज़रिए अपने सारे मसलों को हल करना सिखलाया था। अल्लाह की क़ुदरत से फ़ायदा हासिल करने के लिए अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात का यक़ीन अल्लाह की इबादत और अल्लाह के बन्दों से हमदर्दी ख़िद्मते ख़ल्क़ और इख़्लासे अमल के ज़रिए सहाबा रज़ि0 को दुआ की कुव्वत हासिल हो गई थी। दुआ एक ऐसी बुनियाद है कि आमाल से तो तुम नाकाम हो सकते हो, लेकिन तुम

मालदार हो या मुफ़लिस
अमीर हो या फ़कीर
हाकिम हो या महकूम
बीमार हो या तन्दरुस्त

हर सूरत में अल्लाह तआला तुमको दुआ के ज़रिए ज़रूर कामयाब करेगा। चुनांचे हुज़ूर सल्ल0 ने अपने सहाबा रज़ि0 को दुआ के रास्ते अपनी ज़रूरतों का पूरा कराना खूब अच्छी तरह सिखलाया था। इन्फ़िरादी और इज्तेमाई दोनों मसलों में उनकी दुआएं खूब चला करती थी। (हज़रत जी की यादगार तक़रीरें)

मेरे दोस्तो! आज हमें ईमान के सीखने की ज़रूरत इसलिए नहीं है और हम ईमान को इसलिए सीख रहे हैं क्योंकि हमारे सारे काम पैसे से हो रहे हैं। इसलिए माल को कमाना सीखना और फिर माल का कमाना यही हमारी ज़िन्दगी का मक़सद बन गया है।

बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है जिसमें रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया कि खुदा की क़सम! मुझे तुम्हारे ऊपर फ़कीर और फ़ाक़े का खौफ़ नहीं है, बल्कि इसका खौफ़ है कि तुमपर दुनिया की वुसअ़त हो जाए, जैसा कि तुमसे पहली उम्मतों पर हो चुकी है, फिर तुम्हारा भी उसमें दिल लगने लगे जैसा कि उनका लगने लगा था, पस ये चीज़ तुमहें भी हलाक करदेगी जैसा कि पहली उम्मतों को कर चुकी है।

बड़े शर्म की बात है, कि जिस चीज़ को हमारे प्यारे नबी मोहम्मद सल्ल0 ने इस उम्मत का फ़ित्ना बतलाया हो उसी चीज़ को आज हम मुसलमानों ने अपना रब और माबूद बनाया हुआ है। अब हमें कैसे पता चले कि हमने माल को माबूद बनाया हुआ है? तो इस बात को जानना बहुत आसान है। कैसे? तो वो इस तरह से कि जब तुम अपने घर में दाख़िल हो और तुम्हारे घर वाले तुमसे

कहें कि घर में आटा ख़त्म हो गया, जाओ आटा लेकर आओ। तो तुम्हे फ़ौरन पैसे का ख़्याल आएगा, जिस जेब में है उस जेब का ख़्याल आएगा, जेब में नहीं हैं अलमारी में है तो अलमारी का ख़्याल आएगा, अगर अलमारी में नहीं है बैंक में है तो बैंक का ख़्याल आएगा। गर्ज़ ये कि हर चीज़ का तो ख़्याल आएगा। पर रब का ख़्याल न आएगा। अब फ़ैसला करो हमने किसे अपना रब बनाया हुआ है?!! तो पता ये चलेगा कि हुज़ूर सल्ल0 की बात सच्ची कि हमने माल ही को अपना रब बनाया हुआ है और इसी को हासिल करने के लिए हमारा जीना और मरना है हम अपनी ज़बानों से तो ये कहते हैं कि

चींटी से लेकर जिबराईल तक
ज़मीन से लेकर आसमान तक
ज़र्रे से लेकर पहाड़ तक
क़तरे से लेकर समन्दर तक

किसी से कुछ नहीं होता पर दिलों के अन्दर माल का यक़ीन बैठा हुआ है कि करने वाली ज़ात तो अल्लाह ही है, पर माल के बगैर कुछ नहीं होगा। इसलिए कि माल से चीज़ें और सामान मिलेगा और चीज़ों और सामान से काम बनेगा। हांलाकि ये सारी दुनिया मुरदार है तो भला मुर्दे से क्या होगा? ये सोचने वाली बात है कि ख़बर हुज़ूर सल्ल0 ने दी है कि ये सारी दुनिया मुरदार है और

इसको चाहने वाले
इसको पालने वाले
इसको हासिल करने वाले
और इसकी तलब रखने वाले

कुत्ते हैं। इसलिए कि मुरदार को कुत्तों के अलावा और कोई पसन्द नहीं करता।

मेरे दोस्तो! जिस कायनात को बनाने के बाद अल्लाह तआला ने फिर दोबारह उसे देखा न हो, आज ईमान न सीखने की वजह से हमने उसी से अपने मसलों को जोड़ लिया।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि कोई बन्दा अल्लाह के यहां चाहे जितनी इज्ज़त व शरफ़ वाला हो लेकिन जब दुनिया की कोई चीज़ या सामान उसे मिलता है तो उस चीज़ को लेने की वजह से अल्लाह के यहां उसका दर्जा कम हो जाता है।

(हुलिया 306-1)

तुम्हारे साथ वो होगा जो अन्बिया और सहाबा के साथ हुआ

मेरे दोस्तो! जब हम ईमान को सीखते हुए दावत के आलमी तक़ाज़ों को पूरा करते हुए अपने जिस्म के आज़ा को अल्लाह की मर्ज़ी पर इस्तेमाल करेंगे जिस तरह हुज़ूर सल्ल० ने इस्तेमाल करके दिखलाया है तो फिर वो होगा जो अन्बिया और सहाबा के साथ हुआ है। कि बनी इस्राईल को चालीस (40) साल तक मन और सलवा आसमान से उतारकर दिखलाया।

मरियम बिन इमरान अलैहि० को उनके कमरे में आसमान से फल उतारकर खिलाया।

बनी इस्राईल को पत्थर से बारह चशमे निकालकर पानी पिलाया।

मूसा अलैहि० को जब उनकी माँ ने लकड़ी के सन्दूक में बन्द करके दरिया नील में बहा दिया तो तीन दिन और तीन रात तक उन्हीं के हाथों के अंगूठों से दूध और शहद निकालकर पिलाया।

ईसा अलैहि० के हवारीन को थाल में रख कर आसमान से पका हुआ खाना उतारकर खिलाया।

इबराहीम अलैहि0 को जब नमरूद ने आग में फेंका तो आग को बाग़ बनाकर चालीस (40) दिन तक बाहर से नज़र आने वाली उस आग के अन्दर ही आसमान से खाना उतारकर खिलाया।

इबराहीम अलैहि0 के मुक़ाबले पर आए हुए नमरूद और उनकी फ़ौज को मच्छरों से हलाक कराया।

अब्रहा के लशकर को चिड़ियों से कन्करियां फेंकवा कर तबाह करके दिखलाया।

बनी इस्राईल को दरियाए नील में रास्ता बनाकर निकाला।

इस्माईल अलैहि0 के लिए ज़मज़म को निकाला।

अय्यूब अलैहि0 के सड़े हुए जिस्म को सही सालिम बनाया।

ईसा अलैहि0 को दुशमन से बचाकर आसमान पर उठाया।

सालेह अलैहि0 की क़ौम के लिए पहाड़ से ऊंटनी निकाला।

यूनुस अलैहि0 को चालीस (40) दिन मछली के पेट में रखकर बाहर निकाला।

दाऊद अलैहि0 के हाथों में लोहे को मोम बनाया।

सुलैमान अलैहि0 को तमाम मख़्लूक़ पर बादशाह बनाया।

ज़करिया अलैहि0 को बुढ़ापे में औलाद अता फ़रमाया।

मूसा अलैहि0 की लाठी को जादूगरों के सामने सांप बनाया।

इबराहीम अलैहि0 की बीवी सारह रज़ि0 की इज़्ज़त बचाने के वास्ते फ़िरऔन के जिस्म को पत्थर का बनाया।

बनी इस्राईल के चेहरों को सुव्वर और बन्दर बनाया।

नूह अलैहि0 की क़ौम को सैलाब में ग़र्क़ करके दिखलाया।

मेरे दोस्तो! अगर हम लोग भी अल्लाह के हुक्मों को मज़बूती से पकड़ लें तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ज़ाहिर के ख़िलाफ़ अपनी कुदरत से हमारी तुम्हारी ज़रूरतों को भी पूरा करेगा। कि कभी तुम्हारी ज़रूरत की चीज़ों को दूसरों से हदिया दिलाकर पूरा

कराएगा।

कभी हज़रत मिक़्दाद रज़ि0 की तरह चूहे से सोना (अशरफ़ी) भेजवाएगा।

कभी उम्मे अयमन रज़ि0 की तरह आसमान से पानी का भरा डोल उतारेगा।

कभी हज़रत ख़ुबैब रज़ि0 की तरह बन्द कमरे में आसमानो से उतारकर अंगूर खिलाएगा।

कभी तुम्हारी चक्की से आटा निकालकर खिलाएगा।

कभी उम्मे साएब रज़ि0 की तरह तुम्हारे मुर्दा बच्चे को ज़िन्दा करेगा।

कभी अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ि0 की तरह हाथ में पकड़ी हुई टहनी को तलवार बनाएगा।

कभी सईद बिन वक़्क़ास रज़ि0 की तरह तुम्हारे लिए दरिया को मुसख़्ख़र करेगा।

कभी तमीम दारी रज़ि0 की तरह तुम्हारे लिए आग को मुसख़्ख़र करेगा।

कभी हज़रत उमर रज़ि0 की तरह तुम्हारी भी आवाज़ तीन (300) सौ मील दूर पहुंचाएगा।

कभी अला हज़रमी रज़ि0 की तरह तुम्हारे लिए समुन्दर को मुसख़र करेगा।

कभी हमज़ा बिन अम्र असलमी की तरह तुम्हारे हाथ की उंगलियों से टार्च की तरह रोशनी निकालेगा।

कभी हज़रत सफ़ीना रज़ि0 की तरह शेर से रहबरी कराएगा।

कभी सहाबा की समुन्दर से अंबर मछली भेजेगा।

कभी हज़रत अबू मुअल्लक़ की तरह तुम्हारे दुशमन को हलाक करने के लिए चौथे आसमान के फ़रिश्ते को भेजेगा।

कभी जैद बिन हारिस रज़ि0 की तरह तुम्हारे लिए भी सातवें आसमान से फ़रिश्ते को उतार कर तुम्हारी मदद के लिए भेजेगा।

कभी हज़रत उमामा रज़ि0 की तरह तुम्हारे कमरे में तीन सौ (300) अशरफ़ी उतारेगा।

कभी बदर और उहद की तरह तुम्हारे लिए भी आसमानों से फ़रिश्तों को उतारेगा।

कभी अबूहुरैरह रज़ि0 की तरह तुम्हारे भी तोशादान से पचीस (25) साल तक खजूरें निकाल कर खिलाएगा।

कभी ऊकाशा बिन मुहसिन रज़ि0 की तरह तुम्हारी भी लकड़ी को तलवार बनादेगा।

कभी रात के अंधेरे में एक सहाबी की तरह तुम्हारी लाठी से रोशनी निकालकर टार्च की कमी को पूरा करेगा।

कभी उबय बिन काब रज़ि0 की तरह बारिश के पानी से सफ़र के दौरान भीगने से बचाएगा।

कभी ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 की तरह तुम्हारे कहने पर शराब को सिरका बनाएगा।

कभी हज़रत औफ़ रज़ि0 की तरह तुम्हें दुशमन की कैद से रस्सी को खोलकर आज़ाद कराएगा।

कभी हिशाम बिन आस रज़ि0 की तरह दुश्मन के हमले में "لا اله الا الله اکبر" के कहने पर उसका बाला ख़ाना टूटकर गिर जाएगा।

ग़ैबी निज़ाम

وما یعلم جنود ربک الا هو، وما هی الا ذکری للبشر

"तुम्हारे रब के लशकरों (फ़रिश्तों) को तुम्हारे रब के सिवा कोई नहीं जानता" (मुद्दस्सिर 31)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 से रिवायत कि हुज़ूर सल्ल0 का इरशाद है। अल्लाह तआला ने जो फ़रिश्ते पैदा फ़रमाए हैं, उनमें ग़ौरो फ़िक्र करो। (तफ़सीर कश्शाफ़ हदीस 1193)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया सातवें आसमानों में एक बालिश्त के बराबर भी कोई ऐसी जगह नहीं है, जहां पर फ़रिशते न हों। कोई क़याम में, कोई रूकू में और कोई सज्दे में है पस जब क़यामत का दिन होगा, तो सब मिलकर अर्ज़ करेंगे (ऐ अल्लाह!) आपकी ज़ात पाक है, हमने आपकी इबादत इस तरह नहीं की, जिस तरह आपकी इबादत करने का हक़ था। हां ये ज़रूर है कि हमने आप के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराया। (इब्ने अबी हातिम)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया अल्लाह की मख़्लूक़ में फ़रिश्तों से ज़्यादा कोई मख़्लूक़ नहीं है। ज़मीन पर कोई भी ऐसी चीज़ नहीं उगती जिसके साथ एक मुवक्किल फ़रिश्ता न होता हो। (अबू शेख़)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को नूर से पैदा किया फिर उसमें रूह डाली। पस फ़रिश्ते पैदाईश के ऐतबार से मक्खी से भी छोटे हैं, पर उनकी तादाद गिनती के ऐतबार से हर चीज़ से ज़्यादा है। (मनदे बज़ाज़)

हज़रत अबू सईद रज़ि0 फ़रमाते हैं, कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया मेराज में जब मैं और जिबराईल पहले आसमान पर पहूंचे तो वहां इस्माई नाम का एक फ़रिश्ता मिला जो पहले आसमान के फ़रिश्तों का सरदार है उसके सामने सत्तर हज़ार (70000) फ़रिश्ते हैं। उनमें से एक के साथ में एक एक लाख फ़रिश्तों की जमात है। (इब्ने अबी हातिम)

हज़रत आयशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने

फ़रमाया।

फ़रिश्तों को नूर से पैदा किया गया।

जिन्नात को भड़कती आग से पैदा किया गया।

आदम को उस चीज़ से पैदा किया गया है, जिसकी सिफ़त अल्लाह तआला ने तुमसे बयान फ़रमाई है। (यानी मिट्टी से) (मुस्लिम किताबुज़्ज़ोहद)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं कि "मलकुलमौत" को इन्सानों की रूह निकालने का काम सौंपा गया है। जिन्नात के लिए और फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं शैतानों पर परिन्दों, मछलियों और चींटियों की रूह निकालने के लिए दूसरे फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं।

(जुवैबर फ़ी तफ़सीरिया)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं कि (एक बार हम लोगों पर) बादल ने साया किया, तो हमने उससे (बारिश की) उम्मीद की तो रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया। जो फ़रिश्ता बादलों को चलाता है वो अभी हाज़िर हुआ था, उसने मुझे सलाम किया और बतलाया कि वो इस बादल को वादी यमन की तरफ़ ले जा रहा हूं इस जगह का नाम ज़रआ है। जहां इसका पानी बरसेगा। (अबूअवाना)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं यहूदी लोग रसूलुल्लाह सल्ल0 के पास आए और कहने लगे ऐ मोहम्मद हमें बतलाए ये रअ़द क्या है। आप सल्ल0 ने फ़रमाया रअ़द अल्लाह के फ़रिश्तों में एक फ़रिश्ता है, जो बादलों का निगारां है। उसके हाथ में आग का कोड़ा है, जिससे बादलों को तंबीह करता है और जहां अल्लाह तआ़ला उसे हुक्म देते हैं वहां (बादलों को) ले जाता हैं "बर्क़" उस फ़रिश्ते का बादल को कोड़ा मारना है। यहूदियों ने कहा, आपने सच फ़रमाया। (अहमद तिर्मिज़ी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं कि "रअ़द" वो फ़रिश्ता है, जो बादलों को तस्बीह से चलाता है, जिस तरह ऊंटों को गाकर हांकने वाला हंकाता है इसी तरह वो बादलों को डांटता है, जिस तरह चरवाहा अपनी बकरियों को डांटता है। (इब्ने मुन्ज़िर इब्ने अबीद्दुनिया)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से "रअद" के बारे में सवाल किया गया तो आप रज़ि0 ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने "रअद" को बादलों के चलाने की ज़िम्मेदारी सुपुर्द की है। पस जब अल्लाह तआ़ला इरादा फ़रमाते हैं कि किसी बादल को किसी जगह भेजें तो रअ़द को हुक्म फ़रमाते हैं और वो बादलों को चलाकर वहां ले जाता है और जब बादल बिखरता है तो अपनी आवाज़ से डांटता है, यहां तक कि वो फिर मिल जाता है, जिस तरह तुम में से कोई आदमी अपनी रकाबों को जमा करता है। (अबू शैख़)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मलकुलमौत जो सारे ज़िन्दा इन्सानों की रूह निकालता है वो सारी ज़मीन वालों पर इस तरतह मुसल्लत है, जिस तरह से तुम में से हर एक आदमी अपनी हथेली पर मुसलत होता है, मलकुलमौत के साथ रहमत और अज़ाब दोनों किस्म के फ़रिश्ते होते हैं, जब किसी पाकीज़ा नफ़्स को वफ़ात देता है तो उसके पास रहमत वाले फ़रिश्ते भेजता है और नाफ़रमान की रूह निकालने के लिए उसकी तरफ़ अज़ाब के फ़रिश्ते भेजता है। (जुवेबर)

हज़रत काब रज़ि0 फरमाते हैं कि इन्सान उस वक़्त तक नहीं रोता, जब तक कि उसके पास एक फ़रिश्ता नहीं भेजा जाता। वो फ़रिश्ता आकर के जिगर पर अपना पर रगड़ता है, उसके पर रगड़ने से इन्सान रोने लगता है। (इब्ने असाकर)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं कि कुछ फ़रिश्ते ऐसे

भी हैं जो पेड़ों से गिरने वाले पत्ते तक को लिखते रहते हैं। सो! तुम में से जब कोई किसी इलाके में रास्ता भटक जाए और कोई मददगार न मिले तो उसे चाहिए कि बुलन्द आवाज़ से ये कहे।

ऐ अल्लाह के बन्दो! हमारी मदद करो।

अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए ·

तो उसकी मदद की जाएगी। (तिब्रानी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 फ़रमाते हैं कि समुन्दर एक फ़रिश्ते की गिरफ्त में है अगर वो उससे ग़ाफ़िल हो जाए तो उसकी मौजें ज़मीन पर टूट पड़ें। (इब्ने अबी हातिम)

हज़रत ज़मुरह बिन हबीब रज़ि0 हुज़ूर सल्ल0 से नक़ल करते हैं कि किसी बन्दे के अमल को लेकर फ़रिश्ते जब आसमान पर पहुंचते हैं जिसे वो बड़ा और पाकीज़ा समझते हैं तो अल्लाह तआला उनकी तरफ़ वह्य फ़रमाते हैं कि तुम मेरे बन्दों के अमल के निगरां हो लेकिन उनके दिलों में क्या है, ये सिर्फ़ मैं जानता हूं। मेरे बन्दे ने ये अमल मेरे लिए नहीं किया है। इसलिए ये अमल सिज्जीन (सातवें ज़मीन के नीचे एक आलम है) में फेंक दो। इसी तरह किसी और बन्दे का अमल लेकर जब फ़रिश्ते आसमान पर पहुंचते हैं तो अल्लाह तआला उनकी तरफ़ वह्य फ़रमाते हैं कि तुम अमल के निगरां हो, लेकिन उसके दिल में क्या है? ये मैं जानता हूं। इस अमल को कई गुना कर दो और उसे इल्लीयीन में उसके लिए रख दो। (दर्रेमन्सूर 325-6)

हज़रत हंज़ला रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने हज़रत हंज़ला रज़ि0 से फ़रमाया अगर तुम्हारा हाल वैसा रहे जैसा मेरे पास रहने पर होता है, या हर वक़्त तुम अल्लाह के ज़िक्र में मश्गूल रहो तो फ़रिश्ते तुम्हारे बिस्तरों पर और तुम्हारे रास्तों में तुम्हारे पास जाकर तुमसे मुसाफ़ा करने लगें लेकिन 'ऐ हंज़ला!" ये कैफ़ियत

धीरे-धीरे पैदा होती है। (मुस्लिम)

हज़रत उम्मे इस्मा औसिया रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया। कोई मुसलमान जब गुनाह करता है, तो गुनाह लिखने वाला फ़रिश्ता जो उसके कन्धे पर मौजूद है, वो गुनाह लिखने से तीन घड़ी ठहर जाता है, ताकि गुनाह करने वाला शायद इस दरमियान तौबा कर ले। (मुसतदरक हाकिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया जब तुम मुर्गे की आवाज़ सुनो तो अल्लाह तआ़ला से उसके फ़ज़्ल का सवाल करो, क्योंकि मुर्गे फ़रिश्तों को देखकर आवाज़ देते हैं और जब तुम गद्हों की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह मांगो, क्योंकि गद्हे शैतान को देखकर बोलते हैं। (बुख़ारी)

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया जब तुममें से कोई सोने के लिए बिस्तर पर जाता है तो एक फ़रिश्ता और एक शैतान उसके पास आता है। शैतान कहता है कि अपने जागने के वक़्त को बुराई पर ख़त्म कर, और फ़रिश्ता कहता है कि उसे भलाई पर ख़त्म कर।

अब अगर वो अल्लाह का ज़िक्र कर के सोया है, तो शैतान उसके पास से चला जाता है और एक फ़रिश्ता रात भर उसकी हिफ़ाजत करता रहता है।

फिर जब वो सोकर उठता है, तो फिर से एक फ़रिश्ता और एक शैतान उसके पास आते हैं। शैतान उससे कहता है कि अपने जागने को बुराई से शुरू कर और फ़रिश्ता कहता है कि अपने दिन को भलाई से शुरू कर। (मस्नद अहमद)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया। "सूर" फूंकने वाला फ़रिश्ता इस्राफ़ील अलैहि0 'सूर"

को अपने मुंह में रखे हुए पेशानी झुकाकर इस बात का इन्तेज़ार कर रहा है कि कब उसे सूर के फूंकने का हुक्म मिले और वो सूर को फूंक दे। (कन्ज़ुल आमाल 270-7)

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया। अल्लाह तआला ने पानी के ख़ज़ाने पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है। उस फ़रिश्ते के हाथ में एक पैमाना है, इस पैमाने से गुज़रकर ही पानी की हर बून्द ज़मीन पर आती है लेकिन हज़रत नूह अलैहि० के तूफ़ान वाले दिन ऐसा न हुआ बल्कि अल्लाह ने सीधे पानी को हुक्म दिया और पानी को संभालने वाले फ़रिश्ते को हुक्म न दिया। जिस पर वो फ़रिश्ते पानी को रोकते रह गए लेकिन पानी न रूका।

(कन्ज़ुल आमाल 273-1)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया शबे क़दर की रात को अल्लाह तआला जिबराईल अलैहि० को हुक्म फ़रमाते हैं कि ज़मीन पर जाओ!

जिबराईल अलैहि० फ़रिश्तों की एक बहुत बड़ी जमात के साथ ज़मीन पर उतरते हैं। उनके साथ एक हरे रंग का झन्डा होता है, जिसको ये काबा शरीफ़ के उपर लगाते हैं। फिर अपने साथ आए हुए फ़रिश्तों से कहते हैं, कि तुम लोग सारी दुनिया में फैल जाओ और जहां पर भी जो मुसलमान आज की रात में खड़ा हो या बैठा, नमाज़ पढ़ रहा हो या ज़िक्र कर रहा हो तो उसको सलाम करो और मुसाफ़ा करो और उनकी दुआओं पर आमीन कहो। सुबह तक ये सिलसिला जारी रहता है। फिर जब सुबह हो जाती है तो जिबराईल अलैहि० आवाज़ देते हैं "ऐ फ़रिश्तों की जमात अब वापस आसमान की तरफ़ चलो, तो सारे फ़रिश्ते जिबराईल अलैहि० के साथ आसमान पर वापस चले जाते हैं। (मिश्क़ात शरीफ़ 20-6)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने

फ़रमाया, जुमा के दिन फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े होकर, मस्जिद में आने वालों का नाम लिखते रहते हैं लेकिन जब खुत्बा शुरू होता है तब फ़रिश्ते नाम लिखना बन्द करके खुत्बा सुनने में मशगूल हो जाते हैं। (बुख़ारी)

हज़रत मुआविया रज़ि0 ने फ़रमाया नमाज़ की सफ़ें खड़ी होती हैं, तो आसमानों के जन्नत के और जहन्नम के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं। जन्नत की सजी हूरें ज़मीन पर झांकती हैं। (हैशमी 284-5)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया जो शख़्स नमाज़ के इन्तिज़ार में रहता है, फ़रिश्ता उसके लिए दुआ करते रहते हैं। (बुख़ारी)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया जब नमाज़ का वक़्त होता है। उस वक़्त एक फ़रिश्तता ऐलान करता है कि" ऐ आदम की औलाद! उठो और जहन्नम की जिस आग को तुमने अपने गुनाहों कि वजह से जला रखा है उसे बुझा लो।" (तिबरानी)

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि0 नें फ़रमाया, जो शख़्स नमाज़ की हिफ़ाज़त करे और औक़ात की पाबन्दी के साथ उसका एहतमाम करे। फ़रिश्ते उस शख़्स की हिफ़ाज़त करते हैं। (मुनब्बहात)

हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि आपने फ़रमाया जब बन्दा मिस्वाक करके नमाज़ के लिए खड़ा होता है, तो एक फ़रिश्ता उसके पीछे आकर खड़ा हो जाता है, और उसकी क़ेरात खूब ध्यान से सुनता है, फिर उसके बहुत क़रीब आ जाता है, यहां तक कि उसके मुंह पर अपना मुंह रख देता है। क़ुरआन का जो भी लफ़्ज़ इस नमाज़ी के मुंह से निकलता है, सीधा फ़रिश्ते के पेट में पहुंचता है। (बज़्ज़ार)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया जब नमाज़ के लिए अज़ान दी जाती है, तो शैतान ऊंची आवाज़ में रीह ख़ारिज करते हुए पीठ फेरकर भाग जाता है। अज़ान के ख़त्म होने पर वापस आजाता है, जब अक़ामत कही जाती है तो फिर भाग जाता है अक़ामत हो जाने पर फिर वापस आ जाता है, ताकि नमाज़ी के दिल में वसवसा डाले। नमाज़ी को कभी कोई बात याद कराता है, तो कभी कोई बात, ऐसी ऐसी बातें याद दिलाता है, जो बातें नमाज़ी के नमाज़ से पहले याद न थी, यहां तक कि नमाज़ी को ये भी ख़्याल नहीं रहता, कि कितनी रकअ़तें हुई हैं। (मुस्लिम)

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 नें फ़रमाया नमाज़ की सफ़ों को सीधा रखा करो, कांधो को कांधो की सीध में रखा करो, सफ़ों को सीधा रखने में अपने भाईयों के लिए नरम बन जाया करो और सफ़ों के बीच में ख़ाली पड़ी जगह को भर लिया करो, क्योंकि शैतान सफ़ों में ख़ाली जगह देखकर भेड़ के बच्चे की तरह बीच में घुस आता है। (तबरानी)

हज़रत अबूदरदा रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया, जिस गाँव या जंगल में तीन आदमी हों और वहां जमात से नमाज़ न होती हो, तो उन लोगों पर शैतान ग़ालिब हो जाता है, इसलिए जमात से नमाज़ पढ़ने को ज़रूरी समझो, भेड़िया अकेले बकरी को खा जाता है (और आदमियों का भेड़िया शैतान है)। (अबूदाऊद)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायात है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया तुम में से जब कोई शख़्स सोता है, तो शैतान उसकी गद्दी पर तीन गिरहें लगा देता है और हर गिरह पर ये फूंक देता है "सोते रहो," अभी रात बहुत पड़ी है। अगर इन्सान जागकर

अल्लाह का नाम लेता है तो एक गिरह खुल जाती है अगर वजू कर लेता है तो दूसरी गिरह खुल जाती है फिर अगर तहज्जुद पढ़ लेता है, तो तमाम गिरहें खुल जाती हैं। (अबूदाऊद)

हज़रत आयशा रज़ि0 ने हुज़ूर सल्ल0 से पूछा कि नमाज़ में इधर उधर देखना कैसा है? इरशाद फ़रमाया ये शैतान का आदमी को नमाज़ से उचक लेना है। (तिर्मिजी)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया जब तुम में से कोई सूरह फ़ातेहा के आख़िर में आमीन कहता है तो उसी वक़्त फ़रिश्ते आसमान पर आमीन कहते हैं जिस शख़्स की आमीन फ़रिश्तों की आमीन के साथ मिल जाती है तो उसके पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (बुख़ारी)

हज़रत उवैस अन्सारी रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया की सुबह अल्लाह तआला फ़रिश्तों को दुनिया के तमाम शहरों में भेजते हैं। वो ज़मीन पर उतरकर तमाम गलियों और रास्तों में खड़े हो जाते हैं और आवाज़ देकर कहते हैं जिसे इन्सान और जिन्नात के अलावा सारी मख़्लूक़ सुनती है कि ऐ मोहम्मद सल्ल0 की उम्मत उस करीम रब की बारगाह की तरफ़ चलो, जो ज़्यादा अता करने वाला है फिर लोग ईदगाह की तरफ़ जाने लगते हैं। (तिबरानी)

हज़रत उमर रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया नमाज़ पढ़ने वाले के दाएं-बाएं एक एक फ़रिश्ता होता है। पस अगर वो (नमाज़ी) अपनी नमाज़ ईमान और एहतेसाब के साथ अदा किया तो ये फ़रिश्ते नमाज़ को लेकर आसमानों के ऊपर चले जाते हैं और अगर नामुकम्मल अदा किया तो नमाज़ को उसके मुंह पर मार देते हैं। (तर्ग़ीब व तर्हीब 1-338)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने

इरशाद फ़रमाया तुम्हारे पास रात के फ़रिश्ते और दिन के फ़रिश्ते रहते हैं। ये फ़ज्र और अस्र की नमाज़ के वक़्त जमा होते हैं। फिर जिन्होंने तुम्हारे साथ रात गुज़ारी थी, वो ऊपर चले जाते हैं। (बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया मुबारक हो वज़ू में ख़िलाल करने वाले को मुबारक हो खाने में ख़िलाल करने वाले को।

बज़ू में ख़िलाल कुल्ली करना, नाक में पानी चढ़ाना और (हाथ पांओं की) उंगलियों के दरमियान ख़िलाल करना। और खाने में ख़िलाल ये है, कि कोई चीज़ खाने की दांतों में रह जाए तो उसको साफ़ करना, क्योंकि ये उन दोनों फ़रिश्तों के लिए ज़्यादा तकलीफ़ दे है, कि वो अपने साथी के दांतों में खाने की कोई चीज़ देखें, जब वो नमाज़ पढ़ रहा हो। (मुसन्निफ़ अब्दुल रज़्ज़ाक़)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 रसूलुल्लाह सल्ल0 से नक़ल करते हैं कि दिन के किरामन कातबीन अलग हैं और रात के अलग। चूंकि दिन के फ़रिश्ते मग़रिब की नमाज़ को इन्सान को कामिल तौर पर अदा करने के बाद ही आसमान पर वापस जाते हैं। इसलिए अगर मग़रिब की दो रकात सुन्नत में देर की गई तो ये उन फ़रिश्तों पर भारी हो जाती है। लेहाज़ा मग़रिब की फ़र्ज़ अदा करने के बाद उन सुन्नतों की अदाएगी में देर न किया करो। (दैलमी)

हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया जो आदमी बग़ैर इल्म के फ़तवे देता है उसपर आसमान और ज़मीन के फ़रिश्ते लानत करते हैं। (इब्ने असाकर)

हज़रत सुफ़यान रज़ि से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया। इल्म सीखने वाले को मुबारकबाद दो, क्योंकि इल्म सीखने वाले को फ़रिश्ते अपने परों से घेर लेते हैं। इतना ही नहीं

बल्कि ऊपर तले जमा होते होते आसमानों तक पहुंच जाते हैं। (तिबरानी)

हज़रत अबूउमामा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया। अल्लाह तआ़ला ने मलकुलमौत को सारे इन्सानों की रूह निकालने के लिए मुकर्रर फ़रमाया है, सिवाए संमुन्दर में शहीद होने वालों की रूहों को अल्लाह तआ़ला अपने हुक्म से निकालते हैं। (इब्ने माजा 2668)

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि0 फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया अगर तुम मौत और उसके फ़ैसले को जान लो तो उम्मीद और उसके धोखे से नफ़रत करने लगो, किसी भी घर के लोग ऐसे नहीं हैं कि जिनपर मलकुलमौत रोज़ाना तंबीह न करता हो जब किसी की उमर पूरी हो चुकी होती है, तो मलकुलमौत उसकी रूह निकाल लेते हैं, जब उसके रिश्तेदार रोते हैं, तो वो कहता है तुम लोग क्यों रो रहे हो?

अल्लाह की क़सम न तो मैंने उसकी उमर में से कुछ कम किया है, और न ही रिज़्क़ में से, मेरा कोई क़सूर नहीं है, मुझे तो तुम लोगों के पास भी आना है यहां तक कि तुम में से किसी को भी नहीं छोड़ूंगा। (देलमी)

हज़रत ज़ुबेर इब्ने अव्वाम रज़ि0 फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया हर सुबह जब लोग सोकर उठते हैं उस वक़्त एक फ़रिश्ता आवाज़ देता है कि ऐ मख़्लूक़ात! तुम सब अल्लाह तआ़ला की तस्बीह करना शुरू करो। (मसनद अबू यअला)

हज़रत अबूउमामा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं, कि मेरे फ़लां बन्दे के पास जाओ और उसपर ये सख़्त मुसीबत पलट दो, तो उसके पास आते हैं, और उसपर मुसीबत डाल देते हैं। वो बन्दा जब

अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ बयान करता है तो ये फ़रिश्ते लौट जाते हैं और अल्लाह तआ़ला से अर्ज़ करते हैं कि हमने उसपर मुसीबत डाल दी थी, जिस तरह आपने हमें हुक्म दिया था।

तो अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं, वापस लौट जाओ और उससे मुसीबत हटा दो, क्योंकि मैं पसन्द करता था कि उसकी आवाज़ सुनूं कि वो इस मुसीबत के हाल में मुझे किस तरह याद करता है? हालांकि अल्लाह तआ़ला सब कुछ जानते हैं, कि वो मेरी तारीफ़ ही करेगा लेकिन इस हालत में उसकी ज़बान से शुक्र का कलमा कहलाना और उसका सुनना मक़सूद है। (तिबरानी)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया। रात के आख़िरी हिस्से में क़ुरआन की तिलावत करने पर फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं। (तिर्मिज़ी)

हज़रत मअ़क़ल बिन यसार रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया सूरह बक़र की तिलावत करने पर उसकी हर आयत के साथ अस्सी फ़रिश्ते आसमान से उतरते हैं।

(मसनद अहमद)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया। फ़रिश्तों की एक ऐसी जमात है, जो सिर्फ़ ज़िक्र के हलकों की तलाश में रहती है, जब वो ज़िक्र के हलकों को पाती है तो उन्हें अपने परों से ढांप कर अपना एक क़ासिद आसमान पर अल्लाह तआ़ला के पास भेजते हैं। वो फ़रिश्ता उस सबकी तरफ़ से अर्ज़ करता है। ऐ रब! हम आपके उन बन्दों के पास आए हैं, जो आपकी नेमतों की बड़ाई कर रहे हैं।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं, उनको मेरी रहमत से ढांप दो फ़रिश्ता कहता है ऐ हमारे रब उनके साथ एक गुनहगार बन्दा भी बैठा था, अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं, उसको भी मेरी रहमत से ढांप

दो, क्योंकि ये ऐसी मजलिस हैं कि उनमें बैठने वाला कोई भी हो, वो महरूम नहीं होता। – (बज़्ज़ार)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स अपने घर से निकलते वक़्त,

"بسم الله توكلت على الله لا حول ولا قوة الا با لله"

कह कर निकलता है तो फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि तुम्हारे काम बना दिए गए और हर शर से तुम्हारी हिफ़ाज़त की गई फिर शैतान उससे दूर हो जाता है। (तिर्मिज़ी)

आप सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स अपने बिस्तर पर पहुंच कर आयतल कुर्सी पढ़कर सो जाता है, अल्लाह तआला उसकी हिफ़ाज़त के लिए फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देते हैं, जो रात भर उसकी हिफ़ाज़त करता रहता है। (बुख़ारी)

हज़रत मअक़िल बिन यसार रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया। जो शख़्स सुबह को तीन बार, "اعوذ با لله السميع العليم من الشيطن الرجيم" पढ़कर सूरह हशर की आख़िरी तीन आयत पढ़ले तो अल्लाह तआला उसके लिए सत्तर हज़ार (70000) फ़रिश्ते मुक़र्रर कर देते हैं, जो शाम तक रहमत भेजते रहते हैं। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया। किसी घर में जैसे ही आयतल कुर्सी पढ़ी जाती है फ़ौरन घर से शैतान निकल जाता है। (तर्ग़ीब)

आप सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स घर से निकलकर,

"بسم الله توكلت على الله لا حول ولا قوة الا بالله"

कह ले तो शैतान उन बोल को सुनकर उसके पास से चला जाता है। (तिर्मिज़ी)

आप सल्ल0 ने फ़रमाया जिस शख़्स ने खाने पर "बिसमिल्लाह" न कहा तो शैतान को उसके साथ खाने का मौक़ा मिल जाता है। (मिशकात शरीफ़)

हज़रत अबूअय्यूब रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया जो शख़्स सुबह दस मर्तबा चौथा कलमा पढ़ लेता है तो शाम तक शैतान से उसकी हिफ़ाज़त होती है और अगर शाम को पढ़ लेता है, तो सुबह तक शैतान से हिफ़ाज़त होती है।

(इब्ने हबान)

हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया। जो लोग अल्लाह के ज़िक्र के लिए किसी जगह पर जमा हों और उनके जमा होने की गर्ज़ अल्लाह को खुश करना है, तो एक फ़रिश्ता आसमान से पुकारकर कहता है, कि तुम लोग बख़्श दिए गए और तुम्हारे गुनाहों को नेकियों में बदल दिया गया है। (तिबरानी)

आप सल्ल0 ने फ़रमाया रमज़ान की हर रात को एक फ़रिश्ता आवाज़ देकर कहता है, कि "ऐ ख़ैर की तलाश करने वालों! मुतवज्जेह हुआ और आगे बढ़ो और ऐ बुराई के तलबगार! बस करो और आँखें खोलो" उसके बाद वो फ़रिश्ता कहता है कि है कोई माफ़ी मांगने वाला जिसको माफ़ किया जाए और है कोई मांगने वाला जिसका सवाल पूरा किया जाए? (तरग़ीब)

आप सल्ल0 ने फ़रमाया जब कोई अपनी बीवी के पास आए और "اللهم جنبنا الشيطان وجنب الشيطان ما رزقتنا" पढ़कर हमबिस्तरी करे तो अगर उस रात की सोहबत से बच्चा पैदा हुआ तो शैतान कभी नुक़सान न पहुंचा सकेगा। (बुख़ारी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया जब तुम में से कोई छींकता है और छींककर "الحمد لله" कहता है तो फ़रिश्ते "رب العالمين" कहते हैं लेकिन जब

छींकने वाला الحمد को رب العالمين समेत कहता है, तो फ़रिश्ते कहते हैं يرحمك الله यानी अल्लाह तआला तुझपर रहमत फ़रमाए। (बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया जब बन्दा कुरआन मजीद ख़त्म करता है तो ख़त्म के वक़्त उसके लिए साठ हज़ार फ़रिश्ते रहमत व मग़फ़िरत की दुआ करते हैं। (देलमी)

हज़रत अबूदाऊद रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया जुमा के दिन खूब कसरत से दरूद पढ़ा करो क्योंकि ये हाज़री का दिन है, उसमें फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं, लेहाज़ा जो कोई मुझपर दरूद भेजता है, उसका दरूद मुझ तक पहुंचा दिया जाता है। (इब्ने माजा शरीफ़)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 ने फ़रमाया सुबह के वक़्त एक फ़रिश्ता सारी मख़्लूक़ से जब तस्बीह पढ़ने को कहता है, तो परिन्दे उसकी आवाज़ सुनकर अपने परों को फड़-फड़ाने लगते हैं। (अबूशेख़ हदीस 569)

हज़रत लूत बिन उज्ज़ा से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया रात के वक़्त घर में पेशाब को किसी चीज़ में करके न रखा जाए, क़्योंकि रहमत के फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते, जिस घर में पेशाब रखा हो। (मुअजम औसत तिबरानी)

हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया उस क़ौम में फ़रिश्ते नाज़िल नहीं होते जिस क़ौम में कोई क़ता रहमी करने वाला हो। (तिबरानी)

हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया जिस घर में नापाकी की हालत वाला इन्सान हो, वहां रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते। (अबूदाऊद)

हज़रत आयशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया जब तक तुम में से किसी का दस्तरख़्वान मेहमान के आने जाने कि वजह से सामने रखा रहता है तो तुमपर फ़रिश्ते उस वक़्त तक लगातार रहमत और बरकत की दुआ करते रहते हैं। (जामे सग़ीर 2928)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया जिसने लहसन प्याज़ खाया हो, वो हमारी मस्जिद में हरगिज़ न आए, क्योंकि फ़रिश्तों को भी इस चीज़ की बू से तकलीफ़ होती है, जिससे इन्सान को तकलीफ़ होती है।

(बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया हर इन्सान के सर पर पोशीदा तौर पर एक लगाम है, जिस लगाम को एक फ़रिश्ते ने पकड़ा हुआ है जब इन्सान तवाज़ो करता है तो फ़रिश्ता उस लगाम को बुलन्द कर देता है और जब इन्सान तकब्बुर करता है, तो फ़रिश्ता उस लगाम को पस्त कर देता है। (तिबरानी)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया जब लड़की पैदा होती है, तो अल्लाह तआला उस लड़की के पास एक फ़रिश्ता भेजता है, जो उसपर बहुत ज़्यादा बरकत उतारता है और कहता है, तू कमज़ोर है क्योंकि कमज़ोर से पैदा हुई है। उस लड़की की किफ़ालत करने वाले की क़यामत तक मदद की जाती है, और जब लड़का पैदा होता है तो अल्लाह तआला उसके पास भी एक फ़रिश्ता भेजते है जो उसकी आंखों के बीच बोसा लेता है और कहता है कि 'अल्लह तआला तुझे सलाम कहते हैं।'' (मुअजम औसत तिबरानी)

हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल०

ने फ़रमाया हर मुसलमान क़ाज़ी के साथ दो ऐसे फ़रिश्ते होते हैं, जो उस क़ाज़ी को हक़ की रहनुमाई करते हैं, जब तक वो ख़िलाफ़े हक़ का इरादा न करे। अगर उसने जान बूझकर ख़िलाफ़े हक़ का इरादा किया और ज़ुल्म व ज़्यादती की, तो वो दोनों फ़रिश्ते उस क़ाज़ी को उसके नफ़्स के सुपुर्द करके उससे दूर हो जाते हैं। (तिबरानी)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया जब कोई औरत अपने शौहर का बिस्तर छोड़कर नाफ़रमानी करते हुए अलग सोती है तो उसपर उस वक़्त तक लानत करते रहते हैं, जब तक वो वापस शौहर के बिस्तर पर न आजाए। (बुख़ारी)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 ने फ़रमाया अपने जूते अपने पावँ के दरमियान रखो, या अपने सामने रखो, अपने दाहिने न रखो, क्योंकि एक फ़रिश्ता तुम्हारे दाहिने है, और अपने बाएं भी न रखो, क्योंकि वो जूते, तेरे भाई मुसलमान के दांए होंगे। (सईद बिन मन्सूर)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 हुज़ूर सल्ल0 से नक़ल करते हैं कि जब मुसलमान के जिस्म में कोई बीमारी भेजी जाती है, तो अल्लाह तआला करामन कातबीन को हुक्म फ़रमाते हैं, कि मेरे बन्दे के लिए हर दिन और हर रात उतने नेक अमल लिखो, जितना वो बीमारी से पहले किया करता था। जब तक ये मेरी गिरह में बंधा हुआ है। (इब्ने अबीशैबा)

हज़रत मकहूल रह0 फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया जब कोई इन्सान बीमार होता है, तो बाएं तरफ़ के गुनाह लिखने वाले फ़रिश्ते को अल्लाह तआला ये हुक्म देता है, कि अपना क़लम उठा ले और दाहिने तरफ़ वाले फ़रिश्ते से ये कहा जाता है, कि इस बन्दे के अच्छे आमाल लिखते रहो, जो ये

तन्दरूस्ती की हालत में किया करता था। क्योंकि उसकी आने वाली हालत को मैं जानता हूं मैंने ही उसे इस हाल में मुब्तला किया है। (इब्ने असाकर)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया तुम में से जब कोई अपनी बीवी के पास जाए तो उसे चाहिए कि पर्दा करले अगर वो हमबिस्तरी के वक़्त पर्दा नहीं करेगा, तो फ़रिश्ते हया करते हैं और घर से निकल जाते हैं, फिर शैतान आ जाता है पस अगर उन दोनों के लिए उस दिन की सोहबत से कोई औलाद लिखी है तो उसमे शैतान का भी हिस्सा हो जाता है। (शोअबुलाईमान)

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया क्या मैंने तुम लोगों से कपड़े हटाने को मना नहीं किया है? तुम्हारे साथ ये दोनों फ़रिश्ते जो तुमसे अलग नहीं होते हैं न नीद में बेदारी में। याद रखो! जब भी तुम में से कोई अपनी बीवी के पास जाए या पेशाब पाख़ाना जाए तो उन दोनों से शर्म करे। ख़बरदार!! उन दोनों की इज्ज़त करो। (बैहकी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया ऐ लोगो! अल्लाह तआला तुम्हें कपड़े उतार देने से मना फ़रमाते हैं। तुम अल्लाह के उन फ़रिश्तों से हया करो, जो किरामन कातबीन तुम्हारे साथ रहते हैं वो तुमसे अलग नहीं होते सिवाए तीन वक़्तो के, जो तुम्हारी ज़रूरत हैं,

1- पेशाब, पाख़ाना के वक़्त

2- बीवी से सोहबत के वक़्त

3- गुस्ल करते वक़्त। (मसनद बज्ज़ाज़)

हज़रत अली बिन अबी तालब रज़ि0 फ़रमाते हैं कि जिसने अपना शर्म का हिस्सा खोला, उससे फ़रिश्ते अलग हो जाते हैं।

(मुसन्नफ़ इब्ने अबी शीबा)

हज़रत अनस रज़ि0 फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया जो आदमी गुस्लख़ाने में बग़ैर तहबन्द के दाख़िल होता है तो किरामन कातबीन उसपर लानत करते है। (देलमी)

हज़रत अनस रज़ि0 फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया एक फ़रिश्ता कुरआन के सुपुर्द है, पस जो शख़्स कुरआन की तिलावत तो करता है लेकिन सही तरीक़े से तिलावत नहीं कर सकता। उसको फ़रिश्ता दरूस्त करके अल्लाह की बारगाह में पेश करता है। (फ़ैजुलकबीर हदीस)

हज़रत अबूउमामा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया एक फ़रिश्ता "يا ارحم الراحمين" कहने वाले आदमी के सुपुर्द किया गया है, जब ये आदमी इस कलमे को तीन बार कहता है, तो फ़रिश्ता उससे कहता है, ऐ इन्सान! "ارحم الراحمين" यानी अल्लाह तआला तेरी तरफ़ मुतवज्जेह है, तू जो चाहिए उससे मांग, तेरी दुआ क़बूल होगी। (मुसतदरक हाकिम)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि जब कोई आदमी तिजारत या सरदारी का मामला तलब करता है, फिर उसपर क़ादिर हो जाता है, तो अल्लाह तआला सातवें आसमानों के ऊपर उसका ज़िक्र करते हैं और उसके पास एक फ़रिश्ता भेजते हैं, कि मेरे बन्दे के पास जाओ और उसे इस काम से रोको अगर मैंने उसके लिए उसे अता कर दिया तो उसकी वजह से जहन्नम में डाल दूंगा तो वो उसे उससे अलग कर देता है।

(शोअ़बुलाईमान, बैहकी)

हज़रत कअ़ब रज़ि0 से रिवायत है आप सल्ल0 ने फ़रमाया जब रोज़दार के सामने खाना खाया जाता है, तो खाने से फ़ारिग़ होने तक, उस रोज़ादार के लिए फ़रिश्ते रहमत की दुआ करते हैं।

(तिर्मिज़ी)

हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया जो मुसलमान किसी मुसलमान की सुबह को अयादत करता है, तो शाम तक सत्तर हज़ार (70000) फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते रहते हैं। इसी तरह जो शाम को अयादत करता है, तो सुबह तक सत्तर हज़ार (70000) फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते हैं। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबूदाऊद रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया मुसलमान की दुआ अपने मुसलमान भाई के लिए पीठ पीछे कुबूल होती है। दुआ करने वाले के सर के पास एक फ़रिश्ता मुक़र्रर रहे, जब भी ये दुआ करने वाला अपने भाई के लिए दुआ करता है, तो फ़रिश्ता उसकी दुआ पर आमीन कहता है (मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया जो मुसलमान अल्लाह को खुश करने की नियत से किसी मुसलमान से मुलाक़ात करने जाता है तो आसमान से एक फ़रिश्ता पुकार कर कहता है, कि तुम खुशहाल की ज़िन्दगी बसर करो और तुम्हें जन्नत मुबारक हो और अल्लाह तआला अर्श वाले फ़रिश्ते से फ़रमाते हैं, मेरे बन्दे ने मेरी ख़ातिर मुलाकात-की इसलिए मेरे जिम्मे है कि मैं उसकी मेहमानी करूं। (अबूयअ़ला)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया जो मुसलमान दूसरे मुसलमान की तरफ़ हथियार से इशारा करता है, तो उसपर उस वक़्त तक फ़रिश्ते लानत करते रहते हैं जब तक वो अपना हथियार नीचे नहीं कर लेता। (मुस्लिम)

हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत हैं कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया दो फ़रिश्ते रोज़ाना सुबह के वक़्त आसमान से उतरते हैं, उनमें से एक फ़रिश्ता ये दुआ करता हैं, कि ऐ अल्लाह! ख़र्च करने वाले को बदल अता फ़रमा और दूसरा फ़रिश्ता ये दुआ करता है कि ऐ

अल्लाह! रोककर रखने वाले का माल बरबाद कर। (मिशकवात)

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया जब मुसलमान घर में दाख़िल होकर, अल्लाह का ज़िक्र करता है, फिर दुआ पढ़कर खाना खाता है तो शैतान अपने साथ वालों से कहता है कि अब न तो वहां ठहरा जा सकता है और न तो खाना ही मिल सकता है लेकिन जब मुसलमान घर में दाख़िल होकर अल्लाह का ज़िक्र नहीं करता तो शैतान अपने साथियों से कहता है कि तुम्हें यहां रात में रहने का मौक़ा मिल गया। (मिशकात)

आप सल्ल0 ने फ़रमाया जब कपड़े उतारो, तो "बिस्मिल्लाह" कहकर उतारो। ऐसा करने से शैतान तुम्हारी शर्मगाह न देख सकेगा। (हिस्ने हसीन)

आप सल्ल0 ने फ़रमाया गुस्सा शैतान होता है, क्योंकि शैतान की पैदाईश आग से हुई है और आग पानी से बुझाई जाती है, लेहाजा जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो उसको चाहिए कि वज़ू कर ले। (अबूदाऊद)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला छींक को पसन्द फ़रमाते हैं और जमाई को नापसन्द करते हैं, क्योंकि जमाई शैतान की तरफ़ से होती है, लेहाज़ा जब तुम में से किसी को जमाई आए तो जितना हो सके, उसको रोके रखो, क्योंकि जब तुम में से कोई जमाई लेता है तो शैतान हंसता है। (बुख़ारी),

हज़रत अबूमूसा अशअ़री रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया जिन लोगों के साथ कोई यतीम उनके बरतन में खाने के लिए बैठता है तो शैतान उनके बरतन के क़रीब नहीं आता। (तिबरानी)

हज़रत अयाज़ बिन हम्मास रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया आपस में गाली गलौज करने वाले दो शख़्स असल में दो शैतान हैं, जो फ़हशगोई करते हैं और एक दूसरे को झूठा कहते हैं। (इब्ने हबान),

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया तुम में से कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई की तरफ़ हथियार से इशारा न करे, इसलिए कि उसको मालूम नहीं है कि कहीं शैतान उसके हाथ से हथियार खींच ने ले और वो हथियार उस मुसलमान भाई को जा लगे, फिर उसकी सज़ा में उसे जहन्नम में डाल दिया जाए। (बुख़ारी)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया कोई मुसलमान जब बीमार होता है, तो अल्लाह तआ़ला उसके साथ दो फ़रिश्ते लगा देते हैं, जो उस वक़्त तक साथ में रहते हैं, जब तक अल्लाह तआ़ला दो अच्छाइयों में से एक का फ़ैसला न कर दें "मौत" का, या ज़िन्दगी" का।

(शोअ़बुल ईमान, बैहक़ी)

हज़रत अली रज़ि0 से नक़ल करते हैं कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला करामन कातबीन की तरफ़ अपना पैग़ाम भेजते हैं, कि मेरे बन्दे के आ़माल नामा में रंज व ग़म के वक़्त कोई अमल न लिखें। (देलमी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 फ़रमाते हैं कि रुक्ने यमानी पर दो फ़रिश्ते मुकर्रर हैं, जो शख़्स वहां से गुज़रता है, तो उसकी दुआ पर आमीन कहते हैं और हज्रे अस्वद पर इतने फ़रिश्ते हैं, जिनकी गिनती नहीं कि जा सकती। (तारीख़ मक्का इमाम अज़रक़)

हज़रत तमीम दारी रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया मदीना तय्यबा की शान ये है कि अल्लाह तआ़ला ने

मदीना के हर घर पर एक एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है जो अपनी तलवार को लहराते रहते हैं इसलिए मदीना तय्यबा में दज्जाल दाख़िल न हो सकेगा। (तिबरानी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया कि मोमिन फ़ुक़रा पर जो सर्दी की तकलीफ़ होती है फ़रिश्ते उनपर तरस खाते हैं और जब सर्दी चली जाती है तो फ़रिश्ते सर्दी के जाने पर खुश होते हैं। (तबरानी)

हज़रत अबूदरदा रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते ऐसे हैं जो रात के वक़्त ज़मीन पर उतरते हैं और जेहाद के जानवरों और सवारियों की थकावट दूर करते हैं मगर उन जानवरों की थकावट दूर नहीं करते, जिनकी गर्दन में घन्टी बंधी होती है। (तबरानी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 नक़ल फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला का एक फ़रिश्ता वो है जो रोज़ाना रात दिन ये पुकारता रहता है।

"ऐ चालीस साल की उमर वाले! तुम अमल की खेती तैयार कर चुके हो, जिसकी कटाई का वक़्त क़रीब आ गया है।

ऐ साठ साल वालो! हिसाब की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाओ! तुमने अपने लिए क्या आगे भेजा और कौन से अमल किए?

ऐ सत्तर साल की उमर वालो! काश मख़्लूक़ात पैदा न की जाती और काश जब ये पैदा कर दी गई तो ये भी जान लेतीं कि किस लिए पैदा की गई हैं? (देलमी)

हज़र अबूहुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया जनाज़े के साथ चलते हुए फ़रिश्ते ये कहते हैं कि पाक है वो ज़ात जो नज़र नहीं आती और अपने बन्दों पर मौत के ज़रिए कह्हार है। (तारीख़ रफ़ाई)

हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि० से रिवायत है, कि आप सल्ल० ने फ़रमाया सफ़र में जो शख़्स दुनियावी बातों से अपना दिल हटाकर, अल्लाह तआला की तरफ़ अपना ध्यान रखता है तो एक फ़रिश्ता उसके साथ हो जाता है। (तबरानी)

हज़रत यज़ीद बिन शज़रा रज़ि० ने फ़रमाया। जब कोई शख़्स अल्लाह के रास्ते में शहीद किया जाता है, तो खून का पहला क़तरा ज़मीन पर गिरते ही, दो मोटी आंखों वाली सजी हुई हूरें आसमान से उतरकर, उसके पास आती हैं और उसके चेहरे से गर्दो गुबार साफ़ करती हैं। (हाकिम 494-3)

आप सल्ल० ने फ़रमाया जो मुसाफ़िर सफ़र में फ़ुजूल बातों और फ़ुजूल कामों में लगा रहता हैं, तो शैतान भी उसके साथ हो जाता है। (हिस्ने हसीन)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया अल्लाह की ख़ास मदद, जमात के साथ होती है, लेहाज़ा जो शख़्स जमात से अलग हो जाता है, शैतान उसके साथ रह कर उसे उकसाता है। (नसाई)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया शैतान अकेले आदमी और दो हो जाने पर नुक़्सान पहुंचाता है लेकिन तीन आदमियों को नुक़्सान नहीं पहुंचाता है क्योंकि तीन की जमात होती है। (बज़्ज़ार)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया मस्जिद में दाख़िल होकर

"اعوذ بالله العظيم ووجهه الكريم وسلطانه القديم من الشيطن الرجيم"

जब कोई दुआ पढ़ता है, तो शैतान कहता है कि ये शख़्स

मुझसे पूरे दिन के लिए महफूज़ हो गया। (अबूदाऊद)

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया बकरियों के भेड़ की तरह शैतान इन्सान का भेड़िया है। भेड़िया, हर उस बकरी को पकड़ लेता है, जो रेवड़ से अलग थलग हो इसलिए अलग अलग ठहरने से बच्चो, इज्तेमाईयत को और आम लोगों के बीच रहने को और मस्जिद को लाज़िम पकड़ो। (मसनद अहमद)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया इन्सान तक उसकी रोज़ी पहुंचाने के लिए फ़रिश्ते मुतअय्यन हैं। अल्लाह तआला ने उनको हुक्म फ़रमा रखा है, कि जिस आदमी को तुम इस हालत में पाओ जिसने (इस्लाम) को ही अपना ओड़हना बिछौना बना रखा है तो तुम उसको आसमानों और ज़मीन से रिज़्क मुहय्या कर दो और दीगर इन्सानो को भी रोज़ी पहुंचा दो ये दीगर लोग अपने मुक़द्दर से ज़्यादा रोज़ी न पा सकेंगे। (अबूअवाना)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया फ़रिश्तों की एक ऐसी जमात है, जो रास्तों में अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वालों की तलाश में घूमती रहती हैं, जब वो किसी ऐसी जमात को पा लेती हैं जो अल्लाह के ज़िक्र में मसरूफ़ होती है तो वो एक दूसरों को पुकार कर कहते कि आओ! यहां पर तुम्हारी मतलूबा चीज़ है। उसके बाद वो सब फ़रिश्ते मिलकर, आसमान तक अपने परों से उनको घेर लेते हैं। (बुख़ारी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने रमिये जमरात पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है, जो कंकरी मक़्बूल हो जाती है, उसको उठालेता है।

(तारीखे़ मक्का इमाम अज़रक़ी)

दुनियां की मशक्क़तों से राहत

हज़रत तमीम दारी रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह तआला मलकुलमौत से फ़रमाते हैं कि मेरे फ़लां ईमान वाले बन्दे के पास जाओ और उसकी रूह ले आओ! मैंने खुशी और ग़म के हालात में उसका इम्तेहान ले लिया है, वो ऐसा ही निकला जैसा की मैं चाहता था। उसको ले आओ! ताकि दुनिया की मशक्क़तों से राहत मिल जाए।

मलकुलमौत पांच सौ (500) फ़रिश्तों की जमात के साथ उसके पास जाते हैं, उन सबके पास जन्नत के कफ़न होते हैं, उनके हाथों में रैहान के गुलदस्ते होते हैं, जिनमें बीस बीस रंग के फूल होते हैं, और हर फूल की खूशबू अलग अलग होती है और एक रेशमी रूमाल में महकता हुआ मुश्क होता है।

मलकुलमौत उसके सर के पास और बाक़ी फ़रिश्ते उसको चारों तरफ़ से घेर लेते हैं, फिर मुश्क वाला रूमाल उसकी ठोड़ी के नीचे रखते हैं, जन्नत का दरवाज़ा उसके सामने खोल दिया जाता है कभी सजी हुई हूरें उसके सामने आती हैं, तो कभी वहां कि नहरें, और बाग़ात।

उन सबको देखकर उसकी रूह खुशी से जिस्म से बाहर निकलने के लिए बेक़रार हो जाती है, मलकुलमौत उससे कहते हैं, कि ऐ मुबारक रूह! चल ऐसी बैरियों की तरफ़ जिसमें कांटा नहीं है और ऐसे किलों की तरफ़, जो तले ऊपर लगे हुए हैं मलकुलमौत उससे ऐसी नर्मी से बात करते हैं जिस तरह मां अपने छोटे बच्चे से करती है।

फिर उसकी रूह बदन में से ऐसे निकलती है जैसे कि आटे में से बाल। जब रूह बदन से निकलती है, तो सब फ़रिश्ते उसको सलाम करते हैं, और जन्नत की खुशख़बरी देते हैं। पस जिस वक़्त

रूह, बदन से निकलती है, तो वो बदन से कहती है, कि अल्लाह तआला तुझे जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए, कि तू मोहताजगी के साथ अल्लाह तआला का कहना मान लेनें में जल्दी करता था, उसकी नाफ़रमानी करने में सुस्ती करने वाला था, तुझे आजका दिन मुबारक हो! तुमने खुद भी अज़ाब से निजात पाई और मुझे भी निजात दिलादी और यही बात बदन, रूह, से कहता है।

उसकी जुदाई पर ज़मीन के वो हिस्से रोते हैं जिस ज़मीन के हिस्सों पर वो अल्लाह का कहना मानते हुए चलता था, आसमान के वो दरवाज़े रोते हैं, जिनसे उसके अमल ऊपर जाय करते थे और जिनसे उसका रिज़्क़ उतरता था।

जब मलकुलमौत उसकी रूह को लेकर आसमान पर जाते हैं, तो वहां जिब्राईल अलैहि० सत्तर हज़ार (70000) फ़रिश्तों के साथ उसका इस्तेक़बाल करते हैं, ये फ़रिश्ते अल्लाह की तरफ़ से उसे खुशख़बरी सुनाते हैं, फिर आसमानों पर होते हुए जब उसे लेकर अर्श तक पहुंचाते हैं तो वो अर्श पर पहुंचकर सज्दे में गिर जाते हैं फिर अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि उसे इल्लियीन में पहुंचा दो और यहां ज़मीन पर पाँच सौ फ़रिश्ते उसके जिस्म के पास जमा हो जाते हैं, जब नहलाने वाले उसके जिस्म को करवट देते हैं, तो ये फ़रिश्ते भी उसे करवट देने लगते हैं और जब वो कफ़न पहनाने लगते हैं, तो फ़रिश्ते उनके कफ़न से पहले अपने साथ लिए हुए कफ़न को पहना देते हैं इसी तरह जब खुशबू लगाते हैं तो उनसे पहले ही फ़रिश्ते अपने साथ लाई हुई खुशबू उसके बदन पर मल देते हैं फिर जब जनाज़ा घर से बाहर लाया जाता है तो उसके घर के दरवाज़े से लेकर क़ब्रिस्तान तक रास्ते के दोनों तरफ़ फ़रिश्ते क़तार लगाकर खड़े हो जाते हैं और उसके जनाज़े को दुआ व इस्तेग़फ़ार के साथ इस्तेक़बाल करते हैं।

ये सारे मन्ज़र देखकर, शैतान इतनी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगता है, कि उसकी हड्डियां टूटने लगती हैं और अपने लश्करों से कहता है कि तुम्हारा नास हो जाए, आख़िर ये तुमसे किस तरह छूट गया? वो कहते हैं, कि मासूम था। उधर बरज़ख़ में जब उसकी रूह जिस्म में डाली जाती है तो

नमाज़ उसके दाहनी तरफ़
रोज़ा उसके बाएं तरफ़
ज़िक्र और तिलावत सर की तरफ़
और बाक़ी आमाल पाँव की तरफ़

आकर खड़े हो जाते हैं, फिर अज़ाब उसकी क़ब्र में अपनी गर्दन निकालकर उस तक पहुंचना चाहता है लेकिन हर तरफ़ से उसे घेरा हुआ पाकर अज़ाब वापस चला जाता है।

उसके बाद उसकी क़ब्र में दो फ़रिश्ते आते हैं, जिनकी आंखें बिजली की तरह चमक रही होती हैं और उनकी आवाज़ बादलों की गरज की तरह होती है, उनके मुंह से निकलने वाली सांसों के साथ आग की लपट निकलती है, बालों की लम्बाई उनके पैर तक होती है, मेहरबानी और नरमी ये दोनों जानते ही नहीं, उनको "मुनकर नकीर' कहा जाता है, उन दोनों के हाथ में एक इतना बड़ा और वज़न दार हथियार होता है, कि उन्हें सारे ज़मीन के रहने वाले मिल कर उठाना चाहें तब भी नहीं उठा सकते। फिर वो उस इन्सान से कहते हैं कि बैठ जा! तो वो फ़ौरन उठकर बैठ जाता है फिर वो उससे पूछते हैं, कि

1 من ربک؟ (ज़रूरतों को पूरा करने वाला कौन है?)
2 ما دینک؟ (ज़रूरतों को पूरा करने का तरीक़ा क्या है?)
3 من نبیک؟ (उनकी ख़बरें किसने दी थी?)

तो ये तीनों सवालों के जवाब में कहता है, कि

1- मेरे रब अल्लाह हैं।

2- मेरा दीन इस्लाम है।

3- मेरे नबी मोहम्मद सल्ल0 हैं।

जवाब सुनकर ये दोनों फ़रिश्ते कहते हैं तुमने सच कहा। इसके बाद वो क़बर की दीवारों को सब तरफ़ से हटा देते हैं, जिससे वो कबर चारों तरफ़ फैल जाती है।

इसके बाद वो कहते हैं, कि ऊपर सर उठाओ! जब ये इन्सान अपना सर उठाता है, तो उसको एक खुला हुआ दरवाज़ा नज़र आता है, जिसमें से जन्नत के अन्दर का नज़ारा नज़र आता है वो कहते हैं कि ऐ अल्लाह के दोस्त! वो जगह तुम्हारे रहने की है, इस वजह से कि तुमने अल्लाह का कहना माना।

हुज़ूर सल्ल0 फ़रमाते हैं कि क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, कि उसको उस वक़्त इतनी खुशी होती है, कि जो उसे कभी न लौटेगी। उसके बाद वो फ़रिश्ते कहते हैं कि अपने पाँव की तरफ़ देखो, वो जब अपने पाँव की तरफ़ देखता है, तो उसे जहन्नम का एक दरवाज़ा नज़र आता है, वो फ़रिश्ते कहते हैं, कि ऐ अल्लाह के दोस्त! तुमने इस दरवाज़े से निज़ात पाली, उस वक़्त भी उसे इतनी खुशी होती है, जो उसे कभी न लौटेगी।

उसके बाद उसकी क़बर में सत्तर (70) दरवाज़े जन्नत की तरफ़ खुल जाते हैं, जिनमें से वहां की ठन्डी हवाएं और खुशबुवें आती रहती है और क़यामत तक ऐसे ही होता रहेगा।

बेईमान की मौत के वक़्त का मन्ज़र

इसी तरह जब किसी बेईमान के लिए अल्लाह तआला मलकुलमौत से फ़रमाते हैं कि मेरे दुशमन के पास जाओ और उसकी रूह निकाल लाओ, मैंने उसपर हर क़िस्म की फ़राख़ी की, अपनी नेमतें उसपर लाद दी मगर वो मेरी नाफ़रमानी से बाज़ नहीं

आया, लाओ आज उसको सज़ा दूं।

तो मलकुलमौत नेहायत तकलीफ़देह सूरत में उसके पास आते हैं। उनके चेहरे पर बारह आंखे होती हैं, उनके पास जहन्नम की आग का एक गुरुज (डन्डा) होता है, जिसमें कांटे होते हैं, उनके साथ पांच सौ (500) फ़रिश्तों की जमात होती है, जिनके हाथ में आग के अंगारे और आग के कोड़े होते हैं, मलकुलमौत आते ही उसे गुरूज से मारते हैं, जिसकी वजह से गुरूज के कांटे उसकी रग रग में घुस जाते हैं, बाक़ी फ़रिश्ते उसके मुंह और सुरीन पर कोड़े मारना शुरू करते हैं।

फिर उसकी रूह को पाँव की उंगलियों से निकालना शुरू करते हैं। रूक-रूक कर उसकी रूह निकाली जाती है, ताकि तकलीफ़ पर तकलीफ़ हो, फिर ज़हन्नम की आग के अंगारे उसकी पीठ के नीचे रखते हैं और मलकुलमौत उससे कहते हैं कि ऐ मलऊन रूह निकल! और उस जहन्नम की तरफ़ चल, जिसके बारे में अल्लाह ने ख़बरें भेजवाई थी।

फिर जब उसकी रूह बदन से रुख़्सत होती है, तो वो बदन से कहती है कि अल्लाह तआला तुझे बुरा बदला दे, तू मुझे अल्लाह की नाफ़रमानी में जल्दी से ले जाता था और उसका कहना मानने में आना कानी करता था, आज़ तू खुद भी हलाक हुआ और मुझे भी हलाक किया और यही मज़मून बदन, रूह से कहता है।

ज़मीन के वो हिस्से जिनपर अल्लाह की नाफ़रमानी करते हुए ये चलता था वो इसपर लानत करते हैं और शैतान के लश्कर दौड़े दौड़े अपने सरदार इब्लीस के पास पहुंचकर उसे खुंशख़बरी सुनाते हैं, कि एक आदमी को जहन्नम पहुंचा दिया।

फिर जब बरज़ख़ में पहुंचता है तो वहां की ज़मीन उसपर इतनी तंग हो जाती है कि उसकी पसलियां एक दूसरे में घुस जाती

हैं, और उसपर काले साँप मुसल्लत हो जाते हैं, जो उसकी नाक और पाँव के अंगूठे से काटना शुरू करते हैं, और दरमियान में दोनों सांप आकर मिलते हैं फिर उसके पास मुनकर नकीर आते हैं और उससे पूछते हैं, कि

तेरा रब कौन है?

तेरा दीन कौन है?

तेरे नही नबी कौन हैं?

वो हर सवाल के जवाब में ला इल्मी ज़ाहिर करता है, उसके जवाब न देने पर इतनी ज़ोर से उसे गुरूज से मारा जाता है, कि उस गुरूज की चिंगारियां क़बर में फ़ैल जाती हैं। उसके बाद उससे कहा जाता है कि ऊपर देख तो वो ऊपर की तरफ़ जन्नत का दरवाज़ा खुला हुआ देखता है, वो फ़रिश्ते उससे कहते हैं, कि ऐ अल्लाह के दुश्मन! अगर तू अल्लाह का फ़रमांबरदार बनकर रहता, तो तेरा ये ठिकाना न होता।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, उस वक़्त ऐसी हसरत होती है, कि ऐसी हसरत कभी न होगी, फिर जहन्नम का दरवाज़ा खोला जाता है और वो फ़रिश्ते कहते हैं कि अल्लाह के दुश्मन! अब तेरा ये ठिकाना है इसलिए कि तुमने अल्लाह तआला की नाफ़रमानी की। उसके बाद जहन्नम के सत्तर (70) दरवाज़े उसकी क़बर में खोल दिए जाते हैं, जिनमें से क़यामत तक गरम हवाएं और धुआं वगैरह आता रहता हैं। (किताबुलजनायज़)

अंबिया अलैहि0 की ग़ैबी मददों के वाक़्यात

(नोटः कुरआन की आयतों के तर्जुमे बिल्कुल लफ़्ज़ बलफ़्ज़ नहीं हैं)

एक मरतबा हुज़ूर सल्ल0 से एक आदमी ने आकर पूछा, कि ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0 क्या कभी आपके लिए आसमान से

खाना आया है?

आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि हां एक मरतबा एक डेगची में गर्म-गर्म खाना आसमान से उतरा था।

उसने फ़रमाया हां, मैंने उसमें से खाया था?

आप सल्ल0 ने पूछा क्या आप के खाने के बाद उसमें कुछ खाना बचा भी था?

आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि हां हमारे खाने के बाद इसमें कुछ खाना बच भी गया था।

उसने पूछा कि फिर उस बचे हुए खाने का क्या हुआ?

आपने फ़रमाया कि फिर वो डेगची आसमान की तरफ़ ऊपर चली गई लेकिन जब वो डेगची ऊपर जा रही थी, तो उसमें से ये आवाज़ आरही थी कि मैं आप लोगों में थोड़ा अर्से ही रहूंगी। क्योंकि लोग अलग अलग जमातें बनाएंगे और फिर एक दूसरे को क़त्ल करेंगे और क़यामत से पहले बहुत ज़्यादा मौतें होने लगेंगी। फिर ज़मीन पर खूब ज़्यादा ज़लज़ले आएंगे।

(हाकिम 1447-4 असाबा 8-6-2')

فتقبلها ربها بقبول حسن وانبتها نبا تا حسنا وكفلها زكريا كلما دخل عليها زكريا المحراب وجد عندها رزقا قال يا مريم انى لك هذا قالت هو من عند الله ان الله يرزق من يشاء بغير حساب.

हज़रत मरियम अलैहि0 के लिए हज़रत ज़करिया अलैहि0 ने मस्जिद अक़्सा में एक हुजरा बनवाया था, जिसमें दिन भर ये रहती थी और हर रोज़ शाम को उनके ख़ालू हज़रत ज़करिया? उन्हें अपने साथ अपने घर ले जाते थे, जहां ये अपनी ख़ाला के साथ रात गुज़ारती थी। सुबह फिर ज़करिया अलैहि0 उन्हें हुजरे में छोड़ देते थे। उस हुजरे के क़रीब किसी मर्द या औरत का आना मना

था। खुद हज़रत ज़करिया अलैहि0 भी शाम को उन्हें बाहर से आवाज़ देते तो ये बाहर आ जाती थीं। एक दिन हज़रत ज़करिया हुजरे के अन्दर चले गए तो अन्दर जाकर देखा कि हुजरे में हर क़िस्म के बेमौसमी फ़ल रखे थे।

तो बड़े तअज्जुब से मरियम अलैहि0 से पूछा कि ऐ मरियम! ये फ़ल कहां से आए? मरियम अलैहि0 ने फ़रमाया कि ऐ मेरे ख़ालू जान! ये फल तो रोज़ मेरे अल्लाह मुझे आसमानों से भेजकर खिलाते हैं। (आले इमरान 37)

هنالک دعا زکریا ربه قال رب هب لی من لدنک ذریة طیبة انک سمیع الدعاء فنا دته الملایکة وهو قائم یصلی فی المحراب ان الله یبشرک بیحی مصدقا بکلمة من الله وسید او حصور او نبیامن الصالحین

उसपर ज़करिया अलैहि0 ने ये दुआ की, ऐ अल्लाह! जब आप बग़ैर दरख़वास्त के और बग़ैर मौसम के फ़ल दे सकते हैं तो क्या मुझे इस उमर में एक औलाद नहीं दे सकते? ऐ अल्लाह मुझे एक औलाद अता फरमा। उसी वक़्त उनको ये बशारत हुई कि तुम्हें औलाद मिलेगी और उसका नाम यह्या रखना।

(सूरह आले इमरान 39-38)

واذقال الحواریون یا عیسی ابن مریم هل یستطیع ربک ان ینزل علینا مائدة من السماء قال اتقو الله ان کنتم مومنین قالو انرید ان نا کل منها وتطمئن قلوبنا ونعلم ان قد صد قتنا ونکون علیها من الشاهدین قال عیسی ابن مریم اللهم ربنا انزل علینا مائدة من السماء تکون لنا عید الا ولنا واخرنا وایة منک وارزقنا وانت خیر الرازقین قال الله انی منزلها علیکم فمن یکفر بعد منکم فانی اعذبه عذابا لا اعذبه احد امن العالمین۔

हज़रत ईसा अलैहि0 के लिए चालीस दिन तक आसमान से

एक ख्वान उतरता था जिसमें रोटी और मछली का सालन होता था, ये खाना मायदा के नाम से मशहूर हुआ। (सूरह माएदा 115-112)

وقولهم انا قتلنا المسيح عيسى ابن مريم رسول الله وما قتلوه وما صلبوه ولكن شبه لهم وان الذين اختلفوا فيه لفي شك منه مالهم به من علم الا اتباع الظن وما قتلوه يقينا بل رفعه الله اليه وكان الله عزيز احكيما.

अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहि0 को इसी इन्सानी जिस्म के साथ आज से तक़रीबन दो हज़ार (2000) साल पहले ज़िन्दा आसमानों के ऊपर उठा लिया। (सूरह निसाए 158-157)

और क़यामत आने से पहले दज्जाल को क़त्ल करने के लिए हज़रत ईसा अलैहि0 को फिर ज़मीन पर उतारा जाएगा, कि सुर्ख़ जोड़े में दो फ़रिश्तों के परों पर हाथ रखे हुए दमिश्क की जामा मस्जिद के मीनार पर सुब्ह फ़ज्र की नमाज़ के वक़्त उनका उतरना होगा। (बुख़ारी मुस्लिम)

واذا استسقى موسى لقومه فقلنا اضرب بعصاك الحجر فانفجرت منه اثنتا عشرة عينا قد علم كل اناس مشربهم كلو اواشربوامن رزق الله ولا تعثو الى الارض مفسدين.

हज़रत मूसा अलैहि0 जब अपनी क़ौम बनी इस्राईल को लेकर दरियाए नील के पार पहुंच गए तो मैदान तय में उनकी क़ौम ने पीने के पानी की हाजत बताई तो अल्लाह ने हुक्म दिया कि पत्थर की चट्टान पर लाठी मारो। मूसा अलैहि0 नें चटटान पर लाठी मारी, तो चट्टान से बारह चशमे जारी हो गए जिससे बनी इस्राईल के बारह कबीले एक एक चशमे से अपनी अपनी ज़रूरत का पानी लेने लगे। (सूरह बकरा 60)

وظللنا عليكم الغمام وانزلنا عليكم المن والسلوى كلوامن طيبات

مارزقنا کم وما ظلمونا ولکن کانو انفسھم یظلمون

फिर उन लोगों ने मूसा अलैहि0 के सामने भूख की हाजत पेश की, तो अल्लाह तआला ने उनके लिए भुनी हुई बुटेरें आसमान से उतारीं, उसे खाकर ये लोग सो गए। जब ये लोग सुबह सोकर उठे तो घास और टिड्डियों की पत्तियों पर उन्हें सफ़ेद ओले की तरह कोई चीज़ बिछी हुई नज़र आई, जब उसको खाया तो उन्हें पता चला कि ये तो हलवा है।

फिर दोपहर के वक़्त जब सूरज सर पर आया तो सूरज कि गर्मी से बचने के लिए इस मैदान में उन्हें कोई पेड़ वग़ैरह नज़र न आया, गर्मी से ये परेशान हुए तो मूसा अलैहि0 से उसकी शिकायत की। उसी वक़्त अल्लाह ने बादल के टुकड़े भेजे जो हर क़बीलों के सरों के ऊपर सूरज के दरमियान आड़ बन गया।

इस तरह चालीस साल तक ये लोग इसी मैदान में रहे। हर रोज़ शाम के वक़्त बुटेर और सुबह के वक़्त हलवा दोपहर के वक़्त बादल से ये लोग फ़ायदा उठाते रहे। बग़ैर कमाए धमाए अल्लाह ने उनकी हाजत को अपनी क़ुदरत से पूरा किया। (सूरह बक़रा 57)

وما تلک بیمینک یا موسی قال ھی عصای اتو کا علیھا واھش بھا علی غنمی ولی فیھا مارب اخری قال القھا یا موسی فالقاھا فاذا ھی حیۃ تسعی قال خذھا ولا تخف سنعیدھا سیر تھا الا ولی

हज़रत मूसा अलैहि0 से अल्लह तआला ने जब पूछा कि ऐ मूसा! तुम्हारे हाथ में क्या है? मूसा अलैहि0 ने जवाब दिया कि लाठी है। फिर अल्लाह तआला ने उनसे कहा कि ये लाठी ज़मीन पर डाल दो, जब मूसा अलैहि0 ने इस लाठी को ज़मीन पर डाला तो अल्लाह तआला ने उसे साँप में बदल दिया।

अब अल्लाह तआला ने मूसा अलैहि0 से कहा, कि उसे पकड़

लो जैसे ही मूसा अलैहि0 ने साँप को पकड़ा वो फिर लाठी बन गया। (सूरह ताहा 29 19)

وان يونس لمن المرسلين اذ ابق الى الفلك المشحون فساهم
فكان من المدحضين فالتقمه الحوت وهو مليم فلولا انه كان من
المسبحين للبث في بطنه الى يوم يبعثون فنبذنه بالعراء وهو سقيم وانبتنا
عليه شجرة من يقطين.

जब हज़रत यूनुस अलैहि0 नाव पर बैठकर नदी पार कर रहे थे और नाव भंवर में फ़ंसी तो सारे लोगों ने ये बात तय की कि आदमी ज़्यादा होने कि वजह से नाव फंसी हुई है, अगर इसमें से कोई एक आदमी नाव से कूद जाए, तो सारे आदमी डूबने से बच जाएंगे। इस बात पर यूनुस अलैहि0 बोले कि मैं इसके लिए तैयार हूं लोगों ने कहा आप रहने दीजिए फिर नाम लिखकर परची डाली गई, कि जिसका पाम निकलेगा वो पानी में कूदेगा और अगर वो खुशी से नहीं कूदेगा, तो हम लोग उसको पानी में फेंक देंगे, सब लोग इस बात पर तैयार हो गए। जब परची डाली गई तो इसमें यूनुस अलैहि0 का नाम निकला तो यूनुस अलैहि0 ने अपने ऊपर के कपड़े उतार कर नाव में रखे और दरिया में कूद गए। जैसे ही ये कूदे तो एक बड़ी मछली ने उनको अपने पेट में निगल लिया। चालीस दिन तक ये मछली के पेट में रहे फिर वहीं से उन्होंने दुआ की तो मछली ने पानी के ऊपर आकर रेत पर उन्हें उगल दिया।

(सूरह साफ्फ़ात 146-139)

क़ौमे समूद ने हज़रत सालेह अलैहि0 से अल्लाह पर ईमान लाने के लिए शर्त रखी, कि अगर तुम्हारा रब पहाड़ से एक हामला ऊंटनी पैदा करदे तो हम लोग तुम्हें नबी माल लेंगे। जिसपर हज़रत सालेह अलैहि0 ने अल्लाह से दुआ की तो अल्लाह ने पहाड़ को

फाड़कर उसके अन्दर से एक हामला ऊंटनी पैदा कर दी, पहाड़ से बाहर आते ही उस ऊंटनी से एक बच्चा पैदा हुआ।

(कससुल अंबिया)

ووهبنا لد اورد سليمن نعم العبد انه اواب اذعرض عليه بالعشى الصفنت الجياد فقال انى احببت حب الخير عن ذكر ربى حتى توارت بالحجاب ردوها على فطفق مسحا بالسوق والا عناق.

एक बार हज़रत सुलैमान अलैहि० अपने घोड़ों का मुआयना कर रहे थे उनके मुआयना करने में इतना मशगूल हो गए कि अस्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई। उनको जब नमाज़ का ख़्याल आया तो सूरज ग़रूब हो चुका था, उन्होंने अल्लाह से दुआ की तो सूरज वापस आ गया सूरज के वापस आने पर उन्होंने अस्र की नमाज़ पढ़ी। (सूरह सॉद 33-30)

ولقد اتيناداورد منا فضلا يجبال اوبى معه والطير و النا له الحديد ان اعمل سابغات وقدرفي السردعن ذكرى واعملو صالحاني بما تعملون بصير.

हज़रत दाऊद अलैहि० को अल्लाह ने लोहे की ज़िरह बनाने का हुक्म दिया, हज़रत दाऊद अलैहि० जब लोहे को अपने हाथ से पकड़ते तो लोहा उनके हाथ में आते ही मोम हो जाता था।

(सूरह सबा 11-10)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि (एक मर्तबा हम लोगों पर) साया किया, तो हमने उससे (बारिश की) उम्मीद की, जिसपर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया जो फ़रिश्ता बादलों को चलाता है वो अभी हाज़िर हुआ था, उसने मुझे सलाम किया और बतलाया कि वो इस बादल को वादिये यमन की तरफ़ ले जा रहा है, जहां ज़रआ नाम की जगह पर इसका पानी बरसेगा।

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत अय्यूब रज़ि० को अल्लाह तआला ने जब बीमारी से शिफ़ा दी, तो ये अपनी बीवी के साथ अपने घर वापस होने लगे, तो उनके साथ रोज़ाना के खाने का जो सामान था, जिसमें एक बोरी में गेहूं था, और एक बोरी में जौ था, अल्लाह तआला ने उनके गेहूं को सोने का और जौ को चांदी का बना दिया। (क़ससुल अंबिया)

हुज़ूर सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया। कि हज़रत अय्यूब अलैहि० गुस्ल फ़रमा रहे थे कि अल्लाह तआला ने सोने की टिड्डियां उनपर बरसाईं तो हज़रत अय्यूब अलैहि० ने उन सोने की टिड्डियों को देखा तो मुटठी भर भर के कपड़े में रखने लगे, इसपर अल्लाह तआला ने उनसे कहा कि क्या हमने तुमको ग़नी नहीं बना दिया है? जो तुम इनको उठा रहे हो? जिसपर हज़रत अय्यूब अलैहि० ने अर्ज़ किया कि ऐ परवरदिगार, आपकी नेमतों और बरकतों से कब कोई बे परवाह हो सकता है "ولكن لا غنى عن بركتك"

(सहीह बुख़ारी)

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि सुलह हुदैबिया के दिन हुज़ूर सल्ल० प्याले से पानी लेकर वुज़ू कर रहे थे, कि आप सल्ल० की निगाह पास आए हुए सहाबा पर पड़ी सबके चेहरे पर परेशानी नज़र आ रही थी तो आप सल्ल० ने सहाबा रज़ि० से पूछा क्या बात हो गई है?

सहाबा रज़ि० ने कहा या रसूलुल्लाह! हम लोगों के पास न तो वज़ू के लिए पानी है और न पीने के लिए, बस इसी प्याले में पानी है जिससे आप वज़ू कर रहे हैं। ये सुनकर आप सल्ल० ने इस प्याले में अपना हाथ रखा, तो आप सल्ल० की उंगलियों के बीच से पानी निकलकर प्याले से बाहर गिरने लगे तो हम लोगों ने उस पानी को लेकर पिया और वज़ू किया। हम पानी पीने और वज़ू

करने वालों की तादाद उस दिन चौदह सौ थी।

(बिदाया 96-6 इब्ने सईद 179-1)

हज़रत अरबाज़ रज़ि0 फ़रमाते हैं, कि जब हम लोगों की जमात तबूक में थी, तो एक रात हम हुजूर सल्ल0 के पास देर से पहुंचे। उस वक़्त आप सल्ल0 और आप सल्ल0 के साथ वाले सहाबा रज़ि0 रात का खाना खा चुके थे। इतने में हज़रत जअआल बिन सुराक़ा रज़ि0 और अब्दुल्लाह बिन मअक़ल मुज़नी रज़ि0 भी कहीं से आए। आप सल्ल0 ने हम तीनों को खाने के लिए हज़रत बिलाल रज़ि0 से पूछा, कुछ खाने को है? हज़रत बिलाल रज़ि0 ने एक थैले को झाड़ा जिसमें से सात खजूरें निकल आईं। हुजूर ने उन सातों खजूरों को एक प्याले में रखा और प्याले पर अल्लाह का नाम लेते हुए हाथ फेरा फिर हम लोगों से कहा अल्लाह का नाम लेकर खाओ, हम लोगों ने खजूरें खाना शुरू की, मैं गिनता जा रहा था और गुठलियों को दूसरे हाथ में पकड़ता जा रहा था, मैंने चौवन (54) खजूरें खाईं, मेरे दोनों साथी भी मेरी ही तरह कर रहे थे, कि वो खजूरें गिन रहे थे, उन दोनों ने भी पचास (50) पचास (50) खजूरें खाई थी।

जब हम खा चुके, तो उस प्याले में वो सात खजूरें वैसी की वैसी ही बाक़ी थीं, फिर हुजूर सल्ल0 ने बिलाल रज़ि0 से फ़रमाया इन खजूरों को अपने थैले में रख लो, दूसरे दिन हुजूर सल्ल0 ने फिर वो खजूरें प्याले में डालीं और फ़रमाया अल्लाह का नाम लेकर खाओ, हम दस (10) आदमी पेट भरकर खजूरें खा गए, पर प्याले में इसी तरह सात खजूरें बची थीं।

फिर हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया अगर मुझे अपने रब से हया न आती तो मदीना पहुंचने तक ये खजूरें खाते रहते, फिर मदीना पहुंचकर आपने उन खजूरों को बच्चों में तक़्सीम कर दिया।

(बिदाया 118-6)

हज़रत बशीर बिन सईद रज़ि0 की बेटी ने बतलाया कि एक दिन मेरी मां ने मुझे मुट्ठी भर खजूरें थैली में डालकर दिया और कहा कि उन्हें अपने अब्बा (बशीर) और मामूं (अब्दुल्लाह़ बिन रवाहा रज़ि0) को दोपहर में खाने के लिए दे आओ।

मैं वो खजूरें लेकर मामूं और अब्बा को ढूंढते हुए हुजूर सल्ल0 के क़रीब से गुज़री हुजूर सल्ल0 ने मुझे अपने पास बुलाया और पूछा इस थैली में क्या है? मैंने कहा कि खजूरें। हुजूर सल्ल0 ने वो खजूरें मुझसे अपने दोनों हाथों में ली, जिससे आपके दोनों हाथ भी न भरपाए। आपके कहने पर एक कपड़ा बिछाया गया, जिसपर आप सल्ल0 ने वो खजूरें बिखेर दिए फिर एक सहाबी से कहा, जाओ ख़न्दक़ वालों को बुला लाओ कि वो लोग आकर खजूरें खा लें, एलान पर सारे ख़न्दक़ वाले जमा हो गए और खजूरें खाने लगे वो खजूरें बढ़ती चली जा रही थी, जब वो सारे लोग खाकर चले गए तो खजूरें कपड़े से बाहर तक गिर रही थीं।

(दलायल पेज 180 बिदाया 116-6)

बदर की लड़ाई में हज़रत उकाशा बिन मोहसिन रज़ि0 की तलवार टुट गई, ये देखकर हुजूर सल्ल0 ने उन्हें पेड़ की एक टहनी पकड़ा दी हज़रत उकाशा रज़ि0 के टहनी पकड़ते ही, अल्लाह तआ़ला ने उस टहनी को तलवार में बदल दिया, जिसका लोहा बड़ा साफ़ व मज़बूत था। (इब्ने सईद 188-1)

हज़रत समुरह बिन जुनदुब रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हम लोग हुजूर सल्ल0 के पास बैठे हुए थे कि इतने में सरीद का एक प्याला आप सल्ल0 की ख़िदमत में पेश किया गया, आप सल्ल0 ने उसमें से खाया और जो लोग वहां पर मौजूद थे, उन सब ने भी खाया, जोहर तक लोग बारी बारी आते रहे और उसमे से खाते रहे।

एक आदमी ने हज़रत समुरह रज़ि0 से पूछा कि क्या इस प्याले में कोई आदमी और सरीद डाल जाता था? हज़रत समुरह रज़ि0 ने फ़रमाया ज़मीन से तो लाकर नहीं डाला जाता था, अलबत्ता आसमान से ज़रूर डाला जा रहा था।

(बिदाया 112-6 दलायल 158)

हज़रत वासला बिन अस्क़अ रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैं असहाब सुफ़्फ़ा में से था एक दिन हुजूर सल्ल0 मुझसे रोटी का टुकड़ा मंगवाया और उसके छोटे छोटे टुकड़े करके प्याले में डाल दिया फिर उस प्याले में गर्म पानी और चर्बी डालकर उसे अच्छी तरह मिलाया फिर उसकी ढेरी बनाकर बीच में ऊंचा करके मुझसे फ़रमाया जाओ और अपने समेत दस आदमियों को मेरे पास बुलाओ मैं दस आदमियों को बुला लाया। आपने फ़रमाया खाओ लेकिन अपने आगे से खाना, बीच से न खाना क्योंकि बरकत ऊपर से उतरती है। चुनांचे हम सबने उसमें से पेटभर कर खाया।

(हैशमी 305-8 दलायल 150)

हज़रत अब्बास बिन सुहेल रज़ि0 फ़रमाते हैं एक सुबह लोगों के पास पानी बिल्कुल नहीं था लोगों ने हुज़ूर सल्ल0 से ये बात बतलाई हुज़ूर सल्ल0 ने दुआ की तो अल्लाह तआ़ला ने एक बादल उसी वक़्त भेजा जो खूब ज़ोर से बरसा, लोग सैराब हो गए। फिर सबने अपनी ज़रूरतें पूरी की और बरतनों में भी भर लिया।

(दलायल पेज 190)

हुज़ूर सल्ल0 ने किसी काम के लिए दो सहाबी को बाहर भेजा। जाते वक़्त उन दोनों ने हुज़ूर सल्ल0 को बतलाया कि हम लोगों के पास रास्ते के लिए कुछ नहीं है हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया एक मश्क ढूंढकर लाओ वो एक मश्क लेकर आए तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया इसे भरदो उन्होंने उसे पानी से भर दिया। हुज़ूर सल्ल0

ने उस मश्क का मुंह रस्सी से बांधा और उन्हें देकर फ़रमाया, जब तुम लोग चलते चलते फ़लां जगह पर पहुंचोगे तो वहां अल्लाह तआला तुम्हें ग़ैब से रोज़ी देंगे चुनाने वो दोनों चल पड़े जब चलते चलते ये दोनों उस जगह पहुंचे जहां के बारे में हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया था, तो उनके मश्क का मुंह अपने आप खुल गया, उन्होंने देखा कि मश्क में पानी की जगह दूध और मक्खन भरा हुआ है, फिर उन लोगों ने पेट भरकर मक्खन खाया और दूध पिया।

(इब्ने सईद 172-1)

जन्नत दोज़ख़ की सैर

हुज़ूर सल्ल0 ने एक सुबह इरशाद फ़रमाया पिछली रात मेरे अल्लाह ने मुझको ख़ास इज़्ज़त और बुज़ुर्गी से नवाज़ा, के पिछली रात जब मैं सो रहा था, रात के एक हिस्से में जिब्राईल अलैहि0 आए और मुझको जगाया मैं पूरी तरह से जाग भी न पाया था, कि मुझको हरमे काबा में उठा लाए वहां जिबराईल अलैहि0 ने मेरी सवारी के लिए खच्चर से कुछ छोटा जानवर बुराक़ पेश किया, जो सफ़ेद रंग का था जब मैं उसपर सवार होकर चला तो उसकी धीरी रफ़्तार का हाल ये था, कि जहां तक मुझे नज़र आता था उसका पहला क़दम वहां पर पड़ता था, अचानक हम लोग बैतुल मक़दिस जा पहुंचे यहां जिबराईल अलैहि0 के इशारे पर हमने बुराक़ को उस जगह खड़ा कर दिया, जिस जगह बनी इस्राईल के नबी अपनी सवारियां खड़ी किया करते थे।

फिर मैं मस्जिदे अक़्सा में दाख़िल हुआ और दो रकात नमाज़ पढ़ी। फिर अर्श पर जाने की तैयारी शुरू हुई। उसके बाद अर्श का सफ़र शुरू और जिबराईल अलैहि0 के साथ बुराक़ ने आसमान की तरफ़ उड़ान भरी जब हम पहले आसमान तक पहुंच गए तो जिबराईल अलैहि0 ने आसमान का दरवाज़ा खोलने के लिए फ़रिश्ते

से कहा दरवाज़े पर मुक़र्रर फ़रिश्ते ने पूछा, कौन है?

जिबराईल अलैहि0 ने कहा, मैं जिबराईल हूं।

फ़रिश्ते ने पूछा तुम्हारे साथ कौन है?

जिबराईल अलैहि0 ने जवाब दिया, मोहम्मद सल्ल0।

फ़रिश्ते ने पूछा क्या उन्हें ऊपर बुलाया गया है?

जिबराईल अलैहि0 ने कहा बेशक फिर फ़रिश्ते ने दरवाज़ा खोला और दरवाज़ा खोलते हुए मुझसे कहा, कि आप जैसी हसती का यहां आना मुबारक हो जब हम अन्दर दाख़िल हुए तो, हज़रत आदम अलैहि0 से मुलाक़ात हुई। जिबराई अलैहि0 ने मेरी तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा, ये आपके बाप आदम अलैहि0 हैं। आप उनको सलाम कीजिए मैंने उनको सलाम किया और उन्होंने सलाम का जवाब देते हुए कहा कि मर्हबा सालेह बेटे और सालेह नबी। उसके बाद दूसरे आसमान पर पहुंचे और पहले आसमान की तरह सवालों का जवाब देकर दरवाज़ा में दाख़िल हुए तो वहां यह्या और ईसा अलैहि0 से मुलाक़ात हुई। जिबराईल अलैहि0 ने उनका तआरूफ़ कराया और हमसे कहा कि आप सलाम में पहल कीज़िए मैंने सलाम किया और उन दोनों ने जवाब देते हुए फ़रमाया मुबारक हो ऐ बरगुज़ीदा नबी।

उसके बाद चौथे आसमान पर भी उन्हें सवालों के बाद हज़रत इदरीस अलैहि0 से मुलाक़ात हुई और पांचवें आसमान पर हज़रत हारून अलैहि0 से और छटे आसमान पर मूसा अलैहि0 से इसी तरह मुलाक़ात हुई लेकिन जब मैं वहां से सातवें आसमान की तरफ़ जाने लगा तो हज़रत मूसा अलैहि0 रंजीदा हो गए। जब मैंने उसकी वजह पूछी तो फ़रमाया मुझे ये रश्क हुआ कि अल्लाह तआला की ज़ोरदार हुकुमत ने ऐसी हस्ती को (जो मेरे बाद दुनिया में भेजी गई) ये शर्फ दे दिया, कि उसकी उम्मत मेरी उम्मत के

मुक़ाबले में कई गुना जन्नत का फ़ैज़ हासिल करेगी।

उसके बाद पिछले सवालों और जवाबों का सिलसिला तय करके जब मैं सातवें आसमान पर पहुंचा तो हज़रत इबराहीम अलैहि0 से मुलाक़ात हुई जो "बैतुलमामूर" से पीठ लगाए बैठे हुए थे, जिसमें हर दिन सत्तर हज़ार (70000) नए फ़रिश्ते (इबादत के लिए) दाख़िल होते हैं। हज़रत इबराहीम ने मेरे सलाम का जवाब देते हुए फ़रमाया मुबारक मेरे बेटे और बरगुजीदा नबी" यहां से फिर मुझे सिदरतुल मुनतहा तक पहुंचाया गया, जिसका फल झरबैर के गुठलियों के बराबर है और जिसके पत्ते हाथी के कान की तरह चौड़े हैं उसपर अल्लाह के लातादाद फ़रिश्ते जुगनू की तरह चमक रहे थे और अल्लाह की ख़ास तजल्ली ने उनको हैरतनाक तौर पर रोशन और कैफ़ वाला बना दिया। (मुस्लिम, बुख़ारी)

सहाबा रज़ि0 के ग़ैबी मददों के वाक़्यात

हज़रत आयशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि एक दिन हुजूर सल्ल0 घर में तशरीफ़ लाए, मैं आपके चेहरे के आसार देखकर समझ गई, कि आज कोई अहम बात पेश आई है आप सल्ल0 ने घर में वजू फ़रमाया और किसी से कोई बात किए बग़ैर मस्जिद में चले गए, मैं हुजरे की दिवार से कान लगाकर खड़ी हो गई, कि सुनूँ, आप क्या इरशाद फ़रमाते हैं? आप मेम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और बयान फ़रमाया ऐ लोगो! अल्लाह तआला का इरशाद है, कि अम्र बिलमारूफ़ और नेही अनिलमुनकर करते रहो। (अल्लाह की पहचान कराते रहो और अल्लाह के ग़ैर से कुछ नहीं होता है, उसे समझाते रहो) अगर तुमने ऐसा न किया,

1- तो, मैं तुम्हारी दुआओं को क़बूल नही करूंगा।

2- तुम मुझसे सवाल करोगे तो मैं तुम्हारे सवालों को पूरा नहीं करूंगा।

3- तुम अपने दुश्मनों के खिलाफ़ मुझसे मदद तलब करोगे, तो मैं तुम्हारी मदद न करूंगा।

आप सल्ल0 ये बयान फ़रमाकर मेम्बर से नीचे तशरीफ़ ले आए। (इब्ने माजा)

उम्मे अयमन रज़ि0 फ़रमाती हैं, कि मैं हिजरत करके मदीना जा रही थी मुनसरिफ़ नाम की जगह पर पहुंची तो शाम हो गई थी, रोज़ा से थी लेकिन हमारे पास पानी नहीं था और प्यास के मारे बुरा हाल था तो आसमान से सफ़ेद रस्सी में पानी से भरा हुआ ढोल उतरा उम्मे अयमन रज़ि0 कहती हैं कि मैंने उस डोल से खूब पानी पिया फिर उस दिन के बाद से मुझे कभी प्यास नहीं लगी। हालांकि मैं तेज़ गर्मियों में रोज़ा रखती थी ताकि मुझे प्यास लगे। लेकिन मुझे प्यास नहीं लगती थी।

(असाबा 432-4 तबक़ाते इब्ने सईद 224-8)

हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ि0 की जमात बहरीन गई हुई थी सफ़र में पानी नहीं था जिसकी वजह से ऊंट भी प्यास के मारे क़ाफ़िले से भाग गए और उनपर जो सामान और खाना बंधा हुआ था उससे भी सहाबा रज़ि0 महरूम हो गए। सारी जमात प्यास से परेशान हो गई तो तयम्मुम करके सबने नमाज़ पढ़ी और नमाज़ पढ़कर अल्लाह से पानी का इन्तेज़ाम करने की दुआ की, ये लोग दुआ कर ही रहे थे कि पीछे से पानी उबलने की आवाज़ सुनी। जब पीछे पलटकर देखा, तो ज़मीन से एक चश्मा फूटकर पानी की धार बह रही थी और जो जानवर सामान लेकर चले गए थे वो सब भी एक साथ वापस आ रहे थे, जैसे उन्हें कोई पकड़कर ला रहा हो। (बैहक़ी, बुख़ारी)

अब्दुल्लाह बिन जफ़र रज़ि0 को दस लाख (1000000) दिरहम के बदले में एक ज़मीन मिली जो बन्जर थी, उन्होंने अपने

गुलाम से मुसल्ला लेकर उस ज़मीन पर चलने को कहा। ज़मीन पर पहुंचकर गुलाम से मुसल्ला बिछाने को कहा फिर मुसल्ले पर खड़े होकर दो रकात नमाज़ पढ़ी सजदे में बहुत देर तक पड़े रहे, फिर नमाज़ से फ़ारिग़ होकर, गुलाम से कहा कि मुसल्ला उठाकर यहां की ज़मीन खोदो। जब गुलाम ने वहां की ज़मीन खोदी तो पानी का एक चश्मा वहां उबलने लगा। (फ़ज़ायले आमाल)

एक मरतबा हज़रत अनस रज़ि0 के गुलाम ने हज़रत अनस रज़ि0 से बाग़ और खेत में पानी न होने की शिकायत की। तो हज़रत अनस रज़ि0 ने उससे पानी मांगा और वज़ू किया फिर दो रकात नमाज़ पढ़ी और गुलाम से कहा, कि बाहर जाकर देखो, क्या आसमान से बादल आया? उसने बाहर देखकर बताया कि बादल तो नहीं है जिसपर हज़रत अनस रज़ि0 ने दोबारा तीसरी और चौथी मरतबा नमाज़ पढ़कर फिर गुलाम से कहा जाकर देखो। इस बार गुलाम ने आकर बताया कि हां चिड़िया के पर के बराबर एक बादल नज़र आ रहा है। ये सुनकर उन्होंने फिर नमाज़ पढ़ी और खूब देर तक दुआ करते रहे, फिर गुलाम ने बताया कि खूब बारिश हो रही है तो आपने उसे अपना घोड़ा देकर कहा, कि जा देखकर आ कहां तक बारिश हुई? वो गया और वापस आकर उसने बताया कि अपने बाग़ और खेत के अलावा कहीं बारिश नहीं हुई है।

(तबक़ाते इब्ने सईद)

चूहे के बिल से रिज़्क़

एक दिन हज़रत मिक़दाद रज़ि0 ज़रूरत पूरी करने के लिए अपने घर से चले और एक बेआबाद जगह पर ज़रूरत पूरी करने के लिए बैठ गए, इतने में एक बड़ा सा चूहा एक दीनार अपने मुंह में दबाए हुए आया और उनके सामने उसे डालकर वापस चला गया। एक एक करके उस चूहे ने सत्तर (70) दिनार उनके सामने लाकर

रखे।

हज़रत मिक्दाद रज़ि0 वो दीनार लेकर हुज़ूर सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूरा वाक़्या बताया। हुज़ूर सल्ल0 ने उनसे पूछा कि तुमने चूहे के बिल में अपना हाथ तो नहीं डाला था?

हज़रत मिक्दाद रज़ि0 ने जवाब दिया या रसूलुल्लाह सल्ल0 मैंने उसके बिल में अपना हाथ नहीं डाला था।

हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया उसे ले लो, ये अल्लाह की तरफ़ से तुम्हें रोज़ी भेजी गई है, जिसका तुमसे वायदा किया गया है, कि तुम्हें ऐसी जगह से रोज़ी दूंगा, जहां से तुम्हें गुमान भी न होगा

उनकी बीवी हज़रत ज़बाआ रज़ि0 कहती हैं, कि अल्लाह तआला ने उन दीनारों में बहुत बरकत फ़रमाई, ये उस वक़्त तक ख़त्म नहीं हुए जब तक कि हमारे घर में चांदी के दरहम बोरियों में भरकर नहीं रखे जाने लगे। (दलायल 165)

तीन दिनार का सरमाया वो भी सदक़ा कर दिया

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 दूसरों पर खर्च करने के लिए घर पर पैसे रखते थे। कभी किसी मांगने वाले को ख़ाली हाथ वापस नहीं करते थे अगर पैसे नहीं होते तो उसे एक प्याज़ या एक खजूर ही दे देते थे, एक दिन मांगने वाला आया एक दीनार उसको दे दिया, फिर थोड़ी देरे बाद तीसरा आया उन्होंने वो भी उठा कर उसे दे दिया।

उनकी ईसाई बांदी ने जब आकर देखा तो उसे बहुत गुस्सा आया और उसने गुस्से में कहा कि तुमने हमारे खाने के लिए भी कुछ नहीं छोड़ा उन्होंने उसकी बात सुनी और आकर लेट गए, जब ज़ोहर की अज़ान हुई, तो ये उठे और वजू करके मस्जिद चले गए ये रोज़े से थे। इस वजह से उनकी बांदी को उनपर तरस आ गया

औ गुस्सा उतर गया, वो बांदी कहती है, कि मैंने उधार लेकर उनके लिए रात का खाना पकाया और घर में चिराग़ जलाने के लिए उनके बिस्तर के पास गई जब बिस्तर उठाया तो उसके नीचे सोने के दीनार रखे हुए थे मैंने उन्हें गिना तो वो पूरे तीन सौ थे। मैंने सोचा कि इतने दीनार ये अपने पास रखे हुए थे इसलिए वो दीनार मांगने वाले को दे दिया। जब इशा की नमाज़ के बाद वो घर वापस आए तो चिराग़ की रोशनी में दस्तरख़्वान लगा देखा, उसे देखकर मुस्कुराए और कहने लगे मालूम होता है कि अल्लाह के यहां से आया है? ये सुनकर मैं कुछ न बोली उनको खाना खिलाया फिर खाना खाने के बाद मैंने उनसे कहा, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए, आप अगर जाते वक़्त उन दीनारों के बारे में मुझे बता देते तो मैं उन दीनारों को उठाकर रख लेती।

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 ने पूछा कौन से दीनार? मेरे पास तो कुछ नहीं था जिसे मैं छोड़कर जाता तो मैंने बिस्तर उठाकर वो दीनार दिखाए उन दीनारों को देखकर वो खुश भी हुए और हैरान भी हुए उनकी इस ख़ुशी और हैरानी को देखकर मुझपर बड़ा असर हुआ, मैंने अपना जन्नार काट डाला और मुसलमान हो गई।

(हुलया 149-10)

हज़रत सायब बिन अक़रा रज़ि0 को हज़रत उमर रज़ि0 ने मदायन का गवर्नर बनाया एक बार वो किसरा के दरबार में बैठे हुए थे जहां उनकी नज़र दीवार पर बनी हुई एक तस्वीर पर पड़ी जो उंगली से एक तरफ़ इशारा कर रही थी।

हज़रत सायब बिन अक़रा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मेरे दिल में ये ख़याल आया कि ये किसी ख़ज़ाने की तरफ़ इशारा कर रही है, मैंने उस जगह को खोदा तो बहुत बड़ा ख़ज़ाना वहां से निकला मैंने ख़त लिखकर हज़रत उमर रज़ि0 को ख़ज़ाना मिलने की ख़बर की और

ये भी लिखा कि ये ख़ज़ाना अल्लाह ने मुझे बग़ैर किसी मुसलमान की मदद के दिया है। तो हज़रत उमर रज़ि0 ने जवाब में लिखा कि बेशक ये ख़ज़ाना तुम्हारा है लेकिन तुम मुसलमानों के अमीर हो इसलिए उसे मुसलमानों में बांट दो। (असाबा 2)

उम्मे सलमा रज़ि0 के यहां एक दिन हदिया में एक प्याला गोश्त आया। उन्होंने उस गोश्त के प्याले को हुज़ूर सल्ल0 के खाने के लिए अपनी बांदी से रखवा दिया उसी वक़्त बाहर मांगने वाला आया तो उम्मे सलमा रज़ि0 ने उसे आगे जाने को कहा, तो वो चला गया। इतने में हुज़ूर सल्ल0 आ गए तो उम्मे सलमा रज़ि0 ने अपनी बाँदी से वो गोश्त का प्याला हुज़ूर सल्ल0 के खाने के लिए मांगा, बाँदी जब प्याले लेकर आई तो उन्होंने देखा, कि उस गोश्त को अल्लाह ने पत्थर में बदल दिया था। (फ़ज़ायल सदक़ात)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हम हुज़ूर सल्ल0 के साथ अल्लाह के रास्ते में गए, मुझसे हुज़ूर सल्ल0 ने पूछा ऐ अबूहुरैरा तुम्हारे पास खाने को कुछ है? मैंने कहा जी हां कुछ खजूरें थैली में हैं। आप सल्ल0 ने कहा उन्हें ले आओ मैंने वो खजूर ले जाकर आपको दे दी। फिर फ़रमाया दस आदमियों को बुला लाओ मैं दस आदमियों को बुला लाया। उन सबने पेट भर कर खजूरें खाएं। इसी तरह दस आदमी आते रहे और खाते रहे। यहां तक कि सारी जमात ने वो खजूर खाई फिर भी थैली में खजूरें बची रहीं। फिर आप सल्ल0 ने मुझसे फ़रमाया ऐ अबूहुरैरा रज़ि0! जब तुम खजूरें खाना चाहो तो थैली में हाथ डालकर निकाल लिया करना पर इस थैली को कभी उलटना नहीं। अबूहुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल0 की सारी ज़िन्दगी इस थैली से खजूरें निकालकर खाता रहा फिर अबूहुरैरा रज़ि0 सिद्दीक़ रज़ि0 की सारी ज़िन्दगी इस थैली से खजूरें खाता रहा। जिस दिन हज़रत उसमान

रज़ि0 को शहीद किया गया उस दिन की भगदड़ में मेरी थैली कहीं गुम हो गई अपने शागिर्दों से फ़रमाया कि तुम लोगों को बताऊँ मैंने (लग भग बीस साल में) उसमें से कितनी खजूरें खाई हैं? लोगों ने कहा बतलाईए अबूहुरैरा रज़ि0 ने फ़रमाया दो सौ वसक़ यानी 1050 मन (लगभग 425 कुन्टल)। (बिदाया 117-6 दलायल 155)

हज़रत जाबिर रज़ि0 फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने आकर हुज़ूर सल्ल0 से गल्ला मांगा। आप सल्ल0 ने आधा वसक़ (लगभग एक कुन्टल) जौ उसे दे दिया। वो आदमी उसकी बीवी और उसका गुलाम ये तीनों बहुत दिनों तक उस जौ को खाते रहे लेकिन एक दिन उसने उस ग़ल्ले को तौल लिया। जब हुज़ूर सल्ल0 को उसके जौ तौलने का इल्म हुआ तो आप सल्ल0 ने उस आदमी को बुलाकर फ़रमाया अगर तुम लोग उसे तौलते न तो हमेशा खाते रहते वो जौ कभी ख़त्म न होता। (बिदाया 104-6)

हज़रत उम्मे शुरैक़ दौसिया रज़ि0 ने हिजरत की रास्ते में एक यहूदी का साथ हो गया, ये रोज़े से थीं और शाम हो चुकी थी, उनके पास खाने पीने को कुछ न था। उस यहूदी ने अपनी बीवी से कहा, कि तुम उस मुसलमान को पानी न देना वरना तुम्हारी ख़ैरियत नहीं। उम्मे शुरैक रज़ि0 प्यासी ही सो गई। तहज्जुद के वक़्त अल्लाह तआला ने एक पानी से भरा हुआ डोल और थैला आसमान से उतारा जिस डोल से उन्होंने खूब पानी पिया।

(इब्ने सईद 157-8)

कुप्पी से घी पलटने के बाद भी कुप्पी भरी रही

एक मर्तबा हज़रत उम्मे शुरैक रज़ि0 ने अपनी बांदी को घी देकर हुज़ूर सल्ल0 के यहां भेजा, हुज़ूर सल्ल0 ने उस कुप्पी से अपने बर्तन में घी पलट लिया और उस ख़ाली कुप्पी को बांदी के हवाले करके फ़रमाया, इस कुप्पी को घर जाकर लटका देना और

इसका मुंह बन्द न करना।

कुछ देर बाद उम्मे शुरैक रज़ि0 ने देखा, कि कुप्पी इसी तरह घी से भरी हुई लटक रही है, उन्होंने बांदी को बुलाकर डांटा कि मैंने तुझसे ये कुप्पी हुज़ूर सल्ल0 के यहां ले जाने को कहा था, उसे क्यों नहीं पहुंचाया? बांदी ने कहा मैं उसका घी दे आई थी।

ये सुनकर उम्मे शुरैक रज़ि0 हुज़ूर सल्ल0 के पास गई और जाकर सारी बात बताई उनकी बात सुनकर हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया अल्लाह ने तुम्हें बहुत जल्द बदला दे दिया। ऐ उम्मे शुरैक! उस कुप्पी का मुंह कभी बन्द न करना।

चुनाँचे बहुत दिनों तक उनके घर वाले उसका घी खाते रहे। एक बार भूल से उम्मे शरीक रज़ि0 ने उस कुप्पी का मुंह बन्द कर दिया। बस उसी रोज़ से उस कुप्पी का घी कम होने लगा और एक दिन ख़त्म हो गया। (इब्ने सईद 157-8)

एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल0 हज़रत फ़ातमा रज़ि0 के घर तशरीफ़ ले गए। हज़रत फ़ातमा रज़ि0 से पूछा क्या तुम्हारे यहां खाने को कुछ है? हज़रत फ़ातमा रज़ि0 ने कहा, कि मेरे यहा खाने को तो कुछ नहीं है।

ये सुनकर आप सल्ल0 चले गए कुछ देर बाद हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 की पड़ोसन ने दो रोटियां और एक टुकड़ा भुना हुआ गोश्त भेजा। हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 ने वो लेकर रख दिया और अपने बेटे से हुज़ूर सल्ल0 को बुला लाने को कहा।

जब हुज़ूर सल्ल0 दोबारा तशरीफ़ लाए तो हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 ने उनसे कहा, कि अल्लाह ने खाने को कुछ भेज दिया है, इसलिए मैंने आपको बुलाया है, हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया ले आओ, हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि जब मैं इस प्याले को लाई और खोलकर देखा तो मैं हैरान रह गई क्योंकि सारा प्याला गोश्त

और रोटियों से भरा हुआ था। मैं समझ गई कि अल्लाह ने बरकत दी, मैंने वो सारा खाना हुज़ूर सल्ल0 के सामने रख दिया। आप सल्ल0 ने खाने को देखकर मुझसे पूछा ऐ बेटी! तुम्हें ये खाना कहां से मिला? मैंने कहा ऐ अब्बा जान ये खाना ऊपर अल्लाह के यहां से आया है। ये जवाब सुनकर हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया ऐ बेटी! तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए है, जिसने तुमहें मरियम के मुशाबेह बनाया है।

क्योंकि अल्लाह तआला जब उन्हें आसमानों से रोज़ी भेजते थे, फिर उनसे जब उस रोज़ी के बारे में पूछा जाता, तो वो भी यही जवाब देती थीं कि अल्लाह तआला ने आसमानों के ऊपर से भेजा है। (तफ़सीर इब्ने कसीर 360-1)

हज़रत उम्मे मालिक रज़ि0 अपनी कुप्पी में घी रखकर हुज़ूर सल्ल0 को हदिया में भेजा करती थी। एक बार उनके बेटे ने सालन मांगा, उस वक़्त उनके घर में कुछ नहीं था वो अपनी इस कुप्पी के क़रीब गईं जिस कुप्पी में घी रखकर हुज़ूर सल्ल0 को भेजवाती थीं। उस कुप्पी में उन्हें घी मिल गया हालांकि उसे ख़ाली करके लटकाया था अपने बेटों को बहुत अर्से तक सालन की जगह उस कुप्पी से घी निकालकर खिलाती रहीं।

आख़िर एक बार उन्होंने उस कुप्पी को निचोड़ लिया फिर उसमें से घी निकलना बन्द हो गया। उन्होंने हुज़ूर सल्ल0 के पास जाकर सारा वाक़्या बताया। आप सल्ल0 ने उनसे पूछा तुमने उसे निचोड़ा था? उन्होंने कहा जी हां। आप सल्ल0 ने फ़रमाया अगर तुम उसे न निचोड़ती तो तुम्हें हमेशा उसमें से घी मिलता रहता।

(बिदाया 104-6)

हज़रत उम्मे ओस रज़ि0 ने घी को पकाकर एक कुप्पी में डाला और हुज़ूर सल्ल0 को हदिया में दे दिया हुज़ूर सल्ल0 ने वो

घी अपने बरतन में डालकर उन्हें कुप्पी वापस करते हुए बरकत की दुआ दी।

उन्होंने घर जा कर देखा कि वो कुप्पी घी से भरी हुई है, वो समझें कि शायद हुज़ूर सल्ल0 ने मेरा हदिया क़बूल नहीं किया है। वो हुज़ूर सल्ल0 के पास वापस आएं और अर्ज़ किया आप सल्ल0 ने मेरे हदिया क़बूल क्यों नहीं किया? हुज़ूर सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया कि मैंने तो हदिया क़बूल कर लिया था, ये तो अल्लाह ने बरकत फ़रमाई है कि तुम्हारी कुप्पी घी से भर गई।

चुनाँचे हुज़ूर सल्ल0 की सारी ज़िन्दगी वो उस कुप्पी से घी निकाल निकाल कर खाती रहीं। फिर जब हज़रत अली रज़ि0 और हज़रत मुआविया रज़ि0 में इख़्तलाफ़ पैदा हुआ तो उस वक़्त भी वो इसी से घी खाती थीं। (लगभग 21 साल हो चुके थे पर घी कुप्पी से ख़त्म नहीं हुआ)। (असाबा 431-4 हैशमी 310-8)

हज़रत उम्मे सलीम रज़ि0 ने अपनी मुंह बोली बेटी के हाथ हुज़ूर सल्ल0 को घी भेजवाया। वो लड़की देकर आई और कुप्पी को घर में लाकर लटका दिया। उम्मे सलीम रज़ि0 उस वक़्त घर में नहीं थीं जब वो घर में लौटीं तो कुप्पी से घी टपकता देखकर अपनी बेटी से कहा, मैंने तुमसे हुज़ूर सल्ल0 को घी भेजवाया था तो वापस क्यों ले आई? लड़की ने कहा, घी तो मैं दे आई हूं, अगर आपको मेरी बात पर इत्मीनान न हो तो आप खुद जाकर हुज़ूर सल्ल0 से पूछ लें। हज़रत उम्मे सलीम रज़ि0 उस लड़की को साथ लेकर हुज़ूर सल्ल0 के पास गईं और आप सल्ल0 से कहा, या रसूलुल्लाह मैंने इसके हाथ आपको घी भेजवाया था, ये कह रही है, कि उसने आपको घी दे दिया है, लेकिन कुप्पी घर में घी से भरी टपक रही है।

हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया कि हां ये मेरे पास आकर मुझे घी

तो दे गई है, अब तुम तअज्जुब इस बात पर कर रही हो कि वो ख़ाली कुप्पी घी से कैसे भर गई?!! अरे अल्लाह अब तुम्हें खिला रहे हैं तो इसमें से अब तुम भी खाओ और दूसरों को भी खिलाओ।

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि0 फ़रमाती हैं, कि मैं घर वापस आई और उस घी को थोड़ा सा अपने पास रखकर बाक़ी का सारा तक़्सीम कर दिया। हमने अपने बचे हुए घी को सालन की जगह पर एक या दो महीना इस्तेमाल किया।

(बिदाया 103-6 दलायल 204 असाबा 320-4)

एक दिन हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि0 ने हज़रत उमर रज़ि0 से कहा, कि मुझे आपकी वजह से लोगों का बुरा भला कहना पड़ता है। जब तब आप कोई ऐसी बात ज़बान से निकाल देते हैं कि लोगों को बोलने का मौक़ा मिल जाता है जैसे आज आप ने खुत्बे देते हुए ज़ोर से कहा, ऐ सारा! पहाड़ की तरफ़ हो जाओ। हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं अपने आपको क़ाबू में न रख सका, मैंने देखा, कि सारा की जमात एक पहाड़ के पास लड़ रही है और हर तरफ़ से उन पर हमला हो रहा है, इसपर मैं अपने आपको न रोक सका और बोल पड़ा कि 'ऐ सारा !" पहाड़ की तरफ़ हो जाओ। (ताकि सिर्फ़ सामने से लड़ना पड़े)

कुछ दिन बाद हज़रत सारा रज़ि0 का क़ासिद ख़त लेकर आया, जिसमें लिखा था, कि जुमा के दिन हम लोगों को जब दुश्मन ने घेर लिया था, तो उस वक़्त मुझे ये आवाज़ सुनाई पड़ी कि "सारा"! पहाड़ की तरफ़ हो जाओ! मैं वो आवाज़ सुनकर अपने साथियों समेत पहाड़ की तरफ़ हो गया। फिर हम लोगों ने दुश्मन को हरा भी दिया और उन्हें क़त्ल भी किया (सारा रज़ि0 की जमात मदीना से लग भग 500 किलो मीटर दूर दुश्मन से घिरी थी

जहां ये आवाज़ पहुंची थी)। (दलायल 210)

हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि0 और एक अन्सारी सहाबी रज़ि0 एक रात हुज़ूर सल्ल0 के पास थे, ये लोग अपनी किसी ज़रूरत के बारे में बातें कर रहे थे जब वहां से उठकर अपने घर आने लगे, तो बहुत रात हो चुकी थी, बाहर बहुत सख़्त अन्धेरा था।

उन दिनों लोगों के हाथ में एक एक छोटी लाठी थी, तो उनमें से एक की लाठी से एकाएक (टार्च की तरह) रोशनी निकलने लगी, जिसकी रोशनी में ये दोनों चलते हुए एक दोराहे पर पहुंचे जहां से दोनों को अलग होना था। तो दूसरे सहाबी की लाठी से भी रोशनी निकलने लगी और ये दोनों अपनी अपनी लाठी की रोशनी में अपने घरों को पहुंच गए।

(बिदाया 152-6 इब्ने सईद 606-3)

हज़रत हमज़ा बिन उम्र असलमी रज़ि0 फ़रमाते हैं, कि हम एक सफ़र में हुज़ूर सल्ल0 के साथ थे, सख़्त अन्धेरी रात थी, उसमें हम लोग इधर उधर बिखर गए तो हमारी उंगलियों की इस रोशनी से लोगों ने अपनी अपनी सवारी और गिरे हुए सामान को जमा किया, तब कहीं जाकर मेरी उंगलियों से रोशनी ख़त्म हुई।

(बिदाया 213-8 हैशमी 413-9)

हज़रत अबू हफ़्स फ़रमाते हैं, तमाम नमाज़ें रसूलुल्लाह के साथ पढ़ा करते थे। फिर अपने मोहल्ले बनू हारिस वापस हो जाते थे, एक रात सख़्त अन्धेरा था और बारिश भी हो चुकी थी हम लोग मस्जिद से निकले तो मेरी लाठी से रोशनी निकलने लगी, इस रोशनी में चलकर हम अपने मोहल्ले में पहुंचे। (हाकिम 350-3)

हज़रत अमर बिन अब्सा रज़ि0 एक सफ़र में गए वहां जब ये अपने ऊंट चराने जाते, तो दोपहर के वक़्त बादल आकर उनपर साया कर लेता ये जिधर जाते, बादल भी उधर ही चल देता।

(असाबा 6-3-)

हज़रत अब्बास बिन सुहेल रज़ि० फ़रमाते हैं, एक सुबह लोगों के पास पानी, बिल्कुल नहीं था, लोगों ने हुज़ूर सल्ल० से ये बात बतलाई। आप सल्ल० ने दुआ की तो अल्लाह तआला ने एक बादल उसी वक़्त भेजा, जो खूब ज़ोर से बरसा लोग सेराब हो गए, फिर सबने अपनी ज़रूरतें पूरी कि और बर्तनों में भर लिया।

(दलायल पेज 190)

एक क़बीला को हुज़ूर सल्ल० ने ये दुआ दी थी, कि जब भी इस क़बीला का कोई आदमी इन्तेक़ाल करेगा तो उसकी क़बर पर एक बादल आकर ज़रूर बरसेगा।

एक बार इस क़बीला के आज़ाद करदा एक गुलाम का इन्तेक़ाल हुआ तो मुसलमानों ने कहा, आज हम हुज़ूर सल्ल० के इस फ़रमान को भी देख लेंगे, कि क़ौम का आज़ाद करदा गुलाम क़ौम वालों में से ही गिना जाता है चुनानचे जब इस गुलाम को दफ़न किया गया तो एक बादल आकर उसकी क़बर पर बरसा।

(कन्ज़ 136-7)

हज़रत मालिक अशजई रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से अपने बेटे औफ़ के कैद हो जाने के बारे में बतलाया तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया उसके पास ये ख़बर भेज दो, कि "لا حول ولا قوة الا بالله" को कसरत से पढ़े।

चुनाँचे क़ासिद ने जाकर हज़रत औफ़ रज़ि० हुज़ूर सल्ल० का ये पैग़ाम पहुंचा दिया। हज़रत औफ़ रज़ि० ने ख़ूब कसरत से उसे पढ़ना शुरू कर दिया, तो काफ़िरों ने उनके हाथ को जिस चमड़े की डोरी से बाँधा हुआ था, वो डोरी टूटकर गिर गई, हज़रत औफ़ रज़ि० कैद से बाहर निकल आए। बाहर आकर उन्होंने देखा कि उन लोगों की एक ऊंटनी वहां पर मौजूद है हज़रत औफ़ रज़ि०

उसपर सवार होकर चल दिए। आगे जाकर देखा, कि उन काफ़िरों के सारे जानवर एक जगह पर जमा हैं उन्होंने जानवरों को आवाज़ लगाई तो सारे जानवर उनके पीछे चल पड़े।

जब ये मदीना पहुंचे और अपने घर के सामने जाकर ऊंटनी से उतरे तो सारा का सारा मैदान उनके साथ आए हुए ऊंटों से भर गया। उनके वालिद उनको लेकर हुज़ूर सल्ल0 के पास पहुंचे और सारा वाक़्या बताया, जिसपर हुज़ूर सल्ल0 ने उनसे फ़रमाया तुम्हारे साथ आए हुए सारे ऊंट तुम्हारे हैं, उनको जो चाहे करो। फिर ये आयत नाज़िल हुई :

ويرزقه من حيث لا يحتسب ومن يتو كل على الله فهو حسبه ان الله
بالغ امره قد جعل الله لكل شئى قدر

जो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला से डरता है, अल्लाह उसके लिए नुक़्सानों से निजात की शक्ल निकाल देते हैं और उसको ऐसी जगह से रोज़ी पहुंचाते हैं, जहां से उसको गुमान भी नहीं होता और जो आदमी अल्लाह पर तवक्कुल करेगा, तो अल्लाह तआ़ला उसके लिए काफ़ी हैं। (सूरह तलाक़ 3) (कनज़ुर 59-7)

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ि0 फ़रमाते हैं, कि मैं "रौहा" नाम की जगह के गिरजाघर में सो रहा था वो गिरजाघर अब मस्जिद बन चुकी है और उसमें नमाज़ भी पढ़ी जाती है जब मेरी आंख खुली तो मैंने देखा कि एक शेर मेरी तरफ़ आ रहा था मैं घबराकर अपने हथियारों की तरफ़ लपका तो शेर ने मुझसे इन्सान की आवाज़ में कहा कि ठहर जाओ! मुझे तुम्हारे पास एक पैग़ाम देकर भेजा गया है। ताकि तुम उसे आगे पहुंचा दो। मैंने कहा, तुम्हें किसने भेजा है? उसने कहा अल्लाह तआ़ला ने मुझे आपके पास इसलिए भेजा है ताकि आप मुआविया रज़ि0 को बतादें वो जन्नत

वालों में से हैं, मैंने कहा ये मुआविया रज़ि० कौन हैं? उसने कहा हज़रत अबूसुफ़ियान रज़ि० के बेटे। (हैशमी 357-9)

हज़रत सफ़ीना रज़ि० फ़रमाते हैं, कि मैं समुन्दर में सफ़र कर रहा था हमारी नाव टूट गई और हम बहते हुए जंगल में पहुंच गए हमें आगे रास्ता नहीं मिल रहा था, एकदम से मेरे सामने एक शेर आया मैंने शेर से कहा, कि मैं हुज़ूर सल्ल० का सहाबी सफ़ीना हूं मैं रास्ता भटक गया हूं, मुझे रास्ता बताओ।

ये सुनकर वो मेरे आगे आगे चल पड़ा और चलते चलते हमें रास्ते पर पहुंचा दिया, फिर उसने मुझे ज़रा धक्का दिया गोया कि वो मुझे रास्ता दिखला रहा हो। (बिदाया 149-67)

जमात के लिए जंगल दरिन्दों से ख़ाली हो गया

हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि० अपनी जमात के साथ जंगल में सफ़र कर रहे थे, कि शाम हो गई तो अपने साथियों से कहा यहां ख़ेमा लगालो! साथियों ने जंगल के जानवरों का उज़्र बताया ये सुनकर वो एक ऊंची जगह पर खड़े हुए और जंगल के जानवरों और कीड़ों मकोड़ों को मुख़ातिब करके एलान किया कि हम लोग हुज़ूर सल्ल० के सहाबी हैं। तुम लोगों को ये हुक्म देते हैं, कि इस जंगल को तीन दिन के अन्दर ख़ाली कर दो, वरना तुम लोगों का शिकार कर लिया जाएगा।

हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि० की ये आवाज़ सुनकर जंगल के जानवरों ने क़तार से जंगल से बाहर जाना-शुरू कर दिया। और तीन दिन से पहले ही सारा जंगल जानवरों और कीड़ों मकोड़ों से ख़ाली हो गया। (तबक़ात इब्ने सईद 325-7)

उमर रज़ि० का ख़त दरिया के नाम

हज़रत उमर बिन आस रज़ि० ने जब मिस्र फ़तेह कर लिया

तो अजमी महीनों में से "बोना" महीने के शुरू होने पर मिस्र वाले उनके पास आए और कहा, अमीर साहब! हमारे इस दरियाए नील की एक आदत है जिसके बग़ैर ये चलता नहीं, हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे पूछा वो आदत क्या है? उन्होंने कहा, जब इस महीने की बारह रातें गुज़र जाती हैं, तो हम ऐसी कुंवारी लड़की तलाश करते हैं जो अपने वालिदैन की इकलौती लड़की होती है उसके वालिदैन को राज़ी करते हैं और उसे सबसे अच्छे कपड़े और जेवर पहनाकर इसमें डाल देते हैं, हज़रत अमर बिन आस रज़ि० ने कहा ये काम इस्लाम में तो हो नहीं सकता क्योंकि इस्लाम अपने से पहले के तमाम (ग़लत) तरीक़े ख़त्म कर देता है। चुनाँचे मिस्र वाले बोना अबीब और मिस्री तीन महीना ठहरे रहे और आहिस्ता आहिस्ता दरियाए नील का पानी बिल्कुल ख़त्म हो गया। ये देखकर मिस्र वालों ने मिस्र छोड़कर कहीं और चले जाने का इरादा कर लिया।

हज़रत अमर बिन आस रज़ि० ने ये देखा तो उन्होंने इस बारे में हज़रत उमर रज़ि० को ख़त लिखा, हज़रत उमर रज़ि० ने जवाब में लिखा, आपने बिल्कुल ठीक किया, बेशक इस्लाम अपने पहले के तमाम ग़लत तरीक़े ख़त्म कर देता है मैं आपको एक पर्चा भेज रहा हूं जब आपको मेरा ख़त मिले तो आप मेरा वो परचा दरिया नील में डाल दें। जब ख़त हज़रत अमर रज़ि० के पास पहुंचा तो उन्होंने वो परचा खोला उसमें ये लिखा हुआ था। अल्लाह के बन्दे अमीरुलमोमनीन उमर की तरफ़ से मिस्र के दरियाए नील के नाम! अम्मा बाद! अगर तुम अपने पास से चलते हो तो मत चलो और अगर तुम्हें अल्लाह वाहिद कह्हार चलाते हैं तो हम अल्लाह वाहिद कह्हार से सवाल करते हैं कि वो तुझे चला दे चुनाँचे सलीब के दिन से एक दिन पहले ये परचा दरियाए नील में डाला इधर मिस्र वाले मिस्र से जाने की तैयारी कर चुके थे क्योंकि उनकी सारी

मईशत और ज़राअत का इन्हेसार दरियाए नील के पानी पर था। सलीब के दिन सुबह लोगों ने देखा, कि दरियाए नील में सोलह (16) हाथ पानी चल रहा है, इस तरह अल्लाह तआला ने मिस्र वालों की इस बुरी रस्म को ख़त्म कर दिया। (कन्ज़ 380-4)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल0 ने हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ि0 को जरीन की तरफ़ भेजा तो मैं भी उनके पीछे हो लिया। जब हम लोग समुन्दर के किनारे पर पहुंचे तो हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ि0 ने हम लोगों से कहा कि "बिस्मिल्लाह कहकर समुन्दर में घुस जाओ" चुनाँचे हम लोग बिस्मिल्लाह कहकर समुन्दर में घुस गए और हमने समुन्दर पार कर लिया और हमारे ऊंटों के पाँव भी गीले नहीं हुए।

(दलायल 209 हुलिया 1-8)

ईमान की अलामत

انما المومنون الذين اذا ذكر الله وجلت قلوبهم واذا تليت عليهم اياته زادتهم ايمانا وعلى ربهم يتوكلون.

"कि ईमान वाले तो वही हैं, कि जब उनके सामने अल्लाह का नाम लिया जाता है, तो उनके दिल डर जाते हैं, और जब अल्लाह की ख़बरें उन्हें सुनाई जाती हैं तो उन ख़बरों को सुनकर उनके यक़ीन बढ़ जाते हैं और वो लोग सिर्फ़ अपने रब पर ही तवक्कुल करते हैं। (अनफ़ाल 2)

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से रिवायत है, कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्ल0 से सवाल किया, कि ईमान क्या है?

आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया जब तुमको अल्लाह का हुक्म पूरा करके ख़ुशी हो और अल्लाह के किसी एक भी हुक्म को छूट जाने पर ग़म हो, तो समझो, तुम मोमिन हो।

हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि0 से रिवायत है, कि रसूलुल्लाह सल्ल0 को मैंने ये इरशाद फ़रमाते हुए सुना है, कि ईमान का मज़ा उसने चखा जो

अल्लाह तआला को रब,

इस्लाम को ज़रूरतों के पूरा करने का तरीक़ा (दीन) और

मोहम्मद सल्ल0 को रसूलुल्लाह मानने पर राज़ी हो जाए।

(मुस्लिम)

हज़रत अमर बिन आस रज़ि0 से रिवायत है, कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने दरियाफ़्त किया, कि कौनसा ईमान अफ़ज़ल है?

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने ये इरशाद फ़रमाया वो ईमान जिसके साथ हिजरत हो।

मैंने पूछा, कि हिजरत क्या है?

आप सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया हिजरत ये है, कि तुम बुराई को छोड़ दो। (मुसनद अहमद)

हज़रत अमर बिन शुएब रज़ि0 फ़रमाते हैं, कि रसूलुल्लाह सल्ल0 को मैंने ये इरशाद फ़रमाते हुए सुना है, कि कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जबतक कि हर अच्छी बुरी तक़दीर पर ईमान न लाए। (मसनद अहमद)

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 के सहाबा रज़ि0 ने एक दिन रसूलुल्लाह सल्ल0 के सामने दुनिया का ज़िक्र किया तो रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया ग़ौर से सुनो! ध्यान दो, यक़ीनन सादगी, ईमान का हिस्सा है, यक़ीनन सादगी ईमान का हिस्सा है। (अबूदाऊद)

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया कि कोई शख़्स उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हो सकता, जब तक कि उसकी तमाम ख़्वाहिशात उस तरीक़े (दीन) के ताबे न हो जाए जिसको मैं लेकर

आया हूं। (इब्ने माजा)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 फ़रमाते हैं, मैंने अपनी ज़िन्दगी का बड़ा हिस्सा इस तरह से गुज़ारा है कि हम में से हर एक कुरआन से पहले ईमान सीखता था और जो भी सूरत हज़रत मोहम्मद सल्ल0 पर नाज़िल होती थी, हर एक उसके हलाल व हराम को ऐसे ही सीखता था जैसे तुम लोग कुरआन सीखते हो और जहां वक़्फ़ करना मुनासिब होता था, उसको भी सीखता था, फिर अब मैं ऐसे लोगों को देख रहा हों जो ईमान से पहले कुरआन हासिल कर लेते हैं और सूरह फ़ातेहा शुरू से आख़िर तक सारी पढ़ लेते हैं, और उन्हें पता नहीं चलता कि सूरह फ़ातेहा किन कामों का हुक्म दे रही है और किन कामों से रोक रही है और सूरत में कौन सी आयत ऐसी है, जहां जाकर रूक जाना चाहिए और सूरह फ़ातेहा को रद्दी खजूर की तरह बिखेर देता है, यानी जल्दी जल्दी पढ़ता है।

(हैशमी 165-1)

जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रज़ि0 फ़रमाते थे, हम नौ उमर लड़के हुज़ूर सल्ल0 से दुआ करते थे, पहले हमने ईमान सीखा जिससे हमारा ईमान और ज़्यादा हो गया। (इब्ने माजा 11)

अनमोल मोती

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को खूद ये दावत दी है, कि वों अल्लाह पर ईमान लाएं ताकि अल्लाह तआला उन्हें अपनी हिमायत और हिफ़ाज़त में ले लें। (हैशमी 232-5)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 ने फ़रमाया कोई बन्दा उस वक़्त तक ईमान की हकीक़त तक नहीं पहुंच सकता, जब तक कि वो ईमान की चोटी तक न पहुंच जाए। और ईमान की चोटी पर उस वक़्त तक नहीं पहुंच सकता जब तक उसके नज़दीक फ़क़ीरी मालदारी से और छोटा बनना, बड़े बनने से ज़्यादा महबूब न हो जाए और इसकी तारीफ़ करने वाला और उसकी बुराई करने वाला बराबर न हो जाए। (हुलिया 132-1)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 ने फ़रमाया कि बन्दा उस वक़्त तक ईमान की हकीक़त तक नहीं पहुंच सकता, जब तक कि आख़िरत पर दुनिया को तरजीह देने वाले लोगों को कम अक़ल न समझे । (हुलिया 306-1)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया जो इल्म और ईमान चाहेगा अल्लाह तआला उसे ज़रूर देंगे, जैसे इबराहीम अलैहि0 को दिया, कि उस वक़्त इल्म और ईमान न था। (हुलिया 325-1)

हज़रत अबूदरदा रज़ि0 से रिवायत है, कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया कि बन्दे का अल्लाह से और अल्लाह के बन्दे से उस वक़्त तक तअ़ल्लुक़ रहता हैं, जब तक वो अपनी ख़िदमत दूसरों से न कराए। बल्कि अपने काम वो खूद करे, और जब वो अपनी ख़िदमत दूसरों से कराता हैं, तो उसपर हिसाब वाज़िब हो जाता है।

(हुलिया 214-1),

हज़रत उमर रज़ि0 ने फ़रमाया कि बन्दा के और उसके और उसकी रोज़ी के दर्मियान एक परदा पड़ा हुआ है, अगर बन्दा सब्र से काम लेता है तो उसकी रोज़ी खूद उसके पास आजाती है। अगर बे सोचे समझे रोज़ी कमाने में घुस जाता है तो वो उस पर्दे को फाड़ लेता है। लेकिन अपने मुक़द्दर से ज़्यादा नहीं पाता है।

(कनजुल अमाल 210-8)

हज़रत उमर रज़ि0 ने फ़रमाया ऐ लोगों अपने बातिन की अस्लाह कर लो, तुम्हारा ज़ाहिर खूद ठीक हो जाएगा। तुम अपनी आख़िरत के लिए अमल करो तुम्हारे दुनिया के काम अल्लाह की तरफ़ से खुद बखुद हो जाएंगे। (बिदाया वन्निहाया 56-7)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 ने फ़रमाया कि कोई बन्दा अल्लाह के यहां चाहे जितनी इज्ज़त व शरफ़ वाला हो लेकिन जब दुनिया की कोई चीज़ या सामान उसे मिलता है, तो उस चीज के लेने की वजह से अल्लाह के यहां उसका दरजा कम हो जाता है।

(हुलिया 306-1)

हज़रत अली रज़ि0 ने फ़रमाया कि कुछ लोगों के जिस्म तो दुनिया में रहते हैं, लेकिन उनकी रूहों का तअल्लुक़ अल्लाह तआला से जुड़ा होता है, ऐसे ही लोग, इस ज़मीन पर अल्लाह तआला के ख़लीफ़ा है और यही लोग उसके दिन की दावत देने वाले हैं। हाए! मुझे उन लोगों के देखने का कितना शौक है।

(कनजुल आमाल 231-5)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया इब्ने आदम पर वही चीज़ मुसल्लत होती है, इब्ने आदम जिस चीज़ से डरता है। अगर इब्ने आदम, अल्लाह के सिवा किसी चीज़ से न डरे तो उसपर अल्लाह के सिवा कोई चीज़ मुसल्लत न हो।

इब्ने आदम को इस चीज़ के हवाले कर दिया जाता है, जिस चीज़ से उसे नफ़ा या नुक़सान मिलने का यक़ीन होता है, अगर इब्ने आदम अल्लाह के सिवा किसी चीज़ से नफ़ा या नुक़सान का यक़ीन न रखे तो अल्लाह तआला भी उसे किसी चीज़ के हवाले न करें। (कनज़ुल आमाल 65-7)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने लूह महफ़ूज़ को सफ़ेद मोती से पैदा किया, जिसके दोनों किनारों के पुटठे लाल याक़ूत के हैं। (तफ़्सीर इब्ने कसीर 267-4)

अल्लाह तआला ने मूसा अलैहि0 की तरफ़ वही भेजी कि ऐ मूसा फ़क़ीर वो है जो मुझे अपना कफ़ील और कारसाज़ न समझे और मरीज़ वो है जो मुझे तबीब न समझे और ग़रीब वो है, जो मुझे देने वाला और हमदर्द न समझे। (जवाहरुस्सना 61)

हदीस कुदसी ऐ मेरे बन्दे! एक इरादा तो करता है, और एक इरादा मैं करता हूं लेकिन होता वही है, जो मैं चाहता हूं। अगर तू अपनी चाहतों को मेरे ताबे नहीं करेगा तो मैं तेरी ही चाहतों में तुझे थका दूंगा और दूंगा वही जो मैं चाहता हूं। (कनज़ुल आमाल 54)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 ने फ़रमाया कि जो बन्दे इस्लाम की हालत पर सुबह व शाम करता है तो दुनिया की कोई चीज़ उसका नुक़सान नहीं कर सकती है। (हुलिया 132-1)

हज़रत अबीदा रज़ि0 ने फ़रमाया मोमिन के दिल की मिसाल चिड़िया जैसे है। जो हर दिन जाने कितनी बार इधर उधर पलटता रहता है। (हुलिया 102-1)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 ने फ़रमाया कि जिस आदमी के मुक़द्दर में जो लिखा है, वो उसे मिलकर रहेगा कोई तेज़ आदमी उससे आगे बढ़कर उसके मुक़द्दर का नहीं ले सकता। इसी तरह खूब ज़्यादा कोशिश करने वाला इन्सान वो चीज़ हासिल कर सकता

जो उसके मुक़द्दर में न लिखी हो। (हुलिया 134-1)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया गुनाह करने के बाद कुछ बातें ऐसी होती हैं जो गुनाह से भी बड़ी होती हैं, कि अगर गुनाह करते हुए तुम्हें अपने दाएं बांए के फ़रिश्तों से शर्म नहीं आई तो ये इस किए हुए गुनाह से भी बड़ा गुनाह है।

(कनज़ुल आमाल 224-8)

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि अपने लिए आसानी और रूख़सत वाला रास्ता इख़्तेयार न करो, वरना तुम गफ़लत में पड़ जाओगे और अगर तुम ग़फ़लत में पड़ जाओगे तो नुक़सान उठाओगे। (बिदाया वन्निहाया 307-7)

हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया जब इन्सान गहरी नीद में सो जाता है तो उसकी रूह को अर्श पर चढ़ाया जाता है। जो रूह अर्श पर पहुंचकर जागती है, उसका ख़्वाब सच्चा होता है और जो उससे पहले ही जाग जाती है, उसका ख़्वाब झूठा होता है। (हैशमी 164-1)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ये दुआ फ़रमाते हैं कि ऐ अल्लाह! मैं पनाह चाहता हूं इस नमाज़ से जो नफ़ा न पहुंचाती हो। (अबूदाऊद शरीफ़ 1549)

हज़रत मावा रज़ि० ने फ़रमाया, नमाज़ की सिफ़तें खड़ी होती हैं, तो

आसमानो के दरवाज़े,
जन्नत के दरवाज़े और
जहन्नम के दरवाज़े,
खोल दिए जाते हैं और सजी हुई हूरें ज़मीन की तरफ़ झांकती हैं। (हाकिम 494-3)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया मुक़द्दर के झुठलाने

वाले की इयादत न किया करो और न ही उनकी नमाज़े-ए-जनाज़ा पढ़ा करो। (तफ़सीर इब्ने कसीर- 4/267)

25- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया! कि इस उम्मत का पहला शिर्क, मुक़द्दर का झुठलाना है। (अहमद)

26- हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया! जिनके अमल-इल्म के ख़िलाफ़ होंगे वो अमल अल्लाह की ओर ऊपर नहीं जायेंगे। (कंज-5/233)

27- हज़रत अबूदर्दा रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ुर सल्ल० ने फ़रमाया! तुम जितना चाहे इल्म हासिल कर लो इल्म हासिल करने का सवाब तब मिलेगा, जब तुम उस इल्म पर अमल करोगे। (इब्ने अदी, ख़तीब)

28- हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, उस इबादत में ख़ैर नहीं, जिसका दीनी इल्म न हो और उस दीनी इल्म में ख़ैर नहीं, जिसे आदमी समझा न हो और क़ुरआन की इस तिलावत में कोई ख़ैर नहीं, जिसमें इंसान क़ुरआन के मानी और मतलब में ग़ौरो-फ़िक्र न करे। (हालिया 1:177)

29- हज़रत मुआविया रज़ि० फ़रमाते हैं कि सबसे ज़्यादा गुनाह करने वाला इंसान वह है, जो क़ुरआन पढ़े, लेकिन उसके मानी और मतलब को न समझे, फिर वह बच्चे, गुलाम, औरत और बाँदी को क़ुरआन सिखाये, फिर वह सारे लोग मिलकर क़ुरआन के ज़रिए इल्म वालों से झगड़ा करें। (जामे बयानुल-इल्म, 2:194)

30- हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने फ़रमाया कि जिसका इल्म, यक़ीन तक, यक़ीन डर तक, डर अमल तक, अमल तक़वा तक, तक़वा इख़्लास तक और इख़्लास मुशाहिदे तक नहीं पहुँचता तो वह शख़्स हलाक हो जाता है। (पाँच मिनट का मद्रसा)

31- हुज़ुर सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला से वही

लोग डरते हैं, जो उसकी क़ुदरत का इल्म रखते हैं।

(सूरह फ़ातिर, आयत 28)

32- हज़रत इब्न मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया, उम्मत वह इंसान है, जो लोगों को भलाई और ख़ैर सिखलाये। (इब्न सअ्द, 4:165)

33- हज़रत इब्न अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि अय्यूब अलैहि० के सामने एक मिस्कीन पर ज़ुल्म हो रहा था तो उस मिस्कीन ने हज़रत अय्यूब अलैहि० से मदद मांगी कि ज़ुल्म को रोक दे, लेकिन उन्होंने उसकी मदद न की, इतनी सी बात पर अल्लाह तआला ने उनको बीमारी में मुब्तिला करके उनका सारा माल ख़त्म कराकर आज़माइश में डाल दिया। (कंज़ुल आमाल, 2:248)

34- हुज़ुर सल्ल० हज़रत अली रज़ि० को किसी तक़ाज़े पर भेजते थे, तो हज़रत जिब्रील अलैहि० उनको दाहिनी तरफ़ से और हज़रत मीकाईल अलैहि० को बाईं तरफ़ से उनको अपने घेरे में लेते थे, जब तक वह वापस न आएँ, तब तक यह दोनों उनके साथ रहते थे। (अहमद, 1:199, इब्न साअ्द, 3:38)

35- सत्ताइस (27) रमज़ान को हज़रत अली रज़ि० शहीद किये गये और 27 रमज़ान ही को हज़रत ईसा अलैहि० को आसमानों पर उठाया गया। (हिलया, 1:63)

36- हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत सअ्द बिन अबी वक़ास रज़ि० को वसीयत की कि ऐ सअ्द! तुमने हुज़ूर सल्ल० को नबी बनाए जाने से लेकर हमसे जुदा होने तक जिस काम को करते हुए नहीं देखा है वह काम तुम्हारे सामने है, लिहाज़ा उस काम की पाबन्दी करते रहना क्योंकि यही असल काम है। यह मेरी तुमको ख़ास नसीहत है। अगर तुमने इस काम को छोड़ दिया या इस काम की तरफ़ तवज्जोह न दी तो तुम्हारे सारे अमल बर्बाद हो जाएंगे और तुम घाटा उठाने वाले बन जाओगे।

गुनाहे कबीरा

हुज़ूर अकरम सल्ल० का इर्शाद है कि जब किसी मोमिन से गुनाहे कबीरा सरज़द हो जाता है तो ईमान का नूर उसके क़ल्ब से निकलकर उसके सर पर साया कर लेता है। (मुस्लिम शरीफ़)

गुनाहे कबीरा जिन पर वईदें आयी हैं (71) हैं जो बग़ैर तौबा के माफ़ नहीं होते, एक गुनाह भी जहन्नम में ले जाने के लिए काफ़ी है।

01- अम्र बिल मारूफ़ नह्य अनिल मुन्कर को न करना।

02- सूद देना।

03- धोखा देना।

04- चोरी करना।

05- ज़ुल्म करना।

06- जुआ खेलना।

07- झूठ बोलना।

08- सूद लिखना।

09- रिश्वत देना।

10- रिश्वत लेना।

11- शराब पीना।

12- चुगली करना।

13- डकैती करना।

14- तकब्बुर करना।

15- बदकारी करना।

16- रियाकारी करना।

17- खुदकुशी करना।

18- तोहमत लगाना।

19- बदगुमानी करना।

20- झुठी गवाही देना।

21- क़ता रहमी करना।

22- झुठी क़सम खाना।

23- सूद (ब्याज़) लेना।

24- नसब में तान करना।

25- वादा ख़िलाफ़ी करना।

26-यतीम का माल खाना।

27- सूद पर गवाह बनना।

28- बुरे लक़ब से पुकारना।

29- शरई परदा ना करना।

30- किसी की ग़ीबत करना।

31-अमानत में ख्यानत करना।

32- रिश्वत के मामले में पड़ना।

33- फ़र्ज़ एहकामात को छोड़ना।

34- बेख़ता जान को क़त्ल करना।

35- पड़ोसी को तकलीफ़ पहुँचाना।

36- शरई तरीक़े पर तर्के को तक्सीम ना करना बिल खुसूस बहनों को मीरास से उनका हिस्सा ना देना।

37- बुख़्ल यानी शरियत में जहाँ-जहाँ ख़र्च करने का हुक्म दिया है वहाँ न करना।

38- मज़दूर से काम लेकर उसकी मज़दूरी ना देना कम देना या देर करना।

39- हिर्स यानी माल जमा करने में हराम और नजायज़ तरीक़ों से ना बचना।

40- किसी से कीना रखना बदला लेने का जज़्बा दिल में रखना।

41- किसी दुनियावी रंज से तीन दिन से ज़्यादा बोलना छोड़ देना।

42- पेशाब की छींटो से बदन और कपड़ों की हिफ़ाज़त न करना।

43- माँ-बाप की नाफ़रमानी करना और उनको तकलीफ़ देना।

44- भूखों और नंगों की हैसियत के मुवाफ़िक़ मदद न करना।

45- ज़रुरतमंद की बावजूद वुस्अत के मदद न करना।

46- ऊपर से पहने हुए कपड़ों से टख़नों को ढाकना।
47- दुनिया कमाने के लिए इल्म दीन हासिल करना।
48- दाढ़ी मुड़ाना या एक मुश्त से कम पर कुतरना।
49- किसी की ज़मीन पर माल्कियत का दावा करना।
50- बग़ैर शरई उज्र के जमात की नमाज़ छोड़ना।
51- काफ़िरों और फ़ासिक़ों का लिबास पहनना।
52- किसी की कोई चीज़ बिना इजाज़त लेना।
53- उज्ब यानी अपने आपको अच्छा समझना।
54- बिलावजह किसी को बुरा-भला कहना।
55- अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद होना।
56- पिछले गुनाह पर आर (शर्म) दिलाना।
57- किसी की आबरू का सदमा पहुँचाना।
58- औरतों को मर्दों का लिबास पहनना।
59- मर्दों को औरतों का लिबास पहनना।
60- किसी जानदार को आग में जलाना।
61- किसी के माल का नुक़सान करना।
62- किसी के नुक़सान पर ख़ुश होना।
63- किसी जानदार की तस्वीर बनाना।
64- माल को गुनाह में ख़र्च करना।
65- जादू-टोना करना या कराना।
66- हिकारत से किसी पर हँसना।
67- किसी का ऐब तलाश करना।
68- हट्टे-कट्टे होकर भीख माँगना।
69- छोटों पर रहम ना करना।
70- बड़ों की इज़्ज़त ना करना।
71- फ़ख़्र करना।

तौबा करने में चार शर्तें हैं जिन्हें उलमा-इकराम से मालूम करके अमल में लाया जाये।